পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন

পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতনপৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ



গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন পৰ্বত উপৰ ভমৰা জে মূতন

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

यर्नि ऊयन रमना ऊँ सूाल

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (विदेह www.videha.co.in) यटानसँ

ISSN 2229-547X VIDEHA *सम्पादक:* गजेन्द्र ठाकुर।

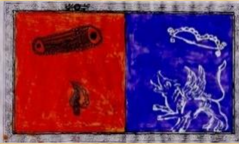


Videha e-Learning

Gajendra Thakur



विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्






रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमेँ .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).
ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॊयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

कवर डिजाइन (फ्रन्ट आ बैक): उम गजेन्द्र ठाकुर

( ) A collection of Maithili Seed Stories, Short Stories and Long Stories by Gajendra Thakur (Language-Maithili) *from Videha www.videha.co.in Archive.*

अनुक्रम
(लघु, दीर्घ आ बीहनि कथा)

पाठकक लेल किछु निर्देश वा सुझाव

लघु कथा खण्ड

सिद्ध महावीन

नवी मूर्त्ति

नई दिल्ली

गस्कन

संघर्ष

दीर्घ कथा खण्ड

वीहनि कथा खण्ड

Annexure

(Maithili Short-Stories by Gajendra Thakur translated into English by the author himself)

Annexure Two: The Robber (Tashkar)

Annexure Three: The Science of Words (ShabdaShastram)

Annexure Four: The Cattle Grazer Brahmin Village (Mahisbar Brahmanak Gaam)

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতলপৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ



गजेन्द्र ठाकुर

পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

गजेन्द्र ठाकुर विदेह, मैथिली ई-पत्रिका *http://videha.co.in/ ISSN 2229-547X* VIDEHA (since 2004) केर सम्पादक छथि आ आइ-काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

Do not judge each day by the harvest you reap but by the seeds that you plant- Robert Louis Stevenson

………………………………………………………………………………………

Videha: Maithili Literature Movement

पाठकक लेल किछु निर्देश वा सुझाव

ई पोथीकेँ पढ़बा लेल किछु निर्देश वा सुझाव देल जा रहल अछि जाहिसँ अहाँकेँ एकरा पढ़ैमे आ एकर कथा सभक विवेचनामे सुविधा होएत, आ अहाँ ई संग्रहकेँ पूर्ण रूपेँ बूझि पाबि आ आनन्द लऽ सकब।

ई पोथीक चारिटा कथाक अंग्रेजी अनुवाद हम स्वयं कएने छी जे अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित होबाक संग विभिन्न पत्रिकामे सेहो प्रकाशित/ ई-प्रकाशित भेल अछि।

हमर किछु रचना नेपालक गोरखापत्र, आँगन, धूआ धजा, मिथिला

तेँ कम आ आन मैथिली पत्र-पत्रिका/ स्मृतिमे सेहो प्रकाशित अछि। विदेह, मैथिली ई-पत्रिका http://videha.co.in/ ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004) मे धारावाहिक रूपमे सेहो मूल आ अंग्रेजी अनूदित रचना ई-प्रकाशित अछि।

ऐ पोथीक किछु कथा रूपमे सन् २०२३ सँ पूर्वमे प्रकाशित/ ई-प्रकाशित कथाक परिवर्धित रूप अछि, ऐ पोथीक कथा सभकेँ एहि कथा सभक प्रामाणिक संस्करण घोषित कएल जा रहल अछि (जँ किया ऐ कथा सभक कोनो संग्रहमे संकलन वा उल्लेख वा अनुवाद करऽ चाहि रहल छथि, तिनका लेल ई लागू अछि)। किछु पूर्व प्रकाशित/ ई-प्रकाशित कथामे परिवर्द्धनक संग नाममे सेहो परिवर्तन कएल गेल अछि।

लघु कथा खण्ड

सिद्ध महावीर- ई कथा कविलपूरमे योगानन्द झा केर संयोजकत्वमे रहल 'सगर राति दीप जरय' मे पढ़ल गेल आ अंतिकामे सेहो छपल। एकर अंग्रेजी अनुवाद www.museindia.com (Issue 63 September-October 2015 under Highlight-Indian Short Stories in Translation) पर ई-प्रकाशित रहल (Annexure 1) आ स अन्तर्राष्ट्रिय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित रहल। ई एकटा विधवा दीदी अनमनाक कथा अछि, आ रूढ़ि आ वैज्ञानिक दुनु दृष्टिकोणसँ दु पउक लोक एकटा घटनाक वर्णन करैत छथि। कथामे परिवर्द्धनक संग नाममे सेहो परिवर्तन अछि।

नवी मुर्वी- एतऽ सामाजिक व्यवस्था संग कोनाना सेहो मिझान रऽ गेल छै।

नई दिल्ली- नई दिल्लीमे पलायन आ अर्थनीति छै आ छै एकटा मृत्यु आ आगाँ प्रतीक्षा...

पाहुन- पूर्वोत्तर मैथिलक प्रेमकथा विशेषांकमे ई छपल छल, एकर ई परिवर्द्धित रूप अछि। ई पञ्जी-प्रबन्धमे वर्णित सत्य घटनाक आधारपर लिखल कथा अछि। राजा लाल निरूछल कायस्थक ई अपहरण छल वा कोनो प्रेम प्रसंग... के अछि पाहुन? एकर अंग्रेजी अनुवाद (Annexure 2) अन्तर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित भेल। कथामे लेखकीय स्वतंत्रता लेल गेल अछि।

संघर्ष- ईहो निर्धनक कथा अछि, जकरा अपन बेटाक हत्या वा आत्महत्याक बाद अनुकम्पाक नोकरी भेटै छै। न्याय-व्यवस्थाक चक्रचालि सेहो ऐमे आयल अछि।

लटनवॉक्षम आयल चिट्ठी - प्रेम, आतंकवाद आ प्रोटेगोनिस्टक हानि वा जीत वा किछु नै...

क्षमा, बुधन आ...- एकर आन्तरिक रूप कएक बेर परिवर्तित भेल, आब ई बीहनिसँ लघुकथा बनि गेल अछि। जातिगत सरकारी नीतिक सार्थक हस्तक्षेप। दलित विमर्शक राजनीतिक पाठाँक इतिहास। मुदा कथा जारी अछि...

आत्महत्या- आत्महत्याक मनोविज्ञान। पूर्व प्रकाशित ऐ कथामे परिवर्द्धनक संग नाममे सेहो परिवर्तन कएल गेल अछि।

गंधर्व लटनवम- अंकुरमे पूर्व प्रकाशित ई कथा गल्पगुच्छमे २००९ मे संकलित भेल, ऐ कथाक नाममे परिवर्तन भेल आ कथा सेहो परिवर्द्धित भेल।

दीर्घ कथा खण्ड

मधुबनी मार्फत- एकर आनलाइन नव लघुकथा नवम अंतिकामे प्रकाशित अछि, मुदा आब ई दीर्घकथामे परिवर्तित भऽ गेल अछि, कथाक नाममे सेहो परिवर्तन छै।

शब्दशास्त्रम्- मिथिलाक नव्य-न्यायक जनक गंगेश उपाध्याय, जिनकर जन्म पिताक मृत्युक ७ वर्ष बाद भेल आ सएह शिक्षा प्राप्त कएलाक बाद ओ चर्मकारिणीसँ विवाह कएलनि, मुदा हुनकर इतिहास नुका देल गेल मुदा ओ जीवित रहल ब्लैक बुक मान दुष्ट पत्नीमे। रमानाथ झा दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यकेँ मु0 कहलन्हि जे हुनकर परिवार मिथिलासँ समाप्त भऽ गेल आ हुनकर पिताक वा पूर्वजक नाम जनबाक सेहो हुनका कोनो आवश्यकता नै छै (देखू हिस्ट्री ऑफ नव्य न्याय इन मिथिला)। दुष्ट पत्नीसँ निकलल ई प्रथम कथा 'जखन तखन' क प्रथम कथा विशेषांकमे प्रकाशित भेल। एकर अंग्रेजी अनुवाद साहित्य अकादेमीक पत्रिका इण्डियन लिटरेचर [Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93] मे प्रकाशित भेल (Annexure 3) आ अन्तर्राष्ट्रिय फिल्म महोत्सवमे प्रदर्शित भेल। ओ कथामे लेल सभटा गीत चर्मकार टोलसँ उमेश मण्डल जी द्वारा डिजिटल रेकॉर्डिंग द्वारा प्राप्त भेल अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/video.htm पर, आ तेँ ई कथा समर्पित अछि उमेश मण्डल जी केँ। संकलित गीत मे मात्र एक ठाम 'बाभिन' केँ बाघिन कऽ देल गेल अछि, स्त्री विमर्शकेँ देखैत (कथामे, रेकॉर्डिंगमे नै)। कथामे लेखकीय स्वतंत्रता लेल गेल अछि।

महिसवार ब्राह्मणक गाम- मनुक्खक नै, एकटा गामक कथा। एकर

अं(ग्रजी अनूवाद (Annexure 4) सेहो देल अछि, मूदा अनूवाद (श्नावल याOक वर्गक याO-प्रवश सुगमताकँ ध्यानम नाखि कs क-ल (गल अछि।

वीहनि कथा खण्ड

<u>३९ टा वीहनि कथा</u>

निष्ठाक सनानी आ लुटिक तन, नकली नाट, यानिवला नात, जी सन, दु टा कैदी, अयन-अयन राश्च, प्रवचन, गछल गय, दुना वाल, आम्र-(गौनन, छाद, नाटन कुलन, गाँ अखन -ाक येघ नै देल छँ वाउ, -मवियम्र मॉल कैम्यसक मिस्त्रीक खिस्सा, स्निहन तॉग आख्यान, यातायात निअम राग ०-१-२-३, जातिवादी मनाOी, (थथन मनूक्ष, वहूयन्नी विनाह आ हिजडा, स्त्री-वटी, विआह आ (गानलगाऽऽ, प्रतिदा, जाति-याति, अनूकम्याक नाकनी, येनवी-येगाम आ हाकिम, नूतन मीतिआ, मिथिलाक उद्याग, 'वाढि, दुख आ प्रवास १-४', नव-सामन्त, चानिम स्थान, राट, मसूआऽऽ, साऽऽवनिया कैम्य, मीत राऽऽ श्रृंखला १-१२, विहानी, हिलिंग, स्विल, तिसीय्रीन आ साऽऽस १-३।

-उ सटम सँ किछु अही नामसँ/ वा आन नामसँ प्रकाशित/ ऽऽी-प्रकाशित छै। ऽऽी सटटा समाजसँ ज्ञउल कथा सट छिउ, -काध-दु याँति सँ लs कs यन्ना-उ८ यन्नाक कथा सट। वीहनि कथा *चानिम स्थान* म जना मूलधाना सटकँ Oको नहो अछि चानिम स्थानक लालच दs कs गऽऽयन टियग्नी अछि। *वहूयन्नी विनाह आ हिजडा*

स्त्री विमर्शक गँ *जाति-पाति* दलित विमर्शक कथा थीक। *अनुकम्पाक नोकरी* अछि विचानधानाक लोकक कथा थीक। *नूतन मीतिआ* आजुक कालिक पीत पत्रकारितापर टिप्पणी अछि जे ऽ ब्रेकिंग न्यूज नव विधान बनल अछि। *मिथिलाक उद्योग* अपन गौरवगान करैत हारल समाजक वर्णन करैत अछि। *बाढ़ि, दुख आ प्रवास* मे बाढ़ि आ पलायनक बीच हारलक मिथिला हारल देखायल गेल अछि। *पैनबी-पैगाम* आ *हाकिम* मे अपन कर्तव्य पालन लेल काना बढ़ल ने अछि से देखाओल गेल अछि आ सज्जन दासन ढंगसँ आयल अछि *आत्म-गौरव* मे। *पानिवला गाछ* मे गाछ बाढ़िवला इलाकाक लोकक माध्यमसँ, बाढ़िक इलाका बला लोक नव स्थितिमे जीवाक नव-विधि कना ताकन अछि, ताकर वर्णन अछि। ई देखबैत अछि जे कोसीपर तटबन्ध बनलाक बाद, बीसम शताब्दीक सातमिक दशकमे कुशेश्वर स्थान ऊपर जलप्लावित इलाक बाद, ओतुक्का लोक कना अपनाकेँ अनुकूलित कयलन्हि। ई पर्यावरणक विमर्शपर कथा अछि। निर्बलक सवारी आ लुटिक तन आ *नकली गाछ* मे कानून व्यवस्था आ गाछक ओकीलपर टिप्पणी अछि गँ *जी सर* मे चमचागिरीपर, *दु टा कैदी* मे जेल प्रशासनपर, *अपन-अपन स्वार्थ* आ *सिरून तँग आख्यान* मे भ्रष्टाचार, *प्रवचन* मे ढोंगी, *गठल गय* मे कागत व्यवस्थापर टिप्पणी कएल गेल अछि। *दुना बाल* मे जाति आ मानवतापर हाय नुयँ टिप्पणी अछि। *डाह* मे एकटा घटना/ मिनन ओकरमजक वर्णन अछि। *नाटक कुलन* मे समाज कल्याण कार्यक करबा काल होइवला हाय पनिणामक वर्णन अछि। *गाँ अखन एक पैघ ने रुल छँ बाउ* मे मूलधानाक मनानृप्तिकेँ हायक माध्यमसँ

दखाउाल (गेल अछि। *ओमवियन्स मॉल कैम्यसक मिस्रीक खिस्सा* किगावी आ जॉव आधानिग स्थानक ब्वैधकँ दखवैग अछि। *यागायाग निअम* म कानूनक प्रगि लाकक धानधा, *जागिवादी मनाOी* म लाकक दागलायनी आ *(थथन मनूक्क* म मनूक्कक नियगियन चर्चा रुल अछि। *नव-सामन्द* मूलधानाक उOीकँ नर्थिग कनैग अछि। *राटम ओलक्कनक* छल-प्रयंच नर्थिग अछि। *मसूआ॒॒* म निरिन्न ऊप्रक खान-यानक सांस्कृगिक अन्दन आ अनन उOाउाल जायवला नैगिकगाक प्रश्न दखाउाल (गेल अछि। *सा॒॒वनिया कैम्य* सा॒॒वनियाक व्यायान-उद्याागक कथा थीक। *मीग रा॒॒ शृंखलाम* सरग गामक मीग रा॒॒क हँसी, छल-छद्म आ निश्चलगा, सरटा नर्थिग अछि। *विरानी* मजदूनीक यर्यायनाची रs (गेल अछि, *सा॒॒स* यढा॒॒ व्यवस्थायन टियधी अछि, काटा ज काचिंगक रुव छिउ, गाs २०२२ म वा॒॒स टा निद्यार्थी आाभरूया कs ललक। *रिलिंग* खलक प्रगि दृष्टिकाध, *स्किल* काज कनिवानक दुर्गीग आ *तिसीप्रीन* यूनाक्रासीक कानी अंग्रेजयन टियधी अछि। ओम किछ नव आ किछ यनिवर्जिग वीरनि कथा दल (गेल अछि।

-गउन्ड Oाकुन

लघु कथा खण्ड

𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒪𑒰𑒫𑒲𑒢

𑓑

𑒥𑒰𑒯𑒏 𑒏𑒰𑒑𑒧 𑒁𑒢𑒧𑒢𑒰 𑒠𑒲𑒠𑒲𑒏 𑒒𑒢।

𑒒𑒢 𑒢𑒻 𑒋𑒏𑒔𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒯𑒳। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒰𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒮𑒪 𑒁𑓀𑒑𑒢𑒰𑒧 𑒋𑒏𑒩𑒰

निधनाक धन नहि छै। मुदा जखन धनिकान येघ होइत तँ छै अपन धनक मुँह घुमा लैत तँ छै बड़ बना दैत। आ कखनो काल ठाढ़ गाँठ-सम्मानक धनक स्थान धनिकाक लऽ जाइ छै, आ स गहन सन स्थिति छलै अनमना दीदीक धनक।

मुदा अनमना दीदीक धन बाहरक काजमे छलन्हि। सासुक मजदूरिया टोलक छथि मुदा घुसकि कऽ दूमन धन लग आबि गेल छथि। सम्पन्न लोक सभ।

आस-पड़ोसक धी-बेटी दिनमे, दुपहरियामे जाइ छथि। ढील-लीख बिछै लेल। कहाँ ठा लगक छथि, स मनलोक बाद धरा चलय। श्राद्धक समय ज लगक अछि स आगि दग आ गकना धनानी एटगे। मुदा सेहो सम्भावना आब नै। संभ्रान्तपनमे सासुर छलन्हि अनमना दीदीक। ठाम अपन बहिनक बेटाकेँ अपन बेटा बना राखि लेने छथि। मुदा नैहरक मोह नै छूटल छन्हि।

एकचारी धनमे अबै छथि। मासमे एक बेर तँ अवश्य। अपनसँ खनाइ-पिनाइ, रानस-राग। मुदा संभ्रान्तपनमे बस येघ धन, आँगन। बेटा-पुतहुकेँ कहिया मुदा एगऽ नै आनलन्हि।

सौँस गाम निधनाकेँ दीदी कहैत छँ ठा नैहरमे नहि छथि। आ हलना गाम वाली काकी छँ ठा सासुरमे नहि छथि।

स सौँस गाम हुनका अनमना दीदी कहै छलन्हि।

खायठीक काजमे एकटा रंगनानक महिन बनल छथि। महावीन बजरंगबलीक। शुनूहसँ छोड़ी काठाक नहि स नै, मुदा बना दलन्हि ठाकना काठाक। अन्न-पानि बचि कऽ। यदि तँ एकचारीय नहि। जहिया अनमना दीदी संभ्रान्त जाइत नहथि, अपन खायठीक

हड़की हिनका कऽ जाइत रहथि। बादम ताला आ सिक्कड़सँ बन्न सदा करऽ लागल रहथि। मुदा बजरंगबलीक मन्दिर ओहिना खुजल नहि छल। लोक सड़क लेल..चौपहर। धी-बेटी गामक, साहु-सहाई, माउ-बहानु करैत रहथि। पक्काक मुदा बादम भेल, पिटुआ छात आर बादम। जमीनक प्लास्टर करबऽ चाहैत रहथि, मुदा एस्टीमट बशी भऽ गेलन्हि। भगवानक घर चूबैत रहत? मुदा ढलाइ आ प्लास्टर लेल पाइ कतऽसँ एतै?

आइ हमरा लगैए जे हम सभ खूब महनति करै छी। ककरासँ सरोकार नै अछि। डाह, सभौत नै भेटैत अछि। मुदा अनमना दीदीक दिनचर्या, भोरसँ साँझ भगवान लेल समर्पित। मुदा पासपूर लेल सदा समय निकालै छथि। बीच-बीचमे मंगारपूर बजार लग स्थित अपन गाम जाइ छथि। ओतुक्का थाँत लगबै छथि। हर गाम अबै छथि..नैहर। देखू..गीता पढि स्थितप्रज्ञ बनबाक अहाँक प्रयास। मुदा अनमना दीदी। गोर लगै छी दीदी। निकेना रहू। नहिये खुशी, नहिये कोनो दुख। न कोनो आनभोगक लालसा आ न कोनो तरहक सहयोग प्राप्तिक आकांक्षा।

जार ताकें लेल जाइ छथि बनूकटाली, दूसबटाली। ओतुक्का लोक इजातिया दे छन्हि, कोन हुनकर घरानी लेबाक छन्हि हुनका सभकेँ। ओतऽ हँसिता देखै छियन्हि। अपन टोलक लोकसँ हट कोनो काज लेल कहितो नै छथि। एकटा काज करत आ कनियाँकेँ जा कऽ कहत। आ हर दस साल धरि ओकर कनियाँ सूनबैत रहत।

-दीदी, हनुमान जीक काज छै, सड़कक कागम छथि। हमहूँ सभ तँ जाइत-अबैत माथ झुका कऽ पूजा करबन्हि। से बिनु बानि लेने हम

ई काज करब।

- तेँ ओ तीर्थ-व्रत आ भगवानक काज मंगनीमे तेँ करबाक-करबाक चाही। हम कोना नानी-मरनानी छी जे बगानी खटा कऽ मन्दिर बनबैत आ पाखनि खुनैब।

मुदा ढलैया आ प्लास्टर!

२

सड़कक कातक भगवानक जे मन्दिरक सटल एक बीघा खेत, सरकारी अनमना दीदीक। ढलैया भऽ गेलाक बाद भगवानक नामसँ लिखि देती। जे अन्न-पानि होएत ताहिसँ भगवानक घरक चून-पाबाना आ सफाई होइत रहत।

कतेक दिनसँ पठासी पछाड़ धेने छथि।

“दीदी। भगवान सरसँ लगक भागिन हमहीं छियौ। ई जमीन हमर घरसँ सटल अछि। पहिलुका लोक बाह्र-सड़कक कातमे छोट लोक आ मसोमातकेँ घर बना दैत रहै। मुदा आब जमाना बदलि गेल छै। आब तँ सड़कक कातक घर आ जमीनक मोल बढ़ि गेल छै। तूँ आइ काल्हि मरि जेबा। तखन ई जमीन हमरा सरे पट्टीदार लेल मङ्गाक कागज बना।”

तूँ आइ काल्हि मरि जेब- कहि कऽ दखियौ कोना सधनाकेँ। मुदा मसोमातसँ कहि सकै छिऐ- हम डाकन पासपुत्र- पुतोहु- नेत-नातिन सभ होइ। ठीक छै बाबू।

“भगवानक लेल निश्चल अछि ई जमीन। अहींसँ तँ हमर गुजर

चलैत। ज किछु यट कारि कऽ ववर्वे छी स काशिल्या- रगनानक घनक ढलैया आ ग्लास्टन लल। संसानयूनक जमीन-जालक याऽऽ सर वटा यूणाल्क छन्हि। स रुम कना.. ”

“रुन दीदी। गुँ गय वूसव नै कलौं। जा जिवै छुँ नाख ना। कन न गुजन। रुम गँ कहै छियौ ज गाना मनलाक वाद ज यटीदान सर आयसम लउग स गाना नीक लगतौ? आ रुम गारुन सरसँ आफ रागिज...।”

दखियौ, कहै छै जा। रागिज वारुनम नाकनी कनै छथि। ज गामम नहैत स गँ रुँट कनैयाम संकाव कनैत ज किछु दमऽ नै यउत। ऽऽी मूदा जहिया गामम अवैत आ रुम गामम नहै छी गँ रुँट कनवाक लल अविग अछि। आ ओ वन गँ रुम संसानयूनम नही गँ डाफी ओल नरुत। सउरु गँ कहलिओ ज ऽऽी कना कऽ रूनलौ। स आव वूसलिओ। मूदा ऽऽी ढलैया कना कऽ रुउग। ग्लास्टन गँ वादाम कनवा दवौ। गाक वूवैत, ओ साल गँ आना वशी वूवऽ लागल अछि। यिटूआ छग, दूऽऽया साल नै चलल। डाकना डादानि कऽ ढलैया कनग कनीम मियाँ आ लछमी मिस्त्री, गखन ठीक रुउग। दखै छी।

रागिजक आवाजाही वढि गेल अछि आऽऽ-कालि।

“ठीक छै दीदी, अदरु जमीन दऽ दा। दस कहाम अहाँक रागिजक वसावासक संग रगनानक लल सहा जमीन वचिय जौ।”

“मूदा वाह्रयन अहाँक घनानीक लागि गँ नहिय रुउग। गखन की रुउदा रुउग अहाँकौ।”

“छाउ ना। उखना गँ टाल दऽ कऽ अविग न छी, आ रुमन घनानीक

लागि सड़कऽ कातक जमीनसँ भेटत छै, पछुलक जमीनसँ न छै। चौक-चौबटिया आ बाटक कातम घर बनबाक तँ आब न चलन रहल छै। आ आब चौबटिया आ बाटक कातम तँ भगवानक घर न शोभतन्हि। दस कट्ठाक दस हजार जरिया कहब हम दऽ देब। रजिस्ट्री बादम बनू हएत।”

“ठीक छै। तखन हम सोचि कऽ कहब। एक बेर बेटा पुतहुसँ पुछि लै छी।”

कोन उपाय। भगवानक घरक देवाल सेहो कजरी लागि गेल अछि। देवाल छोड़ू, बजरंगबलीक मूर्तिमे सेहो कजरी लागि गेल अछि। अनमना दीदी सोचैत रहि गेलथि। आ सोचैत-सोचैत भान भऽ गेलन्हि।

दऽ दै छथि जमीन। आन उपाय की। नै!

बेटा-पुतहु कहलखिन्ह जे माय। ओकरा जमीन तँ भगवानक छन्हि। आ हम सभ स गुनहु सँ बूझै छी। मुदा देखब। ओ कोनो चालि तँ नै चलि रहल अछि।

“कोन चालि। पाइ तँ किछु बेसीये दऽ रहल अछि।”

भगवानक मन्दिरक लेल दस कट्ठा कम भेटत जाइ छै। पाइ झटकेँ-झटकेँ मानि गेलौं। ई अधखनू मन्दिर की ओहिना रहि जाएत? गप करै छी लछमी मिस्त्री आ करीम मियाँ सँ।

दस हजारमे ढलैया, प्लास्टरक संग छहरदिवारी सेहो बनि जाएत। एस्टीमेट बनि गेल। रजिस्ट्रीक अगिला दिनसँ काज आरम्भ। आ भादवक पहिने समापन।

३

चलू नजिसड्डी रहऽ गेल। दासजी कागत-पत्रमे बड़ मातल छलाह।
पूछबाक काज छै! - धूना। पकिया कागत बनल हेतौ।
"भगवानक लेल कागत बनबाक पड़ल अनसन भेटल अछि दीदी"-
दासजीक गपसँ अनमना दीदी दासादास रहऽ गेली।
लोक कहै छै सूझ ज लोकक श्रद्धा भगवानपर सँ कम भेल जाइ छै। जी दासजी। कहिया न हटत आ न जान पड़िवान। दू टा नजिसड्डीक कागत- एकटा दसकठिया रागिजक नाम आ दोसर भगवानक नाम, मुदा एक्को हीसम बना नहल छथि। सारू कहि देलखिन्ह- दीदी भगवानक जमीनक नजिसड्डीक पाइ हम एकदम्मे नै लेब। ज बन-बखायन काज आबय सएह न अयन लोक। ठीक बूढ-पूनान कहि गेल छथि। यएह सर देखि कऽ न कहुन छथि।
अनमना दीदी बाइम छथि। यएन गाम एली। सारूम किछु नै हूनाइ छन्हि। महिनकँ अजवानु, काल्हिसँ काजक आनन्द अछि। लछमी मिस्त्री अयन गगनी, जनी, कनछी सर नाखि गेल अछि। तबूक सर पानि हनबाक लेल अनमना दीदी जागा कऽ नाखनहिय छथि। पाखनि बगलम अछि। लीठसँ हनल, मुदा कागम महीस सरकँ पानि पिएबा लेल लोक सर कनक सारू कहैए दन छै।
मुदा रागम घाल-हूबुक्का। कनीम मिआँकँ काज कनबासँ नाकि देल गेल। क नाकलक? रागिजकँ खबनि दियौ। मुदा डा गँ काल्हि मंगानपूनसँ साम नाकनीयन चलि गेला। नजिसड्डीक कागत डाना गँ अनमाना दीदी लग सहो छन्हि। रागिजक सान नाकन अछि काज। छहनदिनानी नै बनबऽ देत। मुदा काल्हि नजिसड्डी काल गँ नहय

ईहो। तखन? कहैत जे बाड़ीक कातवला जमीन महमानक छियन्हि। तँ यौ, तखन तँ ई मन्दिर ठाकुर विश्राम भऽ गेलै ना। कोना बुझबामे गलती तँ नै कऽ रहल अछि? भागिज मासक शुरूहेमे जा कऽ तँ एता, दरमाहा लैत कऽ ना। मास भरि अनमना दीदी गाम आ संस्थानपुर करैत रहली। बेटा पुताहू कहलन्हि जे ई भागिजक चालि तँ नै अछि? नै, से नै कहू। दासजी तँ नीक लोक रहय। देखू।

४

"दीदी। अहाँकेँ कोना धोखा भऽ रहल अछि।"
"तखन तँ ई मन्दिर अहींक भेल ना।"
"नै दीदी। ई मन्दिर तँ भगवानक छियन्हि। हुनक रहतन्हि। आ पाछूक जमीनक मालिक सेहो भगवान।"
"आ तखन तँ हमर ई खोपड़ी सेहो अहींक भेल ना।"
"नै दीदी। अहाँ जहिया धरि जीब तहिया धरि रहू। के मना करत? "
"बौआ बड उपकार अहाँक। आ पाछू दिसका जमीनक लागि तँ नै बाट दिससँ अछि आ नहिये टाल दिससँ।"
"दीदी। अहाँ हमरा जमीन बाटे जाउ ने, के मना करत? आ आनियन बाट खाम सर जाइत अछि। जकर खा बाड़ीक कातमे नै छै से की अपन खायत नै जा सकैत। अहाँ तँ नवका लोकक भिन्न-भिनाउज वला गप कऽ रहल छी।"

“मुदा ई सभ अहाँ पहिने कहाँ कहैत नहि।”

“दीदी, अहाँकेँ सभटा कहैत नहि। मुदा लगैए जे अहाँकेँ धोखा भऽ रहल अछि। ई विश्वास होइए तँ दासजीकेँ बजा दइ छी। ओ तँ गहल्ला अछि।”

“अच्छा तँ ओहो मिलल अछि।”

“दू रजिस्ट्रीक कागज बना कऽ बयाना एक रजिस्ट्रीक पाइ लेलक आ अहाँ कहि रहल छी जे मिलल अछि।”- रागिजक स्वर तीव्र भऽ गेलन्हि। हाँफऽ लगला आ जान-जानसँ बजैत विदा भऽ गेला।

३

अनमाना दीदीक लेल नैहरक ई रान सासुरक ओइ रान जकाँ रहन्हि जइ दिन ओ विधवा भेल रहथि। ओइ गामक धी-बेटी ढील-लीख बिछबा लेल नै एली। अनमाना दीदीक नाति रनिक नागालाय- बजरंग बलीक संग, अखन ओ रानम खाम भेल अछि। लोक सभ अंगनाम बच्चाकेँ ठोकि कऽ सूता रहल अइ। रानम किछु ठोर आबि पंचैती करबाक समान दऽ गेलन्हि। मुदा अनमाना दीदीक नाथ तँ बजरंगबलीसँ छलन्हि।

“रगनानक जमीन अदहा बेचि कऽ रगनानक घर बनबैलौं, मुदा महिनक सटल जमीन रजिस्ट्री करा लेलक आ जे जमीन बचल ओइसँ महिनक लागिय नै रहल। लागि तँ झाड़ू ओइयन जवाक रक्षा बन्न कऽ देलक। आ ई बजरंगबली। महाबीर! कोन शक्ति छै एकनाम ? चालीस साल परह काटि कऽ हिनका खायठीसँ पक्काक

घरमे अएलौं। ढलैया भऽ गेलैक, छतनिहारो सभ गेलैक सभक टा मनोरथ पूरल, आ सेहो दिनक लेल। से... ”

६

ई भागम भाभिजक इलाकिगन ०।८ अनमाना दीदी। लोक सभक मान ज आब आन बाधा भगला। मुदा ओहो की भऽ चलल अछि। लछमियाँक भाय निकला अएलक अछि। अनमाना दीदी भाभिजक संग सम्मानपूर्वक जा चलल छथि। के कहलक? हुनकासँ गेँ ककरो गया नै भेल नहि। हम कहनहियो नहियहि पंचेरी कताउ, मुदा मना जकाँ कऽ देने नहथि। अच्छा, लछमीक भाय कहलक। हुँ, निकला बजबै लेल ज गेल नहय, से कहने हुआ ज सम्मानपूर्ण जबाब अछि।
दासजीकेँ एकटा आन नजिस्ट्रीक कागत बनबऽ पठेलन्हि। अनमाना दीदीकेँ देखि ओ सर्द भऽ गेल नहथि ज जानि नै बूढ़ी की सभ सुनओथिन्ह। मुदा अनमाना दीदी गाक न गामसभ छली ज किछु नै बजली। गामस पीबि गेली। ओहो पाछू बला जमीन भाभिजकेँ नजिस्ट्री कऽ देलन्हि। आ सम्मानपूर्ण-शुभकामनासँ घूमि कऽ सम्मानपूर्ण बजान दिस बटा युगादु लग पठान विदा भेली।
लछमीक भाय घूमि ऐला। दु सवारीकेँ लऽ गेल नहय मुदा मात्र एक सवारी लऽ कऽ घूमि ऐला। संगम संदेश लन गेल। लछमी मिस्त्री आ करीम मिआँ लेल संदेश। काल्हि भागसँ काज आरम्भ। हुनसँ?

७

चहरदवाली बनल। हनुमानक मन्दिर आ अनमाना दीदीक घरकँ बानि कऽ। कहि देने छियन्हि दीदीकँ। हुनका जिबैत क्षा छुटन्हि नै हुनकर घर।
घर आबि खायती, एक साल करक टूटल। दासन देवनियाम खुद्दा सनि कऽ खसि पड़ल। मुदा अनमाना दीदी नै एली। समाद देल नहन्हि नैहरक एक गोट। ढलैया नहिये लन्हि बजरंगबलीक। अनमना दीदी हरिद्वारसँ घूरि एली। लोक पूछलकन्हि- की मांगलौं गंगा मायसँ।
“यएह जे अंधविश्वास हमरा मोनसँ हटा दिअ”।
“आ की देलियन्हि गंगा मायकँ ?”
“अपन नामस दऽ देलियन्हि”।
अनमाना दीदी यएह कहथि- की करबन्हि। कोनो शक्तिये नै छन्हि बजरंगबलीमे। खसऽ दियौ खायती। सोगन लागल घर कोनक दिन टिका।

८

कतेक बरख बीतल। कतेक बरख नै पाँचम साल गौँ। हाकिम गामपर गेल नहथि। दरमाहा उठा कऽ। पाखनि दिससँ बय्याकलपर। लोटा लऽ बैसला आबि छातीमे दर्द उठलन्हि। नै बचि सकला। लोक सभ कहय, देखू अनमाना दीदीक श्राप, बड़ कानल नहथि दीदी उठ्ठ

दिन। ताइसँ पहिने बजरंगबलीक मूर्तिमे ठीक शक्ति नै रहय। मुदा हृदयसँ डर भाय लागै छै यौ। ताही दिन जागृत भऽ गेल रहथि बजरंगबली। आ आइ शक्ति देखा देलखिन्ह।
मुदा समदियाकेँ अनमाना दीदी कहलखिन्ह जे पाथनाम जान होइ छै? हर्ट अटैक भेल हो। पनसु ओऽ एकरा मानवतीकेँ अटैक भेल रहै। चिन्ता-फिकिरसँ होइ छै एकर अटैक। ओऽ ताकतर सभ रहै, मानवती बचि गेल। गाममे देवी भेल जान नै बचै छै। तँ ने हमहुँ ओ बुढ़ानीमे बर पूजाहु लग मसानपूजमे नहि रहल छी।

२

गाम अछि महिसवार ब्राह्मणक गाम। सुखरातिक दिन हुड़ा-हुड़ीक खेल जे ओ महिसवार ब्राह्मण सभक देखलौं तँ पालाक खेलमे कारा चूवि नै रहल। समियाक तामसँ कीनल सुग्गरकेँ भाँग पिआ मातल महीस ढाना हुड़ा लव।
चरवाह जे महीसक पहुलाठ पकड़ि कलाकानीसँ बैसल छल सेहो अछैत। तमक काज पावनि-तिहारमे तँ होइत अछि। पटाह बरवासँ सुप, बीअनि सभ किछु बरवामे तमक काज आ पाहुन पनख लेल आ बनियारी लेल जे खस्सी काटल जाइ छै, तइ लेल मिआँटालीक काज।
धून काऽ हाँसि गेलौं।
खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलिमे कमिटी लऽ लइ छै। से मिआँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल कऽ कऽ, गरदनि अदहा लटकल

नहि छै, मुदा माउस बना-साना कऽ ओहो गरदनि लऽ जाइत आ खेलना सेहो। एखन महिसवान ब्रह्मस्थान सँ जे हनुमानजी मन्दिरपर भजन आ अष्टजाम करै छथि से ओही खेलनासँ बनल ढोलक किनै छथि। आ से कीर्तन होइया रहल छलै।
सिद्ध महावीरजीक मन्दिरक आगाँ। रामनवमी दिन गाड़ल बड़का ध्वजा। टनटनाइत घण्टीघण्ट आकि आन किछु। हनुमानजीक ध्वजा फहरा रहल अछि। साँझक बेर। महिसवान सड़क आगम भऽ गेल अछि। काना यावनि हुअड़, हुड़ाहुड़ी आकि रामनवमी सिद्ध हनुमानजीक आगाँ कीर्तन होइत अछि। से बाबू गौआँक श्रद्धाक गप छिऐ। से आइया भऽ रहल अछि।

घूरक धुँआ मालक बिछौनीकेँ मालक देहसँ अलग करबाक प्रयासमे अछि। एक गोटेक संग दोसर गोटे आयल छथि, सप्पत खेबाक लेल। हनुमानजीक मन्दिर गौआँ सभ प्लास्टर करबा देने छथि। ढलैया सेहो भऽ गेल अछि। मन्दिरक बनला छवि कऽ मृतक पवनहानक संख्या नगण्य, तैयो एकटा अपवाद तँ अछिये- ओ कहै छथि- सप्पत तँ गाड़बा लेल खाइल जाइ छै। हँ होइ, एक बेर सप्पत खन जे मृतकसँ निमुक्ति भेटि जाय तँ हर्ज कोन। मुदा एकटा अपवाद। अनमोला दीदीकेँ आब सभ अनमोला बाबा सेहो कहै छन्हि। कएक बेरख भेल मृत्युसँ हुनकर। घुरि कऽ नहिये एली। रागिजक घनानीक दोष निवारणार्थ काना यँतीक कहुलायन खड़ायन एकटा गाय बान्हि देल गेल छै, जकरा एनहान-गेनहान सदिखन घास खाइत देखै छथि, तइसँ घनानीकेँ नजरि-गुजरि नै लगै।

हनूमानजीक पूजा होइत रहल अछि। साँझक काल। भजन संगे कीर्तनमे ढोलक बेन थापपर थाप लगा रहल छथि।

अनमाना बाबाक गप आब किछु लोका सेहो मानलक। ठीका। हनूमानजीक मूर्तिक आगाँ एक टूटा गोल बनि गेल अछि। एक गोलक निर्माण करैत वैज्ञानिक छथि- अनमाना दीदी जे बाँचल ढेर कठाक नजिसुखी कऽ देलखिन्ह संगहि ने अपना देलकै चिन्ता-फिकिर त्यागिकऽ छातीमे। नै सम्हारि सकल अनमाना दीदीक ओहो आक्रमण छा। ठीक पाथरमे कोना शक्ति होएत ओ? मुदा दासन गोल महावीर हनूमानजीक सिद्ध आ जागृत होएबाक विश्वास कऽ रहल अछि- यो, चुट्टीकेँ मारि दऽ दियौ तँ ठाहे मरि जाएत मुदा चिकुटि कऽ जे काटत से छाओत नै। आ ओही मारि अनमना दीदी महावीरजीकेँ देलखिन्ह तँ ठा कना छाति दिनथिन्ह?

भजन संगे कीर्तनमे ढोलकपर थापपर थाप लगा रहल छथि, बूझू सिद्ध महावीरजीकेँ मनाओल कऽ छाओता, रोगक गोला असनि कऽ रहल छथि, आँखि तँ चढ़ल छथि, हाथ सेहो नूकै कऽ नाम नै लऽ रहल छथि, आ हूनकर नजरिसँ देखी तँ सिद्ध महावीरक पाथरक मूर्ति जागृत भऽ गेल देखा पड़ल, जना ठाम जान आबि गेल हुअय!

(Translation into English of the Maithili Short Story, 'Siddha Mahaveer', by the author himself. Gajendra Thakur: e-published as ×The Proven Mahavir,' Sep-Oct 2015 www.museindia.com)

नवी मुम्बै

१

नवी मुम्बै म एकटा सर्व □यनशन नहि, वीचम एकटा स्थान आयल आ रमना मैथिलीम वर्जा डागुक्का गाति वादम एकान्दीम पूछलक-
"कान गाम घन छी?"
"ग८ नानिकला।"

"कान टाल?"

"Oक्नटाली। "

"रूदा कँ विद्दे छियह्नि?"

"हुँ हमन रैयानीय छिअथि। "

यग चलल ज रूदा राஃ नवी मूम्रेम दिनकन यजासी। ஃी छथि गाजे आ हनकन छह्नि सञ्जी-ग्नकानीक दाकान। गामक आना वहूग नास लाक।

वादम नवी मूम्रेम नहेवाली ७कटा रोजी गामम रटल नहथि, दुर्गायूजाम, (गांगु राஃक कानियाँ। दखलियह्नि गँ यूछलियह्नि- "वू७ रs (गलौं ये रोजी। "

चाइ जनाव- "वू७ रs (गलथि हुँ अयन आ...। "

"मजाका नै वूमै छिअ ये रोजी, अहाँ वू७ हअव? चानि सालक वाद रुँट रल छी, चानि सालम लाक चानि साल यूनान हाஃअ अहाँ गँ चानि साल नव रs (गल छी। "

"अहाँ वमेे ७लौं आ रुँटां नै कलौं। ஃी रूदवा कहलक ज अहाँ सOक ञOाम आयल नहिअ, हनविर्ना मचि (गलौ। हम गँ ७कना खुव गनियलिअ, कहलिअ नौ टटीवा नौ टटीवा, छाट वावू ७लखिह्न आ गुँ हनका ञनायन किअ नै अनलहुना। गँ कहलक ज ७कन काना संगी ञाग्s नहे, स कहलकौ। अहाँ कहलिअ ज रूदा राஃ गँ हमन रैयानी छथि, स सूनि ७कन छागी चाकन रs (गलौ। कनी टाஃम निकालि कs किअ नै ७लौं? हनी राஃ ञाफे शिवशंकन मिष्ठान्न रभ्रान खालन छथि, शिव सना वला सरट दाकानक नामसँ

प्रसन्न छी, ओ उछलैत नै करै छथि। आब तँ हुनकर सभहक काज करै छथि मुदा कहलन्हि जे छोट भाइ अविनाथ तँ अपन हाथसँ जिलबी छानि कऽ खुअबितियन्हि। "
"□हिसक काज नहि, डागऽ सँ हुन गानापुर आ हुन बाहनसँ बाहन दिल्ली, ओ नै आबि सकलौं।"
रुद्र भाइ सेहो आयल नहथि।
हुनकर बटीक बियाह छलन्हि। दुर्गाऊग देवा लेल हुनका संग हुनकर अंगना गेलौं। नव घनहट देखलन्हि।
रुद्र भाइ संग पूनमका गय मान यति गेल। बौआ बौठी महीस चरबा लेल जाइ छलथि, पूनमा गय। हमरा एक दिन लऽ गेलथि। डागऽ जे महिसबान सभक उल्लास देखलिऔ, अद्भुत। डाह्मन गाय बठद महींस चरैत बौआबौनीम आ ओम्हन महिसबान सभ धनिया पहीनि कुदल कमला-बलानमे। धानक नियमीत अनध भाइ हलैत। छिछलि कऽ कमला-बलानम पान भन जाइत रुद्र भाइ, जना झिमिढ-पूलक स्प्रिंग-बोर्ड हुअय, स्प्रिंग बोर्ड नै पार्कक स्लाइडन। अलग दुनियाँ।
रुद्र भाइकँ एकटा बनियागीम पूछलकन्हि, कोन स्कूलमे पढ़ै छी? रुद्र भाइ बाहु जवाब देन नहथि- बौआबौनी हाइ स्कूल। अनगौआकँ भलै जे कोना स्कूल हो, हमरा सभकँ पढ़ हुलय।

रुद्र भाइ संग एक दिन जाइ छलौं पूबाइ टाल बाट। आ रुद्र भाइ लक्ष्मीक साग पूनखाकँ गानि देनाइ शुरू कऽ देलखिन्ह। टालवैया सभ कहै, ओकी बताह भऽ गेल छै की? मुदा जखन रुद्र भाइकँ

गानि यढैसँ अछौं रऽ गेलनि गँ दलानयन बैसल ओकरा गनियढ़आ (हुनकन मौसीक जमाय)कँ कहलखिह्न- "सान हौ, अन(0न छह ज हमन नाम लुक्षी नै छी!"

आ ऊ गनियढ़आ हँसिगा आ गनियविगा दौगल मान-मान कनैग।

"सरटा मान अछि बौआ।"- हूदा रा०्क अवाजम आव ऊ चंचलगा नै छहि। हम गम्भीनसँ चंचल रऽ गेल छी आ ऊ चंचलसँ गम्भीन।

हनी रा०् गामम दाकान खालन छला, वउ महनगी मूदा बैंक ओहन लाककँ लान नै दै छै। ज सर सनकानक या०् यवा जा०् छै वा अगिला ओलक्कनम मृधक मान्हीं रट जवाक ०्न्कजानीम नहै छै गकन बैंक लान दै छै। कानध ऊ कमीशन दगै मूदा दाकान नै खालगै। हनी रा०् दाकान कनै छथि, महनगी छथि मूदा ग०् सँ की। व०्मान नै नहथि ज ओकक दु हिसाव लिखिगथि वा उग्धी मानिगथि, गङ्गाक दाकान अखना चलिय नहल छै, हनी रा०्क उधानी किया नै दलकहि मूदा घनाउी वचि कऽ कनजा चूकलहि आ वम्बै चलि गेला। ऊन्धऽ खाललहि मि0ा०्क दाकान आ दावनयन हनसँ घनाउी दियादसँ किनलहि आ हुनका घनहट छलहि।

हनी रा०्क वटाकँ कितनीक दिक्का छै, मूदा नागि खुव चनहउ। क्रिकटम स्थानीय चैंपियनशियम उवल सञ्चूनी मानन छलै, शिनसनाक

एम.एल.ए. द्वारी दलकेँ। मूदा हूनका यनाछ रलायन (गांगु राॢ कहलथि- ध्वन, असलका कार्कट (गह्वला क्रिकट चैम्पियनशिय (थाउव नहि, टनिस (गह्वला नहि, नै यैतक जनूनी, न हलमटक, स नै न कहलथि।

हूदा राॢक वटा उाना सर किछु ठीक वाजै छथि मूदा कनी मनकाह वूसायल। उाना काना गला वाग नै वाजै छै। वूसनूक वूमि यउग। मूदा काना वागयन अति नहग, जना वाजग- नीलू दीदीकँ हम वम्बेम दखन छियथि, हूनक गँ ॢी राय छथिन्ह। नीलू दीदी कहिया वम्बे नै (गल नहथि गाधनि। मूदा ॢी अति (गल ज हम दखनहिय छियथि।

हनी राॢक समधि दिल्लीम एकटा नजीतन्नियल सासाॢटीम माली छथि। हनी राॢ मिसनटालीक छथि, ठकूनटालीक वगलम, प्लगम माटा-माटी यूना यछिमा टाली आ अदहा मिसनटाली साह रऽ (गल नहि नै गँ आॢ ॢी टाल नहिगै, टाली नै।

वटाक कितनीक □यनशन दिल्लीम रलथि, वटाक नाम सननन। हनी राॢक सर दियाद कनकमान। खाली हनी राॢ वम्बेम छथि, टालक आन सर (गाट दिल्लीमा। स वावू मिसनटालीम एकगा छै। काना काज-उद्यम हाउ, दिल्लम वा गामम सर यहुँचिग टा छै।

"वूति छथि सर (गाट कि? एतनाम्स नै रल छथि, हमन टाल दखियौ एतनाम्स छै, ककना ककनासँ मगलव नै, सर अयनाम रना।"- वउावावू टालवैया सरकँ सूना कऽ कहै छथि।

हुनि काकाक दिन बीति गेल, एक बेर हुनि गाममे भेँट भेल रहथि, हुनकर बचियाक बियाह रहन्हि आ हम काकीक काजमे गेल रही।

२

ओ सँ पहिनहियो नवी मुम्बई कएक बेर गेल छी। कोरोनाक समय शुरू भेल छलै, तखन पहुँचल रही।

जाहि काल एयरपोर्टपर चेकिंग शुरू भऽ गेलै, पुलिसक नै ताण्डवक! कोन ठामसँ आबि रहल छी, दिल्लीसँ आ ओहूसँ पहिने कतऽ रही? दिल्लियसँ आबि रहल छी? जाउ बाम दिस, फॉर्म भरू, सभकेँ क्वारन्टाइनमे रहऽ पड़त सात दिन। अहाँ, दुबइसँ? दुबइसँ दिल्ली, हुनि मुम्बई। दहिन दिस जाउ, फॉर्म भरू, अहाँकेँ सरकारी क्वारंटाइनमे रहऽ पड़त, सरकारक खर्चापर, मुदा पहिने हिनका टेस्ट लेल लऽ जाउ सिस्टर। हम बाम दिस बला छलौं, से सभ क्वारंटाइनमे अपन गेस्ट हाउसमे विदा भेलौं। टैक्सीमे लागल एफ.एम. रेडियो पर कोनो रेडियो जॉकी बाजि रहल अछि जे पहिल विश्वयुद्धक समाप्ति भेल १९१८ मे आ लागल जे एकरा आपद खतम भेल। मुदा तखन दोसर आपद आबि गेल आ ओ आपद छल स्पैनिश फ्लू केर, विश्वमे १० करोड़ लोक मुइल आ भारतमे ८० लाख। ओहि समय जनसंख्या कम्मे रहै विश्वक।

हमर क्वारंटाइन अवधि जहिया खतम भेल तहिया लॉकडाउन शुरू भऽ गेलै। स्कूल कॉलेज, दोकान, हाट-बजार सभ बन्द। गेस्ट हाउसमे टी. वी. खोलू तँ डिप्रेशन भऽ जायत।

कहुना लॉकडाउन खतम भेलै, किछु ▯दिनसक काज सम्पन्न कS हम घूरलौं।

मुदा ओ दिनुका बात किछु आन छलै।
ओ दिनुका यात्रा यात्रा नै, कालाराक बीचमे हमर प्रस्थान छल, नदी मुँहे लेल। अनचोक्कामे हमर ट्रांसफर भS गेल छल। आ अनचोक्कामे भS पहुँचिते लॉकडाउन शुरू भS गेलै। बातचीत लागल जेना काढ़ु लागल हुअय।

बात मारामारी खाली, खाली साइरनक अवाज बला गाडी। पुलिसक नै एम्बुलेन्सक साइरन। संडकक दुनू कात ओही साइरन अननास बजैत रहल।
▯स्थीजनक लेल लाइन लागल। गहुम की ज सिलेण्डर अयन आनु आ डाइम अपनाँके ▯स्थीजन भेनि कS दS देत। सिलेण्डर भेटबे नै करै।
चानू दिस अविश्वास। लोक कहै ज हॉस्पीटल बला सभ जानिमे मुह ढकबा उठ। दै छै। ▯स्थीजन खतम भS गेल, समतिजनित इंजेक्सन आनु नै गँ यथेष्ठ नै बचल। पाँच हजारक समतिजनित इंजेक्सन २७-३० हजारमे ब्लैकमे भेटै।

मास्क लगनामे बनिया नै छै, स स्वतन यथा चलल। मास्क सभा कतेक गनहक मुदा ७न-९७ सभसँ नीक।

“यहिना हॉस्पीटलमे स्त्री कऽ ललक आ कहलक जे ईलाज ग्राम शुरू नै हएत जाबत कानाक टस्ट-रिजल्ट नै आउत, मतिकल काउन्सिलक गाईडलाईन छै। चारि दिनमे कानाना टस्टक यनिणाम अबै छलै। एक दिनुका बाद कहलक जे प्रशासन एकरा कानाना हॉस्पीटल घाषित कऽ देलकै, एतऽ सँ जाउ। हून दासन हॉस्पीटल गेलौं। तीन दिनुका बाद जखन कानाना रिजल्ट आबि गेलै तखन ईलाज शुरू हएत, डाक्टर सलाह कहलक, मतिकल काउन्सिलक गाईडलाईन छिऐ। तीन दिनुका बाद रिजल्ट आबि गेल, कानाना पाजीटिव। आब डा हॉस्पीटल कानाना हॉस्पीटल नै छलै से डाऽ कहलक, एतऽ सँ जाउ। हून यहिलुका हॉस्पीटल एलौं, हून ईलाज शुरू भेल। लाककँ एकाटा सिलिन्डर नै भेटै, हम आ0 टा क इन्तजाम कऽ देलिऐ, लाककँ एकाटा नमतिजनिन नै भेटै हम छअ टा देलिऐ। चौदहम दिन डा मरि गेला। याई यैनदी किछु काज नै आयल।“

“हमर शीजन 60क नीचाँ चलि गेल, शीमीटरमे। ककरा हॉस्पीटलमे बेड नै भेटै। हुनू सहकारीक हान हॉस्पीटलवला सरे नै उठबै। हमर कनियाँ कहिया घरसँ नै निकलल छलि, हाउसलाईफ। यरा नै कऽ सँ डाकरामे शक्ति आबि गेलै, करा हॉस्पीटलमे बेडक इन्तजाम कऽ ललक, करा नमतिजनिनक इन्तजाम कऽ ललक, यरा नै। घर घूरा आनलक। एक मासक बाद हमहीं कहलिऐ जे आब कर हिस जाय दिअ, देखि आबै छी। यहिना हम खाईम करा यनहज नै करै छलिऐ, आब कनियाँ चारि दऽ दन अछि, रानमे ई , बनूयहन ई, दिनमे ई आ नागिम ई।

उाकन काना गय आव कना नै मानवै? हमन मामाक रहान आवै कनियाँ लग, लॉकडाउनमे आवि गेँ नै सकै छला। कनियाँ मना कलकै, मुदा जवर्दस्ती अकाउन्टमे पचास हजार दऽ देलक। मुदा कम्पनी एक मासक दनमात्रा काटि ललक।“

गेस्ट हाउसमे एकटा निराशा आ एकटा आशाक स्वप्न, तानन दर्शन सन।

कखना समाचान सुटय ज मद्दिहन रैयाक जमाय ग्रटन नायडामे हॉस्पीटलमे १४ म दिन समाप्त कऽ गेला गेँ ▯रिसक कलीग घानकन सहा १४म दिन खतम कऽ गेल।

“यदि सातम दिन वाखार नै उतरल गेँ वूझू ज कानाना जीत गेल, आ अहाँक शरीर हारि गेल। आ तकन वाद ▯क्सीजन सिलण्डन आ नमतिसविन दुनू मात्र संगहि लल छै। आव गेँ ▯क्सीजन सिलण्डनक वदला एकटा कंसन्ट्रेटर सहा आयल छै, अस्सी-अस्सी हजानक। मुदा एक तनहेँ ई वीमानी नीक छै, चौदह दिनमे जेयान कि उाक्‍ यान, कसून, वा कितनीवला विमानीमे गेँ घन-घनाडी विकलाक वाद मृत्यु हाइ छै वा जान वचै छै। मुदा सुनै छिऐ ज कानानाक वैक्सीन रहाउनल सुजयन छै, मुदा डब्लू.एच.ओ. आ मेडिकल काउन्सिल दुनूमे एजेंट सन छै, तानाक वैक्सीनकेँ देखवै रहल कऽ देलौ। देखै नै छिऐ यहिन जखन मास्क नै वनै छलै गेँ कहै छलै ज गमछा लपेट लिअ, आ आव कहै छै २-२ वा ३-३ टा मास्क पहिनू। टलीविजनपर कहै छै नमतिसविनक जरूरी नै छै, आ तखन ई गय हॉस्पीटलक डॉक्टनकेँ किए नै कहै छै, ज डासन

सरकैँ योगेन रहिनवै छै? यदि कहै ज साबुनसँ हाथ धोउ, आर कहै छै ज सनीटाइजरसँ साफ करू। कखनो कहै छै स्टीनाइत जनुनी नै अछि, आ सम्राइ आवि गेलायन जनुनी रऽ जाइ छै।
“

ई शासन मास्क वला व्यक्तिक समर्थन निनाश आ आस दूनू मूनवला व्यक्ति कलक।

“सातम दिन वाखान नै उतनल गँ?”- हम पूछै छिऐ।
“तखन वृसू मृत्यु जीत गेल।”

३

छठम दिन छिऐ, वराक वाखान १०२-१०३ सँ घटिय नै नहल छै। कानाना याजिटिव अछि। ई सरर नइी दिल्लीम आ हम नवी मुम्बेम। इहन दिनशजीक वरा सहा दिल्लीम गुजनि गेलन्हि। □हिसक एकटा वएका हाकिम संग गेल कर्मचारी वग्रा हॉस्पीटलवला डॉक्टनसँ वकम्मक कऽ ललकै, गँ वएक रल गय मना कऽ दलकै। हुन हूनका दिल्लीक वगलम वहादुनगढ़म रुमी कएल गेलन्हि।
“मनि गेला, कानाना निगेटिव रऽ गेल छला। सात दिनम वाखान नै उतनलनि, जा कऽ उतनलनि वानहम दिन। ठीक रऽ नहल छला। मुदा लंग खराम रऽ गेल छलन्हि। हम देखन छिऐ एकटा एक्स-न, जना मूस कुट्टी-कुट्टी कऽ काटि दै छै तहिना कानाना लंगकँ कुट्टी-कुट्टी कऽ दै छै। कानाना निगेटिव रैया जायत गैया जान नै

वाँचा। सन, हमन छाट राꣳ ꣳपियन स्याꣳनल ꣳजनीज सप्तनम अछि, मूदा कहि दन अछि ज वत उा नै दिआ सका। हम दहनादुनक नम्काम एकटा हॉस्पीटलम वतक ꣳगजाम कS लन नही, ज सागम दिन जहन वाखान नै उगनौ वहीनकँ, दिल्लीसँ लS कS विदा रS जायव। नएह वहीन जकन किनायदान घन खालिय नै कS नहल नहे, जकना चानि चमटा दS कS हम सासाँम निनाल्लन नाखि दन नहिउ ज उँ हमना नहो गुँ हमन वहीनक घन यचा लम, गँ सएह हाꣳ न ज हम जहन खा ली, खिम्रा सुननहिय गँ नही। मूदा छअम दिन वाखान उगनि गेलौ।"- दिल्लीसँ एकटा यनिचिगक हान आयल।

यग्नी चिन्हिग छथि। मदान्हासँ □नलाꣳन कंसलटन्सी कनवलहि। उाकन प्रसिद्धिन क्लाइंयेयन हमना आ अयना रौजी-राय सरकँ य0। दलखिहृ। हमना क्लाइंयेयन आयल। हनी राꣳ, हूदा राꣳ सर कहलहि य0वेला। सरकँ य0। दलियहि। असीन राꣳ कहलहि ज नएह यूर्जा काज एलै, कागका गोटकँ उा दलखिहृ, गामाक लाककँ आ वाहनीयाकँ, आ वादाम। संमानयूनम सहा, नꣳी दिल्लीम सहा आ ननी मूम्बेम सहा याजिटिनिटी नट ३३ प्रगिशग नहे, मान जँ ३ गोट कानाना टस्ट कनलक गँ एक गोटक याजिटिन आ दु गोटक निगेटिन नियाटे आवे, मान एक गिहाꣳ लाककँ कानाना संक्रामिग कन नहे। आ गामम सरकँ यटयटा हनै नहे वाखान, युना गाम दूखीग, गाम मान गामटा नै, संगम ननी मूम्बे, दिल्ली, नायता आ ग्रटन नायता आ आना आन 0गम नहनिहान गामक लाका। मूदा चानिय-याँच दिनम असली गामम लाक सर 0ीक रS जाꣳ गेल,

मुदा नवी मुम्बई, दिल्ली, नायता आ (ओटन नायता आ आना आन ठाम नगर सर जे बसौलक गाम छाड़ सँ सर दिन काना न काना मुद्दाक समाधान आबिये रहल अछि। गामसँ बसी गामक लाक गँ आब जे सर ठाम बसौ। नवी मुम्बईक बसाउल गामसँ लाक गाती घाताक आस छाति याँन यैदल विदा रऽ (गला, अयन असली गाम दिस। नतिया जॉकी करि रहल अछि जे ॰॰ी १९४१ क रानग निराजनक समय रल यलायनक बादक सररसँ यैघ यलायन अछि।

रुद्दारा॰॰ ठीक रऽ (गला। रुनी रा॰॰क बटाकँ १७ सालसँ कितनीक शिका॰॰ग छलहि। रु आ॰॰ रु कालि, उा खय (गल, आ रुनी रा॰॰ डाकनासँ यरिनरिय कानानाग्रस्त रऽ सिधानि (गला।

-गामम चानिय-याँच दिनम सर ठीक रऽ जा॰॰ (गलै? बसीसँ बसी छअम दिन धनि? सागम दिन गँ ७का (गारकँ बाखान नै नहि। गँ गामम ७कारा घटना नै घटलै कि? डागुका रुवा सारु छै गँ लंग (रुरु७ा) मजगुग छै।

रुम ७गऽ नवी मुम्बई म लॉकडाउनम छी आ डागऽ न॰॰ी दिल्लीम ॰॰ी अछि

सागम दिनक नाति। आ॰॰ सागम दिन छिउ, बटाक बाखान नै उागल छै।

न॰॰ी दिल्ली

१

नॐी दिल्ली।

३१ दिसम्बनक नागि। आव एक गानीख रऽ (गेलै। नगुका शिक्षम रुम छी।

कानियासँ जेल एकटा स्त्री रुमनासँ यूछैए, ॐी नव एयनयार्ट अछि की? रुम कहै छिऐ- हँ। आ यूछै छिऐ- किए?

उा स्त्री कहैए- नै, रुमना लागल, किएक गँ छुरु मास यहिन जेल नही।

-हँ यहिन टर्मिनल दु यन अहाँ जेल रुएव, ॐी नव टर्मिनल छिऐ, टर्मिनल- गीन। नीक लागल अहाँकँ?- रुम यूछै छियह्नि।

-वउ नीक लागल। एयनयार्ट नै, स्टाटल सन लागि नरुल अछि। ॐििया आव मजगूत रऽ नरुल अछि। - महिला वजै छथि।

नगुका शिक्षम रुम छी। गखन गामसँ एकटा रहान रुमन मावाॐलयन अवैए। रुमन महिला सरुकर्मी हँसी कनै छथि- गामसँ रहान जेल रुगह्नि, आव रुन ॐी मैथिलीम गय कनगा, रुम सर राषा वूषै नै छिऐ, मी० राषा छै, गँ रुमन सरुक खिर्वाएगा कनैगा रुगा गँ रुमना सरुकँ यगा नै चलगा।

३१ दिसम्बनक नागि छिऐ। आव एक गानीख रऽ (गेलै। मूदा दुर्घटना वानरु वज नागिक यहिन रुल छलै। लहाशक जवीम मावाॐल नहि। गीन वानिटा अँगिम वन ञायल कयल (गेल रहान नम्बनयन यूलिस उाहि मावाॐलसँ रहान कलकै आ सूचना दलकै ज

जकर ध्यानसँ पुलिस ध्यान कऽ रहल अछि, से आब ई दुनियाँमे नै रहल।

मध्य रात्रि। एक्स-रे मशीन आ स्क्रिन ताकब छोड़ि ऑफिससँ छुट्टी लऽ हम विदा होइ छी।

ई एयरपोर्ट बाहरसँ कारी सजल-धजल नवकनियाँ सन लागि रहल अछि। रातिमे बाहरसँ हमहुँ नै देखने रहिऐ ई नवकनियाँकेँ। ठीक कहै छल ओ महिला। होटल लागि रहल अछि, प्रकाशमे चमचमाइत।

गाड़ी आगाँ बढ़ि रहल अछि। नई दिल्लीक रात एक बाजन करा हऽ गेल। दिनमे तँ तीन मिनट प्रति किलोमीटरक गति रहै छै ई सड़कपर। मुदा रातिमे खाली रहने चकरगर लागि रहल अछि।

मुदा ई यमुना-पार अबैत, नई दिल्लीसँ दिल्ली। रात पार होइत जाइत। भजनपुरा, खजूरी खास। दिनमे तँ गाड़ी एतऽ आबिये नै सकैत। बिजली सेहो कटि गेल छै। सड़कक दुनू कात गह्वर पसरल।

गाड़ी गलीक कातमे लगा कऽ आगाँ बढ़ै छी। गली पार कऽ हिलैत सिनही बाट अमनक घर पैसै छी। कुत्ताकाहट उठल छै।

दिल्ली.. इण्डिया, मजगूत इण्डियाक राजधानी नई दिल्लीक ईहो एकटा इलाका अछि। कानियन महिला एतऽ नै आबि सकत, भजनपुरा, खजूरी खास। भजनपुरा, खजूरी खास, एतुक्का लोक नई दिल्लीक चमचमाइत घर, ऑफिस, आ व्यापारक पाछाँ अछि, एकर सरक अगिला खाढ़ी हऽ सकैत भूतदाम रहतै.. ताइ आसमे जान

अनायन अछि।
यगा वलैं७ ज लहाश गुनू गग वहादुन अय्यगालम नाखल छै।
उाग्s सँ विद्या हा॰ छी।। वाल स्नास दवा याथ्र यनिस्छिगि नै छै।
गुनू गग वहादुन अय्यगालक मूर्दाघनम माह्गि वावूक वटाक लहास यास्मार्टमक वाद उाकन नक्सम्वृ्षीकँ दल जगौ। यूलिस कहुन नहय-यिगा जीनिगि छथिह्र गखन दासनाकँ दवाक वाग नै छै, नै जिवैग नह्गिथिह्र गखन दल जा सकै छल- उञ्च न्यायालयक आदश छै।
यछिला वन द्s दल गेल नहि आ जखन असली नक्स-सम्वृ्षी आवि क्s कस क्s दलकै गँ गीनटा यूलिसवला निलम्विग स्s गेलै। आ कन काल लल मानि लिअ ज यूलिस दैया दग, मूदा उाँक्तन यास्मार्टम नै कनग। हम घन घूनि जा॰ छी।।

२

अमादक घनम हुनविर्गा उ0 गेलै। दिल्लीसँ ७क वज नागिम हान उल छै, माह्गि वावूक वटा अमन मनि गेलै। दिल्लीम स७क दुर्घटनाम मनि गेलै।
अमादक हानयन हान उल छै। अमाद माह्गि वावूकँ कना की कहुगौ। गफा-सिहुन कटा क्s ७क्काटा वटा माह्गि वावूकँ, चानिटा वटीयनसाँ। यनूकँ वियाह स्ल छलै।
अमाद माह्गि ककाक दनवज्ञा लग यहुँचै७। हाक दै७। काकी अवै छथि। माह्गि वावू गामम छथिय नै। वहुना॰क मृत्यु-संम्पानम स्ाग लैल गेल छथि। अमादकँ ॰ी गय काकी कहै छथिह्र।

-𑒮 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧?- 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒣𑒴𑒕𑒻 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯।

-𑒢𑒻 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒁𑒥𑒻 𑒕𑒲। 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒪।

𑒯𑒧𑒩 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒒𑒩𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒕𑒰𑒩𑒲 𑒏𑓄 𑒥𑒜𑓃𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒯𑒧𑒩 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒞।

𑒮𑒩𑒥𑒢𑒏 𑒠𑒩𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰𑒣𑒩 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒯𑒳𑒿 𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒻 𑒕𑒱𑒋, 𑒏𑒰𑒏𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒮𑒩𑒥𑒢 𑒔𑒾𑒏𑒲𑒣𑒩 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩 𑒛𑒰𑒏𑒩𑒰 𑒅𑒚𑒰𑒥𑒻𑒞 𑒂 𑒮𑒩 𑒑𑒨 𑒏𑒯𑒻𑒞। 𑒮𑒩𑒥𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑒰𑒏𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒼 𑒂 𑒏𑒰𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒃𑒞।

𑒣𑓂𑒩𑒝𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒰𑒮 ....। 𑒏𑒰𑒏𑒲 𑒑𑒰𑒿 𑒥𑒑𑒰𑒯 𑒦𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒑𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒕𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒰𑒅, 𑒏𑒰𑒏𑒲𑒏 𑒧𑒼𑒢 𑒥𑒛𑓃 𑒐𑒩𑒰𑒥 𑒕𑒢𑓂𑒯𑒱।

𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒑𑒰𑒧𑒣𑒩 𑒋𑒪𑒰 𑒑𑒰𑒿 𑒠𑒰𑒯𑒮𑒩 𑒑𑒨।

𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒧 𑒙𑒰𑒪𑒏 𑒥𑒛𑓃 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒻, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒪𑒯𑒰𑒮 𑒏𑒏𑒩𑒼 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒪𑒼। 𑒢𑒏𑓂𑒏-𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒯𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒙𑒪𑒼।

𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲 𑒢𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒰, 𑒮𑓀𑒑𑒰𑒨 𑒠𑒹𑒐𑒹𑒪 𑒢𑒻 𑒑𑒹𑒪𑒰।

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒳𑒪𑒱𑒮 𑒪𑒯𑒰𑒮 𑒠𑒰𑒯𑒮𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒪𑒼।

𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑒿 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞𑒖𑒲 𑒦𑒩𑒼𑒮 𑒠𑒹𑒢𑒹 𑒕𑒟𑒱𑒢𑓂𑒯। 𑒛𑒰𑒦𑓄 𑒏 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒰𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒼, 𑒮 𑒣𑒝𑓂𑒛𑒲𑒖𑒲 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒹𑒪𑒰।

𑒮𑒰𑒿𑒗𑒧 𑒒𑒙𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒥𑒏𑒲 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒏 𑒠𑓂𑒩𑒢𑒧 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒔𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪। 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒨𑒏 𑒖𑒲𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒑𑒣 𑒏𑓄 𑒪𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱, 𑒙𑒱𑒏𑒙 𑒏𑒙𑒰, 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒔𑒢 𑒏𑒩𑒰 𑒏𑓄 𑒯𑒧𑒩𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒙𑒱𑒏𑒙𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒖𑒼𑒛𑓃𑒰𑒢𑒣𑒩 𑒦𑒹𑒙𑒪। 𑒢𑒥𑒏𑒲 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲𑒧 𑒣𑒲𑒁𑒩 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒥𑒙𑒰 𑒏𑒰𑒢 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒣𑒩 𑒑𑒹𑒪, 𑒏𑒩𑒼𑒪𑒥𑒰𑒑𑒧 𑒏𑒼𑒏𑒩𑒰

दोकान छै पीअर बझाक बटाक। ओ साँझ ओतऽसँ माहिर बाबूकँ मुर्दाघर लऽ अनलन्हि ...
पत्नीजी आ माहिर बाबू पटनाक बस पकड़ै छथि। साँझमे नई दिल्लीक ट्रेन छै। काल्हि राति माहिर बाबू नई दिल्ली पहुँचि जेता आ बेटा जे काल्हि धरि जीवित रहै आ आइ जे लहास बनल नई दिल्लीक मुर्दाघरमे राखल छै- ओकर मृत शरीरकँ लेल।

३

ट्रेन आशाक नगरी नई दिल्ली पहुँचैबला छै, चिमनीक धुँआ आ फैक्ट्री सभ खाम रहलै आ बड़का-बड़का इमारतिसभ, प्रगति मैदान आ की-की आबि गेलै। माहिर बाबूकँ ई सभ बौस्तु पहिने नीक लागै छलन्हि। दिल्ली हाटमे गमैआ बौस्तु सभक स्टॉलपर बड़का गाड़ीवला सभ उमड़ि कऽ समान कीनै छल। माहिर बाबूकँ हँसी लागै छलन्हि। गाममे ई सभ बौस्तु अपने पड़ल रहै छै, कियो किननिहार नै। ओ पानदेखी सभकँ गामक लोक सभ फेकऽ अपने ओहिना छै।
मुदा आइ ई नई दिल्ली हुनका लेल मुर्दाघरक पर्याय बनि गेल छन्हि। गुरु तेग बहादुर अस्पतालक मुर्दाघरमे हुनकर बेटाक लहास राखल नकसम्बन्धीकँ देल जेतै।
पिता नकसम्बन्धी बनि पहुँचैबला छथि।
माहिर बाबू मुर्दाघर पहुँचि जाइ छथि, पहिने बूझल नै छलन्हि जे नई दिल्लीमे सदति मुर्दाघर होइ छै, बिजली-बत्तीवला शहर नई दिल्लीमे.....

नई दिल्ली। के बसलकै, कोना बसलकै। अंग्रेज जहिया कलकत्तासँ दिल्ली राजधानी बनबाक विचार केलक तखन तँ एकटा गामक लोक ओतऽ नै होइतौ।

आ आब ...

हम सभ हॉस्पीटल पहुँचल छी।

मालिक बाबू पण्डीजीक संग हॉस्पीटल पहुँचि जाइ छथि। हम रनि-याँज मालिक बाबूकेँ पकड़ि कऽ बैसि जाइ छियन्हि। डॉक्टर कागजपत्र साइन लऽ लइ छन्हि। पोस्टमार्टम शुरू भऽ जाइ छै। मालिक बाबू हबोढकार भऽ कानऽ लगै छथि।

-गामक छोटू कोन टोलक, कोन घरक लोक ओहऽ नै छै। सड़क दुर्घटना सभ भेल छै। मुदा बचि-बचि जाइ छलै। अपना बचि जाइतौ तँ काफी नीक होइतौ। अपंगो भऽ कऽ रहितौ तँ देखबा तँ करितियौ। पीअन बच्चाक बेटा कहलक जे कनियाँ सभ कलकत्तासँ दिल्ली आबि गेल छै। ई कनियाँकेँ आगि नै देबऽ देबै, छौमासक बच्चा छै। बच्चा लीला भऽ जायत। नै, हमहीं देबै आगि.. आन देबा करतौ तँ अन्तिम दिन तँ उजरी कनियाँक गराम आबिए जेतौ। तँ हमहीं देबै आगि। ओह.. ओक्कीस बनबाक तँ छै, छौंकी सन शरीर छै कनियाँक। चारिटा रहइ छै, सरह कलकत्तामे, सरह ओकरासँ पैघ। ओकर जीवन कोना बीतौ। ओ बूढ़ शरीरसँ बच्चाकेँ हम कोना पोसबै। कोनो धनीक नहि छै, नोकरी लेल पठबैत छै.. पीअना बच्चा तँ पठेने छथि अपन बच्चाकेँ। ओकरासँ बेसी के छै धनीक गाममे? हमरा तँ

दस कट्ठा जमीनो नै पुरत... नै देब... कहै छलिऐ जे हम नै जाएब नई दिल्ली...... संताप देखेल की जायब? मुदा कहलकै जे लाश नै देत, पोस्टमार्टम नै हेतै। आ आब आबि गेल छी तँ हमहीं देबै आगि।

-नै, से नै हएत, बाप कें आगि देलकैहँ... अहाँकेँ अश्मसानघाट नै जेबाक अछि। सभ पुरना गप बिसरि जाउ... ओकर बापसँ न अछि मतान्तर, पितियौतकेँ देबय दियौ आगि... ओ परिस्थितिमे पुरान गप बिसरि जाउ।

-नै, से सामाजिक प्रति हमरा कोनो तरह आन भावना नै अछि।

ठीक छै... सुमनजी दौ आगि।

पोस्टमार्टम होइत होइत बरुपहर भऽ जाइ छै। ओतऽ सँ पोस्टमार्टम कयल शरीर, पट्टीमे बान्हल, आंगन लेल पण्डीजीक निर्देशनमे विदा होइत अछि।

४

उन्नैसम शताब्दीक पहिल दशकक अन्तिम रातिक घटना, आ ओकर बापक टूटल प्राणसँ साँस।

उन्नैसम शताब्दी, मुदा नै छै कोनो अन्तर। पहिनावा आ पुरुखपातकेँ छोड़ि दियौ। महिलाक स्थिति तँ तेहन, कनकनाइत बसातसँ बेसी मानुख।

हा७म ठुकल जा०्ू१ अछि। कमला का१ नै यमूनाक का१। हजान मा०्ूल दुन गामसँ आवि। मिथान हा०्ू१ अछि खन७खनाली काकीक (श्वा१ नच्छ। सा०्ू0 साल पूर्वक न७ह खिस्सा, न७ह समाज, मात्र यहिनावा वदलि (गल, मात्र धान वदलि (गल।

यास्हमार्टम कयल यह्री वाहल शनीन हॉस्पीटलसँ आंगन आनल (गल। यह्रीजी संग आयल छथि, स्किणप्रह्नु, कह्नाषाहटक वीच, अयन काजम लागल, निर्विकान रावँ। (गायीचानन, गंगौट, माला, उञान नव नच्छ, मूँह्म गुलसीदल, सूवर्ध खण्ड, गंगाजल, कूश यसानल रुमि, गुलसी गाछ लग आंगनम, उण्हन मूँह यास्हमार्टम कयलह्नि शनीन। हन उा१sसँ यमूना का१ विदा रल करिहानी...
कनकनी छै वसा१म, हा७म ठुकि जा७१ ०्ूी कनकनी, यास्हमार्टम कयल शनीन आव नाखल अछि, यमूना किनानयन, सा१टा माटका शिह्नयन। आव ज७१ कनीकालम, (गा०्ू0ाक आगिसँ ज अनलह्निहँ सूमनजी, नाखि दलह्नि नीचाँ।

कनकना०्ू१ यानिम तुम दs सूमन जी सहा नव उञान नच्छ यहीनि, जनौ, उण्हनी यहीनि, नव माटिक वर्तनक जलसँ, गकूशासँ यूव मूँह मंत्र यढ छथि आ उा०्ू जलसँ मृ१ककँ शिक्क कनै छथि, नामा हाथम जक लs आनल (गा०्ू0ाक आगिसँ आगि ल०्ू छथि, (गा०्ू0ाक आगिसँ धधककौ१ छथि, गीन वन मृ१कक प्रदीजमा कs मूँह्म आगि अर्यि१ हा०्ू१ अछि। शनीनकँ गनि-सञ्जनि दवा लल। आ कs दलह्नि अग्निकँ समर्यि१। गृम, का0 आ घृ१ संग।

सागटा भिल्लयन नाखल ऊा शनीन, अग्नि लीलि सुडारु कनग कनीकालम।

लकठी कना नाखल जाठ ग॰॰यन दु गोटम वरुसा-वरुसी रुऽ नरुल अछि। लगैठ मगठा रुऽ जौ। यरिल गोट करि नरुल छथि-ठना लकठी नै गायल जा॰॰ छै, कगवा घी कर्पून दवै आगि नै धनग। यह्मीजी दुनुकँ शान्द कनैग छथि, किछु काल आन।

सागटा भिल्लयन नाखल ऊा शनीन, अग्नि लीलि नरुल सुडारु कऽ नरुल।

ठकटा यनिनान रुनसँ वनग आ गीस वर्खक वाद दखव ऊाकन यनिगाम। गाधनि रुाठम ठुकल नरुग ॰॰ी सर्द कनकनी, ठे वसागक कनकनीसँ वठ वशी सर्द। सरु ठे दिल्लीयम नरुगा, दिल्लीसँ लठवा लल ठकना न॰॰ी दिल्ली वनवा लल। आ ॰॰ण्डियाकँ मरुाशक्ति वनवा लल, अयन प्रगतिक आशाम, अगिला खाढी लल ठाक गँ वलिदान दवैठ यठग, ॰॰ी सावैग।

कयास, का0, घृग, धूमन, कर्पून, चानन, कयागवश मृगक। याँच-याँचटा लकठी सरु द॰॰ छथि।

कयागक दश्व शनीनावशेष सन मांसयिण्ड रुऽ गेलायन, सगकाठिया

लऽ सातबेर प्रदक्षिणा कऽ, कुरहड़िसँ उठाए उकरकँ सात छौ मानि खण्ड कऽ, सात बन्नकँ काटि सात सनकठिया आगिमे फेकि बाल-वृद्धकँ आगाँ कऽ गती-धोती बचबैत नहाए ल जाए छथि, तिलाञ्जलि माता-तिल-जलसँ, बिनु देर पाछर, मृतकक आँगनमे सभ पहुँचै जाए छथि।

भरि स्नानपथ क्रमसँ लाह, पाथर, आगि आ पानि स्पर्श कऽ सभ घर घूरि जाए छथि। तेर मासक बच्चाकँ कानाम लेन मायकँ छाती, एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक शासन साँमम।

गह्वर

१

शालिग्राममे छिद्र होए छै, कारी पाथर मात्र नर्मदामे भेटै छै।

आसपास गाममे सेहो किछु बदलल अछि, ग्रामदेवताक तिरुवान स्थानसँ लऽ कऽ सेहो ठाम मुदा किछु ने किछु आधुनिक वस्तु देखिय पड़ल छै। मुदा हमर गामक काया लऊध भेलऽ नै अछि।
गाछी आ बाध बोन सभटा यथावत् गेल अछि। सेह बखो। विष्णु आमक ओ गाछी। बीहनि सभसँ पहिल। साँझ-साँझक चिड़ै-चुनमुनी आ ठाढ़ पैघ जीव-जन्तु। नाना नदी। जेठसँ अगहन खुनबनिआ लागी लग गय कनैत हम आ मालती। कहिया फागुन-चैतमे जाड़क गँ लबढ़लाक लागी लग गय कनी। मलकाका, कुमुद, दंट, कमलगट्टा कहू, बकार विसाँढक गोकिम कादा-पानिमे घूमैत हम आ ओ। खूब यजन, काँट-कुसक बीच भजान-भजयि कऽ कूदैत। आमक कलमम सापघनिया खेलाइत। हम आ मालती। कनवीनसँ बढ़ैत अयन काल्पनिक-घर। ओकहना, दालाना, जटाधारीक बीआ रोपि साल जागैत मालती। मालती सेहो हमर बहसक। माय कहैत छलिय जे मालती छह मासक जे छल हमनासँ मुदा पिता कहैत छलथि जे छअ मासक ठाढ़ अछि मालती हमनासँ। आ पिता स किए कहैत छलथि से बादमे जा कऽ ने बूझलिऐ।
रनि आमक मास आमक गाछीक दिनुका ओगरवाहीक राग हमर दूनू गोटयन छल। मुदा साँझ हवासँ पहिने हमर मामा बच्चनू आ मालतीक बाबू खगनाथजी कलम आबि जाइ छला, ताकि ओगरवाही लला। मुदा हमर सभक गामक काया लऊध भेलऽ सेहो नै अछि। हमर सभक मान बचन आ मालतीक।
मुदा ओइ पक्काक तिरुवान स्थान लग कानी बंगक शालिग्राम हम ताकि नहुल छी। छिद्रयुक्त शालिग्राम। ओकटा बूका कऽ नखन छलौं

छन्हि कनी।
गोँआ सभ धनि खूब खर्चा करत अछि जे तिरुवान स्थानक मंदिर बनवाय। एहिमे गोँ किछुओ नै रहै। नाजा ज बनलक पाखनिक घाट आ एकर कारण एक्काक महिन सञ्ह। मूर्ति बनाना पूजा कैया नै सकला। लाजक ड्रान हमर जे गामम आबिया नै सकला।

२

हम कशर, गाम मंगरौनी, ररौर सूल्हनी, पराशर गोत्र, कनि मधूनायणिक पुत्र। मालती- माधुर सिरौल मूलक काश्यप गोत्री खगनाथ झा, गाम जमसमक पुत्री मालती।
खगनाथजी आ हमर मामा बचपनम रहजार लागल। जमसमम हमर मामा गाम। मामागाम धनि सुखिगर, हम सभ गोँ दनिह्न। स हम एक मास गरमी छुट्टि आ पन्द्रह दिन दुर्गापूजासँ छठि धनि मामगामम रहैत रही। गरमी छुट्टिम सभटा एकवासँ लऽ कऽ कलकतिया आम एकवा धनि गाछी डागरी। आ दुर्गापूजाम षष्ठीसँ लऽ कऽ हसान धनि दुर्गापूजा देखी। हरु दीयाबातीम करसूपती जनावी आ छठिम गाम घूमि जाइ। आ बीच-बीचम जाइत-अबैत गोँ नहुव कनी।
मालती संगे खूब झगड़ा सेहो होइ छलय। बौथाम नहि प्रायः। गरमी छुट्टिम मामा गामक आमक गाछी गेल नहि। काना गपपन मालतीसँ नुसा-फुल्ली हऽ गेल। धनि बौसलक मालतीय। आ बौसवा कना कलक।

-हम अहाँसँ बड्ड मानै छी ओहि गायक लेल।

-कोन गाय।

-ओहि गायपर अहाँसँ झगड़ा भेल।

आ ओ गाय ने हमरा मोन पड़ल आ ने मालतीकेँ। मुदा हम मालतीसँ कहियो कोनो गायपर हम झगड़ा ने केलौं। तैयो मुँह फुलाबए गै हमरो पुछिते जे कोन गायपर मुँह फुलेलौं से गै मोन नहिये होएत तखन अनेर ने झगड़ा करै छी।।

गरमी तातिलक बाद दुर्गापूजा आ दुर्गापूजाक छुट्टीक बाद गरमी तातिलक बाट जोहए लगलौं। से कहियासँ, से की मोन अछि?

३

पिता गाममे बटाइ करथि। मिडिल स्कूलक बाद कोनो स्कूल नहियो रहै आस-पड़ोसमे। संस्कृत पाठशाला सेहो बन्न भऽ गेल रहै। से तातिल बला कोनो बात आब रहब ने करै। भरि साल किछु काज आकि तातिल। नाना-नानी जिबैत रहथि। मायक लियौन करबाबेल किया ने किया आबिये जाइ छलौं। हमहूँ दू चारि मासमे मामा गाम कोनो लाथे भइये अबै छलौं।

गामपर कतेक टा समस्या। ने जानि कोन भाँज रहै जे पाँजिक रजाक गाय पिताक मुँह सूझैत रहै छलौं। आ से हमर बियाह मालती संग भेल टा सँ सम्हर, सदा हुनका मुँह उठौने छलन्हि। मालती हमर संगी मुदा ओ गाय-भैँसँ ओकर हमर दूनी बढि जकाँ गेल। जे सहजता हमरा आ ओकरा मध्य छल से खतम हुअय

लागल। जेना ठाकुर देखिते हुनक मोनमे पत्नीक छवि नाचए आबए लागल छल, तहिना तँ ठाकुर मोनमे न अबैत हुए।

४

हुनक गाम गेल छथि बउआ मामा।

मधुमालती- "बउआ आब अहाँक हाथमे हुनक सम्बन्ध स्वीकार अछि। खगनाथक पुत्री कतेक लेल सर्वथा उपयुक्त। सुन्दर सुशील अछि तँ कतेक सुन्दर जवर्दस्त अछि। एक्के बातीक अछि मुदा किछु दिनुका छोट अछि मालती। हँ, अहाँकेँ तँ ई बुझल अछि जे सात सय टाका लड़कीवलाकेँ दए हुनक विवाह करा हुनक पिता पाँजि बनाओल। मुदा आब जमीन जत्था नै अछि। कालि घाटीकेँ विलम पिया ठाकुरपन बढ़ि कए गेल छला पत्नीकान। सारह कहि देलन्हि जे मात्र खगनाथक पुत्रीसँ अधिकारमाला बनैत अछि। आ स नै हुनक पुत्रानियान श्रोत्रियक श्रेणीसँ च्युत भए जायब हमा।"

बउआ- "हम पूछि लियन्हि खगनाथसँ। संगी तँ छथि मुदा हुनकर मोनमे की छन्हि से नहि कहता।"

आ न जानि किए प्रमसँ भनि गेल छल हुनक मोन। विदा भए गेल नही हुनका संग।

५

मालती- "कतेक। तोहर कथी दासक ठाम वियाह भए जेतौ तखन

हमरासँ रहँट कना हो।"

कमल- "आ पाहुन ककरा दासनासँ विवाह करऽ जेतौ तँ ओहुन अनगेल प्रश्न सभ ककरासँ करब?"

मालती- "मुदा एकटा गप बुझलहीं। काल्हि पाहुन मामा हमर पितासँ हम्मर-पाहुन विवाहक चरचा कऽ रहल छला।"

कमल- "तखन।"

मालती- "नै, सएटा तँ ठीक मुदा तखन हमरंग। बाबाक दुग बनि एक गोटे आबि गेला आ कहऽ लगला जे बाबाक समाद अछि।"

कमल- "बाबाक कोन समाद?"

मालती- "कियक गेलिऔ। मुदा हमर पिताकँ ओ दुग कहलन्हि जे बटीक विवाहक चर्च किछु दिन रुकि कऽ करबा लेल।"

कमल- "पाहुन सुहुनाऽऽ तँ छोरि पाहुन। बाबाक नजरिम पाना लेल काना लटका अएनल छै की?"

मालती- "कियक गेलिऔ।"

६

बाबाक मन्त्रीक सबारी खगनाथक हनवजायन। दुऽऽय दिनम की सँ की रहऽ गेल। ओ दुग जा कऽ किछु कहि तँ नै एलै जे खगनाथ अयन बटीक विवाह लेल धनरुनायल छथि। स समकी दखियौ। लाक सभ गर्दमगोल करैत। सभ स्नागत हाटल। आ हमहुँ सभ चीजक जाएजा लैत रही। साँझ होऽऽत-होऽऽत हमर पिता सहो आबि गेल छला। ओम्हर बाबाक मन्त्रीक सबारी गेल आ एम्हर

हमर पिता माथपर हाथ रखने गुम्म रहि गेला। खगनाथ सेहो मौन।

राजा अपन विवाह मालतीसँ करबाक प्रस्ताव खगनाथ लग पठौने छला। महाराज वीरेश्वर सिंह। कहू तँ। अपन चालीससँ उपर हएत आ ई गनह-चौदह बरखक बच्चियासँ विवाहक प्रस्ताव। खगनाथक की उपाय ? ई उपाय मना करितथि।

हमर पिता चिन्तित ई आब पाँजि नै बाँचत।

उएह दिन साँझमे कनेटा लग मालतीसँ हमर भेँट भेल। कजरौटी सन-सन आँखि फूलल, जेना हफाकार भऽ कानल हुअय। की सभ गप कहलौं मोन नै अछि। हँ आँखिमे हम कहुना धैर्य रहितौ ई सभ ठीक भऽ जेतौ।

७

ओमहर वीरेश्वर सिंह लाल लठकी निहुछल गेल!

ओमहर पाहुन पाखनि खुआउल गेल। उएह मन्दिर बनल ई राजा दासराक मन्दिरमे करा पूजा करता।

मुदा हमहूँ रही मधुश्रावणि करैत पूज करत।

विवाहक दिन लगीच रहै आ दासर काली दिन सेहो नै रहै। आ उएह दिन मालतीसँ सभ गप हएत गेल छलय।

कटही गाछीमे आमक चाय आ पाकलक उलाउ, आमक चाय नीक काटक पाछाँ उलाउ हेलायन गाछी उनरति जेतौ। मुदा हम उहिना गाछीकँ उलाउ कए बँसविट्टी लग मालतीक प्रतीक्षामे रही।

ऊा आयलि आ गाऊीयन वैसि गेलि। ज किया नस्हाम दखय स तग नै टाकय ज गाऊी न ऊनटि जाऽ्ऽ् ७कन। ७कटा यानंगी विऊ दखि ऊल्लसित ह्ऽय लागलि मालती गँ आंगुनसँ हम ऊाकन (0ा८ वन्न कऽ दलिऊ।

मालतीकँ लऽ कऽ गाम आवि गेलौं, धाती नंगाऽ्ऽ्त छल। हन ज मालतीक यता कनवाक लल ७ेल नहय तकना यकाऊि नाखल। आ 'कन्यादान क कनत'क अनघाल रलायन ऊाकना सामाँ अनलौं ज कन्यादान य७ह कनत।

सलमशाही चमनऊ ज्ञ्हा ऊानि धाती यहीनि हम निनाह लल निध सर युर्ध कलौं। मालतीक सीथम सिनून हमन हाथसँ दव लिखल ज नहै।

८

तकन वाद नाजा वीनशनन सिंह की कनत?

यऊीकानकँ वजा कऽ हमन नामम तष्कन ऊयाधि लगवाऊाल। मुदा मधूनायति अयन यूत्रक प्रति गर्वान्हा। वाघक वटा वाघ। याऊि आ यानि अधागामी मुदा खगनाथ सा- श्रीकान्ह सा याँजि, तष्कन कशनक श्रात्रिय ऊाऽ्ऽ्0ाम निनाह कयलायन श्रात्रिय श्रेणी निनाजमान नहताह्नि।

आ स७ वर्खक वाद आऽ्ऽ् ७ गामम काना नाटक हती। सुल्हाना ताकु।

आ हम तष्कन कशन, मंगनौनी ननौन सुहनी- यनाशन गात्र, कनि

मधूनायणिक यूत्र अयन गाथाक काना ओकटा लउघ ओगऽ जमसम गामम गाकि नरुल छी। मूदा नाजा वीनश्नन सिंरुक नओरु याखनि आ आव ढनमनायल मन्तिल दखे छी, ववाना घूनि कऽ लाज ओ गामम ओवा नै कला। आ ॐ अछि ॐ यक्काक तिरुवान स्थान लग कानी नंगक शालिग्राम, छिद्रयूक्त शालिग्राम, आ यओरु याखनि आ ढनमनायल मन्दिन अछि रुमन प्रमक अवशेष।

(×The Robber'- English translation of this short story by the author himself was displayed in Diorama International Film Festival along with other two translated short stories of this collection viz. The Science of Words and The Proven Mahavir https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/)

संघर्ष

१

हाल्लक गेट, गनदासँ सनल। डाल्लम सँ एक-एकटा कागव निकालि मुँहपन नुमाल नाखि मानि नहल छी। डाल्लम सँ किछु काजक नस्ु निकलैत, किछु वकाजक। निधना साहागोक कस-मुकदमाक हाल्लल। मान-अपमानक खागा-खसना। आनाय-प्रत्यानायक प्रकनधक क्राम। वूढ़ महिलाक यूनानस्थाक खिस्सा, किछु सत्य, किछु मिथ्यानाय। यपि आ यूत्रक जीनन। वनक्ष हाल्ला हमन सत्यक सत्याक छाय। किंत चानन घसन नहैत ल्ली वूढ़ी। हगनान यन एगक हनास? ओ उमनम वटाक स्मानक वनवाक जिद्द? हानि आ जीगक गानात्मक वीच, एखन हुन एकटा दासन यटीशन? जिगवाक कान अङ्गा लगन लागल छै डाकना। हानिग नहल अछि हनि जिनगी, गैया!

यहिन गँ कूमानसँ मंतल सनक कहलायन ल्ली काज हाथम लन नही। मूदा आव हमना ल्लङ्का हs गेल अछि, ल्लङ्का डाकन यटीशनकँ यथाशीघ्र दाखिल कनवाक। ल्लङ्का डाकना जिगवाक। ल्ली हाल्लक गनदा, गनदासँ सानल कागव-यत्तन सन। तत्सँ एलर्जी अछैग हम जेम घासिया गेल छी। ओ वूढ़ियाक हानिक नमगन हहनिस्र, गकन सामाँ हमन अयन हानि सत्यक काना लखा नै। एकना जिगवाक जिद्दक आगाँ अयन अप्रययऊ निजय दखाल्ला अछि। सामाँ-सामी

निजय नै गँ ओ बूढ़ियाक माध्यमसँ सम्मानित निजयक पटीशन। हाना गँ ञ्ची बूढ़िया आ ज ञ्ची बूढ़िया जीगग गँ जीगव हम।
ञ्ची बूढ़िया धनि अछि अगनजित। हिसम सरसँ मगठा कन अछि। कार्यालयक श्मा गोट एकन पटीशन आगाँ वढ़वा लल गैयान नै। मंतल सन मुदा एकन सरटा नखना वनदाम्ह कनै छथि। एकन वटा हुनकन वैचमट छलहि। नीक लाक छथि, सज्जन। कार्यालयक कनीय सदस्य सरसँ हमना कहिया काना प्रतियागिता नै हाञ्चए। मुदा उच्च पदाधिकानी सरसँ हाञ्चलायन आ उहिना किछु न किछु हाञ्चा नहिए। मुदा मंतल सन नीक लाक। सज्जन। आ ओ पटीशनकँ दवाक रान उा हमनयन छाठन छथि। बूमल छहि ज अधिकानी सर उाञ्च पटीशनम नढ़नी मानग। आ गखन दासन सर वीचम पटीशन छाति रागि जाएग। मुदा हम गँ स रलायन याछू पति जाएव आ गखन पटीशन दाखिल रऽ सकग हमन बूग। ञ्ची निश्वास छहि मंतल सनकँ।
"अहाँयन सँ हमन निश्वास उठि गेल अछि। एक महिनासँ मुहु घूमा नहल छी। अखन धनि पटीशन नै रल दाखिल कयल।"- बूढ़िया आञ्च लगा कऽ गसन वन ञ्ची सर गय सुनलक अछि आ चलि गेल अछि। पहिल वन गँ हम मंतल सनकँ कहवा कलियहि ज कान हुनम हम सर पठल छी। ओ बूढ़िया लल जान-प्राप्त अनायन छी। मुदा दखु, दस टा गय सुना कऽ चलि गेल। मुदा मंतल सन कहलहि ज- "नै यो। समैक मानल अछि ञ्ची। जहुन लाक सरसँ आञ्च धनि एकना रँट छै, गहुन न बूमा ञ्ची अयना सरकँ।"

ई गन्दा सानल फाइल सभकेँ मुदा आब घोंटि गेल छी हम, बूझू सीखि गेल छी। आइ हुन बूढ़िया ई सभ तय कहि बहार भऽ गेल। हम आ मंतल सन एक दासनाकेँ देखि रहल छी। बिनु हँसन। पराजयक छाह दूनू गोटेक मूँहपर अछि।
“भऽ गेल अछि सब। ओ शुक्र धरि पटीशन दाखिल भऽ जायत।”
“मुदा अहाँक स्थानान्तरण भऽ गेल अछि, शुक्र दिन धरि अहाँकेँ जेबाक अछि।“
“कहलौं न हम। भऽ जायत शुक्र दिन धरि। जेबासँ पहिने दाखिल कइये कऽ जायब। परिणाम तँ बादमे पता लागिये जायत।“
बिनु हँसन, बिनु तमसायल मुखाकृति लऽ बहराइ छी।
कऽ देबै दाखिल एकर पटीशन। हारत तँ ई हारत। जीतत त ई, तँ जीतब हम।

२

साहागो। गढ़ बलिराजपुरक बसिन्दा एकर परिवार। खेती-बाड़ी नीक, तरकारी बचि नीक जमीन-जत्था बनल। छह ठाँउपर हल छली साहागो।
पिताक दुलारि। माताक दुलारि। सभ ठाँउक दुलारि। मुदा मात्र दस बरख। हुन बियाह भऽ गेलन्हि। पतिसँ प्रेम छलन्हि वा नै छलन्हि, ई तय गन्दा लागल कोर्ट फाइलमे नै लिखल अछि। हुनकर नैहरक चर्च मात्र एक पैराग्राफमे खतम अछि। मात्र ई

निश्चय अछि जे पतिक मृत्यु भऽ गेलन्हि जखन हिनकर उमर अठारह बरखक छलन्हि।
मुदा एकटा बेटा भगवानक कृपासँ मृत्युक पूर्व पति हुनका दऽ गेल छलखिन्ह। अठारह बरखक उमर। एकटा बच्चा।
मुदा गरदावला हाइलम नहिये सासुरक कोनो लोकक आ नहिये नैहरक कोनो भाय-बन्धुक कोनो गवाही वा किछुओ भेटल। ताइसँ ई लागल जे भाय सभ अपन-अपन परिवारमे व्यस्त भऽ जाइ गेल हेता। तखन साहागेक ई बयान जे ओ नैहरक दुलारि छली! माय-बापक आ छह भाँइक? माय-बाप तँ बलु बूढ़ भऽ मरि गेल हेता, मुदा भाय सभ?
कष्ट काटि अहुलकँ पढ़लन्हि-लिखलन्हि साहागे। बीस बरखक बेटा भेलन्हि तँ ओहो मृत्युकँ प्राप्त कलक। नीक सरकारी नोकरी भेटल छलै। घरक सभ घुरिआइये रहल छलै। आठ बरखक वैवाहिक जीवनक बाद बीस बर्खक वैधव्य। आब पुतहु अबितो आ नाति-नातिन संगे ओ खेलाइतय। मुदा तखन ई बउयात। मुदा हमर तँ तहिया जन्मो नै भेल छल हएत। नै? सच। बूझु जइ बरख ओ बुढ़ियाक बेटाक मृत्यु भेल छलै, तइ बरख हमर जन्म भेल रहय। आ तकरा बाइस बरख बीति गेल। बूढ़ी आब हमरा समऊ अछि। ओकर बेटाक वैचमट हमर मंतल सन। आ हम ओहो पढ़ैत छी जइ पढ़ैत ओकर बेटा आइसँ बाइस वर्ख पहिल नोकरी शुरू कर नहि। छह मास मात्र नोकरी कर रहय आकि...। शुक्र दिन धरि समय बाँचल अछि हमरा लग। की करू? ई बुढ़िया हहाइल-हूहूइल अबैए। सरकारी कॉलोनीक गेटपर अपन बेटाक मूर्ति

लगेबाक आग्रह लोक सभसँ करैत, कइएक बरखसँ। मुदा एकर मनकाहि बला स्वभावसँ, व्यवहारसँ लोक एकरापर तमसा उठैत। एकरा अर्द्ध-बताह घोषित कऽ देल गेल अछि। मुदा ओ बरु तँ एकर काज किछु दोसर तरहक छै। अहीं सभक किछु करऽ पड़त। देखै छी।

३

“अहुलकेँ मरबाक रहितै तँ अहाँक रिवाल्वरसँ अपन माथपर किए मारितय। ओकरा लग तँ अपन सर्विस रिवाल्वर रहै।“

“श्रीमान्। हमर बेटाक हत्या कयने अछि जटाशंकर। हमर जीवन नर्क बना देलक। बीस सालक हमर तपस्या समाप्त कऽ देलक। एकरा सजाए देल जाय।“

“मुदा जज साहेब। जटाशंकर आ अहुलक अलाव ओहि घरमे क्यो नै छल। हमर कानून कहैत जे दस दोषी बरुना जाय मुदा एकटा निर्दोषकेँ सजा नै होए। क गवाही देत जखन तेसर क्यो रहब नै करै?”

“मुदा जज साहेब अपन कहि रहल छथि जे अहुल दोसराक रिवाल्वरसँ अपनापर गोली किए चलाओत? आ अपनापर गोली चलबाक अर्थ भेल आत्महत्या। हमर बेटा हमरा असगर छोडि आत्महत्या कऽ लेत? किए करत ओ आत्महत्या?”

“जटाशंकरकेँ हिरासतमे लेल जाय...अगिला सुनवाई....।“

स्वाऽऽल यढिग नही आकि वूढी विस्वाति जकाँ आयलि।
“अस्वाँक वलाक गँ ध्रांसस्वन रऽ गेल मंतल सन! सर ७क्का नंगक छी। स्वमन वटाक मुर्गि कॉलानीक गेटयन लागि जाऽऽग गँ कान अनर्थ रऽ जऽऽगे। मुदा सर अयन-अयन घन यनिनानम लागल अछि! ज गेल स गेल। अनका की कहू, स्वमन राऽऽय सरकँ दखु। कहि लल गँ छस्व टा....।“
स्वनस्वन-यटयट कनेग ऊ वस्वा गेलि।
मंतल सन ऊकना-“सुनु। स्विनकन ध्रांसस्वन रल छहि मुदा ७खन शुक्र दिन धनि नस्वास्व...”- ऽऽी सर कहिय नस्वल छला मुदा ऊ रङ्गानाहि नै सुनलक। किउ सुनग?
“की रल? जाय दियौ। शुक्र दिन यटीशन स्वाऽऽल रऽ जगै गँ ऊकन गामस अयन ०ढा रऽ जगै।“

४

“कहू जटाशंकन। स्वमना गँ अस्वलक आभस्व्याक काना कानध नै वूसना जाऽऽउ। ऽऽी सय ज ऊऽऽ मृत्युक गवास्व नै अछि। मुदा ऊऽऽ का०लीम मात्र दु गोट नस्वथि। अस्वल आ जटाशंकन। आ अस्वाँक निनाल्लनक गोली अस्वलक माथम गेलै।”
“मुदा जज सास्वव। स्वमना किछु सुवना रटल अछि जऽऽसँ स्वमन दिमाग घुमि गेल अछि। ऊना स्वम ऽऽी सुवना सार्वजनिक कनवाक यऊम नै छलौं कानध जेसँ ७कटा स्वुवाल आऊग। मुदा जखन स्वमन क्लाऽऽन्यन स्वाँसीक सजाक खाना घुनमि नस्वल अछि, स्वमना

𑒪𑒑 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒩𑓂𑒫𑒖𑒢𑒱𑒏 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒩𑒱𑒏𑓂𑒞 𑒂𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱।”

“𑒄 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙 𑒣𑒯𑒲𑒩 𑒯𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒯𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒁𑒢𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒑𑒩𑒲𑒥 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒲 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒼𑒩𑓂𑒙𑒏 𑒞𑒰𑒩𑒲𑒐𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒨𑒧 𑒜𑒩 𑒐𑒩𑒔𑒰 𑒅𑒚𑒥𑓄 𑒣𑒛𑒻𑒞। 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒖𑒰 𑒠𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒙𑒰 𑒒𑒴𑒩𑒱 𑒏𑓄 𑒞𑒿 𑒢𑒻 𑒂𑒍𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒄 𑒯𑒩 𑒋𑒯𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒨 𑒮 𑒙𑒰 𑒯𑒧 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒲।”

“𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒰𑒑𑒼 𑒠𑒢𑒲𑒖𑒲। 𑒄 𑒏𑒮 𑒏𑒞𑒏 𑒧𑒰𑒮𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒂 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩𑒏 𑒏𑓂𑒨𑒼 𑒑𑒼𑒙 𑒂𑒨𑒪?“

𑒂𑒑𑒰𑒿𑒏 𑒂𑒩𑒼𑒣 𑒣𑓂𑒩𑒞𑓂𑒨𑒰𑒩𑒼𑒣𑒧 𑒮𑒰𑒯𑒰𑒑𑒼𑒣𑒩 𑒔𑒩𑒱𑒞𑓂𑒩𑒯𑒲𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒂𑒩𑒼𑒣 𑒪𑒑𑒰𑒍𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒂 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒻 𑒖𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒰𑒨𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒹𑒧𑒲 𑒮𑒓𑒮𑒿 𑒂𑒖𑒱𑒖 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑓄 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒯𑒞𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒨𑒢 𑒕𑒪।

𑒢𑒬𑒢𑒪 𑒪𑒱𑒙𑒱𑒑𑒹𑒬𑒢 𑒣𑒼𑒪𑒱𑒮𑒲 𑒧𑒰𑒢 𑒩𑒰𑒭𑓂𑒙𑓂𑒩𑒲𑒨 𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰 𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒲 𑒞𑒿 𑒎𑒮𑒞 𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰𑒏 𑒤𑒻𑒮𑒪𑒰 𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯 𑒮𑒰𑒪𑒧 𑒯𑒼𑒃 𑒕𑒻। 𑒮𑒰𑒯𑒰𑒑𑒼𑒏 𑒤𑒻𑒮𑒪𑒰 𑒮𑒯𑒼 𑒣𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒯𑒧 𑒮𑒰𑒪𑒧 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻, 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒋𑒏 𑒮𑒰𑒪 𑒏𑒧, 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒋𑒏 𑒮𑒰𑒪 𑒥𑒮𑒲। 𑒖𑒙𑒰𑒬𑓀𑒏𑒩 𑒥𑒔𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒍 𑒩𑒱𑒙𑒰𑒨𑒩 𑒦𑓄 𑒮𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒣𑒹𑓀𑒬𑒢 𑒅𑒚𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑓓

𑒫𑒱𑒯𑒰𑒢𑒬𑒢𑒲𑒯𑒏 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒂 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒥𑒼𑒩𑓂𑒛𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒑𑒞 𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒂𑒢𑒱 𑒯𑒧 𑒥𑒴𑒜𑓃𑒲𑒏 𑒣𑒙𑒲𑒬𑒢 𑒬𑒳𑒏𑓂𑒩 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒰𑒐𑒱𑒪 𑒏𑓄 𑒠𑒻 𑒕𑒲।

यणिक मृत्यूक वाद □रिसस वला सर सर्टिफिकेटक अनुसार डाकन जन्म तिथि याँच साल घटा दन नहि, मान उमन वढा दन नहि। अंदाजसँ, ममानल शनीन दखि कऽ। काना जानि वूमि कऽ स नै। यंशन □रिसन की कना, □रिसक हाल सञुर ठी।
ञक गोटा जीविा नरवाक प्रमाण नै दन नहि गँ डाकन यंशन ञक साल नूकल नहलै। रून जखन डा जीविा प्रमाणयत्र दऽ दलकै गँ यंशन गँ शुनू रऽ गेलै मूदा वकियौगा ञनियन नै रटलै, कानण यछिला सालक जीविा प्रमाणयत्र हाऽऽलम नै नहि। रुम करवा कलिउ ज न वूति, उ साल जीविा ठी गँ यछिला साल जीविा न रो, गँ उन्दन दलक ज ऽऽी गय रुम वूमे ठी, गुँहुँ वूमे छिहीं मूदा सञुर ताँक्षनकँ लिखि कऽ दऽऽम की रऽ नरुल ठी। मूदा वाग किछु आन छलै, डा यंशनन वकियौगाक संग यवास रुजान रुर्जाना सरा माँगि नरुल नहि, वाते करुलकै ज गखन जा कार्टा। यञ्चरु साल डाकना कस चलगै, किंसाऽऽग।
मूदा वूढिया गऽऽ जमानाम मैट्रिक छल। मैट्रिकक सर्टिफिकेटक जन्म तिथिक हिसावसँ याँच साल आन नाकनी ठी। हाऽऽलम सर्टिफिकेट ठी, मूदा सर्विस वूकम ञण्ट्री नै ठी। हाऽऽल आन व्यक्ति लग, सर्विस वूक आन व्यक्ति लग। किया यूटय नै कलकै। दु दशक यूनान गय, डा कर्मचानी सर क नहि, डा हाऽऽल कगऽ ठी किछु थारु यगा नै। यंशन □रिसन की कना? नियायनमहु सर्विस वूकक अनूसान रो। डाकना गलगी नै ठी। अयन नाकनी वचायग आकि सदाञ्जा वाँटग। वाते जना जीविा प्रमाणयत्र वला कसम निर्णय ललकै, सञुर उँ उवन लऽ लऽऽ गँ यंशन □रिसन गँ मानल जायग।

उाकना स्वाऽ्ूलक आ्धानयन नै सर्विस वूकक आ्धानयन निर्णय लवाक छै।

मूदा साहाग़ा स्न कस ल७ा गँ यङ्कस साल लगगै। गँ मण्डल सन वाउिकँ यटीशन दियलछि।

चलु, ज स्लै ७कना संग, दखी आव। अगिला साल निटायनमह छै, ज याँच साल वढि जौ गँ आन नीक। हमन द्वांसरून गँ स्ऽ्ूय गेल नहय स हम अयन माना-मयटा आ समान चीज-वौस्तु लऽ कऽ अयन नव गन्तव्य स्थलयन विदा स्ऽ जाऽ्ू छी। कार्यालयसँ जाऽ्ूा काल वूढिया स्टैग अछि, कल जाउन ०।८, जना कहि नहल हूअय- धन्यवाद। हम उाऽ्ू काल्पनिक धन्यवादक उप्तन मानमान दऽ्ू छी- काज स्ऽ जाय गखन न?

६

कऽ्ू७क साल वीगि गेल। किछु व्यक्तिक कानक्षसँ आ किछु यटीशन अन्नीकृग स्ऽ जवाक सम्मानिग सम्माननासँ यनिणामक प्रगि उत्सुक नै नहै छी। मूदा मंउल सन ७क दिन स्ट जाऽ्ू छथि।

"उाकन यटीशन स्नीकृग कऽ ललकै निस्ाग। निटायनमंटक दिनसँ यहिनहिय आदश आवि गेल नहै। आव उा याँच साल आन संघर्ष कनग, सनकानी कॉलानीक गेटयन अयन वटाक मूर्गि लगेवा लल ना ....ना आन काना संघर्ष। "

आह! ७ वूढियाक जीगक वाद हमन अयन हानि सस्टक नमगन

स्वतन्त्रताक आब कोना लखा नै। आब स्वमना इच्छा भऽ गेल अछि। इच्छा जिनवाक। सामाँ-सामी निजयक इच्छा, ई वृद्धियाक माध्यमसँ भल अप्रत्यक्ष निजयक वाद।

लण्डनवाँक्षम आयल चिट्ठी

१

मृणालिरुक येघ-येघ आँखि...कार्टसँ जल जाꣲ जालीवला वसम सवान।

कार्टक हाजाम, योगि कऽ जा नहल छी। डाऽ सियाहीकँ मृणालिरु लल खनाꣲक येकट दलिउ, ꣲी आवश्यक छल, गिनक्षानीक नागिक राजन गिनक्षान कनेवला ▯हिसन दे छे, जलन अगिला दिनसँ राजन दगे।

..मृदा गखन डाहिना दन नहिउ, रुन ण्कटा कर्मचानी कोदीक ताꣲट सहा येक कनवा कऽ लऽ अनलक। सियाही खनाꣲक दुनू येकट योगि कऽ वसम मृणालिरुकँ दलके।

चौंकल डा..

उ नग्रम ख्या डाकन ने.. राषा सहा ने वूसेण डा ककना; आ नहिय डाकन राषा किया आन वूसे छे। गमिल अछि। दिल्लीक गिहाउ जलम नाखल जगे डाकना। डाऽ गमिलनात यूलिसक ण्कटा टूकठी छे, चार्ल्स शोरनाजक जलसँ रगलायन उ टूकठीकँ वजाडाल गेल छले, उ दुआन ज डा सर स्थानीय राषा ने वूसे छले स काना अयनाधीसँ मल-यँच ने कऽ सकगे। मृदा रुन ꣲी हाल रले ज दु मासम डा सर स्थानीय राषा सीख जाꣲ गेल।

गिहाउम मृणालिरु किछु वाजि सकग, डाकना सरक संग। अयना लल वकील नखवाक लल थांग धना सकग।

चौंकल डा.. डा यलटि कँ हमना दिस गकलक जना यूछि नहल हुअय ज अहाँ दन छी खनाꣲक ꣲी दासन येकट? हम ꣲशानाम कहलिउ, हाथसँ ꣲशानाम.. नाखि लिअ.. दुनू हाथ जाति कऽ डा

हमना प्रणाम कयलक।

मूख्य अयनाधी किया आन छै..
ज खनाळ्क येकट लल धय्यनाद दैब, आँखिसँ धय्यनाद, स असल खिलाठी कना हबग?

काऽ हँसि गेल छी।
ळ्ळी अयनाधी अछिय नै, काना मादक यदार्थक माहिया हँसा लन छलै बकना।
हमन सहयागी मृणुलक्ष्मी मैठम मृणालिहसँ सूवना लळ्ळ छथि आ हमना अनुदित काऽ सूनवै छथि।
वन्नै वीचयन क्रिकट खला नहल छल मृणालिह।
बक गोटा बलै, पूछलकै ज उा काना नाजगान कनैब?
ऊँ नाजगान कनिओं गँ दिनम वन्नै वीचयन क्रिकट खलाळ्ळौं?- मृणालिह ळ्ळी उन्दन दन नहि।
नाजगान चाहि?- पूछन नहि उा!
मृणालिह लखँ गँ उा हगनान नहि, अनागी यूनूष जकाँ आयल नहि।
हमना वूसल छल, मूख्य अयनाधी किया आन छै..

उा अनागी यूनूष छिउ हवीवूल्ला, नबह उाकना हटै छै, बकना यूछै छै... वनाजगान छी? आ बकना उा काज दै छै, बकटा वैगम प्रणन कूकन आ उाळ्ळम मन-मसल्ला!! प्रणन कूकन दु टा वदनाकँ

जाति कऽ बनल नहि छै, ओही दुनू बहनाक बीचमे नगरक याउतन रनि कऽ उघै छल छइ! हुनाइ जहाजसँ एनाइ-गेनाइ, आ गाइ यनसँ एक बन गेल-गेल आ दस हजार टाका बैसल-बैसल रहै छलै। एकरा किछु बूझल नै छै, बूझल नै छै जे प्रशन कुकनमे की लऽ जाइ छल। आ मुख्य अपराधी छथि हवीबुल्ला..

हवीबुल्ला। मृणालिरुक सूचनाक आधारपर बन्नेमे ओकरा घरमे छापा पड़लै, किछु नै भेटलै। प्रायः सूचना लीक भेलै। आ हवीबुल्ला छुटि जाइए।
मृणालिरु यकतन ठगक याइक ओर नै रहत।
मृणालिरुक सनदान हवीबुल्ला अछि गँ हवीबुल्लाक सनदान क छै?

कोर्टक हाजतमे सरकारी वकील दोगल गेल। ओ हमरा कहलक जे इ शामिल कैदी छै? ओ हमरासँ पूछलक जे ओ कैदी काना वकील कर अछि वा नै? हम कहलिऐ- नै। ओकरा हम अनुरोध कलिऐ जे मुख्य अपराधी इ नै अछि, काना शामिल वकीलकेँ पकडू आ ओकरा कहियौ जे एकर केस लड़ै जमानत करबै। ओ वकील शामिल छल, ओ शहरक बहुत मुकदमा लड़ल अछि। खास कऽ ओइ शामिल सरक, जे दिल्लीमे फँसि जाइ छथि, जिनका भाषाक संकट हाइ छन्हि, ओ □हिस □हिस घूमैत रहैत अछि ओ शहरक केस लल। मुदा ओ केसमे ओ सरकारी वकील छै, ओ गँ एकर पक्षमे नै बाजि सकैत अछि, मुदा अपन असिसटेन्ट वकीलकेँ ओ ०।८ कऽ देत। ओ शहरक मानल नाम वकील कोर्टमे, □हिसमे घूमैत रहैत

अछि। एकबेर ओकरा कथाक प्लॉट सेहो बाहर ओकरा वकीलकेँ सुनने नहि, कथाक प्लॉटमे मारते रास कमी निकालि देने रहए ओ वकील।

मुदा नार्कोटिक ड्रगक केस छिऐ, वकील किछु नै कऽ सकत।

बरामदी तँ मृणालिहसँ भेलै। मुदा ओहो तँ शतरंजक गोटी अछि, पाँव-पैदल सिपाही। नार्कोटिक ड्रग्स केर केस छिऐ। मृणालिह बीस सालक बाद जेलसँ बहरायत, से रोजगार देलकै हबीबुल्ला ओकरा।

२

पाँव-पैदल।

हमरा गामक लुट्टा, पाँव-पैदल सभ साल बाबाधाम जाइए। हमर गामक पीअर बब्बा हरागाठीसँ सभ साल बाबाधाम जाइ छथि। दुनू गोटे बीसो सालसँ लगातार बाबाधाम जा रहल छथि। लुट्टा बीस सालसँ महीस चरा रहल अछि आ पीअर बब्बाक घरारीपर ओ बीस सालमे कोठा-कोठाम भेल जा रहल छै। मुदा छोट भाइक कहनाम छन्हि जे बाबू असल भेल तँ पाँव-पैदल गेलसँ होइ छै। प्रवीण भाइ टीपि दै छथिन्ह, हँ तँ ने लुट्टा बीस सालसँ महीस चरा रहल अछि। आब छोट भाइकेँ नै रहल होइ छन्हि। परूँकेँ साल तँ ओ गेल रहथि बाबा धाम। प्रफुल्ल भाइ गामक बालबम पार्टीक जमादार छथि। सभ साल पाँव-पैदल जाइ छथि। हुनकर बाबू सेहो जमादार छलखिन्ह। बाला भाइ डाकबम छथि, तीन दिनमे

सुल्तानपुरसँ यानि रनि रालावावाकँ चढा दै छथि। प्रफुल्ल राउ सरकँ संग लऽ चलै छथि, जे निअम रंग करैत एकना दण्ड लगवै छथि। यीशुन वच्चा गँ गा न माराजल छै जे उकनासँ पाँव-पैदल जाजल हगै हौ। ह, स नै कहियौ, तखन प्रफुल्ल राउ की काना काम मारायल छथि। मुदा वावु, लाक की अयन चलैत, उकना गँ वावा चलवै छथिह्न।

अहुँ छाट राउ गयकँ वउ नमानै छौ। यीशुन वच्चाक घनानीयन ओ वीस सालम कोठा-कोठाम हल जा नहल छथि आ लुच्चा वीस सालम महीस चना नहल अछि तउयन अहाँक कहनाम छल जे असल हल पाँव-पैदल गेलसँ हाउ छौ। यीशुन वच्चा गँ कहिया पाँव-पैदल वावाधाम गेल नै छथि, तखन किओ उा कोठा-कोठाम कान जा नहल छथि आ लुच्चा गँ सह साल पाँव-पैदल जा नहल अछि तखन किओ उा महीस चना नहल अछि।

छाट राउ खिसा आगाँ वढवै छथि।

-यौ, आँखिक दखल कहै छौ। कोठा किया वाह्नि न लिउ, वावु राला वावा मानै छथिह्न लुच्चकाँ।

-स कना यौ?

आ हन नओह खिसा। लुच्चा नफाम याछाँ छुटि गेल। प्रफुल्ल राउ चिन्तित छलथि जे अजग हउगा। सौंस धर्मशाला ताकि ललह्नि। लुच्चा कना यहिनहिय धर्मशाला आवि जायत? उा गँ यछआ जाउ छल। कना गाम घुनलायन लाककँ मुँह दखवौ।

मुदा रानम दखै छथि जे लुच्चा धर्मशालाक कोठलीम हाँह कािट नहल अछि।

लुल्हा खिस्सा सुनबै छथि, चारू कात बार नहि। हम हबाढ़कार दऽ कानि रहल छलौं। तखन एकटा दाढ़ीबला बूढ़ा ऐल आ चुप करेलक। पूछा-पूछी केलक आ माथपर हाथ रखलक। ओ भगवान रहथिन, अवतारी पुरुष जकाँ आयल रहथिन। आ लगैए निन्न आबि गेल।
निन्न खुजैए तँ देखै छी जे गौंआ सभक संग धर्मशालाम पड़ल छी।

हबीबुल्ला नै छी हम, पीटर बब्बा नै छी हम।
हम छी मृणालिनी।
हम छी लुल्हा।
३

ओइ कसक बाद हमर ट्रांसफर भऽ गेल। अही पाँव-पैदलक लोक सभक ताकिम बार-बार फिरबाक छुट्टी हमरा भेटल अछि।
लुल्हा सभ लग, मृणालिनी सभ लग पहुँचनाइ।
मुदा पीटर बब्बा सन लोकक सूचना इनकम टैक्सक लोककेँ दऽ दइ छी। ओ हमर काज नै। हमर तँ काज अछि, लुल्हा आ मृणालिनीक माध्यमसँ हबीबुल्ला आ आगाँ धरि।

मीठ-मीठ बाझ आ पाँव-पैदल चलैबला लोक सभकेँ, लुल्हाकेँ, मृणालिनीकेँ, अपन मीठ गपसँ बझाउ। ओकरा बुझाउ जे सरकार हम नै छिऐ। ओ छी ई हम। पाँव-पैदल वा शतरंजक सिपाही। ताशक राजा-रानी नै छी हम, हम छी ताशक गुलाम आ एक्का।

ओकटा आगंकी यकठायल छलो।
-वहसक ध्रनिंग सहा अहाँकँ रटल अछि आ स खाली हमनासँ नै अपना सिस्टमसँ कनु।
-कना हमना सरक काजक सुवना अहाँकँ रटैअ? हम नै अहाँ गलग यऊम छी।। हथियान ठ(0न छी।। कगक वड्राक रनिश्च खगम कs दलिठ अहाँ सर।
-कान रनिश्चक गय कs नहल छी अहाँ? अहाँ रेकी खालि दवै गँ ठा दनवान वनि जायग। अहाँ गत वना दवै गँ ठकना ठ००यन वा(ठनि वहानवाक नाकनी लागि जो!
-अहाँक लाक वनाजगान यूनाक गाकिम नहेग अछि, समूद्रक किनानयन, जंगलम, नगिस्थानम, जकना काज नै छै, नाजगान नै छै ठकना अहाँ 0कि कs ठे धंधाम लगा। द०० छिठे।
- अहाँक सिस्टमम निर्वलक सूनना०० नै छै। मूदा गेया ठ०० सिस्टम लल अहाँ जान अनायन छी।। की दलक अहाँक सिस्टम अहाँकँ? अहाँक सिस्टमम ज हमना सरल काज कनैअ स शहनसँ हिलवा नै कनैअ, आ अहाँकँ वानक यास्टिंग दs दन अछि। अहाँ संग अन्याय रल अछि। आ जखन अहाँ अयना संग रल अन्याय नै नाकि सकै छी गँ हमना सरकँ काना न्याय दिआ सकव?
-००ी अहाँक मानक ऊम अछि, काना अन्याय नै रल अछि हमना संग। हमना ठे काज लल चूनल (गल अछि।
- अहाँक दुनूपयाग कs नहल अछि अहाँक सिस्टमा आवि जाठ हमना सरक संग, नाकनी ठाफे कनू मूदा ठाग्s नहिया कs हमना

सरलक संग नहु। साबु, समय लिअ...
हमरा गामस उठेल। बाजै छी- अहाँक दिमाग तँ नै खराब भऽ गेल अछि? हम एक सप्ताहसँ सभ दिन अहाँकेँ बुझबाम लागल छी मुदा अहाँक अलगे खनहा अछि। अहाँकेँ हँसी बुझा रहल अछि?
आ ओ हँसऽ लगैत। बाजैत- अहूँकेँ गामस उठेल नै? अहाँ हमरा एक सप्ताहसँ बिनु गमसन बुझा रहल छी आ हमहूँ अहाँकेँ बुझाबऽम लागल छी। अहाँकेँ संगठनम उत्र यद हल जायत!
-हमर निरागम किछु लोक रयसँ अहाँल काज कनैत हला, तँऽ्ऽसँ अहाँक मान बढ़ि गेल अछि।
-ओ सभ रय वा याँऽ्ऽसँ कीनल जा सकैत छथि, मुदा गैया ओ सभ हल काज करब करता, स विश्वास हमरा नै अछि। मुदा अहाँक हृदय हमरा सरलक संग अछि, आ तँऽ्ऽ अहाँकेँ अपन संगठनक कान ग्रुपम लवाक निर्णय लल गेल अछि।

हम गामस सविख हाँऽ्ऽग आगंकीक (0i0 यकउ छी। -निर्णय लल गेल अछि? नि....र्ण....य..... लल गेल अछि? हम आन्हसँ गय कऽ रहल छी तँ....
-अहूँ मचण्ड छी, सनकानी मचण्ड। मुदा सिद्धान्तवला... ... हमर सभ जकाँ... जकरा मचण्ड वनऽ यउ छै... आ तँ ऽ्ऽी निर्णय लल गेल अछि...।

ओ खांखी कनैत हमर हाथसँ अपन कष्ठ छाउबैत अछि आ कुर्सीसँ

नीचाँ खसि यउैग अछि।

प्रनिढ हमन सरक नै, उाकना सरक हाइ छौ। मुदा एकन प्रनिढ पाँन-पैदल सियाही वला नै रहल छै, खाली मानि-धानि वला प्रनिढ। ई पाँन-पैदल आगंकी नै छौ। एकना लीतनगिय प्रनिढ दल गेल छौ। हमन सरक सर प्रश्नक उत्तन उाकना लग नहि, हमन सरक प्रश्नावलीकँ डा एकनढाह सिद्ध कऽ दन छल! यएह गँ नै अछि....?

४

-कगऽ सँ एल छी? दिल्लीसँ गँ नै।
-नै, हम रानाक सिमानसँ एल छी।
-चीन, गिब्बग, याकिस्गान, वांग्लादश वा म्यांमानक सिमानसँ।
-नै, नयालक सिमानसँ। सीगाक दशसँ।
-मिथिकल खिस्सावला, फूसिवला दशसँ।
-नै, ई मिथिकल नै ऐगिहासिक रऽ सकैए। किछु खिस्साम गाउ-मनाउ कएल गेल हएग, मुदा इगिहास प्राचीन अछि। गँ जिनकन इगिहास डागक प्राचीन नै गिनका नै अनघैग हाइि।
-वहस, वहस। हथियानक प्रनिंढ अहाँकँ रटल अछि, निर्वाल्लन, यिस्टलसँ स्ननगन धनिक प्रनिढ। अहाँक कार्यालयसँ सूचना रटल अछि। काना सूचनाक अधिकानक अन्दर्गग नै, अहाँक सर काजक सूचना एगऽ आवि जाइग अछि। हमना वीच अहाँक लाक छथि गँ अहूँक वीचम हमन लाक छथि।

-ओही गँ वूमल गय अछि।
-मूदा गैया अहाँ हथियान लऽ कऽ नै चलै छी। मिजानमक लालतंगा गँ हथियान लऽ कऽ चलै छला मूदा असामक यनश वनूआ कखना हथियान लऽ कऽ नै चलै छथि। अहाँक दश दूनूसँ समभौता कलक।
-नै, यनश वनूआसँ समभौता नै रऽ सकल अछि।
-मूदा हूनकन संगठनक गँ अधिकांश (गाट समभौता लल गैयान छथि। मूदा ओही यनश वनूआ ज हथियान लऽ कऽ नै चलैत तकर टा गैयान नै अछि। गखन गँ हथियानवला सँ विन हथियानवला वशी खानाक रल किन। अहूँ हमना सट लल वशी खानाक छी।
-दखू, एकटा मिजानमक छात्र हमना सठ ओहीनियनिंगम यढै छलय। ओ हमना कहन छल ज लालतंगा महान नाा छथि। ओहो काल लालतंगा रूमिगा नहलाक वाद निदश यठा (गल नहथि। दश हूनका आगंकी मानै छल। मूदा ओ एला, दशक सनकानसँ समभौता कलह्नि। सट हथियान जमा कऽ दलह्नि। दूनू यञ समभौताक ओमानदानीसँ यालन कलक आ आओ मिजानम उग्नयूर्वी रागक एकमात्र एहन समभौता अछि, जकाा समभौता यूर्ण नूयसँ सफल अछि। मृत्यूक यहिल लालतंगा अयन नाग्राकँ शान्तिक यथयन छाति (गला। ओ ओहीनियनिढक छात्र ठीक कहै छल, लालतंगा ओज अ(ग्रट लीतन। ओओ छात्रकँ सही ठहनलह्नि लालतंगा। महान नाा छथि। महान नाा अयन जनाकँ वीच ममधानम नै छाउ छै। तूर्वो जहाजक कप्तान जकाँ ओ अन्तिम समय धनि जहाजयन नहैा अछि। जखन जहाजसँ सटकँ सूनक्षित वहान कऽ दओएत गखन ओ जहाजक

मस्कूल संग समुद्रम ऊँ तुमS यउे छै गँ तुमि जाऽ्ऽ्७, जहाज छाति, लाककँ छाति नै राणे७। ऊँ लालतँग। समझौता कलहि गँ ऊा ऊाऽ्ऽ् जनगाक रानानाक अनुनुय छल, ज हुनका महान वूसै७। ऊँ ऊा मृत्यूसँ युर्व शान्दि समझौता नै कनिणथि गँ रS सकै७ ऊा ऽ्ऽ्ष्ठीनियनिळक छाात्र हुनकायन ऊाणक गर्व वादम नै कS सकिणय। ऊा जखन अखना रटै७, हमनासँ कहै७- दखलौं, हम कहै छलौं न, लालतँग। ऽ्ऽ्ज अ् ग्रट लीतन।

-हमना ग्रट लीतन वनवाक सहन्दा नै अछि। हम सर हथियान समर्यध कS दी आ गखन ऊँ सनकान हमना संग धाखा कनय?

-ऊँ लालतँग। ऽ्ऽ्ी साचिणथि गँ की शान्दि सम्झन छल? आ सनकान अछि की? ज टलीनिजनयन अहाँ सर दखै छी, स अछि सनकान? नै, ऊाऽ्ऽ्म सँ वहूणकँ वूसला छै ज दश लल क क, की की कS नहल अछि? सर निराणम दशरक्क सर रनल छै, दस प्रणिणा किये नै हाउ, आ ऊाकन रनास ऽ्ऽ्ी दश छै। ज टलीनिजनयन अछि, मंत्री-संत्री, ऊाऽ्ऽ्मसँ ककना की वूसल छै? अहाँ वदलि सकै छी, ऽ्ऽ्ी मंत्री-संत्री वदलि सकै छथि, मूदा दश नै वदलत, सनकान नै वदलत। ऊा समझौताक यालन कनत।

हमन माथयन ७कटा रानी तथ्य वजनै७ आ ....।

७

हम जखन ऊठ0 छी हमना लणै७ ज हम हाशम आयल छी।

किएक तँ किछु-किछु मोन पड़ैए आ लगैए जे हम बहुत दूर नहि आ हुनसँ हाशम भेल छी। पाँव-पैदलसँ लऽ कऽ कारक स्थानीय लीडरशिप एकाएकी आयल हमरा लग। एम्हर संगठनमे पहिने छोटका फेर कने पैघ आ फेर आर पैघ हाकिमक शृंखला शुरू भेल। एक मासमे ओ शृंखला खतम होबाक नाम नै लऽ रहल अछि।

मृणालिनी सोझाँ अछि। हम तँ बिसरिए गेल रहिऐ।

अच्छा, तँ ई ओकर साम्राज्य छिऐ। दूरभाषियाक माध्यमसँ ओ हमरासँ तय कऽ रहल अछि।

कोर्ट ओकरा बेल करा देत हेतै? नार्कोटिक ड्रग केसमे बेल कर विधान छैहे नै।

ओ कहैत अछि जे बिना ड्रगक धंधाक आतंकवाद सम्भव नै छै, ओ लेल जकर पाइ चाही से ड्रगक धंधसँ अबै छै।

तँ की आतंकक सेहो सम्बन्ध छै ओ ड्रगक कारबारमे? तँ की मृणालिनीक आब प्रमोशन भऽ गेल छै? आब ओ ड्रगक कोरियर नै वरन् आतंकक खिलाड़ी बनि गेल अछि?

-तँ की अहाँ मुख्य खिलाड़ी छी? हमरा तँ लगै छल जे अहाँकेँ फँसाएल गेल अछि।

-की फर्क पड़ै छै? फँसाएल गेल खिलाड़ी वा मुख्य खिलाड़ीमे की फर्क छै? ओना देखबै तँ ई तरहक संगठनमे असली प्रशिक्षित फँसाएल लोक छै, मुदा तेना फँसाएल गेल छै जे मुख्य खिलाड़ीसँ बेसी

खतरनाक वएह छी। अहाँ पहुँचि गेलौं एतऽ, संयोग जे हम छी एतऽ, नै तँ बुझू जे की होइतय अहाँक? आब अहाँकें वएह करबाक अछि जे हम कहब। अहाँक लेटरबॉक्सम कोनो पत्र अबैए आ अहाँ विदा भऽ जाइ छी बिनु हथियारक। आगाँ पत्र सेहो आउत, जेना ऐबन आयल, सभकें पढ़ब। आ हँ....

६

हमरा हुनसँ होश ऐल अछि।

एकटा थानाम छी।।

स्थानीय थानाम हम अपन पहचान कात काबै लल एकटा फोन करबाक अनुमति मांगै छी।। ओ किछु बुझि नै पबैए मुदा अनुमति दऽ दैए। हुन किछु कालक बाद ओकर हाकिमक फोन ओकरा लग अबै छी। ओ हमरा दिस नजरि गड़ा कऽ देखैए।

हम घरपर आबि गेल छी।।

किछु मास पहिने रहल अछि। दूरभाषियाकें मृणालिक कहि रहल छल आ ओ हमरा कहि रहल छल। मृणालिक कहि रहल छल जे हमर ओही यात्रा व्यर्थ नै गेल अछि, हम कथा लिखै छी से बुझू ऐ यात्राम एकटा कथाक प्लॉट भेट गेल। मुदा मृणालिक कहि रहल छल जे ओही कथाक नायक मृणालिक रहत। कोन एहन काज ओ कर अछि जे ओकरा हम नायक बनबै?

मृणालिक कहै छल जे ओ जेलसँ निकललाक बाद हमरा सभ सन बनऽ चाहैलक मुदा पुलिस थाना, पत्रकार ओकरा से नै करऽ देलकै।

मृणालिनि कहैत छलि जे सिस्टम ठीक करबाक आवश्यकता अछि, नै तँ ...

किछु मास यएह चलल अछि।

हमर यात्रा एहि बेर निरर्थक सिद्ध भेल अछि।

मृणालिनि हमरा हरा देलक, हमर ध्यान बँटा कऽ ओ हमरा हरा देलक।

चिकित्सालयमे सामान्य जाँचक बाद हम अपन घरमे हम आबि गेल छी।

बिन हथियारबला सैनिकक हानि, ई बिधि सभ सिखल जा रहल अछि।

मुदा मृणालिनि ई किए कहलक जे बिना ड्रगक धंधाक आतंकवाद सम्भव नै छै, ओ लाल झण्डा चाही से ड्रगक धंधसँ अबै छै। हम तँ ड्रगक कश साधि कऽ गेल नहि। आ ई तँ काना आतंकवादसँ जुड़ल बात अछि।

तँ की मृणालिनि हमरा ई संकेत कूट भाषामे देलक।

आ जँ ओ मुख्य खिलाड़ी अछि तँ ओ ई किए कहलक जे हँसाएल गेल खिलाड़ी वा मुख्य खिलाड़ीमे की फर्क छै?

किए बनबै ओकरा हम अपन कथाक नायक? ई तँ ओकरा बूझल छै जे खाली हमर ध्यान बँटा कऽ ओ नायक नै बनि सकत।

मृणालिनिकेँ मुक्ति चाही?

'आगाँ यात्रा सदा आडम्बर, जना जेबन आयल, सार्थक नरबा।'- ई किए कहने छल मृणालिनि?

१

□रिस जाऽ छी। ऊ आगंकी लीतन जलम अछि। ऊगऽ ऊकनासँ युछगाछल कार्टक यनमिशन चाहै। सनकानी ऊकील यनमिशन लऽ लग, स खुवी छ ऊकनाम, कन चूश्व-चलाक अछि मूदा स खुवी छ।

-ओगऽ कैमना लागल छ। ऽी अहाँक □रिस नै छी ज ककना ।0।0 यकाउ लवै, ऽी जल प्रशासन छिउ। ओगऽ कैदीक यढवा-लिखवासँ लऽ कऽ खलवा कूदवा धनि सए गनहक ऽन्दजाम अछि।

-स मउनन आ आगंकी लल, चानि-चकाउी वला सएक हाल दखू।

-मूदा ऽी दिल्लीक गिहाउ जल नै छिउ। ऽी छाट नग्र छिउ, चानू दिस वान छ, आ जलनकँ जलक वाहन सहा निकलऽ यउ छ, दाकान-दौनी कनै लल।

-गँ अहाँ ऊकना उनवै छिउ?

-स गँ अहाँक सिस्टम अछि जऽल अहाँ जान अनायन छी। गऽ लल हम गँ कप्मीसँ जिम्मदान नै छी न? अहीं जकाँ ऽीहा उ दून प्रदशम ट्रान्सफन एऽ कऽ आयल अछि। वा ओकना चूनल गेल छ! मूदा ऽी अहाँ सन जिद्दी नै अछि।

-गँ ओकना अहाँ अयन संगठनम शामिल कनवै? ऽीहा निर्णय अहाँ लऽ लन छी?

-नै, ऽी मतियाकन अछि। हमना संगठनम ओकाटा मतियाकन नै

रहत।

- एकटा मिजानमक छात्र हमरा सँ ट्रेनीनियनिंगम पढ़ै छलय। ओ हमरा कहने छल जे लालतंग। कहैत अ ग्रेट लीडर।

-सुनल अछि हमरा ओ खिस्सा, सरकें अहाँ सुनबै छिऐ। हमरा ग्रेट लीडर बनबाक सेहन्ता नै अछि। मुदा अहाँ हमर सर जकाँ साबे छी, मुदा गला यजम छी।

-अहाँकें ओ खिस्सा के सुनलक?

-एक मासक बाद अहाँ आयल छी, देखनहिय हवे? लागल हएत जे संगठनक सर सदस्यम करेछ प्रताडित रऽ नहल हाछ्छ, मतियाकनक काना स्थान नै। आ गँ अहाँकें संगठनम शामिल करबाक निर्णय लल गेल नहि, मुदा ताछ्छ सुबनासँ अहाँ तमसा गेल नही। आ गँ अहाँक लटनवॉक्सम ओ चिट्ठी आयल नहय।

-अच्छा गँ ओ अहाँक संगठन अछि? अहाँक नाज अछि डाय, मृणालिह अहाँक ऊपर अछि वा नीचाँ?

-हमरा संगठनम किया नीचाँ वा ऊपर नै छै। सरक दनमादा एक्क नछ छै, काना काज छोट पैघ नै छै, गँ किया कम-बसी काज नै करैए।

-अहाँक निमाण्ड लमय यएत। [illegible]हिसम अहाँक बकान खुजत, एतऽ सी.सी.टी.वी. कैमरा लागल छै गँ ...।

हम उठि कऽ विदा हाछ्छ छी।

-आछ्छ साँझम अहाँक लटनवॉक्सम एकटा आन चिट्ठी ऐत।

हम अनठाबै छी गँ ओ हन विकति कऽ कहैए- जे बनूका चिट्ठी यछिला बन सन नै नहत जकन याछाँ अहाँ हमर संगठनक दर्शन

कलौं। ऊ चिट्ठी जाल छल, मुदा ऽऽी चिट्ठी अहाँक नियुक्तिपत्र नहु।

६

ओथीना आ यसी, हमन दुनू विलातिकँ गेली लागल छै, दुनू मनि गेल। वटा कानि नहल अछि। लटनवॉक्सम चिट्ठी आयल अछि, हम चिट्ठी यठे छी।।
हमन ओक्तीतष्ठ हल छल, येटनिटी लीनयन जाऽऽ वला छलौं। लाक सट कहे छल ज ओक्तीतष्ठ कनवाऊल गेल छल, मुदा हमना किछुऊ मान नै अछि। जखन वहाशी टूटल नहय गँ लाक सट वाजि नहल छल ज ओकटा आन येसक्तन कानम अछि, जिविग अछि। सट निकाललक, टाटा मन हॉयीटलम हमी कनवलक। ओम्हन हम्मन ▯यनगन आ ऊम्हन कनियाँक तिलननीक ऊट, दुनू दु नग्रमा। कनियाँकँ सट कहन नहे ज छाट ओक्तीतष्ठ छै, मुदा हन वाग-वागम यगा चललै ज ▯यनगन हगै, यणनम स्पीलक नॉत दल जगै। ऊ कानय लागलि। अगिला दिन सान हानयन हमनासँ गय कनलनि, हम कनियाँकँ कहलिऊ ज अमिगाट वच्चनकँ गहंगाह हिल्लम हाथम स्पील नहे, हमन यणनम नहु। ऊ सहज हली, वादम सान हानयन कहलह्नि ज अहाँ की कहि दलिऊ ज ऊ मुश्की दलक आ खनाऽऽ यीनाऽऽ गुनु कऽ दलक। तिलननीक ऊट अही सप्फाहक छी। हमन ▯यनगन काह्नि हणग, मुदा सानकँ कहलियह्नि ज हमन ▯यनगन यनसु हणग, कनियाँकँ सणह कहल गेल। अगिला दिन ऊ निश्चिन्द नहथि। साँसम जखन हम अनस्कीगियासँ वाहन निकललौं

गँ कनियाँकँ स्नान कलियहि ज यनगन रऽ गेल। काना गनरक चिन्हा नै कनवाक अछि। सप्ताहान्तम तिलीननी रऽ गेलै। यज्ञहु वटा ज्योतिना आ यसीं लल कानि नहल अछि।

मुदा शानिाक टघान?

हम साल रनि विछाउनयन नही। वैशाखीसँ वाथनुम जाऽऽ। वटाकँ अही वीच माथम घा रऽ गेलै। विछाउनयन सुालासँ घा दुखाय लागे छलै। अयना यटयन डाकना यट रन सुा लै छलिऔ। ज्ञका मिनट नै लागे छलै, सुि जाऽऽ छलै। घण्टा सुाल नहि छलै, हम हिलिा नै छलिऔ। जखन डाकन निझ युना हाऽऽ गखन डा उठैा छल। गखन हम हिलैा छलौं। शानिाक टघान, ज्योतिना आ यसीक गँ नै। दु गोट हागि नहल अछि, साऽऽलंसनवला वन्दुकसँ ज्ञकटा गोली निकलल, आ हमन वटा...

हिसक ज्ञक गोटक वटा स्कूलसँ आयस नै ज्ञलै, ज्ञक सप्ताहक वाद डाकन स्कूलड्रेस आ वैग यार्कम किया छाि गेलै। याँच साल रऽ गेलै। न वच्चा रटलै, न डाकन लाश।

वटा कन येघ रल गँ डाकन ज्ञकटा दाम्फ नहि मनसा, वउ सुहन, सनदानजीक वटी, डाकन संगे य्न स्कूलम यढ़ै। ज्ञकटा वच्चा हमन वटाकँ गन्धा वच्चा कहि दलकै, मनसा डाकनायन गमसा गेलि, हमन दाम्फकँ गन्धा कना कहि दलँ? वटाकँ यूछलिऔ की रल? अहाँ डाऽऽ वच्चायन किऽ नै गमसलौं? मुदा वटा हमन वालगुन्ना। कहलक, डा वच्चा हमना नै चिह्नै छलय, गँ हमना गन्धा कहलक।

हमन वटाक दरक (शानित आ ७थीना आ यसीक (शानित मिझान रहS (गेल अछि। विन ७थीना आ यसीक हमन वटा कना जीअन, ७क यल यहिन हम स साचि नहल छलौं। विनु वटा हम कना जीअव आव हम साचि नहल छी। यझी का0 रहल छथि। ७थीना आ यसीकँ कनियाँ वटनिननी हॉस्पीटल लS जाञ्ञ् छथि, आ वटाकँ हम मनुक्खक हॉस्पीटल लS जाञ्ञ् छी, ब्रॉट ७७क सर्टिफिकट लवाक लल।

गीनटा लहाश अग्निकँ समर्पित।

९

-नियुक्ति यत्र रहट (गेल?

-रहट (गेल।

-अहाँक की निर्णय अछि, दुटा विलाञ्ञ् हम कीनि कS दS दव। अहाँक वटाकँ जेवन (गाली छू कS निकलल अछि, सञ्ह आदश छलौ। अगिला वन की ह७ा स अहाँक निर्णययन निरहन अछि।

-नियुक्ति हमना स्वीकार्य अछि, हमन वटाकँ किछु नै हवाक चाही मूल्य।

-किछु नै ह७ा, अरयदान अछि।

-हमना की कनय य७ा।

-हमना संग अहाँकँ चलय य७ा। स्वाढ कनय य७ा ज हम अहाँकँ हथियान छीनि कS अयहनम कS लन छी।

-अहाँ अपन अड्डा हमरा देखा देब?
-देखा देब, आब तँ अहूँ अपन बाट धऽ लेलौं।

हम कहियो हथियार नै राखै छलौं, मुदा आइ पिस्टल इशू करबलौं। ओ आतंकीक लीडर हमरासँ पिस्टल लेलक, हमर माथपर लगेलक। जखन गाडि सड़कसँ किछुओ करबासँ मना कएलकै, बाहरमे ओकर बाट गाडी बरं गेलाह।
पहुँचि जाइ छी जंगल मध्य। हम, ओ आ मृणालिनी।

की ओ मुख्य खिलाडी अछि? तँ ओ इहो किए करत नहुँ जे हँसाएल गेल खिलाडी वा मुख्य खिलाडीमे की फर्क छै?
मृणालिनीकेँ मुक्ति चाही?
ओकरा चाही वा नै हमरा चाही।
किए बनबै ओकरा हम अपन कथाक नायक? किछु तरह काज करए तरह ना। ओकरा हमर बापक मृत्युक सूचना अनभिज्ञ रहए गेल हएत, निशाना ठीकसँ नै लगेलकै ओकर बाट।
आ आब ओ की करए तइयन हम निर्णय लेब जे ओ नायक बनए हमर कथाक वा नै। हम बिनु हथियार ठाढ़ छी ओकर निर्णयक प्रतीक्षामे।

अमा, बूधन आ...

१

बूधनक छोटका भाय सभ जनमिते मरि जाइत रहन्हि।

से बूधनक एकटा छोटका भायकेँ माय-बाप जनमलाक बाद अमक हाथसँ बचलन्हि आ हुन पाइ दऽ कऽ किनलन्हि। ई सभटा काज ओना तँ सांकेतिक रूपेँ भेल मुदा ऐसँ ग्रह काटित भऽ गेलै। आ छोटका भाय जे बूधन पासवानसँ बारह बर्ख छोट रहन्हि बचि गेल।

आ गेल्ह ब्राप उकना सए तमा कहि सान कनऽ लागल ।
बूधन अपन बाप-मायक संग हुनकाही कनथि मुदा हायकँ पढवाक वडु मान नहिंह ।
'सूनै छिउ ज हमना सएम कनिउा पढि-लिखि ललासँ नाकनी हरि जाइ छै। एकना जनुन पढवे, बाद गेल्ह लल पट काटऽ पउय वा हीख मांगऽ पउया।'

हीख गँ नै मांगलहि मुदा चद्धीगढक नक्षा धलहि बूधन।

ह हम तमाकँ पढा लिखा कऽ किछु वनवऽ चाहै छी।- बूधन पासवान मान- मान वजला । चद्धीगढम आव उा निक्षा चलवै छथि । आव गामम खगी वानीम किछु नै वचलै। हनि दिन निक्षा चलावथि आ साँझम जखन दासन संगी-साथी सए दसी (0काम अपन (0ही दुन कनैल जाथि गखन दस गनहक गय सूना कऽ वहन्ना वना कऽ बूधन अपन घन दिस घूमि जाथि।
"की न मीना। वामा-दहिना कनै छँ, निन्नी नै हाइ छौ। "
" नै नौ हाइ। हनि दिन गँ वाइ म निक्षा घिवैन नहै छौ मुदा साँझ हाइन अंगक पान-पान दुखै लगै-ए। "
"नौ हाइ। कहै छियौ ज (0कायन चल गँ दस वहन्ना वना कऽ घूनि जाइ छिहीँ। दख हमना आउन कँ, यीवि कऽ होँह कटैन नहै छौ। एक्का निन्नम हान आ सए (0ही खगमा। "
कानइलाक सए गय सूनि कऽ गुमकी लाधि दइ छथि बूधन। मानम इीहा हाइ छहि ज किंसाइन तमा पढन आकि नै पढन। उँ

आइ कहि दवै ज अमाक पढाइ लल ऽी सभ कऽ नहल छी। आ ऊँ उा नै पढलक, नै किछु वनल गखन?
गखन ज आइ सभ गय पटसँ निकालि दाथि गँ यजह सभ संगी-साथी सभ कालि हन अही गयकँ लऽ कऽ हँसी कनाछि। दु चानि-टा याइ ज ववा गकना गामयन पOायव। आ गइसँ अमा पढग।

मूदा गामम ज स्कूल नहय उागऽ जक्का टा दलिग आकि गनीवक वच्चा नै पढैग नहय।

सनकान जकटा याजना चललक, दलिगक वच्चा सभकँ विना याइ लन किगाव वाँटवाक। किगाव लवाक लल घन-घन जा कऽ याइन उी मास्टन साहव वच्चा सभकँ स्कूल वजलछि। नाम लिखलछि, विना हीसक, मासुलक। सभ हरहा-दस दिन जवा कजल स्कूल। दूसधटालीसँ, चमनटालीसँ, ख़ाविया टालीसँ सभ। अमा सहा। सभकँ किगाव हटलै आ सभ सप्ताह-दस दिनक वाद नियमा हऽ जाइ गेल। दखा—दखी कमनटाली आ हजाम टालीक वच्चा सभ सहा जला पढैल, किगाव मंगनीम हटवाक लाग। मूदा उागऽ ऽी कहल गेल ज अहाँ सभ येघ जागिक छी, मूह्न किगाव याजना अहाँ सन धनिकक लल नै छै।

“वावू ऽी काटैवला गय छै की, छाट-छाट हाइग छै आ येघ-येघ। स्टक आइ धनिक सभसँ नीक चीह-मिनिस्टन कर्युनी Oाकुन हल छै, की नै छै हो असीन मा।“, जयनाम Oाकुन अयन खायजीक

टूटल चानसँ छूलकैत सूर्यक प्रकाशक आसनीयन असीन ठीक कश करैत बजला।

-स तँ बाबू ठीक।

स गामम एक ब्राह्मण आ दुमिहानकँ छोड़ि आन किया स्कूलम पढ़ैबला नै बचल। अदहनम सरस्वता किताब झोंकि लोकनि किनैत गेला।

-ह अदहनसँ बसीम नै दब, मानलौं किताब नब अछि, मुदा अहाँ सरस्वतीकँ तँ मंगनीयम न देल अछि।

आ दुसध टोली, चमनटोली आ धोबिया टोलीसँ सरस्वता किताब सहटि कऽ निकलि गेल।

आ यथा नै तमा पढ़लक आकि नै।

२

आ तमा गामम नहि मास्टर बनि गेल।

आ बूधनक बेटा चण्डीगढ़म पढ़ाइ लिखाइ कलकन्हि।

आ बूधन घूमि कऽ आयस आबि गेला गाम।

३

अमजनक लाजिस्टिक टीमक उम्मी यनिअनक हुत कान नूयम टेँट टेल बूधनक बटासँ, गुनुग्रामम।

ओहो हमर चर्चा सुनने रहथि आ हमहूँ हुनकर।
हमर मोन राधिया जाइत अछि, एकर जिज्ञासा सेहो करैत आयल रहथि। हुनका बूझल छलन्हि जे हमरा कोना खिस्सा ओ सुनाएब एखन जा कऽ हमरा किछु मोन पड़ए।
ओना मलहल-मलहल भऽ रहल छल, हुनकर चर्चा सुनने रही, मुदा.. छाउ मलहल नहि गेल मोन नै पड़ल।
-हमर पिताजी अहाँक पिताजीक खिस्सा कहने छथि।
हम अखियासै छी जे कोन खिस्सा सुनाएब- 'हमर पिताजीक मृत्यु १९९७ म भऽ गेलन्हि।'
-कहाँदन राजम हमर पिताजी राजक राग लागि रहल छला एँ मिसनटालीक जगन्नाथ कहलखिन्ह जे- नै पारुन छुअल किया नै खइतौ, मुदा घर अकवाली छिऔ स क वाजा?
-हँ, हमही लाउल कहने रहियन्हि, हमरा बूए नै रुल रहय लाएल एँ।
-आ ऽऽहो जे अहाँक मामाक हमर कक्का यानि दन रहथिन्ह एँ ओ बाजल रहथि जे एँ अनन छँ? एँ हमर कक्का दवाति कऽ कहने रहथिन्ह जे बूयबाय यीवि लिअ। आ अहाँ दिस ऽऽशाना कन रहथिन्ह आ कहने रहथिन्ह जे हिनकर बाबूजीए हमर सरुक यानि चला कऽ गेल छथिन्ह।
-हँ, आ एखन मामा कहने रहथिन्ह जे ला न, हम मना कहाँ कन छिऔ, हमर बहिनोए यानि चला कऽ गेल छथुन्ह, स एँ बूझल अछि। आ आब एँ ओ दुनियाँम नै छथि आ हुनक काज एँ छिअन्हि।

-मोन पड़ि गेल?

-हँ, पुरनका गाम मोन पाड़लासँ मोन पड़ि जाइए, नवका गाममे दिक्कति अछि।

शहरक नव पीढ़ी।

'गाम आबो ओहिना छै वा बदलल छै?'- हम पुछै छियन्हि।

-बहुत बदलल छै, नीको आ अधलाहो।

-अधलाहो आ नीको?

-देखियौ, गामक नीचू स्कूलमे आब दलितक बच्चा वा पिछड़ा वर्गक बच्चा सभ पढ़ैत अछि आ संगे खाइत अछि। पहिने किताबटा छुबै छलै आब खेनाइयो छुबै छै।

-ई तँ नीक अछि मुदा अधलाह?

-पहिने जाति नहि, हमरा बुझि पड़ैए जे ओकर सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक आधार नहि। सभक अपन नायक नहि। सभक अपन मनोरंजन नहि, अखनो छै। मुदा ई सभ आब एकटा जाति व्यवस्थामे बदलल जा रहल छै। हम अन्तर्जातीय विवाह केने छी, कनियाँ ब्राह्मण अछि। मुदा एकर विरोध ओकर आ हमर परिवारसँ बेसी हमर समाज कऽ रहल अछि। सरकारी आरक्षणक पेंच सेहो छै। सभ जातिक लोक आरक्षण बचबैले अपन जातिमे बियाह करैले कहै छथि, नवका पीढ़ी मानै ने छै।

जाति आ जाति-व्यवस्था दू चीज!

-ऋगवेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गाता, यजुर्वेदक अध्वर्यु आ

अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ एकर सहयोगी पुरोहित सभ, पुरा-पुरी समाज एनहक पुरोहित वैदिक कालमे नहथि। अहूँ सभमे ई पुरोहित होइ छथि। आ आब एहेन ब्राह्मण पुरोहित कोना भऽ गेल? इतिहासमे अखनो 'होता' उल्लिखित होइ छै आ ओकरा ऋग्वेदी, सामवेदी आ यजुर्वेदी ब्राह्मण हिंसक (!)यियज्ञाद संहिताक अथर्ववेदी ब्राह्मणमे विवाह-दान नै करै छथि। दलित विमर्शमे वाल्मीकि रामायणक उत्तरकाण्डक शम्बूक वधक चर्चा होइत रहैत, एहि कनबाक कारण शम्बूकक शिकायत जे ओ आगाँ नै बढि जाय, आ एहि शिकायतक निवारणार्थ भगवान राम द्वारा शम्बूक वध। पुरुष-पत्नीमे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लखकीय वक्तव्य दै छथि जे राजपुत्री चरित्रहीन होइत। एहि द्वारे इतिहास भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक किया होइत प्रकट लऽ जा सकैत अछि वला वक्तव्य, जे सामान्य नीतियामे आ अन्तर्जालपर अहाँकेँ भेटत, जकर कोना सन्दर्भ मूल अथर्ववेदमे ताकैत नहु नै भेटत, वजनहान लुप्त लगा कऽ नियमा, कोना सन्दर्भ नै देत आ अहाँ अपस्याँत नहु, वर्तन □रू प्रूरू आनाय लगनिहानयन नै, अहाँयन। अहाँक ऊर्जाक उय भेल मुद्दा रून अन्तर्जाल ठीक कऽ ललक, याO विकृत नै भेल। यहिन आउ पुरुष पत्नीडायन, संस्कृत आ अनहदवला विद्यापति जळ्ळ नाडाक दनवानी नहथि एकर जातिक स्त्रीक विषयमे ओहन लिखबाक हुनका साधांश हूनि? कोना कलुषित मानसिकताक यनवर्ती लियिकान अयन भावनाक अनुसार हनरुन जँ कऽ देलकै ई आळ्ळक टिप्पणीकार आ अनुवादककेँ टिप्पणी दऽ कऽ स्थिति स्पष्ट कऽ देबाक चाही। नाम शम्बूककेँ मानलनि वा शम्बूकक शिकायत कनिहान

कलुषित लिपिकार शम्बूककेँ मारलनि? आब आउ अथर्ववेदपर। अथर्ववेदमे लिखल अछि हे नारी, हम सामवेद छी आ अहाँ ऋग्वेद, हे वधू, अहाँक हाथ हम समृद्धि लेल ग्रहण कऽ रहल छी। आ ओहिना व्रात्य पञ्चजनाक अथर्ववेद आ सांख्य अछि, व्रात्य जे गायत्री मंत्र नै पढ़लथि तीन खाढ़ी आ तेँ बनि गेला वनचर, वनवासी। आ आखिरका घर वापसी सन विध छल ’व्रात्यस्तोम’ विध, समानान्तर धाराक व्रात्यकेँ घुरबा लेल। कतौ हुनका शारीरिक आ लैंगिक हिंसक, निर्मम कहैबला सन विवरण रहए मुदा अथर्ववेदमे हुनका याज्ञिक रूपमे देखब। अन्यत्र ओ सभक नेतृ आ शिवक वैद्य सन सेहो वर्णित छथि। मुदा अथर्ववेदी ब्राह्मणकेँ सेहो हिंसक कहल गेल। कलुषित लिपिकार वेदमे उपकरक प्रवेश कएलन्हि जे शाखा निरूपनी आब पकड़ि रहल छथि।

-मान वेदमे सेहो हेरफेर कएल जा सकैए? की ओ विश्वसनीय वक्तव्य नै अछि?

-वेदक विदेशी शाखा अनुवाद सभमे ऋषिक नाम हटा देल गेल, मुदा मूलमे अखनो रहए जायत।

-मुदा ऋषिकेँ तेँ द्रष्टा कहल जाइत, मात्र ऋषिक नाम अछैत विश्वासक कथन।

-मुदा तखन वैदिक द्रष्टा तेँ स्त्री आ शूद्र ऋषि सेहो छथि, तखन शूद्र आ स्त्रीक निकृष्ट बनबा क घोसियलक? जे शूद्र ऋषि कवष ऐलूष वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, से कालक्रममे किए ठाढ़ नहि भेलथि? मुदा वेदमे ऋषि, देवता आ छन्द पढ़ैत तीनटा शब्द सभ सूक्त क्रमांकक संग रहए, द्रष्टा

हम अहाँ कहै छियहि, मूदा गकरा दुनूपयागक प्रयास हला। वैदिक ऋषि स्वयंकँ आ दनगाकँ सेहो कवि कहै छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ते कवि चानाक नाङ्मय मुर्ति अछि। उगऽ आध्याम चगना, आधिदैवत्वम उत्कीर्ण हल अछि, ओनम् उकना आधिभौतिक रागाम नुय दल (गल अछि। उना उऽ्‌ समओम सेहो सम्मिलित नुयँ साल हनि ऋचा या0 कनैवलाकँ याजिन्यक स्नागगम टर्न-टर्न कनैवला वढ-मण्डुक सन विशेषण अथर्ववेदम दल (गल ठै। मान गायनम असहमगिक स्ननक स्वीकृति छलै। ऋगवेदम सेहो मण्डुक गान ठै।

-मूदा 'वदम ज ठै स प्रमाण ठै' कहन उयक सेहो प्रमाण वै हऽ (गल?

-मन्त्रार्थम महर्षि यगंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य 'यद्वद आह गदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् ज शब्द आकि मंत्रक यद कहैओ, सओह हमना हगु प्रमाण अछि- ओकन अर्थ वादम जा कऽ वद प्रमाण अछि- स काना हल स वै जानि। हमना लल गँ मंत्रक ऋषि, छथि, दनगा छथि, दूनू कवि छथि सूक्तक लखक, आ सओह हमना लल प्रमाण अछि।

-अफ्रीकाक लाककँ जना धर्म यनिवर्गन कनिहान सर वृमलकै ज उ सर जंगली अछि उकना सय्य वनक चाही। मूदा सर कबीलाम मगउा हाऽ्‌ गँ गकना सूलह लल व्यवस्था नही। कनाताक मूल ऽ्‌ण्डियन अवनाकी कबीला ज हूनका सर लल आनन्दिग निजर्व उतानाकम नहैओ यर्यावनणक लल कगक स्नहन लाकाकि वनन अछि 'गखन जखन आखिनी गाछ कटि जायग, आ सर धानम माहून दऽ दल जायग, गखन जखन (गाट-(गाट माँछ अहाँ मानि दव,

तखन अहाँ बूझि सकब जे अहाँ पाइ नै खा सकै छी।' मुदा ओकरा सभकेँ पछुआयल समाज कहल जाइए? मुदा अहाँकेँ नै लागैए जे हमर सभक व्यवस्था आ शासन देशक व्यवस्था एक्के नहिंक अछि आ अलगे अछि। की हुन आ असगर रहि गेनाइ मात्र समस्याक समाधान छै?'

'अहाँ अमेजन कम्युनीम छी न? अहाँ सभ तँ अमेरिकासँ नॉकर सेहो छाउन छी। एकटा प्राइवेट नॉकर। किछु दिनमे पर्यटन हैत, नॉकरसँ उठि जाउ आ देखियौ हुनियन नहिंक ग्रह पृथ्वी। जौं हुन जायब तँ नीक लागत अपन लोक। आ जँ लग आयब तँ धान पनक बाड़ लागत पहाड़सँ पैघ। हुनसँ देखबै तँ लागत जे ई पृथ्वी अछि एक्कटा, हम सभ ई ब्रह्माण्डक छी एकटा जीव अस्तित्व। हुन आन कनी लग, आ पानि आ स्थल। आ आन कनी लग तँ श्वेत नहिंक लोक आ कारी नहिंक लोक, नहि विनहिंक, गहुन नहि विनहिंक चिड़-चुनमुनी, जानवर, गाछ-वृक्ष। जल-थलमे कीड़ी-मकोड़ी, माँछ, सरीसृप। बढ़त तँ देखाइया नै पड़त तकर सूक्ष्म, जकर दुनियाँ ने हमरा बूझल अछि आ ने हमर दुनियाँ ओकरा बूझल छै। जे Oढाम नहुल लाखक-लाख वर्ष स रहि गेल उज्जर आ जे गर्मीमे नहुल स रहि गेल कारी। आब हुन नॉकरकेँ कर दुन लS जाउ। हुनसँ देखू। आब मनुक्ख लागि नहुल अछि मात्र मनुक्ख। स सभ अछि एक्के डी.एन.ए. कर। कखनो काल सत्य हुन गेलयन उच्चारित होइ छै। हुजान वर्षक शासन अहाँक जाति वा कम्युनिटीकेँ जाति-व्यवस्थाक अंग बना देलक, हुजान सालक साम्राज्यवाद। ओ तँ तोकब करत नाज कनवाक सैद्धांतिक आधार। जातिकेँ जाति व्यवस्था

बात कहल। आ अहाँ जे एकरा मानि लेब आ ओकर व्यवस्था, ओकर संस्कृति, ओकर नीक वा अधला करब, तँ अहूँ तँ जातिकेँ जाति-व्यवस्थामे बदलब नै कलौं। आ ई ओ सभ □सङ्ग्रलियामे कएलक, अमेरिकामे कएलक, अफ्रीकामे कएलक। जखन मॉरीशस आ कैरेबियन द्वीपमे सात नै रहलै तँ कुलियानक खेती शुरू कएलक। एतएसँ दास लए गेल, कुलियानक खेती लेल। आ ओतए कियो दलित नै छै, पिछड़ा नै छै। अहूँ गामक लोककेँ लए गेलै, सभ समाजक लोककेँ बसी दलित आ पिछड़ा, सिक्कड़मे बान्हि कए पनिया जहाजमे चढ़ा कए, मुदा ओ सभ ओतए अगड़ा भए गेल, ओतहुक एकटा लोक जातिकेँ जाति-व्यवस्थामे नै बदलए देलकै। ई असम्भव किछु नै छै, कखनो काल दूर गेनाइयो जरूरी छै। अहाँ अपन परिचय एक बन आन दिअ, बौद्ध-बौद्ध हम आइ-काल्हि बिसरए लागल छी।’ ओ चुप्प छथि। हम बिहुबाक प्रयास करै छियन्हि। हम पपुका सपनाक विषयमे सोचै छी। एतएमे ओबलायन अनन गनान भए जाइए। कनियाँक मसियौत बहिनक मृत्यु भए गेलन्हि, बेटा अमेरिकामे बसलन्हि, बियाह दान करबाबैत छथि तँ ..। आब तँ गाछीक तीजल निजर्भम बल जाइए गखना गनान भए जाइए। नम्हम काला पहाल पस्थ अछिए नै, जे छै से छौड़ाबनक नीचाँ। घुमनी काल साँझमे जए पहाल पस्थ अछि गए पहुँचो-पहुँचो गाछी न बहु भए जाय। दिल्लीमे प्रदूषण बढ़ि गेल नहि से आयात-निअम-तीन लागू छल आ एतए-तीन कार्ति कान पहाल आ एतए-चारि कार्ति कान चनपहिया तीजल गाछी एक सप्ताह लेल बन्न छलै। से जबनसँ तेल छलौं। ओना चौबीस प्रतिशत प्रदूषण दुपहिया गाछी करै छै,

मुदा ओ सभ सरकारक वोटर छिऐ तँ ओकरापर प्रतिबन्ध नै लागल छलै। एक तँ चरपहियावला लोकक संख्या कम आ तइपरसँ ई सभ भोट देइ लेल जाइत नै अछि, तँ प्रदूषण कम करबाक भार एकर सभपर, सरकार बूझै छै जे ई सभ वोटर अछिये नै।

- अहाँ अपन परिचय एक बेर आर दिअ।

-हम बूधनक बेटा।

-जी। देखू ई समस्या अहाँ देखि रहल छी, तकर निराकरण भऽ गेल अछि। हमहूँ ओइ निराकरणसँ प्रसन्न नै रही। स्कूलमे खेनाइ, रहैले घर, दू रुपैया चाउर। तहिंकी नजरिसँ देखियौ। आत्मसम्मान एलैहँ, मलाहकेँ प्रशिक्षण दऽ ओलिम्पिकमे स्विमिंग प्रतियोगितामे पठाउ, चर्मकारक हाथमे बाटा कम्पनी दियौ, प्लाइवूड कमारक हाथमे। जेना अहाँ लेलौं अपन हक, नै रोकि सकत कियो कमारकेँ फर्नीचर फैक्ट्रीक मालिक बनलासँ।

-ओ ल आर कतेक दिन।

-हमर बेटी जखन दस सालक रहए तहिया धरि ओकरा बूझल नै रहै जे ओ कोन जातिक छी, किएक ओकर हाथमे रहै छै, किताब पढ़बाक हिस्सक छै। एक दिन टी.वी.पर कोनो सीरियल देखि रहल रहए, दू-तीन टा ब्राह्मण बटुका टीक रखने आ धोती पहिरने रहै। ओ बाजल- 'दीज आर ब्राह्मिन्स' (ई सभ ब्राह्मण छथि)। आ माय पुछलकै जे तोरा बूझल छौ जे तूँ कोन जातिक छँ, तँ सेहो ओकरा नै बूझल रहै। आ माय जखन ओकरा कहलकै जे तोहर ओती सेहो ब्राह्मण छौ- तँ बाजै छै- 'ना ना!' (भइये नै सकैए!), आ जखन ओकरा पता चललै जे ओकर भैया, ओकर माय आ ओ

स्नयं व्राह्मण अछि गँ उा चुय रऽ गेल ज किंसाइग माय उाकना ठकि नहल छै। रुन महारानाक वर्वनीक। सरकँ अईन यसिन्न यउे छै, कर्ण यसिन्न यउेग छै, रुमना यसिन्न यउेत वर्वनीक। उाकन दल नचन ज रुम सदिखन कमजानक यउ लवै, उाकन गुन् उाकनासँ ठूी नचन लन नहथि। गखन रुम अयन मानक गुनकँ वर्वनीक वला नचन दलिउ। जनक सहस्र गाय कन शर्ग यन शास्त्रार्थ नाखलछि। याज्ञवल्क्य गाय सरकँ नामि विदा राज्यन छला आकि गार्गीक प्रश्न शुनु। याज्ञवल्क्यक उन्मनयन उा प्रतिप्रश्न युछऽ लगली। याज्ञवल्क्य वजला- अहाँक माथ न रंगा जाय, माथक कठृक राँक न रऽ जाय प्रश्न युछि-युछि। मुदा गार्गी गठ्या युछलछि- समय काल ककन अधीन। याज्ञवल्क्य वजला- अउनक। रुमन मानम याज्ञवल्क्य आ गार्गी दुनुक प्रश्नोत्तरी चलि नहल छल,अखना चलि नहल अछि। ज प्रश्न अहाँ युछलौं सहा प्रश्न रुमन मानक गार्गी युछलछि। आ वर्वनीक वला प्रश्न। मानम राज्ञग याज्ञवल्क्य आ गार्गी सम्वाद, अउनक अधीन ठूी जीवन आ वर्वनीक वला प्रश्नक वाद रुमन मान विसनारु रऽ गेल, दखिय नहल छी। गार्गी सन रुमना मान उँ संतुष्ट रऽ जठ्ठाउ गँ विसनारु किउ रऽ जठ्ठाउ? अहाँ अयन यनिचय उक वन आन दिअ, वजौ-वजौ आठू-काल्हि रुम विसनऽ लागल छी।'

आत्महत्या

१

विवाहक उपरान्त ढेरी-ढाकी लोक हमरासँ भेँट करबाक हेतु सासुरमे आबि रहल छला। गप्पमे छलि एकटा नवम् कक्षाक छात्रा आर्या आ ओकर पितामही आ माय।
ओ माय आ पितामहीक संग नै आबि असगर गेल छली। पठन-पाठन, आवश्यकतासँ बेसी अनुशासित आ शिष्ट आ नापि-जोखि कऽ बजनिहारि। हमरासँ सभ गप्पमे उलटा। हमर कनियाँ आर्यासँ हमर परिचय करओलन्हि आ ओकर प्रशंसा सेहो कयलन्हि, पढ़ैया लिखैमे तेहन नीक आ चित्र लिखैमे सेहो ओतबे नीक। किछु कालक बाद ओकर पितामही आ माय हमरासँ भेँट करबाक हेतु एली। हमरा अनुभव भेल जे हुनकर पितामहीकेँ लेहाज राखल गेल छल मुदा हुनकर मायक अवहेलना सन हमर कनियाँ आ सासु कर छलखिन्ह। गप्प करबामे ओ नीक छली आ जोर-जोर कहि गेली जे हम सभ अहाँक ससुरक किरायादार छी आ उपरका महला पर रहै छी। से भीड़-भाड़ कम होला पर अवश्य आउ। ई गप्प जोर-जोर हमर सासु प्रायः सुनि लेलन्हि से हमर पत्नीकेँ स्थिरसँ मुदा आग्रहार्थक तुँ कहलन्हि जे ऊपर जेबाक कोनो

जनुनी नै छै। हम पत्नीसँ पुछलियन्हि जे बचानी एकर आग्रहसँ बजउलन्हि अछि। पत्नी कहलथि जे सुनलिऐ नै, माँ मना कन छथि। कारण पुछला पर गप अनठा देलन्हि।

किछु दिनुका बादक घटना छी, अह्नाखम गेट समाप्ति कऽ खुजबाक अवाज एल। लागल जे कुत्ता पीबि कऽ बउबउा नहल अछि। हमर अगिनिक कुत्ता उठ्ठ अवाज पर ध्यान नै देलक आ अनठयबाक स्वांग कलक। हम बाहर एलौं गँ एकटा अधवयस् पुरुष अवैत दृष्टिगोचर एल। हमरा देखि ओलौ हाथसँ जमाय बाबू कहि नमस्कार कलक। ओ अखन धनि हमरासँ एँट नै हेबाक कारण हमर पत्नीकँ हतिछउलक आ ओलौ ऊपर सीढीसँ चलि गेल। हमर पत्नी हाथ पकड़ि कऽ हमरा रीतन आनि ललन्हि आ ठ्ठीहा सुबना देलन्हि जे ठ्ठीएह आर्याक पिता थीक। अनायासहि हमरा माथम एल, नंग जे आर्याक छै स बाप पर गेल छै, ओना गढनि बड़ नीक।

बादम हमर सासु ऊपर जा कऽ राखल दऽ एलीह आ एक महिनाक रीतन घर छाउबाक अल्टीमटम सहो आर्याक पितानाकँ दऽ देलन्हि। हमर सान कहलथि जे ठ्ठी दसम अल्टीमटम छै मुदा हमर सासु अतिग छली जे किछु वीति जाय जेबन ओ नै मानती। जमाय की बुझताह जे कहन राउदान नखन छी हम सब, पहिल ठकिया-हंसिया कऽ बहटानि लह्ह छल।

पुछला पर पता चलल जे आर्याक पिता ओक्तर छै आ सहो होमियोपैथिक, आयुर्वेदिक, तह्निरु किंवा एटननी नै ननन् एम.बी.बी.एस.। मुदा लऊक देखियौ। ओना सासु ठ्ठीहा गप

कहलन्हि जे ओई पीने रहबाक उपरान्तो गप्प एकटा अशुद्ध नै बजैत अछि, जेना आन पीनिहार सभक संग होइ छै। मनुक्खो ठीक अछि मुदा पएह जे एकटा गड़बड़ी छै से बड़ हानी। देखैमे मुदा बड़ दब अछि, कनियाँ तँ बड़ सुन्दर छै।

अगला दिन नशा उतरलाक बाद पति-पत्नी दुनू गोटे नीचाँ एला आ सासुकेँ कहलन्हि जे आर्याक बातिक बाद ओ सभ घटना चलि जाइ जेना से हुनका सभक खातिर नै मुदा आर्याक खातिर तारक ध्वनि रहय दिअ। घाँघाउजक बाद से माहलनि हटि गेलन्हि। एकरा बाद हुनकर पत्नीक नजरि हमरासँ मिलल तँ ओ कहलन्हि जे अहाँ तँ उपर नहिये आयब। आ ओ बेर उपर एबाक आग्रह नै कयलथि।

२

एकटा सानि रहथि, हुनकर कोना गप मोन पड़ि रहल अछि। एक गोटे पुरुखक विषयमे आर्या कहैत छलि। ओकरा संगीकेँ होइ छै जे ओ पुरुख ओकरासँ प्रेम करैत अछि। मुदा आर्याक माननाइ छल जे ओ पुरुख ओकर संगीसँ नै वरन् आर्यासँ प्रेम करैत छल। हम सानिकेँ कहने रहियन्हि जे आर्या बच्चा अछि, ओहिना हँसी कयल हएत। मुदा ओ कहलन्हि, जे नै यौ। बड़ हारूक अछि आर्या। कहैत अछि जे ओइ पुरुखकेँ पबा लेल किछुओ करय पड़ौ से करत।

पता लागल जे ओ पुरुख कोना पुरान महारानीक बेटीक बेटा छी। ओकर माता शिक्षिका अछि आ बाप मरीनमे काज करैत अछि। साल-छह मास पर अबैत छल आ जखन अबैत छल तँ जे मास-

पन्द्रह दिन नैहर छल त मारि-पीटक बिना दःखे छल। पूरा मोहल्लामे बदनामी छै। मायक शील-स्वभाव बड़ नीक, बोलीसँ फूल-सन छै। बापकेँ गाँ लोक चिन्हैत नै छै। खाली मगहक अवाज सुनैत अछि लोक।

एकर बेटा छी ओ पूनक। एक दिन आर्याक संगीकेँ स्कूल बससँ उतरबा काल झा गंग कने छलै गँ ओ पूनक सबकेँ मारि-पीटि कऽ भगा देल छल। ई बात जन हम एखन कोनो बर्षो ध्यान नै देन नहित।

-आर्या भानूक छै, त मात्र ओकर एकटा गप सुनि कऽ अहाँ कोना बाजि देलौं?

-नै यौ, एक्के टा गप नै। बड़ भानी-भानी गप्प कनैत नहि छै।

-जेना?

-जेना ओतीकेँ ओ दूखी नै देखि सकैत, ओ किछु एहन नै कऽ सकैत जाहिसँ ओकरा दूख पहुँचै।

-आ आन किछु।

-हँ, कहैत मायसँ ओकरा कोना लगाव नै छै।

३

किछु दिन बीतल आ हम सासुर जयबाक अवसर भेटल। किछु दिनमे पता चलल जे किनायादान बदलि गेल छथि। धनक लोक मात्र एतब कहलथि जे आर्याक पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि आ अनुकम्पाक आधारपर ओकर मायकेँ नोकरी भेटि गेलै। आब ओ सभ किया परनाम नहि छथि।

घरक लोक आगाँ किछु नै कहलन्हि मुदा कनियाँक एकटा पितियौत भाय एल रहथि, से कहलथि जे हुनकनी नियारेम विष खा कऽ आत्महत्याक वर्णन रहय। एहन आगाँ पति-पत्नीक मध्य मचल तुमूलक चर्चा रहल। हुनकर कनियाँ कहैत रहथिन्ह जे ओ हुनकर बहु पिबैत अछि आ ओ दूआन सगरो रहैत अछि आ हुनकर साहब कहथि जे सगरो दूआन पिबैत छी। अस्तु मृत्युक बाद हुनकर कनियाँक भाव एहन सन छल जेना मुक्ति भेटि गेल होइन्हि आ ई बाटम सर क्षा एक माग रहथि। आर्या ई शहरसँ दूर चलि गेलि। ओ मायकेँ कहैत रहलि जे पतीओ धनि रहय दिअ, मुदा माय निमुक्त भेलाक बाद एका पल पूनान कटु-स्मृतिकेँ देखऽ नै चाहै छली।

४

एन दिन विशेष रहल।

आ बादम एहन पन समाधान भेटल जे आर्या सहो आत्महत्या कऽ ललक।

बहुत नास बाग मानम घुमि गेल। आर्या भावुक छलि, किछु बर्षी गनानम नहिं छलि। गयकेँ गंभीरतासँ लैत छलि। सानिक ओझ्झ पूनकक सम्बन्धम कहल गय सहो मान पड़ल ।

हम एहन दावाना लगलौं।

हम एहन पन अटकानी मानैत पूछलौं जे ओझ्झ पूनकक निनाह आर्याक मृत्युसँ पहिने भऽ गेल छल से कानऽ भेल छल? गँ सासूनक लाक अर्चरिग भऽ पूछलन्हि, जे क ओ? अच्छा ओ!

-ओकर विवाह तँ भेल मुदा अहाँ कोना बुझलौं।
पता लागल जे सिलीगुड़ी-दिसक कोनो कन्यागत रहथि।
आ ओ युवक अपन बाप जकाँ घर-जमाय बनि रहबाक नियार कयने अछि। ओ शहरक लोककेँ तँ विवाहक हकारो नै भेटलै।

७

आ ओकर आत्महत्याक दोष ककरा पर अछि। ओ जे दारू पिबैत रहय से बाप। आकि ओ माय जे बापक संग तंग आबि गेल रहय। आकि ओ प्रेमी?
हमरा जनैत एकर सरल कारण अछि आर्याक परिवारक सम्बन्धी आ परिवारिक दोस-महीम सभ जे एक तरहेँ आर्या सभकेँ बारि देने रहय। ओ समाज जे ओकर परिवारक घटनाक चटखारा लऽ कऽ चर्चा करैत छल। ओ घटना सभ जे ओकर पिताक मृत्युसँ सम्बन्धित रहय। ओकर पिता द्वारा गेट पिटबाक घटनाक चर्चा आकि आन कोनो गप। बालिका भावुक रहय, कोना सहि सकैत छली? आत्महत्याक नाम दऽ ओकरा मृत्युदण्ड देलक समाज। हम आर्याकेँ एकटा दृढ़ बालिका बुझैत रही। मुदा ओकर ×किछुओ करय पड़त से करब’ कर अर्थ आब जा कऽ बुझलौं। ओहू युवकक विआह भऽ गेल हेतै से हमर अन्दाज मात्र रहय आ से आर्याक आत्महत्याक घटनाक जानकारी भेलाक बाद।

८

-हमर कथा ’आर्या’ कहऽ लागल? आ दुखद पत्री?
- दुखद पत्रीमे एकदम असत्य गप लिखल गेल अछि, पूर्णियाँक

कारा मामा अपन बहिनी संग नै रहल अछि, असल्य निरक्षर अछि। कथा तँ इतिहास नै छिऐ, जाहिमे तँ किछु लिखि सकै छी। मुदा पत्नी?

-ई दुनू जे दिल्लीमे नहि रहल छथि से क छथि, मुदा असल्य नै जे ब्लैकबुक मामा दुनू पत्नीमे छै? छोड़ू ओ गप्प। आर्या अहूँकेँ बुझल अछि आ हमरो, आर्या एकटा सत्य अछि। ओ आत्महत्या कऽ लेलक, हमरा ओकर प्रेमीसँ भेँट करबाक अछि। ओकर सिलीगुड़ीक पता चाही। मुदा बता सकैत जे आर्या किए आत्महत्या केलक?

१

हम सिलीगुड़ी काना काजसँ गेल छलौं। काज पूरा केलाक बाद किछु समय बचल छल से आर्याक प्रेमीक पता पर पहुँचि गेलौं। ओ कहयऽ लागल।

-देखू ई अछि आर्याक पेंटिंग। ओकर रचनात्मक आ विध्वंसात्मक दुनू रूप जेना हमरा देखा पड़ि रहल छल। हम चुप गेल छलौं। आ ओ बजायल लागिया रहल छल।

-ओ हार-मार आत्महत्या करऽ लागलि छलि।

-हार मार आत्महत्या?

-हँ, जना गपकेँ अन्ठबैत, काना काजक प्रति अपन जवाबदेहीसँ बचबैत।

८

-आर्याकेँ बीमारी नहि। मुदा किया ओकर नागकेँ बुझब नै केलकै। मनुष्य नागक इलाजक दवाइ छै। ओ अहाँ नागक इलाज नै करबै

गँ डाकन यनिघाम रहल छै मृत्यु।

-मृदा किछु आत्महत्याक प्रयास तनवेक प्रयास रहल छै, डा कहै छै ज हम किछु कऽ लव, किछु झाट-मार करइया लै छै। ओहन लाककँ अहाँ कही नै बूझियौ ज डा किछु नै करत। अहाँ हुथेत नहवे, ज कऽ कऽ दखा, कऽ कऽ दखा गँ डा कऽ कऽ दखाइया दत।

-गँ हमना सरकँ आत्महत्याक निरुद्ध किछु काज करवाक चाही, जना मारीवशन टॉक दनाइ।

-काल्हिका न्यूज नै दखलिऔ। शंकन आइ.ओ.एस. ओकतमीक संस्थायक डी. शंकनघ, नओह जकन पर्यावनघयन याथी यदि सर आइ.ओ.एस. वनैओ, काल्हि आत्महत्या कऽ ललन्हि। पनीउाम यास नै रलायन कना हगासाहित नै रहइ, आत्महत्या वा काना गलत डग नै उठावी, गइयन हुनकन रायघ रहइ छल, आ गकन वाद (थायडी वजनाइ वह नै रहइ छल।

६

-आर्याक डाकन मायसँ किए नीक सम्बन्ध नै नहै?

-आवश्यकतासँ वशी अनुशासित आ शिष्ट आ नायि-जाखि कऽ वजनिहानि छल आर्या। मृदा मायसँ यता नै किए मनकी लगैत नहै। आर्या आ डाकन यितामही दुनू संस्कानी। दखे-सुनैम डाकन यितामहीकँ दखिकँ ओक्का नफी यता नै चलिताय ज डा ताहुन डाकन वटा छिऔ। वायसँ आर्या मृदा हिलल-मिलल छल। नीकसँ गय रहइ छलै, डाहा डाकना माने छलै।

-वाय आत्महत्या नै कनिगे गँ आर्या कऽ लिगिउ?
-यगा नै?
-उाकन प्रमी उाकना छाति कऽ चलि जैगिउ, वाय जीनिग नहिगिउ, गँ की आर्या आत्महत्या कऽ लऽगिउ?
-नै, उा वायकँ कष्ट नै यहुँचाविगे।
-हुन यूछै छी, वाय आत्महत्या नै कनिगे गँ आर्या कऽ लिगिउ?
-नै कनिगिउ।
-आव उा ककना कष्ट यहुँचावऽ चाहै छल, मायकँ आ प्रमीकँ।
-मायकँ गँ कष्ट यहुँचि गेलै, मुदा प्रमीकँ गँ वूसला नै हगे। ऽऽी रान अहाँयन नहुल।
-उाना हमना वूसन उाकना प्रमीकँ आव वूसल रऽ गेल छै।

गंधर्व लटनवम

१

"दासनकँ सम्मान दनाऽऽ रल उाकन निवान, उाकन रानानाकँ सम्मान दनाऽऽ। आ गऽऽसँ सम्मान रटग उाऽऽ व्यक्तिकँ आ उाऽऽ व्यक्तिक अयना लल निर्धानिग आ निर्मिग अकासकाँ..."

२

महिसबाड़ ब्राह्मणक गाम गढ़ नानिकलक बगलमे अछि गड़ अनड़नबा, यीअन कयीश बननाह्ह ब्राह्मणक गाम, डाफ्ड यीअन कयीश बानना बड़ अछि। बड़ अगम्भी गाम, बानन आ मनुक्ख दुनू बड़ अनबढ़ल।

डाही गामक छल लटना।

साढ़ गीनसँ चानि स्तीटक बीच लटनाक लम्बाई छल। सट कहै छै ज डाकन माय दासनाक बच्चाकेँ देखि कऽ गुट्टा-गुट्टा कहै छलै। स यता नै एक दिन की रहलै, लटना गकना बादसँ बढ़िग न अछि, डाकन लम्बाई एकदम्मसँ बढ़ब चूकि गेलै।

"धून! माय-बायक कम्मो नजनि लगे छै बच्चाकेँ।"

"नै यौ, मायक गँ लगिग छै, देखियौ न लटनाकेँ।"

गोआँ सट आयसम गय कनथि। ज सट बच्चा यैघ रहल। बढ़य लागल। मुदा लटना घुटमुटाएल नहल। सट क्षा डाकना यनाऊम लटना आ मुँहुयन लटनबम कहुऽ लागल।

लटनबमक माय-बायकेँ जमीन-जाल गगक नै।

अम्भु गानग। लटनबमक गवैया यनिबान।

"गवैया यनिबान छै। गान ज चढ़ै छै गँ डगनिग नै छै।"

"एकसँ एक कविकाठी सटटा, यनिबानम क्षा गय छाड़बाम ककनासँ कम नै।"

"स की कहै छिऐ? यनिबानक कान कथा, सौँस टालम सटटा कविकाठिय रहटग।"

अस्तु जानल। लटनवमक हारमोनियमक तानक निर्वहन सौंसे गाम कऽ रहल छल।

लटनवमक बाबू आ काका दुनू गोटे बड्ड पैघ गबैया रहथि। खानदानी गायन आ वादन परिवार हुनका लोकनिक रक्तमे छलन्हि। लटनवम पाँच वर्षसँ संगीत सीखय लागल छल, ओकर स्वरक स्वाभाविक उदात्त आ अनुदात्त स्वरूपसँ पिता मुग्ध भऽ जाइत छला। मुदा गामक लोकक संगीतक स्थान अष्टयाममे मृदंग, झालि आ हारमोनियम बजेबा तक आ निर्दिष्ट वाद्यकेँ एतबा ध्वनि सीमित छल, आ से प्रायः सभ गोटे सहजे रूपेँ कऽ लैत छला। आन लोकनिक वाद्य छल, मैकाल महोदय संस्कृत शिक्षाक स्थानपर आन भाषा अनवायल आगाँ छला। लटनवमक पिताजी ओहूसँ संबंधित एकटा कथा कहैत छला। मैकाल महोदय जखन शासन छला तँ एकटा गेस्ट हाउसमे ठहरल छला। खिड़कीसँ बाहर देखि रहल छला तँ देखलन्हि जे गेस्ट हाउसक मैनेजर परिसरमे प्रवेश कऽ रहल छला, आ प्रवेश करैत उत्तर गेस्ट हाउसक दरबानकेँ पएर छुबि कऽ प्रणाम कयलन्हि। बादमे जखन मैकाल हुनकासँ पुछलन्हि, जे अहाँ मैनेजर छी आ तखन सामान्य दरबानकेँ पएर छुबि किए प्रणाम कऽ रहल छलौं? ओ पर हुनका प्रत्युत्तर देलन्हि, जे ओ सामान्य दरबान नै छल बल्कि संस्कृतक सहस छल। एक दिन मैकाल सोचि लेलन्हि जे शासनकेँ पराजित करबाक लेल शासनक संस्कृतिकेँ नष्ट करए पड़त। आ ओ लोक संस्कृतकेँ नष्ट करबाक प्रण लेलन्हि, जकर अन्तेँ शासनीय कला, संगीत आ संस्कृतिसँ पलायन भऽ गेल। अस्तु जानल।

मुदा खेती बारी करैत सन नै छलखिन्ह। एक बीघा बटाइ करै जाइ छला, सभ सुनऽ पड़ैन्हि जे गवैयाजी बुते की खेती करल हेतन्हि, मुँहसँ गाबनाइ आ हाथसँ काज करबामे बड़ अंतर छै। मुदा गाबि कऽ गुजर नै चलत, से महीसपर निर्भर छलखिन्ह हुनकर सभटा जीवन। लटना महीसक सेवाम रातिसँ लागल रहैत छल। रातिम रातिभरि कातिम नगति-नगति कऽ चिक्कन बना दैत छल महीसकेँ। पुआरक गुनीसँ सारु करैत काल गोट-गोट अँठौनी निकालि दैत छल। बनु पहुँच बौआ-बौआम महीस चरबैत काल निसहैन रहऽ सुनि नहि छल महीसक पीठपर। मुदा रानि साँझ ठाकुर संगीतक शिक्षा चलै, से लोक सभ हँसीम कहितो रहय जे लटनवम बौआ-बौआ हाइ स्कूलसँ पढ़ाइ कऽ रहल अछि। महीसा लक्ष्मी रहै ठाकुर। अनकर माल-जाल चरबाक सारी जखन सिंह लगाबै छल तँ लटनवमक महीस घास चरबाम लागल रहै छलै, आ लटनवमक कण्ठ संगीत निकालैत रहै। काना टाटका तँ नै रहै जे अही सठीतक प्रताय लटनवमक महीस खुब घास चरै। स साँझम घन-घुनैत काल जखन आन सभ गोटक महीसक पेट पाँजरम धसल रहैत छल, लटनाक महीसक दुनू पेट दुनू दिसन फूलि कऽ लटकि जाइ छलै। बिना पनिश्रम पछाइ छलै महीस।

लटना अपन माय-बापकेँ गेया प्रसन्न कऽ सकल की? ठा दुनू गोट लटनाक गुजर काना चलतै, ठाकनासँ बियाह क करतै- जे बात सभकेँ लऽ साबित रहै छला।

३

“हमर मायकेँ लगै छलै जे ओ जे दोसराक बच्चाकेँ गुड्डा- गुड्डा कहै छलय तँ हम बाघनीन रऽ गेलौं। मुदा ओ बाघनीनकेँ गुड्डा नै कहै छल। की जकरा सभकेँ ओ गुड्डा कहै छली से बाघनीन रहल? ’नै’। जे बच्चा कनी देरी सँ बजनाइ शुरू करै छै तकर तँ नाम बौका-बौकी रऽ जाइ छै, मुदा की ओ बौक रहैत? ’नै’। मुदा जँ बाघनीनकेँ बौना आ बौककेँ बौका-बौकी कहबै तँ ओकरा नीक लगतै? ’नै’। की बाघनीनकेँ बाघनीन आ बौककेँ बौकी हमर माय कहैत छलि? ’नै’। तँ हुनर ओकर कोनो दोख नै। दोख तँ ओकर जे बौककेँ बौका, लुल्हकेँ लुल्हा, नाङरकेँ नङरा आ बाघनीनकेँ बाघनीन कहै छथि। “

४

अस्तु गाना, लटनबम ओ गनहक नागाननधम आगाँ बढ़ऽ लागल। अढ़नज लोकनि द्वारा पाश्चात्य सङ्गीतकेँ अनबाक प्रयासक पलक्षन, रागखण्ड आ नामामात्र द्वारा दल गेल समीचीन उत्पन्न शिक्षक उत्तम किछु नै रऽ सकल, लटनबमक बाल मान अकुलाइत छल। लटनबम संगीतज्ञानक रागखण्डकेँ आदर्श बना आगाँ बढ़ऽ लागल। लोक गवैया कहै तँ कोनो बात नै, एक दिन एहो जखन ओ गवैयाक सामाँ समस्त अखण्ड रागनाक मनसि श्रद्धासँ देखत।

काका आ पिताक संरक्षणमे गामक रामलीला मंडली द्वारा प्रस्तुत कएल जायवला नाटकमे सेहो लटरवम राग लइ छल, ओकर गाओल गीत गाममे सबके ठोरपर आबि गेल छल। जीवनक रथ आगाँ बढ़ैत रहैत मुदा निर्देशीक शासनमे सेहो ध्वनि संगत नै होइ छल। कखनो हैजा तँ कखनो प्लेग तँ कखनो मलेरिआ। अहिना एक बेर गाममे प्लेग पसरल। लोक एक गोटाकेँ डाहि कऽ आबय तँ गाम पर दोसर व्यक्ति मृत पड़ल रहै छल। लटरवमक मायक सेहो पएर आ हाथ चलय लगलै, देह आगि जकाँ जरैत रहन्हि, मुदा बेटाकेँ लग नै आबय देथिन्ह जे ओकरो प्लेग नै भऽ जाइ। दु दिनुका बाद बेचारी दुनियाँ छोड़ि देलन्हि। मनो-मनो बेटापर ध्यान जाइन्ह, गुड्डी तँ अछि, मुदा लम्बाइ किए ने बढ़ि रहल छै?

दुनू बाप-बेटा दाह संस्कार कऽ एला। दुनू गोटेक आँखिमे नोर जेना सुखा गेल छलन्हि। पिता गुम-सुम रहऽ लगला। कण्ठसँ स्वर नै निकलन्हि, मुदा हस्त परिचालनसँ बेटाकेँ अभ्यास करावथि।

३

“गाममे माय हमरा स्कूल पठौलक, मुदा हम जँ किछु पूछी तँ लोक हँसऽ लागय, किछु उत्तर दी तँ दोसर बच्चा हँसऽ लागय। रम्हायन बेली तँ माय आँचरमे नुका लिअय, जे किया देखि कऽ हमरापर हँसय नै। मुदा हमरासँ बेसी हमर माय-बाप सहैत छथि। जेना

हम काना यायक हल छाङ्। जना काना थकि, हमना माध्यमसँ, हुनका दुनू गोटकेँ काना सजा दलकन्हि। “

६

दु-तीन वर्ष बीतल छलैक, खतम हऽ गेलै।
लटनवमक वयस रहै दस-एगारह साल हेतै।
गामक नाटक मण्डली सेहो बन्द छल कारण मुख्य कार्यकर्ता हर्षित नारायण छला आ ओ बनारस चलि गेल छला काना नाटक मण्डलीमे।

गामम बैतनक्षी नाटक जेल नहि। कठपुतली सेहो, मनुक्खक मनलाक बाद बैतनक्षी धान यान करवाक दृश्य, ज हयानर-हयानर छल, खुब नीक जकाँ प्रदर्शित करै छल ओ कठपुतली सेहो।
लटनवम सेहो नाटक देखि आयल। आ एहिसँ लटनाक जीवन एकटा दिशा लऽ ललक। बैतनक्षी नाटक कम्पनीक मालिक लटनाकेँ देखि ललकै।
आ लटनाक बाबूक याछाँ बैतनक्षी नाटक कम्पनीक मालिक लागि गेल। धनादि दऽ दलक, साँझ-रात ओकर घनयन यहुँचऽ लागल।

लटना अयन संगीत आ मदिसवानीम मगन रहै छल। मुदा ओ अनुरुप करऽ लागल ज आइ-काल्हि बाय ओकनायन किछु बशीय

ममता जागऽ लागल छथि।

सभ कहैत छथि जे ललनाक जीवन कोना कऽ चलतै, मुदा ललनाकेँ लागै जे स की ओकर बाबूजन एकरा कोना असगर छोड़त गेलै।

मुदा चौधरी नाटक कम्पनीक मालिक ललनाक बाबूक पाछाँ पड़ि गेल। कहऽ लागल जे ओ ललनाकेँ नीक नाचनी बनेबा चाहैत अछि। ललनक बाबू सभसँ पुछथि जे की करी? सभ एतबे कहैत छथिन्ह जे ओ ललनाकेँ कीनि लेने अछि, नाचनी ने बनऽ देत अछि। ओही नाटक कम्पनी सभ बच्चीक सभकेँ गाम-गाम घुमि कऽ नचबैत आ एहनी सर्कस कम्पनी सभकेँ बेचि दैत छैक। एहन एक बेर जे बड़ा जायत तँ की घुरि कऽ एत? बड़ा धन छौ, बाबाजीक सही!

अकस-तिकस कहैत एक दिन बाप ललनसँ पुछलथि- "भगवानक इच्छा सर्वोपरि। भगवान जखन दैत छथिन्ह तँ ओकरा पालबाक जोगाड़ सेहो कहैत छथिन्ह। लोक सभ कहैत अछि जे ललनाक गुजर कोना चलतै तँ ककरा गप्पक एम माजन ने दैत छलिऐ। मुदा ओही चौधरी नाटक कम्पनी बला तँ पाछू पड़ि गेल अछि। लोकसभ कहैत अछि जे ओही सभ एहनी सर्कस कम्पनीक लेल बच्चीक सभक ताकिम गाम-गाम घुमैत अछि आ ओही कम्पनी सभमे ओकरा सभकेँ बेचि दैत छैक। मुदा ओही कहैत अछि जे स ने छै। सभ दिनुका दिनचर्या छै। एहन-एहन घुमैत अछि ओही सभ। जखन कहियो मण्डलीक नाटक ने लागै छै तँ छुट्टिओ रहैत छै। नाटकमे नामलीला होइत छै आ

संगीत होइ छै। आन के नाटकमे देत ओकर काम लम्बाइ बलाकेँ? से हम अहींसँ पूछै छी जे की कयल जाय।"

लटनाक तँ आँखिसँ दहो-बहो नोर खसऽ लगलै। कोनो सह ठीक कहैत नहि। बाप तँ लागैत निर्णय कऽ लेने अछि।
"बाबू। हमरा बूझल अछि जे हमर बियाह-दान नै हएत। मुदा अपन पएर तँ ठाढ़ हेबा लेल हम गाममे रहिये लड़ छी। गुजर तँ कइये लड़ छी। लोक सभ कहैत रहय जे ताहि बाप ताना बचि देलकउ, से ठीक अछि की?"

आब तँ कन्नारोहट उठि गेल। बापक संग लटनाक कानबसँ अंगनामे अनघोल मचि गेल। बाप कहैत रहलखिन्ह जे एखन धरि उठा ककरा 'हँ' नै कहने छथिन्ह।

जेना सुति कऽ उठलाक बाद रेन-बास गेल महत्वपूर्ण कोटिसँ उतरि कऽ अमहत्वपूर्ण वा ओकर महत्वपूर्ण नै नहि जाइत अछि, तहिना दिन बितैत लटना सहो अपन मोन मना लेलक। कनी देखिते बाबूक दुनियाँ कहुन होइ छै। बाप तँ बचिते लेन छथि, उनक सिनेह नहिताहि तँ बबब कनितथि? तँ हमहीं किए अधरतिया सिनेह नाखी?

७

“रुम किछ वनऽ चाहै छलौं, आ वैगनधी नाटकम जवाक निर्णयक याछाँ उा नूकायल ॐ्ह्वा सत्य छल। रनि जिनगी रुम अपन नूयक कानध अपमान सरुन छी। मूद जेम रुमन कान दाख? ॐ्ी गँ एकटा जनटिक वीमीनी छिऔ, ह्वार्रुिद्मा। सनकान गँ रुमना सा॰॰0 प्रशिश दिव्यांगताक सर्टिरुिकट सत्य दन छल। मूदा किया स मानल गैयान नै छल, रुम लूह नै छी, वौक नै छी, आन्हन नै छी आ नाढन नै छी गँ रुम दिव्यांग कना छी, स उा सावे छथि। “

८

गखन यिगाकँ मलनिआ यकाठि ललकाह्नि।
नागिम निहु नै रुा॰॰ह्नि। सिनमाम रागखगु ह्ननलियि नहै छलह्नि, ग॰॰ आधान यन वटाकँ किछु गावि सूनावऽ कहै छलखिह्नि। लटनवमकँ आरास रुऽ गेलह्नि ज मागाक संग यिगा सत्य दून रुऽ जगा। ॐी साचि काठ रुाटि जा॰॰ह्नि। कूनैनक प्रराव सत्य आव यिगा यन नै रुा॰॰ छलह्नि। नागिम थनथनी यैसि जा॰॰ छलह्नि। लटनवम सरटा कथनी-उाठना सर उाठा द॰॰ छल, मूदा गैया थनथनी नै जा॰॰ छलह्नि। लाक सर दिनम आवि खाज-यूछाठी काऽ जा॰॰ छलह्नि।

वैगनधी नाटक कम्यनीक मालिक जखन सूनलह्नि, ज लटनवमक यिगाक

मान खनाय छन्हि तँ हुन पुछाठी करऽ गेला।

“हम तँ आब जा रहल छी। लटनवम नना छथि। काका पर वास वनता तइँसँ नीक ज अपन पैरपर ठाढ़ भऽ जाथि, संगीत साधना करथि। इहो दैवक लीला अछि ज ओ समय पर अहाँ गाम आबि गेलौं। गामक हवाम जना रोगक कीटाणु आबि गेल छै। ओतऽ मृत्यु टा निश्चित छै आन किछु नै। ओहना स्थितिम संगीतक मृत्यु भऽ जाय तइँसँ नीक ज लटनवम अहाँक संग नाटक मण्डलीम चलि जाथि। मुदा ओकर लम्बाइ कम छै, ओकरा सर्कसम नै वचि दवौ।”
“लटनवम अहाँक पुत्र छी मुदा आब ई हमर पुत्र भेल। संगीतक पारखीक प्रतिभा सर्कस मण्डलीम कुण्ठित नै भऽ जेतै? नाटक मण्डलीम ओकर प्रतिभा कुण्ठित नै हेतै, सर्कस लल तँ मानित नास वाधनीन भऽ जायत। “
“ठीक, ओतऽ लटनवमकेँ हनुमान आ रामक आशीर्वाद भेटतन्हि। संगीतक कतक रास पड़ल छै। नव-नव बाधा पार करता आ अन्य समयम संगीत सुनताह्नि। ओतऽ सँ दिनकर साधना आगाँ बढ़तन्हि।
“
तखन लटना ओतऽ आबि गेल।
जना पिता ओकर बाट जोहि रहल छला। वजित-वजित प्राण जना उखड़ऽ लगलन्हि।
बटाक माथपर थरथराइत हाथ रखलन्हि, तँ सौंगि कऽ वैतरणी नाटक कम्पनीक मालिक गंगा जल आनि मुँहम एक दिशिसँ दलकन्हि मुदा जल मुँहक दोसर दिशिसँ टघरि कऽ बाहर आबि गेल।

९

“हम बच्चा रही तँ हमरा हृदय जे आन बच्चा सन हमरा सही हृदय, आ आवा हम स ताकिय रहल छी। जखन हमरा संग कियो दोसर संग रहै छथि तँ अहाँ हमरा सँ जे पुछबाक से हुनकासँ पुछै छथिन्ह, कन मूकि कऽ साफ हमरासँ जँ पुछब तँ हमरा काक नीक लागत। हमरा जँ सहायता करबाक हृदय तँ हृदयसँ करू, दया स्नेह नै, हम अहाँ सभसँ आग्रह करै छी जे हमरापर हँसू नै, निहारि कऽ हमरा दिस ताकू नै। “

१०

बैरही कम्पनीवला लटराकेँ बनारस लऽ गेल।
लटरबम मात्र एगारह बर्खक अवस्थाम काशी गेला आ गंगा स्नान हुनकर स्नानक आ सूनक बहुत गोट ग्राहक बनि गेलन्हि, ग्राहक नै शोषक कहू। सभटा परिश्रम हिनकासँ करबा लइ छलन्हि आ नाम अपन दऽ दइ जाइ छल। मुदा लटरबम सभे आयु आ गुनक आसमे काटि रहल छला। जखन दिन मुश्किलसँ कटै छै तँ बोझ लागऽ लगै छै, मुदा जँ एक ढर्रा पर चलि जाइ छै तँ सालक साल बीति जाइ छै।
मुदा किछुए दिन। किछु दिन बाद बैरही कम्पनीक मालिक लटरबमकेँ एकटा सर्कस वला लग लऽ गेल, आ ओकरा ओतहि छोड़ि घूरि गेल।

आइ ओही लगैत नहि जे जेना सभ वाघनीनक नाकनीक आगय जागान हुअय। दुनियाँक सभ वाघनीनक नाकनी ओकना लग फक्का नहि। लटना जना वाघनीनक दशम पहुँचि गेल छल। माँछवला, निमाछी, पान-मार, नव-बूढ़, मुदा सभ धनि वाघनीन।

लटना ओकना सभक बीच नचय लागल। किछु दिन धनि गँ ओकना लगैत नहि जे ओ काना विशिष्ट व्यक्ति अछि आ गँ बसी दुखी अछि आ दासन वाघनीन सभ गँ अही पाछ अछि। मुदा आस्ते-आस्ते जखन संगी-साथी सभसँ ओकना गय हामय लगलै, तखन ओकना बूझवाम भलै जे सभक भक्का खनहा छै। ओकन प्रनिढ शुनु हलै आ ओ मानत नास कला सिखलक, सर्कसक करतब सभ।

"च हाउ, चल । गैयानी कनवा लल घण्टी बाजैवला छै। आउसँ पहिन किछु खा-पीवि ली।"

हन आउ जलनुपी घनम हँसी-खुशीसँ, छाट-छीन मगता-माँटी आ मान-मनौअलक संग ओ आगाँ बढ़ऽ लागल। अपन जिनगीक ओही नुप ओकना भहन सन लगै छलै जेना ओ नाकनिहाना हुअय। ओहा घूनि जायत गाम आ हन आयस आवि जायत नाकनीयन। गामक दासन नाकनिहाना सभकँ ओ दखैत छल। गाम अवैत काल जतव उल्लसित नहि छला, नाकनीयन घूनै काल सभक घूघना लटकि जाउ छलन्हि।

मुदा आव गामम क छै जाऽ घूनि कऽ ओ जायत?

हमना सन वाघनीनकँ भेसँ नीक आन कान नाकनी हटगै? सर्कसम

जखन हम कला दखवै छी गँ वच्चा सर काना यट यका्ठ हँसैन्, काक थायठी यडेग अछि। थायठीक अवाज गँ निसाँ आनि दऊऊन्। काल्हि डा दु झड्डी वला वचिया, करुन लगेग नरुय जना अयन लाक नरुय। गामम वठका कक्काक वटीक वियारु नोगछिया रलहि गँ रुनका दिआ गँ लाक सर डठन्की डठन छल ज वटी। वचि ललहि। काक दुनगन वियारु कना दलहि!

ऊी लाका सर, वृसु ऊनानक वढ सर छी। दिल्ली-मुम्बऊ घुमग गऽ गखन न वृसवाम न्गै ज रागलयून-नोगछिया काना गाक दुनगन नै छै। वाय रुमना वचि लग?....वायक मृग्यू माथयन नावऽ लगलै आ ऊी साचिग लटनाक कं0 सूखा गलै आ आँखि यनिया गलै।

११

“डँ अरुाँ रुमन सम्मान कनव गँ अरुाँकँ गखन वृसैम आडाग ज अरुाँक आना लाकक प्रगि सम्बन्धम प्रगाढगा आवि गल अछि। धनीनक नुय कानी-गान रनाऊ, मार-यागन वा छार-येघ रनाऊ, नकन काना सम्बन्ध लाकक व्यक्तिन्सँ नै छै। डँ अरुाँ दासनयन नै सर लऽ कऽ हँसै छी गँ अरुाँ अयन व्यक्तिन्कँ छार कनै छी, मान अरुाँम नम्रगा, रावना, आदन आ प्रमक अकाल अछि। “

१२

लटनवमक सर्कस कम्पनी जखन दिल्ली-मुम्बइऽ आ कऽ्ऽुक नगरसँ घूमि रहल वनारस आयल दु-तीन वर्ख वाद तँ लटनवमक रुँट अनायास ढर्खिासँ रुऽ (गलै, काशीक गट यन। आ रहन डाकना ढर्खिा आनि ललकै अयन नाटक कम्पनीम, वउ गनङ्गासँ।
काशीक गट यन निश्चायणिक व७ सूख सान याउाल गुअ तीन सँ लऽ कऽ रिन्न-रिन्न धार्मिक आ लौकिक गीतक सून वनावथि आ गावथि लटनवम। वाल हनूमानक अरिनयम सर्कसम सीखल हूनकान कनाव काज ओलछि।
आ गऽ्ऽ लल लटनवमकँ प्रशंसा सहा रुटछि। आयूक ध्यूनता सहा करिया काल उपलब्धिक मार्गकँ नाकि दऽ्ऽ छै।
लटनवम चौदह नर्षसँ छब्बीस वर्खक अनस्था धनि नाटक कम्पनीम काज करैत नहला।
"शास्त्री जी। ऽ्ऽी सून तँ हमहीं वनन छी, मूदा मान कनक निचलित अछि गऽ्ऽ ज्ञान दासन सून नै वनि यावि नहल अछि। लटनवमकँ वजा लऽ्ऽ छी। डाहा हमनासँ किछु सिखन अछि, किछु समाधान निकालि लग। "- महान संगीत उपासक रुद्व जीक सासाँ ढर्खिा वाजि नहल छला।
"हँ हँ। अनश्य वजा लिऊ। "- रुद्व जी वजला।
लटनवम जखन आवि कऽ संगीतकँ जऽ्ऽ सनलगासँ सिद्ध कऽ सून गावि दलछि, गऽ्ऽसँ रुद्वजीकँ वूसवाम लागO नै नहलछि, ज नास्फनिक कलाकान ढर्खिा नै लटनवम छथि। रुद्व जी ओकटा ओहन शिष्यक गाकिम छला ज प्रतिराावान आ साधक हाथि, जिनका रुद्वजी अयन सरुटा कला निश्चिन्त रुऽ सौंपि सकथि। आऽ्ऽ स शिष्य रुटि (गलछि

हुनका। लटनवमकँ अपना आश्रमम चलवाक जखन ओ नाग दलहि गँ लटनवम स्वीगि कऽ अपन प्रकाष्ठ चलि गेला, आ यिगाक स्हाटाकँ निकालि कऽ ज कननाऽ शुनु कलहि, गँ यछुद सालसँ नाकल धान छहुन गाठि वहुनाय लागल।

१३

“सर्कसक जाकनकँ गँ अहाँ कलाकान मानऽ लागल छिऔ मुदा सर्कसक वाधनीनकँ? ओ दुनियाक तिजाऽन अहाँक वनायल छी, ब्रौवर्तिंगनैग, लिलियूटक दशक लाक लल ७गऽ काना वस्तु सुविधाजनक नै छौ। मुदा हुम सट ७तजस्ट कनऽ चाहै छी। लिलियूटक दशसँ अहाँक दशम आयल हाऽ जना, वहुत नास समया हागि नहुल छी, आ गऽयन अहाँ हुमनायन हुँसै छी। “

१४

अस्तु गानग। नाटक कम्पनीम जहुन ७कानूयगा छल, गकन नियनीग गुनुआश्रमम नैनिखगा छल। सट दिन लटनवम सूर्योदयसँ पूर्व उठि छला आ संगीग साधनाम लीन टऽ जाऽ छला। शिष्य गुनुकँ यावि धन्य छल आ गुनु शिष्यकँ यावि कऽ। दिन वीगऽ लागल मुदा हागखण्ड आ यलुष्कन महानाज द्वाना संस्कृग साहित्यक आधान यन

संगीतक कतेक गेल पुनरुत्थान सँ गङ्गाक ध्यान हुनकाँ निर्मल आ चिन्तन छल। हुनक गँहीन दरभंगामे छथि, मान करैत छथि आ आन गँहीन जाइ। पच्चीस साल धरि गुरुक आश्रममे दरभंगामे रहला। एकादश वर्षक जखन भेला सँ गुरु छोड़ि विदा कएलन्हि आ दरभंगामे आब ओएह शिष्य सँ गुरुक भूमिका करू। संगीतशास्त्रक पुनरुत्थान भऽ गेल अछि, आधुनिक पाश्चात्य संगीत पद्धति अनेकाक प्रयास निष्फल भऽ गेल छलै, आ आब सँ रागक स्वतंत्र सत्ता भऽ गेल अछि। जाहि आ शास्त्र द्वारा प्रदत्त संगीतक शासन पुनर्जागरणक यात्रा बनू।

एकादश वर्षक आयुमे स्वतंत्र रागमे दरभंगामे नोकरी तकनाइ शुरु कएलन्हि। काशीक एकटा संगीत विद्यालय सहर्ष हुनका स्वीकार कऽ लेलकन्हि। मुदा छियालीस वर्षक संगीत साधनाक साधल स्वर काशी विश्वविद्यालय तक पहुँचि गेलै। शिक्षक पंक्ति लागऽ लगलन्हि। श्रद्धाक प्रतीक, मुदा रागक नव स्वरूपमे कतेको गोट शास्त्रीय संगीतक व्याख्यान सेहो शुरु कएलन्हि, मुदा प्रधानसँ दूर मात्र गुरु शिष्य परम्पराकेँ आधार बना कऽ आगू बढ़ैत रहला दरभंगामे। हुनकर शिष्य सभ देश विदेशमे नाम करऽ लागल। तखन काशी विश्वविद्यालय शिक्षक रूपमे हुनका नियुक्त कऽ लेलकन्हि। मुदा ओतऽ नियम छल जे बिना पी.एच.डी. कएने ककरो विभागक अध्यक्ष नै बनाओल जा सकैत। मुदा विभागमे दरभंगामेसँ बेशी श्रेष्ठ सँ ज्ञाता छल नै। जेना आइ जन परम्परा शुरु कऽ गेल छला, गुरुकुलसँ पढ़निहारकेँ कोनो डिग्री नै भेटै छलै आ ओ सरकारी नोकरीक पात्र नै होइ छला।

लटरबमक लगमे सहो एहि प्रकारक कोनो औपचारिक डिग्री नै छलन्हि। विश्वविद्यालयक सीनेटक बैसकी भेल आ एहिमे विश्वविद्यालय अपन नियमकेँ शिथिल कएलक, आ लटरबमकेँ संगीतक विभागाध्यक्ष बनाओल गेल। ओतऽ सेवानिवृत्ति धरि लटरबम अपन प्रशासनिक क्षमताक परिचय देलन्हि। रागखण्डक अनुरूप कोमल खण्डमे संगीतक शास्त्रक परिचय देलन्हि लटरबम। लटरबमक शिष्य सभक दृश्य-श्रव्य रेकार्ड बनाओल गेल छलन्हि, मुदा लटरबम स्टूडियो आ जनताक समक्ष अपन कार्यक्रमसँ अपन साधना भंग नै कएने छला। साधना राग आ साँझ। रागक साधनासँ साँझक सुर भेटैत आ साँझक साधनासँ रागक। अस्तु गायन।

१७

“एँ बसक सीटपर हम कूदि कऽ बैसै छी, वा हमरा कूदि कऽ बैसऽ पड़ैए, दोकानमे काउण्टरक नीचासँ अपन दिस ताकि चिकरऽ पड़ैए। बस आ सार्वजनिक स्थल हमरा सभ लेल डिजाइन कएल नै गेल अछि। ओँ हम बसक सीट पर बैसै छी एँ लोककेँ होइ छै जे हम कूदि कऽ बैसि रहल छी, आ हुनका लागै छन्हि जे बसक सीटपर बैसबाक लेल जे हमरा संघर्ष करऽ पड़ि रहल अछि से ओहि सीटकेँ डिजाइन करबाक हुनकर असफलता नै छन्हि वरन् हमरा द्वारा कएल जा रहल कोनो सर्कस वा नाटक अछि। आ हुनका हँसी लागि जाइ छन्हि, जेना हुनका हँसबैले हम ई कएलौं? आ हमरा ऐ तरहक उपहास सभ दिन सहऽ पड़ैत अछि। हमरा

एक उग्र लेल भेल छल जे हुनक बाद हुनका कौनछी नाटकवलाकेँ बचि देलका। "

१६

हुनकर शिष्य सभ लण्डनमे लेल एकटा अभिनन्दन कार्यक्रम रखलन्हि। हुनकासँ बिना पूछनहिये शिष्य लोकनि ओऽ रेकार्डिङ्ग कर व्यवस्था कर छला, जइसँ गुरुजीयाक सी.डी. बनय आ ओ रेकॉर्डिंग दुनियाँ सुनय। लण्डनमे अभिनन्दन कार्यक्रममे एला। आयु पचहत्तरि वर्षक छलन्हि हुनकर। श्रोता रहथि देशक सर्वश्रेष्ठ शास्त्रीय संगीतकार लोकनि आ लण्डनमेक शिष्य-मण्डली। जखन लण्डनमे शुरू भेला तखन हुनकर शिष्य लोकनि चारू दिशि ताकि रहल छला। हुनकर लोकनिक गुरुक स्नेह हुनका सभकेँ छाडि सद्यः आन क्षण नै सुनल छल। मुदा शिष्य लोकनिकेँ सुनला उपरान्त सभकेँ अभिलाषा छलै जे जखन शिष्य लोकनि एहन छथि तखन गुरु केहन हेता, से आइ ओ सभ देखलन्हि आ सुनलन्हि। पचहत्तरि वर्षक ई यात्राकेँ सुनैत सुनैत संगीतक महानथी नव रसक संग हँसथि आ कानथि, मुदा शिष्य लोकनि निरतन भऽ मात्र कानथि।

१७

आ बड़ो-बड़ो हुनकर कण्ठ शिक्ष भऽ जाइए। मुदा कनीकालमे ओ हुन बाजब शुरू कऽ देइ छथि।

“हम छी गंधर्व लटनवमा। हम आव यवहफनि वर्खक छी। किछु दिनम हन सर विसनि न जाॣ गँ हम ॢी कहि नहल छी ज हमन वाधवीन समाजक सम्मानसँ अहाँक अथन हाउदा अछि। दुटा लाक उक नढ नै हाॣउ, हँ हमना-अहाँम ज अन्हन अछि स वत्तु वभी अछि। किछु चीज ज हम कऽ सकै छी, अहाँ नै कऽ सकै छी, भनीन नै वढलासँ मस्तिष्कक वभी उपयाग हम सर करै छी, ओहिना जना आह्नन ओ सर सूनि सकैउ ज अहाँ नै सूनि सकै छी। ॢी सम्मान हमन माय लल, ॢी सम्मान हमन यिता लल, ॢी सम्मान हमन वाधवीन समाज लल।“

दीर्घ कथा खण्ड

मधूवनी माथूल

o

अ्हमद, यिगाक नाम डाकील, जिला मधूवनी। प्रानम्भिक शिडा प्राथमिक अा मध्य निद्यालय जामिया। गकन वाद डायन स्कूलसँ दसमा। डा.एल.एक्स. यन खनीद विक्रीक धन्वा, आ्ऱ्.एस.आ्ऱ्. सम्बन्धी सा्ऱ्ट सरक अन्दर्जाल सर्क्ति। कएकटा आ्ऱ्.एस.आ्ऱ्. कान टलीग्राम ग्रूयक सदस्य, अा गही माध्यमसँ व्रन-नाश। एकटा आगंकी संगOनक स्तीयन-सलक सदस्य। जंगलम दशी कट्टाक प्रशिडा्म आगंकी संगOनसँ प्राप्त....

-□हिसम गीन दिनसँ यूछगाछ हS नहल छै, किछ्र वगव नै कनैए।
-हमना लग आनू।
डाकना चाह-कॉफी यूछलिऐ, खना्ऱ् खूएलिऐ, मूदा किछ्र वजव नै कनय।
-सन मानि-यीट कS थाकि गेल, अहूँ थाकि जायव, मूदा हम किछ्र नै वाजव।
-अहाँसँ खना्ऱ्-यीना्ऱ् छाडि किछ्र यूछन छी?
-मीO वजलासँ काज नै चलग, मधूवनीक छी न, अहाँक अवाजसँ वूझि गेलौं। हमन एनिया-्ऱ्लाकाक छी। डा्ऱ् यनजविया सरकँ

हा॰॰ छलै ज नज्ह सए मी0 वाजैज, ञकना वूमा दलिञ ज मधूवनी जिलाक लाकसँ वसी मी0 ञा सए नै वाजि सकैज। ञा यनजविया सए शुनुम खुव मी(0-मी0 वजै छल, हन गानि-मानि शुनु कलका। अहूँ सज्ह कनव।

-हमना गानि यढवाक हिस्सक नै अछि। खाउ-यीवू, किछ आन चाही नँ वाझ।

-हम छी रिदायीन, मनवाल सदिखन गैयान, आभहथ्या नै साहादा, जना जैन धर्मक सल्लखन छिञ धार्मिक आभहथ्या। मूदा ञा हा॰॰ छै अन्न यानि त्यागि कS आ ॰॰ी हा॰॰ छै मानि कS मनि कS।

-हमहूँ नाखै छी सायना॰॰ञ, खा॰॰ल नै खुआवैल, दखु ॰॰ी हमन जवीम अछि। कनक जीहम चटलौं आ सामाँवला, ञधम ञधाक।

-॰॰ी जिहाद छिञ, आ हम छी मूजाहिद। मूदा कानान यादि कनैम दिक्कग रलायन ज संघर्ष कनैज सहा अछि मूजाहिद, मूदा हम स मूजाहिद नै। ज (गैान छिञ गकन विनूद्ध, सए काल आ सए 0ाम।

-ज अहाँकँ वूमायल (गल अछि, सज्ह सही? ज अहाँक माथम यैसायल (गल अछि गकनासँ लज्वाक अछि हमना। अहाँक काजक आ गकन यनिधामक हमना चिन्ता नै अछि।

-रीगुनका संघर्ष छी गौहीद। स हम कS लन छी। कलमसँ आ लिखि आ वाजि कS कज्ल जा॰॰ज ॰॰जागिहाद, खूगवा आ दावा, स मौलाना सए कS नहल छथि। नाजनैगिक हनयन संग0न सए अछि, आ हज्ग किगल-हि-सविलिल्लाह गनूआनिसँ।

-अहाँक आकाकँ छाट-माट सजा दव नीक नै नहग। अहाँ सस्क

एक-एकटा उगक सूचना हमना लग अछि। आ ओी नै वृसु ज कानूनक यंच हमनासँ खला सकव। कलमक ज गागि हमना लग अछि डाक्टम काना छिद्र हम छाउे नै छिउ। सर गनहक आधुनिक उयकनक्ष आ हथियान हमना लग अछि, आ प्रशिक्षित लाक सर सहा। ओी ओघुननट, टलीग्राम आ ब्लाञ्चय सर हमन नियंत्रक्षम अछि। अहाँ सर सनकानकँ काज नै कनऽ दओ छिउ, लाकम ओी ग्रम यसानऽ चाहै छिउ ज सनकान सर्वशक्तिमान नै अछि। सनकान लाकक सुनक्षाम अक्षम अछि। कानक्ष अहाँ सरकँ वृसल अछि ज सामाँ-साँमी अहाँ सर नै लति सकी छी।।

-सनकान मानसिक वीमानकँ कहैत ज ल गहना यहीन। यएह छिउ सनकानक काज? किनानार्जुनीयमक यहिल सर्ग म युधिष्ठिनकँ ननचन यएह गँ कहैत अछि। दूर्योधन निकास कऽ नहल छल, आव डागुक्का कृषक वर्षायन आश्रित नै छथि, कूप-नहनि-जलाशय वना दलक दूर्योधन। गखन किए युधिष्ठिन चूप नै वैसि गेल। जनता गँ खुश नहथि दूर्योधनसाँ। रानानि लिखै छथि।

घड़ी वजलिउ आ दु टा सियाही डाकना हमना चैम्बनसँ लऽ गेलै। सुना डाकन हाल्ल सर हमन सामाँ नाखि दलक। डाकना हमन काज कनवाक गनीका वृसल छी।

हमन एनिया-ओलाका..?

नवी वकस मान यति गेल।

आंकक समाजशास्त्र, प्रशिक्षक्षम यएह गँ निषय नहै जक्षम सरसँ

वर्षो नम्बन हमना आयल छल।
मानि-गानिक एकना उत्न नै छौ। हमन सहकर्मी सन तीन दिन सभे अनन खनाय कलक।
नवी वकस...?

१

-एकटा झम्बन, एकटा यहन आ तीन टा जान लागत। सात दिनमे घन चमका देव। अहाँक काजमे कमाई नै कनवाक अछि हमना। अहाँक ऊपरमे एतक नास लोक अबैत छथि, लोक देखत तँ पूछत जे ई काज क कएन अछि। तहीसँ हमना चाहि ऊपरमे काज हेटि जाएत तँ। अपन एनिया-ईलाकाक लोक दिल्लीमे कतऽ पावी- नवी वकस नाम नहि ठाकन।
-अपन एनियाक लोक छी, कतए घन अछि?
-मधुवनी। हम तँ कहव जे वाथनुम आ किचनक काज सहो कनवाईए लिअ।
-अहाँ तँ पावाना आ यह कनै छी, संगम नाजमिस्त्रीक काज सहो कनै छी की?
-हम नै कनै छी मुदा हमन ऐतौ आँ ई काज कनैत अछि। ठा कहैत नहय जे साहवसँ पूछू काजक लेल। ठाना ठाकन काज वड ऊपरस होइए छौ। हम वजवै छी, मात्र हँट कऽ लियौ। नै तँ हमना कहत जे तूँ साहवसँ पूछनहिय नै हवहूह।
ठा मावाईलयन होन मिललक आ काना सर्हद्दीनकँ वजलक।

सर्फुद्दीन किचन बाथरूम सभक मुआइना कएलक आ कनखीसँ
देवालपर मानलक जे प्लास्टर सड़नि कऽ खसि पड़लै। नलक टोटीकेँ
घुमलक जे ओ टूटि कऽ खसि पड़लै। एहन ओ बाजल-
-सनकारी काज छिऐ। नीक जे मजगूत होइ छै मुदा फिनिसिंग नै
होइ छै। आ एहेन्या गेल-ए बीस साल पुरान ई सभ। देखू ने
देवाल सभक हाल। सभटा अन्डरग्राउन्ड पाइप सभ सड़ि-गलि
गेल अछि। एकर लीकेजसँ देवाल सभक ई हाल अछि। सभटा
पाइप बदलऽ पड़त आ सीमेन्ट जे माइय पड़त। ओना सीमेन्टमे
कोनो जान बाँचल नै छै। एखन देवालमे पाथर सन लगबाइय
लिअ। ई बाथरूम-किचन जहिसँ जँ अहाँ बनबा लिअए काइन
छलौं एकर बालू देखियौ कोना माटि भरल अछि। टस्स कऽ लल
ओ सीमेन्टकेँ हम माटि कऽ भव सीमेन्ट लगबै छी, पाथर नै बनि
जाय जे कहब। एखन मान हुअय जे काज देब आ नै जे नै देब। -
स कहि ओ बनठाक किछु हिस्साक सीमेन्ट माटि कऽ कनिया सीमेन्ट
लगा। देलक आ चलि गेल।
खलील। खलील दुनियाक भरय आ बूसू ज नवी बकसकेँ हमनासँ
एँट कनिहान ईरह भरया। एकटा छोट एक्ठी कनवाक भरय
जइ छान एकरा बजन नही। बनंताक एकटा कानक मनम्माणिक काज
भरया। खलीलकेँ कहलिऐ जे ओ एकटा जमेसी मिस्त्री, जकरा सभ
बम्बइया कहैत भरय, केँ बजा कऽ काज करा देलक। जमेसी बम्बी-
निटर्न छल, ओकर बम्बैक हिस्सा खाम नै होइ, आ ओइम खलीलकेँ
खूब मान लागै। खलीलक सपना छलै बम्बै। एहन पाचाना बला आकि
पंटवला नवी बकसकेँ ई बजलक। आब ई पाचाना-पन्हवला नवी

बकस ओहि सदरुद्दीन राज-मिस्त्रीकेँ बजा लेने अछि। सदरुद्दीन पाइप सभक काज खलील प्लम्बरकेँ दिआ देलक से खलीलकेँ बिन माँगने काज भेटि गेलै। आ एक दोसराकेँ परिचय करबैत आब तँ लकड़ी बला आ बिजली मिस्त्री सेहो घरमे पैसि गेल छल।
-ई नबी बकसक छोट भाय छिऐ। बड़ काबिल। दिन भरि लागल रहै अछि, नाम छिऐ ओकील। नबी बकस तँ आब ठीकेदार भऽ गेल अछि, करमीकेँ हाथो कहाँ लगबैए। ओकील बूझू मजदूरी करैए अपन भाय लग। आ ठीकेदारक भायक आदरसँ आन मजदूर सभपर रौब सेहो रखैए।- फेर कनेक काल धरि, ई जे प्लम्बर मिस्त्री रहय, खलील जकर नाम रहै, से चुप रहल।
-मुदा नबी बकस तँ पढ़ल आ पाबाना करबैए, करमी किए छुअत?
-दुनू गोटे -नबी बकस आ सदरुद्दीन- संगे राज-मिस्त्री रहय। मुदा नबी-बकस लाइन बदलि लेलक। आ आब एक-दोसराकेँ काज दिअबैत रहैत अछि।
फेर खलील हमरा दिस ताकि बाजल-
-अहाँ दिसका लोक सभमे बड़ एकता होइ छै।
ओकील आ खलीलमे काजक विषय गप-शप होइत रहै छलै।
-हमरा सभक पुरखा मुसलमान बनबासँ पूर्व राजपूत रहथि मुदा ई सभ राजमिस्त्री रहै, दुनियाभरिमे राजमिस्त्रीकेँ धीमान कहै छै।- खलील इशारासँ ओकील दिस देखैत हमरा सुना कऽ कहलक।
-हम सभ तँ धीमान छलौं कि की, मुदा तोरा सभ के छलेँह से तोरा एतेक हनिछा कऽ कोना बूझल छौ? - बहुत कालसँ ओकील बिन बजने काज कऽ रहल छल। मुदा पहिल बेर ओकरा उत्तर

देण सूनलिउ। उाकन सरक वीच गय ञा हँसी 0ह्वा चलैण नहेण छलै।

२

ज्क दिन सर्फुद्दीन मूँह लटकन ज्ल। कहलक ज गाम्ध्रणीसँ मगआ र्S गेला

-स कना?

-कहेज ज गाँ सारुवक घनक काज हमनासँ छीनि ललँह, ज्जुलाकाक लाकक नाम यना वूसु, ञहाँ हमन काज दखि कS न हमना काज दन छलौं। ञा ज्जी गँ छा्उ, ज्जीहा कहेण नहय ज... ।

-की? कहू ना।

-कहेण नहय ज मूसलमानयन कहिया निश्वास नै कनवाक चाही। हमन गँ णामस दह लहनि गेला कहलिउ ज णुनण उाकना वजा कS ञानू गS। मूदा उा थाम्ह-थाम्ह लगा दलका हन वादम ज्क दिन गाम्ध्रणीकँ वजा कS हम वूसा दलिउ- ज्ञै महानगनम हम ञा सर्फुद्दीन ज्क रामा वजै छी, ज्जी मात्र ज्कटा संजाग ञछि। ज्कन काज दखियौ ञा ञयन काज दखू, हन ञहाँकँ वूसा यणण ज सर्फुद्दीनसँ ञहाँ किज याछाँ नहि जाज्जु छी।

उाम्हन ज्क गाट नूतन क्लानिंग कन निचान दलक णज्जुयन सर्फुद्दीन उाकनासँ लटि गेल ज नीचाँ म याथन नीक नहण। वाथनूम ञा किचनम याथन ञछि गँ सर 0ाम ज्जीज्ह नहवाक चाही। नूमम किज्क नूतन क्लानिंग हज्ण? मूदा नूतन क्लानिंग वला कहलक ज ज्क दिनम लगा दव ञा याज्जुया सम्फ कहलक स हम उाकन हँ

कहि देलिऐ।

भरि दिन अनघोल होइत रहैत छल। नीचाँक क्लास बलाक बटाक बाहरमे कउआक पनीआ नहि से ओ जे राजमिस्त्री सभक आवाजाही देखलक तँ कहऽ लागल, जे रूम सभमे तँ पाथर नै लागत? हम कहलियन्हि जे नै नूतन क्लासिंग काल्हि कऽ जाएत, तँ ओकर साँसमे साँस एलै।

-पाथर लगाबएमे तँ माससँ ऊपर ई सभ लगबिताय, हमर बटाक पनीआ अछि, से हम तँ पाथर सभ पसरल देखि कऽ चिन्तित भऽ गेल रही।

-नै मात्र बाथरूम आ किचन लेल ई पाथर सभ अछि।

सर्फुद्दीन, खलील आ नबी बकससँ अबैत जाइत काजक अतिरिक्त घर-द्वारक तय सेहो होमए लागल। नबी बकस मधुबनीसँ दिल्ली ऐल , छह भैयारीमे सभसँ पैघ, एकटा बहिन सेहो नहि। अपन हमशीरा (बहिन) क बर आ ओकर सासुरक विषयमे नबी बकस प्रेमपूर्वक सुनबैत रहैत छल। सर्फुद्दीनक शागिर्दीमे ओ राज मिस्त्रीक काज सिखलक। आस्ते-आस्ते चारि भाँइकेँ दिल्ली बजा लेलक। ओकील तँ ओकर संग रहै छै, तीन भाय सभ बियाह करैत गेल आ अलग होइत गेल। मुदा ओहो सभ आस-पासमे रहै जाइए। बियाह तँ ओकीलोक भेल छै, मुदा अछि ओ सुधंग। से आन भाय सभ कहैत-कहैत रहि गेलै जे नबी बकस मंगनीमे खटबैत रहै छै, अलग भऽ जा गऽ, मुदा ओ तँ भायक भक्त अछि। भायक सामाँमे एको शब्द की बाजल होइ छै?

३

एक दिन ओकीलकेँ बखान भेल नहि आ दोसर राय सब ओकना काजयन एवासँ मना कनल नहि। मुदा ओ नै मानल। ओकन सुभंगयना दखि हमन माँ, पत्नी, बच्चा सब ओकना खुब मानऽ लागल नहथि। ओहि दिन काजक वीचम ओ खवा लल मांगलक आ वालकानीम सुति नहल। हन वनिया यहनसँ काज शुनु कलक। साँझम घन जवाक वनम जखन हम कहलिऐ ज ओना जवाक वन भऽ गेल गँ कहलक ज नै, आहि काज लटसँ शुनु कन नहि स खाम कहिय कऽ जायव। आ आफ्सँ वडवडाहिंग वाजल ज दखेग छिऐ ज आहि श्मा वजवे लल आवैए आकि नै।

आठ वज कनीव माटनसाहिकिलयन दु गोट भेल। ओकील कहलक ज हिनी दुनु ओकन झाटका राय सन छी। दुनु गोट गसन गल्ला सिठाग हमन क्लेटयन भेल आ ओकीलकं गय कनवा लल वजलक। ओकन सरक गयम आयकाग मिश्रित भाव नहि। ओकील ओकना सरकँ कहेग नहय ज ओहन काना गय नै छै, आहि आधा दिन सुगल नहय गँ सावलक ज काज युना कहिए कऽ जायग। गानग नवी वकस सहा ओगऽ पहुँचि गेल आ ओकीलकँ लऽ गेल।

दोसन दिन नवी वकस गन-गन भेल।

-दखियौक हिनी राय सर।... वटा जकाँ वुसलिऐ एकना सरकँ आ हमनायन कलंक लगवैग अछि ज गँ दु नंग कनैग छहु। गीनु गाँए काल्हि हमनासँ खुब झगडा कनै गेल ज गँ ओकीलकँ नाकन जकाँ

नहिँ छलैक। बूझू! ई ओकील अछि सुधांग। काल्हि कहै छथि जे नीकसँ कयल लड़ल यहीन, तँ ओहो मालिक जकाँ नहिँ अछि। काल्हि हमरा तँ ओकीलसँ हटा नै अछि। सरकारक काज शासन सञ्चालन चलि रहल छै, ओकरे गेल छलौं जे कोना स्त्रीमसँ काज हटि जएबाय तँ अहाँक ओतए काज खतम रहलायन ओकरे लागि जएबौं। विशुन अंसल वलाक □हुन ओल नहिय जे हमरा ओतए आवि जाउ मुद्दा राय सरक ह्मान हम मना कऽ देलिऐ। आ ई सर.. ओना ई सभटा हमर घटना वला राय मंडलवाक कनफुसकी छी।

-मंडल!!? हमरा किछु पुरान गप मोन पड़ल। -अहाँक गाममे एकटा जयशंकर सेहो छथि की?

-हँ! हँ! अहाँ कोना चिन्है छियन्हि? ओना असली नाम तँ हमर रायक सलीम छिऐ। □हिसक नाम मंडल, घरक सलीम। सरकारी ब्राह्मण अछि। घरमे सलीम कहैत ओकर अहलिया (कनियाँ) वड घबड़ाइ छै।

-सभटा बूझल अछि हमरा।

४

अयन विद्यार्थी जीवनक एकटा घटना मोन पड़ि गेल।

पटनामे पढ़ैत रही। पड़ोसमे एक गोट जयशंकर रहैत छला। राति-राति कहैत छलथिन्ह। दु विचार। पहिल विचारक हुनकर बड़ा राखि गेल छलन्हि। ओना दोसर विचार पहिल पत्नीक मुइला अनंतर रहल छलन्हि। किछु दिन दिल्ली-बम्बई घूमि पहिल विचारक

ऊा वटा ऒायस ेलाह्रि। सरे ऊाकना यूछलकै ज की कनम? ऊा कहलक ज सरे काज हमनासँ हो मूदा यढाꣳ ह्राि कs। हन सरे मिलि कs ऊाकना ञ्राꣳननीक लाꣳनम जवा लल कहलक। ऊाकना मान नहे ञ्राꣳननी सिखवाक। रान-रान ेक दिन जयशंकन कहलाह्रि ज ऒाꣳ ेक ०ाम चलवाक ऒह्रि।

-वटा कहे ज ञ्राꣳननी सीखव। ञ्राꣳनिंग स्रूल वड महग। ेक ेगाट ेगोऒाँ सलीम ऒह्रि ञ्राꣳनन, सनकानी ▯हिसम। गामम ेऊ वन ह्रूडीम रेटल नहय। ऊाकना सरेक ꣳीद यावनि ह्रलै, स ेजल नहय गाम। कहलक ज ननि दिन कs ऊाकना ह्रूडी हाꣳ ह्र ▯हिसम ऒा ऒान दिन याँच वज रानसँ सिखा सकैग ऒह्रि। दु से टाकाम ेकटा सकंत हैत साꣳकिल वटाकँ कीनि दन ह्रिऊ, ऊाकन घन दुन ह्र। ऊाकन ऊना ▯हिस लग ह्र। ▯हिस वजन ऒह्रि, ऊागꣳसँ घन दखाऊाग।

-▯हिस दखल ऒह्रि?

-हँ, कगाक वन ेगल ह्री।

▯हिसक वनम हम सरे गाँधी मैदानक वगलक कवहनी सन ▯हिस यहुँचै ेगलौं।

-मंऊलजी ञ्राꣳनन साहव ह्रथि? - जयशंकन ेक ेगाट हाकिमक ▯हिसक वाहन ०ाढ चयनासीसँ यूछलाह्रि।

-हँ, ऊाह्रन ह्रथि।

हम जयशंकनकँ यूछलियाह्रि ज हमना सरे गँ सलीमसँ रेंट कनवा लल ेजल ह्री, ꣳी मंऊल क ह्रथि?

ऊा ꣳशानाम हमना चुय नहय लल कहलाह्रि ऒा ꣳीहा मूखन नुयम

कहलन्हि जे प्रेम करना पाप छै, बादमे कहता।
आब जे मंडलजीसँ हुनका गप समय लगलन्हि तँ बीच-बीचमे ओ सलीम साहेब, सलीम साहेब कहि हुनका सम्बोधन करैत रहलाह। हम हुनका संग हम सभ हुनकर डेरा पहुँचलौं। हम विदा होइत काल सलीम साहेब जयशंकरकेँ हमरा दिस इशारा करैत कहलन्हि जे हिनका कहि देलियन्हि ने। जयशंकर कहलखिन्ह जे कहि देबन्हि। ओतऽ सँ निकललाक बाद जयशंकर कहलन्हि जे मधुबनी लग जयशंकरक गाम छन्हि। मानल जास साहेब बहिन छै सलीमक। सलीम हुनकर लंगोटिया यार, संग पढ़लन्हि। हम राजनगरक क्रममे दुनू गोटे दून चलि गेला। सलीम काना हाकिमक घरपर काज करऽ लागल। ड्राइवरी करिया कऽ ओ सीखि ललक, से हुनकेवलाकेँ नोकरीक तँ ओहुना दिक्कत ने होइत छै। बादमे एकर स्मरण देखि कऽ ओ हाकिम एकरा काना दोसर आदमी जकर नाम मंडल रहय, आ कर्मी मरि-खपि गेल रहय, कर नामपर एम्प्लायी राखि ललकै। हम किछु दिनमे ओ परमानेन्ट भऽ गेल।

जयशंकर हमरासँ कहलन्हि - एकर □हिसम ना एकर संगी साथी लग- ओना अहाँसँ हम करिया एकर हँट हो- ई गपक धोखासँ बचबा ने करब। ओना परमानेन्ट भऽ गेल छै मुदा लोक सभ कहैत होइत छै से ने बूझै छथि। हम किछु लिखि पढ़ि देने तँ मंगनीमे बचानाकेँ हमरा लागि जाएत।

मानम घूमनल ई गपकेँ नवी बकसकेँ हम कहलिऐ। तहियन ओ

वाजल-

-डाह्ल स्कीम धर्मनिर्वान हमहीं छी। एकरा कम्प्लेन कऽ देवै गँ जाइ नाकनीयन एाक हूनहूनी छै स घासनि जौं। मूदा सावै छी ज डाकन नाकनी जौं गँ हमन माथयन आवि वथायग। गँ अल्ला यन सरटा छाडि दन छिउ।

१

नवी वकस डाना गँ वड ब्यस्त नहि छल मूदा डाइ दिन लागैत हमन सँ गय कनवा लल समय निकालि कऽ ऐल नहय। जखन लाक मानसिक यनशानीम नहैत गँ अयन दूखनामा दासनाकँ सूनवऽ चाहैत। मूदा एकन प्रभाव रटव माश्लिल। मूदा हम अयन मनाविज्ञानक कॉलजिया यढाइक प्रयागक कानण सर काज छाडि अनायास प्रभाव वनि जाइ छी स नवीकँ वूसल नहि। रदवनिया लधन छल स हमहुँ कम्मो वाहन जवाक हनवडीम नै छलौं। स डा अयन खिस्सा शुनू कलक।

-काफ कष्ट कटन छी स की वयान कनू। आ मदति क सर कलक? एकरा खालु-खाला (मौसा-मौसी) आ खलना राय आ खलनी वहिन मान यडैत आन क्या नै। अब्बूक मनलाक वाद वडा अब्बू (वडका काका), छाटा अब्बू (छाटका काका) सर यनाया रऽ गेल। शौहनक मनलाक वाद अम्मीक हालग की नहि स ओही राय सर की वूसग-गमग? खाला दिल्लीम नहैग नहथि। अम्मीक मृत्यूक वाद हमन यढाइ छूटि गेल। मधूवनीम यढैग नहिऔं, हूहीजाद

राय (यिसियौग) करुनहिया नहुय ज गाना जाक यठवाक छौ यठ, मूदा ओ सरु गखन गामम ओहो उOविगय स हमना दखल हाउगय? आ ओ गय ओकना सरुकँ हम वूसैया नै दन छिउ। आ ओ सरु की करैय ज हम अयन अहलिया (स्त्री) आ सानि-हमझह (सानि-साढू)क याछाँ ओकना सरुयन ध्यान नै दs नहुल छिउ? दु नंग कनैग छिउ? दिल्लीम आयल नहो गाम छाति कs गँ यहिन नायताम यिगनिया वर्धनक दाकानम व्रासासँ वगीन सारु कनैग नहो। अल्लाहक कनमसँ सरुहु हटि गेल। खालाजाद राय (मौसना राय) कन संगी नहुय सरुहु। उाकनसँ सरु ओलम सिखलौं। मूदा ओ कहि दिअय ज हम कहिया उाकना दग। दन हाउउ। सरुहुक स्नराग गँ अहाँकँ वूसल अछि। कनिया अयाय आ वउमानी उाकना यसह नै छै, सरुसँ वगकहो रुल छै, मूदा हमनासँ आउ धनि काना मान मूटव्वल नै रुल छै। हमन स नीयग नहिगय गँ उाकना संग न हमन संवंध टूटिगय। आ ओ शहनम उा आन रुs हमना अयन वूसलक आ ओ सरु? उा गँ गेआँ छौ, मूदा खलील? उाकनासँ यूछियौ। मायक मान यति जाउउ जहिया ओ रुदननिया लाधेउ। मान नै याउs चाहै छौ, आ गउ लल व्यक्त नहै छौ। मूदा आउ मायक उा मृत्यू नहि-नहि काठ गाति नहुल अछि।

नवी वकसक कंO करुग-करुग रुनिया गेलौ। मूदा कनक यानि यीवि हुन उा मायक स्मनध कनउ लागल।

-नवी साहवजाद, कनक उाहि काOगकँ खड्डाक लग कs दिउौ। वउ यानि चुवि नहुल छै उागs। ओ वादनकाल सरु साल दु:ख दउउ। साविग नहि गेलौं ज घन छउायव। मूदा नै रुs सकल। घनाक

कनी मरामति बनायब आवश्यक छल, मुदा सभ नै भऽ सकल। ठाम-ठाम सांगर लागल अछि। फूसाक घर कोना घर होइ छै? ठाम-ठाम चूबि रहल अछि, ओतक कठौता नै अछि घरमे। खनाइ कोना बनत से नै जानि। ओसारापरक चूल्हियन तँ पानिक मारे टघार खसि रहल अछि। एकटा आन अखड़ा चूल्हि अछि, मुदा जँ ओ टूटि जायत, तखन तँ चूड़ा-गुड़ फाँकि कऽ काज चलबऽ पड़त। समय-साल एहन छै जे चूल्हि बनायब तँ सूखब नै करत। जाड़नि सभ सरटा भीजि गेल अछि। गुसीयन खनाइ बनाबऽ पड़त।

-पइढ़िया उजरा नूआक आँचर ओढ़ने, थरथराइत कनीमा बगम माने हमर माय, चौदह बरखक अपन बेटाक माने हमर संग, कखनो सांगरकेँ साम्ह करथि तँ कखनो कठौताकेँ एतऽ सँ ओतऽ घुसकाबथि। जतऽ टघार कम लागन्हि ओतऽ सँ घुसकाकऽ, जतऽ बेसी लागन्हि ओतऽ दऽ दइ छली। सौँस घर पिच्छर भऽ गेल छल। कोनटा लग एक ठाम पानि नै चूबि रहल छल, ततऽ जा कऽ ठाढ़ भऽ गेलीह।

-कतेक रास खढ़ बरम अरर पड़ल छल। पढ़ुआ काकाकेँ कहलियन्हि नै। घर छड़बा लेल नहियौँ।

-यौ बाबू! घर छड़एबाक लेल पुआर तँ भेटनिहार नै। आ गरीब-मसोमातक घर खढ़सँ के छड़ाबऽ देत?

-हमरा खढ़सँ आ पुआरसँ घर छड़बयबाम होमयवला खरचाक अन्दर गरिया नै बूझल छल।

-से तँ अम्मी, खढ़सँ छड़ायल घरक शान तँ देखबा जोग होइ छै। पढ़ुआ काकाक घर देखने छियन्हि। देखऽ मे कतेक सुन्दर लगैत

आ कहला वनखा हुअउ, उका ((0ाय यानि नै चूवे छो।

-स गँ सरसँ नीक घन हा॓ला अछि का0ावला।

-उह, की कहै छी? गिलवासँ आ सुनखीसँ ॓ली जाउन का0ाक घन रS जा॓ छै? आ नढनाक घन गँ सीमहसँ जाउल छै, मुदा यनुकाँ गाक चूवो छल स युछ नै।

-स?

-हँ यै अम्मी। सर वनख याँ छउवा दी, गँ उा॓सँ नीक काना घन हा॓ छै?

-चानिम वनख ज छउवन छलौं गकन वादा यहिल वनखाम खुव चूअल छल।

-यहिलुक वनखाम चूअल छल न आ हुन सर गह अयन जगह धS लन हुउग। गखन नै चूअल न वादम।

-हँ, स गँ गकना वाद गीन वनख नै चूअल।

-गखन काकी वजो उली-

-जनमि कS 0ा८ रल अछि आ की सर अहाँकँ सिखा नहल अछि। कनक उवउ जकाँ रलै गँ सावलौं ज वहिन-दा॓क खाज-युछानि कS आवी।

-वूल्ली नुकि (गल छल। हम काकाक घन दिस (गलौं आ दुनु दियादनीम गय-शय शुनु रS (गलन्हि। साँमक मलहली शुनु रल, रदवनियाक अह्रान, गँ काकी वहना॓ कहो (गली-

-वहिन दा॓, आगिक जनुनी यउय गँ हमन घनसँ लS जाउव।

-नै वहिनदा॓। सला॓म दु-गीन टा का0ी छै। मुदा मसुआ (गल छै। ह, ॓ी तिव्वी दै छियन्हि, कनककाल अयन चूल्हा लग नाखि

देथिह्न गँ काजक जागन हऽ जायग। नवी दिआ य0। दिहथि।
-देखिहथि। उयास नै कऽ लिहथि स कहि दै छियह्नि, वञ्ञा सर गँ हमना उ0ाम खा लग।- दियादिनी कहेग विदा हली।
-कनीमा वगम मान हमन माय डासानायन खुट्टा हन यी0 सटा वैसि (गली।
-की साचि नहल छी अम्मी। कदु न?
-यउह हूसियाही गय सर, अहाँक अब्बुक यहलमानीक। काका हूनका ज कहेग नहथिह्न सउह।
-खुट्टा यहलमान छथि ॐ।
-स नै कदु काका। जवनदस्तीक मानि-यीरि हम नै कनै छी, गॐ ह्वान न अहाँ ॐ गय कहि नहल छी।
-नहमान काका आ हूमायूँ हागिजा। यिभी-हागिजम डाहिना गय हाॐ छलहि, जना दाम्भियानीम गय हाॐ छै। अखनाहाम जखन हूमायूँ सरकँ वजाउ देथि गखन अन्मिमम नहमान हूनकासँ लउय आवथि। काका कहिया हूनका नै जीगऽ देलखिह्न। हूमायूँक कनियाँ मान हम नव-नव घनम जेल छलौं। काहवन लह0ी सर हाॐग छलै डाॐ समयम। आव न जानि मूल्ला सर किउ उकन निनावी हऽ (गल अछि, गैया लाक कनिग अछि की! मूल्ला सरक गय ज मानऽ लागी सर 0ाम गखन गँ हल! आ उ गनहक नागानन्ध घनम देखलौं गँ मान प्रसन्न हऽ (गल। घनक दूलानि छलौं आ सासूना गहन हटि (गल। समय वीगऽ लागल। मूदा हूमायूँक निधना उगक जल्दी कहाय लागव स नै वूसल छल गहिया। आव गँ सर प्रकानक निशेषधक अयास हऽ (गल अछि। मगउ-माँटिक वीच क्षा ॐीहा

कहि दइ अछि- ननखोकी, ननकेँ मानि तइन सिखन अछि! हुमायूँक जिबैत ओ सभक दुलारि छलीं तकर बाद सभक आँखिक काँट भऽ गेलीं। इन्हक बाद नैहरसँ शासन बियाह करबा लेल सहा राय सभ भेल मुदा अहाँ सभक मुँह देखैत रहबाक इच्छा मात्र रहल।

नबी बकस बाजल- उजरा नुआ, बिन चूड़ी-सिन्दुरक मायक बैधव्य बला बहुरा एखनो हमरा मोन अछि। हुन उइ हदबनिया नातिम माय आगाँ करऽ लगली।

-रहमान काका हमर यऊ लऽ किछु बाजि देलखिन्ह एक बेर, तँ हमर सासु-ससुर करऽ लगलखिन्ह ओ हमर पुतहुकेँ दुनि कऽ रहल छी। आ इहो ओ मुश्लीवा सभक अपना घरमे घटना होइ, तखन न बूझै जायत। आब तँ न रहमान बाबू छथि आ न सासु-ससुर स मनल आदमीक की शिकायत करू। मुदा एकाटा मु0 गय ओ सभमे ने अछि। लोक कहैत छै ओ सुखक दिन जल्दी बीति जाइत अछि, मुदा हमर दुखक दिन जल्दी बीतैत गेल, सुखक दिन तँ एखनो एक-संगु उयासम खुजल आँखिसँ हम देखैत रहै छी, खाम ने होइए। निधना हलाक अग्निक आन घटनाक्रम अपन नियत समयसँ होइत रहल। हमर अब्बु-अम्मीक मृत्यु भेल, सास-ससुर आ यिगिया ससुर रहमान कका तँ यहिनहिय गुजरि गेल छला। घरमे जखन बँटबारा होमय लागल तखन सम्पत्तिक आ खेत-पथारक बखरा, चारि भैयारीमे मात्र तीन ठाम होमय लागल। हुमायूँक हिस्सा तीनू गोट (जिबैत भैयारी सभ) बाँटि ललन्हि। हम किछु कहलियन्हि ओ हमर गुजर कोना हएत, छह टा बेटा आ एक टा बेटी अछि

तँ हुमायूँक मृत्युक बाद हमरा माथपर दऽ हमर मुँह बन्न कऽ देल गेल। तीनू भाँइक मुँह हुमायूँक समक्ष खुजैत नै छलन्हि मुदा हुनकर मृत्युक बाद हुनकर विधवाकेँ हिस्सा नै देबऽ लेल तीनू भाँय सभ तरहक उपाय केलन्हि। हम नैहर जा कऽ अपन भायकेँ बजा कऽ अनलौं। पंचैती भेल आ हुन अँगनाक कागत एकटा खाता अलगसँ तीनू भाँय बान्हि देलन्हि, हमरा आ हमर बच्चा सभक लेल। धान, फसिल सभ सदा जीवन निर्वाहक लेल देबाक निर्णय भेल। हम चरखा काटऽ लगलौं। जे कपड़ा-लत्ता ओतऽ सँ तना निकलि जाय।

-लिअ सलाम। - दियादिनी आबि कहलन्हि।

-हँ। - हक टूटलन्हि कनीमा बेगमक मार हमर मायक। दियादिनी सलाम पकड़ा चलि गेली।

-ओ बर बाढ़िक समाचार नहि नहि कऽ आबि रहल अछि। बाट घाट सभ जतऽ ततऽ डूबि रहल छल, खेत सभ तँ पहिनहि डूबि गेल छल। अहाँक पढ़ुआ काकी पहिनहिये सुना देने छथि जे ओ बर वार्षिक खर्चाम करौती हएत। काल्हि कहैत रहथि जे कनियाँ सभटा फसिल डूबि गेल, ओ बर वार्षिक खरचाम करौती हएत। हम कहलियन्हि जे एँ यौ। जहिया फसिल नीक होइत तँ हमर खरचाम कहाँ कहिया बनौ धान दै छी? आइ तक अहाँक पढ़ुआ काका सुनि रहल छला। बजला- नाँत तँ साँत भऽ गेल। अहाँक पढ़ुआ काकीक ...काना कलायन ओ ससनि कऽ दलान दिसि बढ़ला गेला आ हम नाक साँखि गेलौं। आइ तक निकलल तँ.......।

मायक खिस्सा कहैत-कहैत नवी हुन नूकि गेल। आँखि आ कं0

दुनू संग छोड़ि रहल छलै ओकर। किछु काल चुप नहि बाजल।
-इही खिस्सा भाय सरकेँ हम कहबा नै कन छिऐ। सोचलौं जे कहबै तँ मंगनीमे प्रतिशोध जगतै। जे काज करबाक से नै कएल हतै। ओ सुनलिऐहँ जे हमर ओ मंतलवा भाय ओइ पढ़ुआ काकाक कहलमे आबि गेल अछि।
नबी बकस हुन किछु काल चुप रहल। भाय सरक प्रति ओकर प्रेम ओकरा सरक विषयमे बेसी बजबासँ ओकरा रोकै छलै। हुन ओ मायक खिस्सा शुरू कलक।
-माय आगाँ बजैत रहली।
-बूढ़ दिनमे तँ खरहिये छलौं, ओ अकल-बनमे करा खेनाइ बनायब। कनियाँ-मनियाँ छलौं तखन विधवा भऽ गेलौं आ अहू वयसमे तँ सर कनियाँ-काकी कहैत। हुमायूँ करक माने छल अपन भाय सरकेँ। अपन घर छोड़ि भागलपुरमे राखि पढ़ओलन्हि छोटका भाइकेँ आ आब ओ पढ़ुआ बौआ बहुत गप करै छथि।
-साचिर-साचिर नोर भरि गेलन्हि मायक आँखिमे।
-हमरा संग ओकरन हज करऽ लऽ गेल रहथि माय। धन्य भानर सरकार जे हमरा सनक गरीब-गुरबाक माय सन्ह हज कऽ ऐल। आ अपन बच्ची दियादिनीकेँ सुनबैत रहथि खिस्सा जे बहिनदाइ, तरक रीत छल गाछीमे, गुमान तरवा। गाछीमे बेसी मसामार सर छली। एक गोट कहैत छली जे जाक कष्ट आइ भल तरक तँ जहिया नाँत भल छलौं तहिया नै भल छल। फेर आ हवाइ जहाज दुनूकेँ अम्मी गाछी करै छली।
-हुन ओइ भदबनियाक नामि हमर अम्मी कनीमा बगमक मुँहयन

बाड़ीक हहाइत पानि आ चारसँ टपटप चूबैत पानिक ठोप आ घटाटोप अन्हारक बीच कनक मूर्छा आबि गेलन्हि। हमरा काकाक दलानपर जाय लेल कहलन्हि तऽ आन भाय बहिन सभ छल।
-हुन साचित-साचित खाटपर टघरि गेली कनीमा बेगम, माए हमर माय। भोर होइत-होइत बाड़ीक पानि बान्हपरसँ अंगना दिस आबि गेल। तीनू भैयारी अपन-अपन हिस्साक आँगन भरा लेने छला से सभटा पानि सहटि कऽ हमर सभक धसल आँगनसँ खायड़ी दिस बढ़ि गेल। घरमे चारि आँगुर पानि भरि गेल। भोरमे किछु अबाज भेल आ जे उठै छी तँ खाटक नीचाँ पानि भरल छल, एक-काठी दासन काठीपर अपन अन्न-पानिक संग टूटि कऽ खसल छल। आब की हो, बड़की दियादनीक बेटा सभसँ पहिने आबि कऽ खोज पुछाति केलकन्हि, अबाज दून धनि गेल छल। सभटा अन्न-पानि नाश भऽ गेलन्हि। अन्न पानि छलैन्हि कोन? दु-टा छार-छार काठी, डाकर खरनी-माटि मिला कऽ दढ कनो नहै छली हमर अम्मी। मुदा भोर धनि ओ हेरा कऽ खसल आ मसोमातक जे बरख भरिक बाँचल मासक खानिस छल गकना नाइ-छिपी कऽ दलक। कनीमा बेगम माए हमर अम्मी सूप लऽ कऽ अन्नकेँ समटय लेल बढ़ली, हमर आँखिक देखल अछि। मुदा बाढ़िक पानिक संग पाँकक एक ढेर आबि गेल छल घरमे। सौंस टोल हल्ला भऽ गेल जे देखिऔ कहुन भैंसुर दिअर सभ छै, अपना-अपनीकेँ अपन-अपन अंगना भरि लइ गेल अछि। मसोमातक अंगना तँ अदहासँ बेसी धकिआ लऽ गेल छलैह, जे बचलीक बचल अंगना अछि से खधाइ बनि गेल अछि। बड़की दियादिनी सहटि कऽ एली कानय

दिआद टोलक लोक सभ आबऽ लागल रहथि। कनीमा बेगमक सोंगरपर ठाढ़ घरक दुर्दशा देखि सभ काना-फूसी करऽ लागल रहय। आँगनाक एक कोनसँ दोसर कोन, अपन घरसँ दोसराक घर! यानि पैसबाक देरी रहै आ आस्ते-आस्ते हमर घरक एक कोनक भीतक देबाल ढहि गेल। टोलबैया सभ हल्ला करऽ लागल जे कनीमा बेगम भितर तँ नै रहि गेलथि। बड़की दिआदिनी खसल घर देखि हदसि गेली। बजली जे अल्ला रउ रखलन्हि जे सूरतो भल आ नबीक भाइ-बहिनकेँ घर लऽ अनलिऐ नै तँ दियादी ताहि नै बूझल अछि। सभ कलंक लगबैत अखन।

-मुदा दियादनी!?

-दियाद सभ, सभ गप बूझि अपन-अपन घर जाइ गेला। हम अम्मी लग रहलौं। मार्क्सवादी विचारक रही, मधुबनीमे पढ़ैत छलौं। विधवा-विवाह, जाति-प्रथा सभ विरुद्ध पढ़ि आ काकासँ भिन्न विचार रखैत छलौं। घरक नाम नबी छल मुदा स्कूल कॉलेजक नाम नबी बकस। गाममे भोजमे खढ़िहानक पाँति आ बाह्मनक पाँति देखि विचलित होइत छलौं। जन-बनिहारकेँ बाह्मन बैसा कऽ खुआबैत देखैत छलौं आ बाबू-भैयाकेँ खढ़िहानमे। खढ़िहानमे बनिक लोकनि द्वारा खाजा-लड्डू कैक बेर आनल जाइ छल। बाह्मनक पाँतीमे एक बेर आ रहिया। मुदा घरमे कोनो मोजर नै छल, कहल जाइत रहय जे पढ़ि-लिखि कऽ किछु करू। अम्मीसँ कोनक गमछा-मोड़ा भरैत छल, चरखाक सूतक कमाइक। जय गाँधी बाबा, विधवा लोकनि लेल ई काज धरि कऽ गेला।

-मुदा हमर अम्मी? की भेलन्हि हुनका? भाय बहिन सभ तँ ओहन

अछि!

-अम्मी!!!!!!!!!!!!!!

-हमन विद्वानसँ सौंस टालम थनथनी यैसि गेल नहुया। नवी कहिया कनोंग नै अछि, कानल अछि गँ काना गय छी।

-नै अम्मी। हुनी काना गय नै रहल। किए हमनायन अहाँ रहास छाडि दलौं। नवी वकस नाम छी हमन। याँवा राय आ छाटकी वहिनक राय नै वाय छिउ हम। मुदा अहाँ हमनायन रहास छाडि चलि गेलौं। या अल्ला!!!!!!!!!!!

-टाल झटि गेल मैयाक चानु दिश। क की सए कलक स नै वूझलौं। अम्मीकँ गुसुल (नहाउल) कनाउल गेल। कफन यहिनाउल गेल। जनाजाक खाट उल । गामयनसँ मायक गाँधी वनखासँ वनाउल वादनि उढाउल गेल। गीनू काका आ हम जनाजाक खाटकँ कान्ह दलौं। कब्रिस्तान लग 0।८ रुS जनाजाक नमाज यढलौं आ अम्मीकँ दफन कलौं।

नवी वकस हुन चुप रुS गेल। हम उाकना टाकS नै चाहै छलौं। दस मिनट धनि उा चुप्प नहल आ हम वैसल नहलौं। हुन उा वाजल।

-अम्मीक मृत्युक चालीस दिन धनि शोक मनलौं। आ तकन चालीस दिनक आनाम हमना ले जाग वनलक ज हुन यढनम घिननी लागि गेल। अम्मीक मृत्युक वाद यढाईकँ नमस्थान कS खाला लग आवि गेलौं, दिल्ली नगनियाम ।

नवी वकस अयन आँखि यांछि नहल छल। हुन दस मिनट उा

चुप रहल।

-नबी बकसकेँ अम्मीक इन्तकाल दिन लोक पहिल आ अन्तिम बेर कनैत देखने रहय। मुदा ई सभ आइ फेर हमरा आँखिसँ नोर चुआ देलक। अकीलक तँ बियाहो नै होइत रहय। सभ कहैत छल जे बुरबक छी। मुदा जेना भीष्म पितामह धृतराष्ट्रक बियाह करेलन्हि तहिना हम एकर बियाह करबलौं आ ई सभ कहैत अछि जे हम ओकरा नोकर जकाँ रखै छिऐ।

ताबत कॉलबेलक घंटी बाजल रहय। अकील नबी बकसक सामाँम आबि ठाढ़ भऽ गेल।

-भैया, सभ कहैत अछि जे हम बुरबक छी। काल्हि अहलिया (कनियाँ) केँ ई सभ पएह गय कहि देलकै। ओ कहलक जे तोहर चिन्ता ककरो नै रहै छै, मुदा हम नै मानलौं। से काल्हि हम करक लट भऽ गेलौं। सभकेँ कहबा कलियहि जे देखै छी जे ओ सभ आबैए आकि नै। बुधियारो सभ आयल आ अहाँक तँ कथे कोन। कनिया तँ सुधंगे र अछि। आइ ओहो दियादिनीक गरा पकड़ि कऽ खूब कानल अछि। बुधियार सभ ने अहाँकेँ छोड़ि चलि गेल, मुदा ई बुरबकहा अहाँकेँ छोड़ि कहियो नै जायत, भाय।

अकीलक एकटा बेटा छलै। कहियो काल ओ ओकरा संग लऽ कऽ आबि जाइ छल। छोट लूरी छलै, माय-बाप सन सुधंग नै। जामियाक स्कूलमे प्रवेश परीक्षामे सफल भऽ गेल छलै। सफ नहि जामिया स्कूल। मुदा ओ बच्चा, बच्चा नै भगवानक रूप लागै छल,

जना सर वद्धा लगैत।

-डाकन स्कूलक यढा॰॰क हिसाबसँ डाकना नामी हिस्क तियासिट कनवा दिउ, यना नै डाकीलक रा॰॰ कहिया धनि डाकना यढगै, यढवा कनगै आकि नै। या॰॰ देगा छै डाकीलकँ आकि यट टा यासा नहल छै डाकन यनिनानक। - कनियाँ यूछै छथि।

-यूछि लियौ, अधला नै लागै। - हम अयन काजम लागि जा॰॰ छी, कनियाँ विन् यूछन काना काज नै कनै छथि, हुँ उम्हन 'हुँ' म चाहव कनी हूनका। स वृसु ज निर्णय लs कs सूचिना कनैग छथि।

दिनालीक कम्बल-मिठा॰॰ लल सड्डीनाली, विजली मिस्त्री, नाजमिस्त्री, प्लम्बन आ गाडि सरक ला॰॰न लागल नहै छलै हमन कनियाँ लग। गनमीम ठंढा यानि किया नै द॰॰ छै, हमन घन टासँ रटै छै। सड्डीवाली छाडि कs आन सरटा वादाम अवै छल जा॰॰ छल। मूदा सड्डीनाली छल यर्मानिष्ठ, वियाहि कs आयल छल गहियसँ ब्लॉकम सड्डीक ठेला लगवैत। आव गँ वटा संग आवै छै। नवि दिन खाली छुट्टी कनैत। रगिनी आ डाकन यगि दुव॰॰सँ आयल नहथि हमन उनाक यना यूछलन्हि गँ सड्डीनाली संग नन आयल हमना घन, आ ॰॰ीहा कहलकन्हि ज वहु रानसँ वाट गाकि नहल छथि, ऊा॰॰र लट रs गेल की?

जमाय साँझम कहलन्हि- मामीजी गँ वउ यायूलन छथि।

६

वहुग नास आह्नन विहाडि आयल आ दस साल कना वीगि गेल

बूझबा मे कहिओ। जखन नोकरी शुरू केने रही तँ एकटा घनिष्ठ सहकर्मीकेँ पूछल करियन्हि जे सभै बितत ने अछि, कोना बीतत, तँ ओ कहल करथि जे बच्चा सभ जखन पैघ भऽ जाएत ओकर बेयर शुरू हेबाक बेर एतै तँ अहाँकेँ पता ने चलत जे समय कोना बीति गेल। ओना एक बेर चिन्ता-फिकिर केँ दूर करबा लेल ओ तखन वैवाहिक सम्बन्ध बनबाक विचार सेहो सभकेँ देने रहथिन्ह आ तखना मारामारी बढ़ए लगल रहन्हि- कोना शासन बोझ दिस ध्यान जत ने करत, सभै तँ बितब करत कथुक चिन्ता ने हएत।

कनियाँकेँ अहमद चाचाक नाम वकीलक विषयमे कहलियन्हि, ओ पुरनका लोक सभकेँ जमा कएलन्हि, ओतऽ्म सँ किया कहलकन्हि जे वकील मरि गेल। ओकर भाय बड़का ठिकेदार भऽ गेल छै, नाओताम अंसलक काज भऽ गेल छै आ ओ ओम्हर चलि गेल अछि, ए सँ बेसी ओकरा कोनो जानकारी ने छै। वकीलक कनियाँ आ बच्चाक विषयमे ओकरा किछु ने बूझल छै।
तहिना मिस्त्री खलीलक विषयमे कहलक- ओ बम्बई-बम्बई करैत रहै छल-ए, कहियो गेल पता ने, भऽ सकैए बम्बईये चलि गेल हएत। किछु लोक ने होइए सन जे रहत तँ खूब मिलि-जुलि कऽ दिन-राति संग मुदा चलि जाइत अछि अनचोक्के आ हुन कहियो ने भेँट होइए, खलील ओहन छल। असगर तँ छल, पैंतीस-चालीस बर्खक, न बियाह न दान, पता ने की भेलै, कतऽ गेल।

खलील...?

१

सुनाकेँ नर्ससँ सान कऽ देलिऐ जे हम कनी कालमे आबि जायब गाना अहमदकेँ हमर चैम्बरमे आनि लिअय।

ओकर हर रओह नाटक।

-हर नीक लोक बनबाक अहाँ नाटक करब, चाह-कॉफी-नासा।

चटाक.. सुनक थापड़ ओकर कानपर पड़लै आ ओकर कान झनझना गेलै।

-आब अहाँ सुनाकेँ कहबै, नै मानियौ ओकरा, सभक मानल छै, बुनस्काक दाबसँ आगाँकी बनि गेलै। हर ओकरा बाहर पठा देलै। अहाँ नीक लोक आ काबिल आ हम सभ गदहा। हर आफिससँ सभ गप पूछब। आ अहाँक रुक्का देखि हम सभटा गप बा देब।- आ हर ओ हँसनाइ शुरू कलक।

हम सुनाकेँ कहलिऐ- थापड़ खा कऽ बाजैवला कठजीव नै अछि ई। ओकर हाइलक संग सभटा कुण्डली हमरा लग अछि। थापड़ मारलासँ अहाँक हाथ दुखायत आ तीन-चारि दिन आर टाइम खराब हएत। जाउ गिलास लऽ आनू।

गिलास आनि सुना ओकर हाथ टेबुलपर राखि देलकै आ ओकरा आँगुरक नहम हम गिलासकेँ पैसाबऽ लगलौं।

ओ बाजऽ लागल- अहाँ बहुत नीक लोक, नै अहाँ हमरा खाली तरबे ल ई कऽ रहल छी। अहाँ हमरा दुनिया-ईलाकाक...

आ सह दऽ ओकर ओकरा नह बाहर।

ओकर साँस फनीनसँ घाम चूबऽ लगलै।

हम ओकर दासर आँगुरक नहम जारत पिलास हँसिऔं ओ 'सभ किछु बना देब, सभ किछु बना देब' चिकएऽ लागल। सुनाकँ पिलास दऽ देलिऐ, एकटा हर्ष-उत बलाकँ सुना हान कलक आ ओ आबि कऽ ओकर आँगुरमे तुर-तल लगा कऽ बान्हि देलकै। हम दूनू गोट बहरा गेल।

आ कालीम हम आ अहमद।

तखन ओ आस्ते-आस्ते बजनाइ शुरू कएलक।

-अहाँसँ हमरा ई आशा नै छल। मारिऔं-पिटौं, तकर प्रतिफल हमरा सभकेँ देल गेल अछि।

-ओइम बड़ टाइम खराब होइ छै, हम टाइम सँ आबै आ टाइमसँ जाइबला लोक। अहाँ सभकेँ टाइम टाइम, ने कानो कथा लिखबाक अछि ने कानो घर परिवार। हमर मुख्य धंधा अछि कथा लिखब। तँ टाइमक बड़ महत्व अछि हमरा लेल।

-तँ की अहाँ दासना नह उखाड़ि लेलौं?

-दासना नै देसी, दूनू हाथक, आ हम देसी दूनू पएरक, बना बनी, आ १० सकण्डक एननज नाखू तँ ७ मिनटम काज सम्पूर्ण।

-अहाँ एकर कून छी तखन कथा कना लिखै छी।

-हम अहाँ गेल बूसलौं। ई अहाँ लेल कऽ नहल छलौं। बीसो नह निकलि गेलाक बाद अहाँकेँ अहाँक आँगुरी स्कूलक पनीआम हम पास कऽ दिऔं। हम कऽ सकिऔं अहाँ आँगुरी घटना खूलि कऽ। अहाँकेँ अपन प्लास्टिक सर्जरी करबाक छल आ हम अहाँक फिंगर प्रिण्टिङ रानए छाउ अमेरिकाक सी.आइ.ए. सेहो मिला नै सकै छल। नह निकाललासँ हाएदा होइ छै। शुरू करब आकि

स्नासँ यिलास मंगवावी?

आ ऊ शुनु रऽ गेल..

-काँक नीक ह्मन नलाह्न खनीद विक्रीक विजनस शुनु रऽ गेल छल, ऊ.एल.एक्स. यना अवूल रुजल एनक्वनम एकटा वसमध्म काज वढलायन रिस ललौं। मुदा ऊगऽ नायनलस ह्टननट यकनव नै कनै। स एकटा कवलवलाकँ यकउलौं। आ ऊ गज गिक ह्टननट दलक, आ ऊफिसँ ह्नी सर शुनु रऽ गेल।

रुन ऊ सुनवऽ लागल ज कना ह्टननटसँ ऊकन ब्रन-नाग रुलै.. आह्.एस.आह्. कन ग्रुय सरक माध्यमसँ।

-वुम्मल अछि। आगाँ वाऊ।

-गँ घन यनिनानक निषयम वाऊ?

ह्म ऊकील, नवी वकस, मंऊलक निषयम कनी-कनी ऊकना वालिऊ।

-अह्राँसँ वसी अह्राँक यनिनानक निषयम ह्मना वुम्मल अछि... आगू वढ़।

आव ऊ अयन प्रम-प्रसंगक चर्चा कलक आ ह्नी खिस्सा जखन शुनू कल गँ ह्मना यिफ चढि गेल-

-क छी खलील आ की अछि मधुवनी माथुल, छरु वज ह्म रिस छाति दै छी गाना वुम्मल नै छी?

ह्मन अवाजम गजी आवि गेल आ ऊ अयन गल-गुन लागल आंगुन दिश दखलक।

-ह्म ऊकीलक वटा छी। अह्राँकँ दखन छी। ह्म येघ रऽ गेलौं, गँ अह्राँ ह्मना नै चिह्नलौं। मुदा ह्म दखिग चीह्नि गेल छलौं।

अहाँक अहसान अछि। अहाँक [illegible] करब हमर [illegible] छी, से नै बूझू जे हम तरि गेलौं। आ ओ खिस्सा शुरू कएलक।

सभटा खिस्सा सुनलाक बाद हम हुनकाँ बजा कऽ अहमदक आंगनकेँ डिटॉल वा सेवलॉनसँ धोअबा कऽ पट्टी बन्हबाक निर्देश देलिऐ आ कहलिऐ जे ओकरा टिटनेसक सूइया जरूर लगबा दिअय।

८

किछु □यनशन, किछु हिंसा, किछु गिरफ्तारी। आ हमर सभटा शान्त। सूचना सम्पूर्ण छल।

-एँ की पता चलल। - पत्रकार पुछैए।

-मधुबनी चित्रकला लेल जानल जाइत मधुबनी, मधुबनी मार्खुल लेल नै। आ अहाँ सभ पत्रकारकेँ आधिकारिक रूपसँ ई सूचित कएल जा रहल अछि जे मधुबनी-मार्खुल खराब भऽ गेल अछि।

ई सुपर [illegible] एक्सप्रेस आ ई सुपर हिन्दू अखबारमे अगिला किछु दिनमे हमर दू सहकर्मीक बहादुरीक खिस्सा रवि-रवि पन्नामे निकललन्हि, हमरा आबि कऽ पुछलन्हि- अहूँक खिस्सा निकलबा दिअ, बेसी खर्चा नै छै, एक ब्लॉक लगलामे जे कहियो छापि दैत। कहलौं- छोड़लौं अहाँ आ पेश हमरा सभकेँ।

हम मुखियाक छी। चुप्प रहै छी।

-मुदा अहाँकेँ एकर की जरूरी अछि? अहाँ तँ असली हीरा छी।

९

-मङ्गल, कतऽ धरि गप पहुँचल। संगठनमे अहाँकेँ आगू बढ़बाक अछि। ई नक्सलीमे छी तँ खूबी छै जे ओ आतंकवादी सन लोककेँ एतऽ नै चाहैत, मात्र शासनक पद्धति बदलऽ चाहैत।
-ओ पूनान गप रहऽ देलौं सर, छी सभ तँ आब आदिवासी उत्थान निकासक गुत्थाथनि बैसबामे लागल अछि, बिजनसमैनसँ पाइ असूलैत। आ एकर सरदार छी मृणालिनी।
-मुदा ओ पाइ जाइ कतऽ छै, ओकरा सरकेँ बिजनसक लुनि तँ छै नै? हम तँ ई पाइलाकाक सर हेङ्क्रीक खाता-बही देखने छी।
-काना ओहन बिजनसमैन जकर खाता-बहीमे सरक संग लेन देन होइ। मृणालिनी अपन पाइ लेल नै अछि, सर अपन-अपन हीस ओकरा बिजनसमैनकेँ दै छै, आ एकर बदलामे मृणालिनी कतै छै ओकर सूचना।
-मनोरंजन अग्रवाल!!! ठीक छै मङ्गल, ओहि जानि दिअ।
-मङ्गल नै अहमद। सर, असगरामे तँ हमर असली नाम बाजू!

सिंह नाभिम सूर्य, माटा-माटी सालह अगस्त सँ सालह सितम्बर धनि। किछु सुखवाक हृअय गँ सरसँ कठा नौद। सिंह नाभिम मिगुक पिगाक गालयत्र सर यसनल नहोग छल, नार्षिक यनिनऊध याजना, ज ओ गालयत्र सरम जान हृकौग छल। आनछा मिगुक पिगाजीक ओ गालयत्र सरक यनिनऊध मनायागसँ कनौग नहथि। कठगन नौदम गालयत्र यसानौग आनछा, मिगुकँ उदिना मान छन्हि। मिगु संग जिनगी वीगि गेलन्हि आनछाक। मुदा ओ वनखक सिंहनाभि ओलासँ यहिनहिय आनछा चलि गेली... आ आव जखन उा नै छथि गखन जीननक यनिनऊध कना हएग। मिगुक आ उाऽ गालयत्र सरक जीननक..

ग्रम। शब्दक ग्रम। शब्दक अर्थ हम सर गढि लऽ छी। आ हम ग्रम शुनु हऽ जाऽग।

लुकसनी अंगना चानन घन गछिया
गऽ गन काऽली घऽमचान ह
कटवै चनन गाछ, वढवै अंगनमा
छूटि जाऽ काऽली घऽमचान ह
कानऽ लगली, खीजऽ लागल, वान क काऽलिया
टूटि गेलऽ काऽली घऽमचान ह
जानु कानु जानु की, जावान क काऽलिया
अहि जाऽ काऽली घऽमचान ह
जहि वान जवऽ काऽली

नहि जा गऽ निशनमा
जनु मनु नयना स लान ह
सान स मढायव काꣳली गाना दुनु यँखिया
नुय स मनायव दुनु (ठान ह
जाह वान जवऽ काꣳली नूनमून वालम
नहि जाऽ नकगमाला क निशान ह

काना यूनगीक अवाज चर्मकान टालसँ अवेँग वूमना (गल..आनह्याक अवाज।
मूदा आनह्या गँ चलि (गली, कनिय काल यहिन डाकन लहाश दखि ञल छथि ववलु। मिनुकँ समाचान कहि तामासी घूनि (गल छथि। आ आनह्या, डा गँ वूढ रऽ मनलीहँ। गखन ꣳी अवाज, यूनगी आनह्याक। त्रम। शव्दक त्रम। कहेँग नहथि मिनुक यिगा श्रीकन मीमांसक मानग नास गय शव्दशास्त्रम् यन। शव्दक अर्थ हम सर गढि लꣳ छी। आ हन त्रम शुनु रऽ जाꣳग अछि।

I
<u>शव्दशास्त्रम्</u>
गर्दम (गाल रल छल।
अनघाल मचि (गल छलै। वलान धानम काना लहाश वहल चलि जा नहल छल। (धाविियाघाट लग काग लागल छल।
कागक दुनसँ ञल छल स नै जानि। काना वꣳसगन महिलाक लहाश छल। (धाविन लहाशकँ चीह्नि (गल नहथि। (गोआँकँ कहि दꣳ छथि

ओकर नाम आ पता। गौआँ क, ओहू गामक तमासीक बचलुकेँ। मृतकक घरमे खबरि भऽ गेल छलै। असगर एकटा बूढ़ा रहैत ओहू घरम...मितु।

मितुक टोलबैया गौआ सभ लहासकेँ तीरपर आनि लेने छल आ फेर मितु ओकर दाह-संस्कार कऽ देने रहथि।

गाममे अही गपक चर्चा रहै। बचलु बूढ़ाकेँ बूझल छन्हि किछु आन गप। चिन्है छथि ओ ओहू लहासक मनुक्खकेँ। तनिका लोककेँ बहुत रास गप नै बूझल छै।

आनन्दाक लहास..

-आनन्दा बड़ नीक रहै। बुझनुक। ओकर बचिया सभ सभटा सुखितगर घरमे छै..बेटा सेहो निश्चिन्त। मितु, आनन्दाक तँ सेहो उद्भट..श्रीकर मीमांसकक पुत्र..। मुदा कहियो मितु आकि आनन्दा कोनो खगतामे ककरो आगाँ हाथ नै पसारने छथि।

बचलु सेहो आब बूढ़ भऽ गेल छथि, मुनकुट बूढ़। हिनकासँ पैघ मात्र मितु छथिन्ह। लोक सभ दुनू गोटकेँ बूढ़ा कहि बजबै छन्हि। आ ओ बचलु बूढ़ाकेँ बूझल छन्हि ढेर रास गप।

.....

मितु आ श्रीकरक वार्तालाप। किछु बूझिऔ आ किछु नै।

-मितु। भामतीमे वाचस्पति कहै छथि जे अविद्या जीवपर आश्रित अछि आ विषय बनि गेल अछि। आत्मसाक्षात्कार लेल कोन विधि स्वीकार करब? असत्य कथुक कारण कोना भऽ सकत? कोना बौद्धक सत्ता ओकरा सत्य कोना बना देत, त्रिकालमे ओकर उपस्थिति कोना सिद्ध कऽ सकत? जे बौद्ध नै तँ सत्य अछि आ नहियो असत्य आ

𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒨𑒳𑒑𑓂𑒧𑒢𑒳𑒣, 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒔𑓂𑒨। 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳 𑒂 𑒚𑒰𑒏𑒩 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒩𑒐𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒬𑒴𑒢𑓂𑒨𑒏 𑒁𑒫𑒡𑒰𑒢𑒧𑒹। 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒗𑓄𑒥 𑒂𑒋𑒞?

-𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩। 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱𑒪 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒰 𑒔𑒻𑒞𑒢𑓂𑒨 𑒖𑒛𑓃 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒰𑒑𑒪𑒧𑒹 𑒥𑒼𑒡 𑒂 𑒮𑒳𑒞𑒪𑒧𑒹 𑒥𑒼𑒡𑒢𑒯𑒱।

-𑒧𑒱𑒞𑓂𑒩। 𑒦𑒰𑒧𑒞𑒲𑒧𑒹 𑒫𑒰𑒔𑒮𑓂𑒣𑒞𑒱 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒱𑒞 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒳𑒬𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒩-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒣𑒬𑒳𑒫𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒪𑒰𑒚𑒲 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱, 𑒒𑒰𑒮 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒪𑒑 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒞 𑒞𑒢𑒮𑒿 𑒒𑒥𑒛𑓃𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱।

“𑒂𑒞𑓂𑒧𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒱𑒞 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒳𑒬𑒪 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑒩-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒣𑒬𑒳𑒫𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒪𑒰𑒚𑒲 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒦𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱, 𑒒𑒰𑒮 𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒪𑒑 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒞 𑒞𑒢𑒮𑒿 𑒒𑒥𑒛𑓃𑒰𑒃 𑒕𑒟𑒱।“- 𑒄 𑒑𑒣 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒏𑓄 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒰𑒧𑒹 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒨 𑒯𑒧𑒩𑒰।

....

𑒂𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒮 𑒩𑒯𑒻।

𑒥𑒰𑒢𑒩 𑒂 𑒥𑒢𑒑𑒠𑒯𑒰 𑒐𑒹𑒞 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒰𑓀𑒑𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒣𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒢𑒲𑒏𑒹𑒿।

-𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒢𑒰𑒬 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻 𑒥𑒥𑒪𑒴। 𑒩𑒰𑒞𑒱𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒢𑒻 𑒮𑒴𑒗𑒻𑒞। 𑒦𑒼𑒩-𑒦𑒼𑒩 𑒏𑒪𑒧 𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒐𑒻 𑒕𑒲। 𑒥𑒢𑒑𑒠𑒯𑒰 𑒮𑒥𑒙𑒰 𑒩𑒮𑒱𑒪 𑒐𑒰 𑒪𑒹𑒪𑒏 𑒂𑒥 𑒄 𑒥𑒰𑒢𑒩 𑒂𑒧𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒰𑒿 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱।

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒂𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒢𑒩 𑒂 𑒥𑒢𑒑𑒠𑒯𑒰 𑒚𑒰𑒃 𑒥𑒢𑒐 𑒍𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒻।

आमक मास रहै। ई मितु उगनवाड़ीम लागल आब। आमक टिकुला पैघ भऽ रहल छै। मचान बान्हबाक रहै मितुकेँ। हमहुँ संगम रहिऐ। बाँस काटि कऽ अनैत रही।

तखना काज दऽ कऽ आबि रहल छलौं। साँझुकवा छल। अकास मध्य लाल रङ्ग कनक पिताँठ भेल बूझना गेल छल।

-लीख दऽ कऽ चलू बचलू।

खेतक बीचम लीख देन आगाँ बढ़ऽ लागलौं।

तखन हम शोणित देखलौं। हमर देह शोणित देखि सर्द भऽ गेल। मुदा निश्वाँस छोड़लौं। बाँसक गीरा पार एकटा बालिकाक हाथ आ मूँहकेँ नाठैत गेल रहै। मितुक बाँसक नाठा ओकरा लागल रहै। मितु हाथसँ बाँस फेकि कऽ ओहि बालिका लग चलि गेल छल। नानायल आँखिक ओहि बालिकाक शोणित पोछि मितु ओकर नाठानयन मारि रगड़ि देन रहै।

-की कऽ रहल छी।

-शोणित बन्न भऽ जायत।

बालिका लीखयन आगाँ बैसि गेल छली।

-की नाम छी अहाँक।

-आनन्दा।

-कोन गामक छी।

-अही गामक।

-अही गामक?

हम दुनू गोटे संगे बाजल रही।

हँ, आनन्दा नाम रहै ओकर। आ मितुक ओकरासँ पहिल भेँट बनल

नहि।

...

मचाना वन्ना (गेल नहुय। मूदा आनन्दा हुन नै हटल नहुय।

मिणु यूछैण नहुय।

-कान टालक छी ऊ। नहिय मिसनटालीक अछि, नहिय यछिमाटालीक आ नहिय 0कूनटालीक।

-ऊमासीक नहिगय गँ हम विझिण नहिगिऊ।

-गखन कना अछि ऊ अयन गामक। आ अयन गामक अछि गँ आ०० धनि हँट किऊ नै हल नहुय ऊकनासँ?

मूदा विभ्रम संयाग हल छल। मिणुक टालम हूद हा००क वटाक ऊयनयन नहि। वँसकट्टी दिन यियहीवलाकँ वजवेल हम गामक वाहुन चर्मकान टाल (गेल नही।

-हिनू हा००, हिनूआ हा००।

-आवै छथि।

काना वालिकाक अवाज ऊेल नहुय। अवाज विह्वल सन।

-अहाँ क छी।

-हम हिनूक वटी। की काज अछि?

-यियही लऽ कऽ अखन धनि अहाँक वावू नै यहँूचल छथि। वजवेल ऊेल छियन्हि।

-गही ऊनियानम लागल छथि।

-अहाँक नाम की छी?

गखन टाट यनक लम्हीकँ हँटवैण नऊह वालिका सासँ आवि (गेलि।

-हम आनन्दा। हम अहाँकँ चीन्हि (गेल नही। अहाँक की नाम छी?

हम तँ सदै रहल जाइत नहि। मुदा ओहन देवाक छल।

-बचलु।

-आ अहाँक संगीक।

-मिनु, पंडित श्रीकान्तक बेटा।

मिनुक पिताक नाम सेहो हम आनन्दकेँ बता देलिऐ। पुछने तँ नै छलि ओ, मुदा नै जानि किऐ..कहि देलिऐ।

तखन हिनुआ पिपही लेने आबि गेल रहथि। हुनका संग हम टहलैत आबि गेलौं।

रस्ताम हिनुआकेँ पुछलियन्हि- आनन्द अहाँक बेटी छथि? मुदा कहिया देखलियन्हि नै।

-मामागाममे बेसी दिन रहै छलै। मुदा आब चानगर भऽ गेल छै। से गाम लऽ अनैत छिऐ।

-हुनि मामागाम कहिया जेती?

-नै, आब ओ चानगर भऽ गेल अछि। आब संगे रहत।

पंडितजीक बेटा मिनु, हमर संगी मिनु, ई सब सुनि कऽ बिलैत ओकरा मानथि। कइएक दिनसँ ओकर पुछारी कऽ रहल छल। हम सोचने रही जे ई मामागाम चलि जाय आनन्द, आ तखन कोनक दिनमे मिनुक पुछारीसँ हम बाँचि जायब।

मुदा आब तँ आनन्द गाममे रहत आ पंडित श्रीकान्तक बेटा मिनु.. धुर..हमहीं उनटा-पुनटा सोचि लेने छी। ओहिना दु-चारि बेर मिनु आनन्दक विषयमे पुछारी केने अछि। एकर माने ई थोड़बे भेलै जे..

मुदा जे सएह भेलै तखन ?..

पंडितक बेटा आ चर्मकारक बेटी..
पंडित श्रीकर मानता?.. गोआँ धनुआ मानता?
धुन। हमर हम उनटा-पुनटा सोचि रहल छी। पियरी बाजऽ लागल रहय आ लीखपर देर हम आ मितु, हनि टोलक स्त्रीगण-पुरुषक संग बैसिकी पहुँचि गेल रही। रस्ताम ओऽ्‌ स्कूलकेँ अखियासन रही। मितु आ आनन्दाक पहिल मिलनक स्कूल लग अकारन रही-कोना अवाज लागल अजीत..मात्र संगीत..स्वर नै।
बनुआ बाँस सरपत थथ्या दऽ देन रहै आ सर बाँस कटनाऽ्‌ शुरु कऽ देन रहथि। म७ब०ही आऽ्‌य छी। घाम-पसीन हेन कनक मान तीषित हेल। कञ्चायन बाँस लेन हम आ मितु ओही रस्ता बिदा हेल रही..ओही लीख देन।
...
मुदा मितु हमरा सदिखन टोकारा देमय लागल। कारण कोना काज हम एतक देनीसँ नै कन रहिऐ। ओ हमर नाम रहय आ हम ओकर हनुमान।
मचानपर अहिना एक दिन हम मितुकेँ कहि देलिऐ-
-मितु, बिसनि जा ओकरा। कथी लेल बदनामी करबिहीं ओकरा। हिनुआक बेटी छिऐ आनन्दा। ओना तोहर नाम हमरासँ ओ पुछलक तँ हम तोहर नाम आ तोहर पिताजीक नाम सेहो कहि देलिऐ।
-हमर पिताजीक नाम ओ पुछन रहौ?
-नै पुछन रहय। मुदा..
-तखन किए कहलहीं?
-आऽ्‌ न काल्हि तँ पता लागब करतौ..

-जहिया लगिगै गहिया लगिगै..आव ओ हमनासँ कटग..हमन महनागि गूँ वढा दलँ..

-कान महनागि। गूँ यंतिग श्रीकनक वटा आ ओ हिनूआ चर्मकानक वटी। कथील वदनामी कनविहीं ओकना।

-वियाह कनवै नै। वदनामी किए कनवै।

-ककना 0कै छिहीं ?

-ककना नै नै।

अहिना अनवाङ्कम निर्णय लैग छल मिगू। श्रीकन मीमांसकक वटा मिगू नैयायिक। ओकना घनम गालयत्र सह यसनल नहैग दखन छलिऐ। स हमास नै हS नहल छल।

-गामम कहिया दखलिऐ नै ओकना?

-गूँ गामम नहलँ कहिया? गुनुजीक या0शालासँ यैनूकँ गँ ऐल छँ।

-मुदा गूँहीं कान दखन नहीं।

-मामा गाम नहै छल ओ।

-हून मामा गाम घूनि कS गँ नै चलि जायग।

-नै, स यूछि ललिऐ। आव गामम नहग।

यैनूकाँ गामम मिगुक मायक दहान्द हS गेल छलहि।

श्रीकन मीमांसक सहि खटवाह सन हS गेल छथि- ॐही गय हूनकन टालवैया सह कनैग छल। गालयत्र सहक यनिनऊध कना हएग ऐ सिंह नागिम? यएह चिन्ता नहहि श्रीकनक, आ गँ ओ खटवाह सन कनS लागल नहथि.. ॐहीह गय हूनकन टालवैया सह कनैग छल।

...

हिर्र..हिर्र...हिर्र....

तमासीसँ सुगनक पाछू हम आ मिनु हिर्र-हिर्र करैत चर्मकान टाल पहुँचि जाइ छी। आनन्दा मुदा सामाँम रहि गेली। सुगन संगे हम आगाँ बढ़ि जाइ छी। घूमै छी तँ आनन्दा आ मिनुक गप सुनैले कान पाथे छी।

हिर्र..हिर्र

ओ बन आनन्दा हिर्र कहैत अछि आ हम मुस्की दैत सुगनक आगाँ बढ़ि जाइ छी।

ई घटना कतेक बन भेल आ ई गप सगन पसनि गेल। हिनु कतोक बन हमना लग ओल नहथि।

हीनु उद्भलित नहय लागल नहथि। हीनुक पत्नी बटीक हाथक लल गोहानि कनय लगलीह।

कते कास माँ महिलवा
कते कास लुकसनी महिलवा
कते कास पतल दाहाइ
कनी नकबे हु माइ
कते कास पतल दाहाइ
कनी नकबे हु माइ
दुइ कास महिलवा
चानि कास लुकसनी महिलवा
पाँच कास पतल दाहाइ
कनी नकबे हु माइ
पाँच कास पतल दाहाइ

कोन फूल माँ मह्लिवा

कोन फूल बह्री मह्लिवा

कोन फूल पन पतल डाराऽऽ

कनी एकबे हे माऽऽ

कोन फूल पन पतल डाराऽऽ

कनी एकबे हे माऽऽ

बेली फूल माँ मह्लिवा

बेली फूल लुकसनी मह्लिवा

गेन्दा फूल पतल डाराऽऽ

कनी एकबे हे माऽऽ

गेन्दा फूल पतल डाराऽऽ

कनी एकबे हे माऽऽ

....

हिनू तमासी आवय लागल नहथि।

-की हौ, कना हौ।

-मूठ..

हम गछलियन्हि जे हम हिनू संगे श्रीकान्त पंडित लग जायब।

आ हम हिनूकँ श्रीकान्त मीमांसक लग लऽ गेल नहियन्हि। श्रीकान्तक पत्नीक मृत्यु गो बनखक सिंह नाथिक बाद हऽ गेल छलन्हि। आ एकर बाद हिनू मीमांसक खटवाह हऽ गेल छथि- लोक कहैत छलन्हि। लोक के? नगर टोलवैया सब। गामक लोक, पढ़ायछाक विद्वान लोक सभ गाँ बड ऽऽजत दऽऽ छलन्हि हुनका। आँखिक देखल

गप करै छी..

-आउ बचलु। हिनु, आउ बैसु..।- गुम्म भऽ जाइ छथि श्रीकान्त। पत्नीक मृत्युक बाद अहिना, रहैत रहथि, रहैत रहथि आकि गुम्म भऽ जाइत रहथि।

-कक्का, आँगन सून्न लगैत अछि। कतेक दिन एना रहब। मिनुक बियाह किए नै करा दै छियन्हि"?

-मिनु तँ बियाह ठीक कऽ लेने छथि।

-कतऽ? -हम घबराइत पूछै छियन्हि। हिनु हमरा दिस निर्विकार भावसँ देखै छथि।

-आनन्दासँ, समधि होनु तँ अहाँक संग गेल छथिया।

हाय रे श्रीकान्त पंडित।

आ बाद रे मिनु। पढ़िलिखि बापकेँ पछिया लेने छल। मुदा बाह्यन जाइत काल टालवैयाक कान ओ गायकेँ अकानि लेने छल।

हम सरु बैसल रही आकि ओ किछु आन गोटकेँ लऽ कऽ दलानपर घूमि गेल छल। श्रीकान्त मीमांसकसँ हुनकर सरुक शास्त्रार्थ शुरु भेल। शब्दक बाद शब्दसँ।

-श्रीकान्त, अहाँ कोन कारिक अधम काज कऽ रहल छी।

-कोन अधम काज?

-छाट-बोधक कोना निदान नै रहल अहाँकेँ मीमांसक?

-विद्वान् जन। ई छाट-बोध की छिऐ? मात्र शब्द। ओ शब्दकेँ सुनलाक पश्चात् ओकर शब्दार्थ अहाँक माथमे एक टा वासना मनहुँ ढुकि गेल अछि। पद बना कऽ ओइमे अपन स्वार्थ मिलान कऽ...।

-मान छाट-बोध अछि शब्दार्थ मात्र। आ ओकर विश्लेषण जे पद बना

कऽ कलौं स रहऽ गेल स्वार्थयनक।

-विश्वास नै हुअय तँ ओहुना यत्न सँ स्वार्थक समर्थन कऽ कऽ देखू। सभ भ्रम भागि जायत।

-मानू अहाँ मित्र आ आनन्दाक वियाह करबाल चाहैत छी?

-विद्वान् जन। नसीबकँ साँय हम अही ज्ञान बूझै छी जे इनुक पृथक अस्तित्व छै। आँखि धाकवा कऽ दूटा वस्तु देखै छी तँ नखना प्रकाशक दूटा वास्तविक भागम वस्तुमाकँ प्रत्यायित करै छी। भ्रमक कारण विषय नै संसर्ग छै, ओना उद्देश्य आ विधेय दूनू सत्य छै। आ एतऽ सभ विषयक ज्ञान सेहो आत्माक ज्ञान नै दऽ सकैए। आत्माक विचारसँ अनुवृत्ति- अपन विषयक तथ्यक बाध ओसँ होइत अछि। आत्मा ज्ञानक कर्ता आ कर्म दूनू अछि। यथार्थक अर्थ संसर्गसँ भरैत अछि। शब्द सुनलाक बाद ओकर अर्थ अनुमानसँ लग होइत अछि।

-अहाँ शब्दक भ्रम उत्पन्न कऽ रहल छी। हम सभ प्रेम मित्र आ आनन्दाक वियाहक अहाँक इच्छा देखै छी।

-संकल्प भेल इच्छा आ तकर पूर्ति नै हो स भेल द्वेष।

-तँ एही हम सभ द्वेषवश कहि रहल छी। अहाँक नजरिमे जातिक कोना महत्व नै?

-देखू, आनन्दा सर्वगुणसम्पन्न छथि आ हुनकर आ हमर एक जाति अछि आ स अछि अनुवृत्त आ सर्वलोक प्रत्यक्ष। ओ हमर धनादिनक रक्षण कऽ सकती, स हमर विश्वास अछि। आ एही हमर निर्णय अछि।

"आ एही हमर निर्णय अछि।"- एही शब्द हमर आ हिनुक कारण

एक्का बन नै बैसल रहय। हम तँ श्रीकर आ मितुकेँ विश्वेत रहियन्हि, अहिना अनचोक्के निर्णय सुनबाक अभ्यासी भऽ गेल रही। मुदा हिनू कनक कालक बाद ओ शब्द सभक प्रतिध्वनि सुनलन्हि जना। हुनकर अवस्थित नजरि हमरा दिस घूमि गेल छलन्हि।

हुन श्रीकर मीमांसक ओइ शास्त्रार्थी सभमेसँ एकटा ज्योतिषी दिस आँगुर देखबै छथि-

-ज्योतिषीजी, अहाँ एकटा नीक दिन ताकू। अही शुभ्रम ई यावत विवाह सम्पन्न भऽ जाय। सिंह राशि आबैवला छै, ओइसँ पूर्वे। किनका कोनो आपत्ति?

सभ माथ झुका चुप भऽ जाइ छथि। श्रीकर मीमांसकक विरोधमे के चुप हएत?

-हम सभ तँ अहाँकेँ बुझबऽ लेल भेल छलौं। मुदा जखन अहाँ निर्णय लैये लेल छी तखन...।

मीमांसकजीक हाथ उठल छन्हि आ सभ हुन शान्त भऽ जाइ छथि। हम आ हीनू सभ ओतऽसँ विदा भऽ जाइ छी।

हीनू निसाँस लेने रहथि, से हम अनुभव केने रही।

...

ई नै जे कोनो आन बाधा नै भेल।

मुदा ओ खटवाह विवाह तँ छल। से आनन्दो हुनकर पूराह बनि गेली। आ हुनक छुअल यानि हमर टाल आकि मितुक टाल मात्र नै साँस यनायझाक विवाहक बीचमे चलऽ लागल।

.....

आनन्दाक नैहरमे विवाह सम्पन्न भेल छल। ओतुक्का गीतनाद हम

𑒮𑒳𑒢𑒪 𑒢𑒯𑒱, 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝, 𑒋𑒐𑒢𑒼 𑒧𑒼𑒢 𑒁𑒕𑒱-
𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒆𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒍 𑒮𑒴𑒞𑒪,
𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒤𑒴𑒪𑒥𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒯𑒹
𑒅𑒚𑒴 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒔𑒰𑒐𑒳 𑒑𑒱𑒢𑒱𑒧𑒪 𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒹
𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒆𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒍 𑒮𑒴𑒞𑒪,
𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒥𑒹𑒙𑒲 𑒮𑒴𑒞𑒪 𑒤𑒴𑒪𑒥𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒯𑒹
𑒅𑒚𑒴 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒔𑒰𑒐𑒳 𑒑𑒱𑒢𑒱𑒧𑒪 𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒹

𑒏𑒼𑒢 𑒤𑒴𑒪 𑒅𑒛𑓃𑒥 𑒪𑒳𑒏𑒮𑒢𑒱 𑒏𑒹
𑒏𑒼𑒢 𑒤𑒴𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢
𑒏𑒼𑒢 𑒤𑒴𑒪 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒱𑒏 𑒮𑒱𑓀𑒑𑒰𑒩 𑒯𑒹

𑒅𑒚𑒴 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒔𑒰𑒐𑒳 𑒑𑒱𑒢𑒱𑒧𑒪 𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒹
𑒥𑒹𑒪𑒲 𑒤𑒴𑒪 𑒅𑒛𑓃𑒥 𑒥𑒯𑒲
𑒔𑒧𑒪𑒲 𑒤𑒴𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒢
𑒁𑒛𑓃𑒯𑒳𑒪 𑒤𑒴𑒪 𑒪𑒳𑒏𑒮𑒢𑒱 𑒏𑒹 𑒮𑒱𑓀𑒑𑒰𑒩 𑒯𑒹
𑒅𑒚𑒴 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒑𑒰𑒿𑒟𑒳 𑒑𑒱𑒢𑒱𑒧𑒪 𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒹
𑒅𑒚𑒴 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒢 𑒑𑒰𑒿𑒟𑒳 𑒑𑒱𑒢𑒱𑒧𑒪 𑒯𑒰𑒩 𑒯𑒹
....

𑒬𑓂𑒩𑒲𑒏𑒩 𑒧𑒲𑒧𑒰𑓀𑒮𑒏 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒰𑒪𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒏 𑒯𑒰𑒪 𑒠𑓄 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒵𑒞𑓂𑒨𑒳𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒔𑒰𑒩 𑒂𑒬𑓀𑒏𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒟𑒱। 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒥𑒱𑒬𑓂𑒫𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡, 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰 𑒖𑒏𑒰 𑒅𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒑𑒰𑒪𑒣𑒞𑓂𑒩 𑒮𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒩𑒯𑒟𑒱 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒒𑒩। 𑒁𑒢𑒫𑒰𑒠𑓂𑒡..

मिथु कहि दलक हमना ज कना ऊा श्रीकन यतिाकँ यरिया लन नहय। ब्राह्मणक वटी सनाऽ कटाना आ मारिक महादन वनवौा नहा आ गालयत्र सरम घुन लागि जाया..

नै घुन लागल दथिन गालयत्र सरम, आनन्दा आया ऊ घन। श्रीकन मीमांसक निर्णय कऽ लन नहथि।

मिथु गँ जना जीवन हनि अयन लल ऊ निर्णयक प्रति कृतज्ञ छला। श्रीकनक आयु जना वढि गेल छलन्हि। श्रीकन आ आनन्दाक मध्य गय हाऽगा नहि छल ऊाऽ घनम।

आनन्दा वजिा नहि छली आ गविा नहि छली।

वानह वनिस जव वीणल गनहम चढि गेल ह
वानह वनिस जव वीणल गनह चहनि गेल ह
ललना सासु माना कहथिन वघिनियाँ
वघिनियाँ घनस निकालव ह
ललना सासु माना कहथिन वघिनियाँ
वघिनियाँ घनस निकालव ह

अंगना ज वाहन गाहि छलखिन निनियाँ गे
ललना गे आनि दियौ आक वथुन हन यीसि हम यीयव न
ललना न आनी दियौ आक वथुन हन यीसि हम यीयव न
वहन स आउल वालम यलंग चढि वैसल न
वहन स आउल वालम यलंग चढि वैसल न
ललना न कहि दियौ दिल कन वाग की गव माहन यीयव न

ललना रे कहि दियौ दिल कन बात की नव माहुन यीयव रे

वानर ह वनिस जव वीगल गनर चहनि गेल रे
ललना रे सासु माना कहथिन वघिनियाँ
वघिनिया घनस निकालव रे
सासु माना मानथिन अनुय धय ननदा Qनूक धय रे
सासु माना मानथि अनुय धय ननदा Qनूक धय रे
ललना रे गोटना खुशी घन जाउल सर धन हमन हौ ह
ललना रे गोटनs खुशी घन जाउल सर धन हमन हौ ह

चूय नहु, चूय नहु धनी की गाहीँ महधनी छिअ ह
चूय नहु, चूय नहु धनी की गाहीँ महधनी छिअ ह
धनी ह कनवे ह गुलसी क जाग, की धन सर लूटा दवs ह
ललना ह कनवे म याखनि क जाग, की सर धन लूटाअव ह

श्रीकन मीमांसक हँसी कनथिन- आनद्दा, अहाँकँ गँ सासु अछि ने,
गखन उा वचानी अहाँकँ वघिनियाँ कना कहनी?
-गँ न गवे छी, सर चीज गँ हनल-युनल मूदा..।
आँखि नाना गेल छलहि आनद्दाक। हमना अखना मान अछि।
-हम अहाँकँ दुःख दलौं ऽऽी गय कहि कs।
-कान दुःख? सासु ने छथि गँ ससुन गँ छथि।
श्रीकनकँ प्रसन्न दखि मिगुकँ आभाष हाऽऽहि।
....

आ श्रीकन मीमांसकक मृत्युक वाद आनन्दा पालयत्र सरम जान रकौ नहेॅ छलीह।
रुन मिनुकँ दुटा वटी रलहि नल्लरा आ मधा।
आनन्दाक खुशी रुम रखन छी। नौरुन गेल नहथि डा। डागऽ दुनू जौँआ वटी रल छलहि-

लाल यनी रु गुलाव यनी
लाल यनी रु गुलाव यनी
रु गगनयन नावा ऽऽष्ठ यनी
रु गुलावयन नावा ऽऽष्ठ यनी

आ रुन रलहि वटा। यॆघ रलायन वटा मघकँ यढवा लल वनानस यOन नहथि मिनु।
आ दिन वितॆ गेल, वटी सर यॆघ रलहि आ दुनू वटी, मधा आ नल्लराक वियाह दान कS निश्चिन्त रS गेल छलाह मिनु।
वटाक यनवनिश आ वियाह दान सदा कलहि। मघ वनानसम याOन कनय लगला। मघ, मधा आ नल्लरा तीनू गोट सालम एक मास आवथि धनि अनथ।
लाक विसनि गेल मानए नास गय सर।

II

रामती प्रस्थानम्

आनन्दा मित्रक पिताजीक ओ तालपत्र सभक परिरक्षण मनोयोगसँ कऽ रहल छथि। कतेक वेद, मितुकेँ ओहिना मोन छन्हि।

मितु संग जिनगी बीति गेलन्हि आनन्दाक। आ आब जखन ओ नै छथि तखन मितुक जीवनक परिरक्षण करा हएत।.. मितु प्रवचनक बीचमे कखनो हँसिया जाइ छथि।

प्रवचन चलि रहल अछि। मितु गरुड़ पुराण नै सुनता। मितु मंडनक ब्रह्मसिद्धि सुनता, वाचस्पतिक भामती सुनता, ओ सुनबा करता ताँ। ओँ वटी सभक जिद्द छन्हि ताँ आत्मा विषयपर कुमारिलक दर्शन सुनता।

आ सएह प्रवचन चलि रहल अछि।

भ्रम। शब्दक भ्रम। कहैत रहथि श्रीकर मानत वास तप शब्दशास्त्रम् पर। भामती प्रस्थानम् पर। शब्दक अर्थ हम तेहि लऽ छी। आ हुन भ्रम शुरू भऽ जाइत अछि।

-गुरुजी। हम पत्नीक मृत्युक बाद ध्यान निराशामे छी। की छिऐ ई जीवन? कानऽ लगलीह आनन्दा।

-मितु। धीरज राखु। ब्रह्मसिद्धिक हमर ई पाठ अहाँक सभ भ्रमक निवारण करत। ब्रह्मसिद्धिमे चारि काण्ड छै। ब्रह्म, तर्क, नियोग आ सिद्धि काण्ड। ब्रह्मकाण्डमे ब्रह्मक रूपपर, तर्ककाण्डमे प्रमाणपर, नियोगकाण्डमे जीवक मुक्तिपर आ सिद्धिकाण्डमे उपनिषदक वाक्यक प्रमाणपर विवेचन अछि।

-मितु। मुक्ति ज्ञानसँ पृथक् कोनो वस्तु नै अछि। मुक्ति स्वयं ज्ञान भेल। मानवक शुद्ध बुद्धिक कखनो उपजा मंडन नै कर छथि। कर्मक महत्व ओ बूझै छथि। मुदा तइटा सँ मुक्ति नै भेटत। स्फोटकेँ ध्वनि-शब्दक रूपमे अर्थ दैत मंडन देखलन्हि। स शंकरसँ ओ ओ अर्थेँ भिन्न

छथि जे ओ स्फोटक तादात्म्य आ बनबै छथि मुदा शंकर ब्रह्मसँ काम करा तादात्म्य नै मानै छथि। से मंडन शंकरसँ बेशी शुद्ध अद्वैतवादी रहला। मिश्र मंडन ज्ञाता आ अज्ञाताक एक संग रहनाइकेँ विरोधी तत्व नै मानै छथि। ई कखनो अर्थक्रियाकारी रहए चाहैत अछि, मुदा आ रहए मूल तत्व करा रहए गेल। से ई ब्रह्म सत्य रहस्य नहलायन सत्य काज कऽ सकैत। देखू। वाचस्पतिक भामती प्रस्थानक विचार मंडन मिश्रक विचारसँ मेल खाइत अछि। मंडन मिश्रक ब्रह्मसिद्धियन वाचस्पति तत्वसमीक्षा लिखने छथि। आना तत्वसमीक्षा आब उपलब्ध नै छै।

-तखन तत्व समीक्षाक चर्चा करा गेल ।

-वाचस्पतिक भामतीमे एकर चर्चा छै।

-मुदा मंडनक विचार जानबासँ पूर्व हमरा मानमे आबि रहल अछि जे जखन आ शंकराचार्यसँ हारि गेला तखन हुनकर हारल सिद्धान्तक यानायक्षसँ हमरा मानकेँ करा शान्ति रहत।

-देखियौ, मंडन हारि गेल छला तकर प्रमाण मंडनक लेखनीमे नै अछि। मंडन स्फोटवादक समर्थक छथि, मुदा शंकराचार्य स्फोटवादक खण्डन करैत छथि। मंडन कुमारिल भट्टक नियतीत ख्यातिक समर्थक छथि, मुदा शंकराचार्यक जेठ शिष्य सुरेश्वराचार्यकेँ लोक मंडन मिश्र बुझै छथि आ एकर खण्डन करै छथि।

-से तँ ठीक। मंडन हारि गेल नहि रहथि तँ हुनकर दर्शन शंकराचार्यक अनुकरण करितन्हि।

-आब कहू जे जेठ सुरेश्वराचार्यकेँ शंकराचार्य श्रृंगेरी मठक मठाधीश बनेलन्हि से अनिच्छाक दू तरहक हवाक विरोधी छथि मुदा मंडन

अपन ग्रन्थ ब्रह्मसिद्धिम अग्रहण आ अन्यथाग्रहण नामसँ अविद्याक दूटा रूप कहने छथि। मंडन जीवकँ अविद्याक आश्रय आ ब्रह्मकँ अविद्याक विषय कहै छथि मुदा सुरेश्वराचार्य से नै मानै छथि। शंकराचार्यक विवर्तक मंडन विरोधी छथि मुदा सुरेश्वराचार्य हुनकर मतक समर्थनम छथि।

....

वानर आ वनगदहा खा सरकेँ धांगल अछि आ याना वानीकेँ। आव हमरा दूआर गामक लोक महीस पोसनाइ गँ नै छोड़ि देत। वानर आ वनगदहा वड नोकसान कऽ रहल अछि।

-चानिटा वानर कलमम अछि। थऽ कऽ आम सरकेँ दकोड़ि देलक। हम गेल नहि। साँझ रऽ गेलौं गँ आव सरटा वानर गाछक छिप्पी थऽ लेन अछि। साँझ थनि हुनु वायुग कलम डागनन नहि, सरहा मानि रगेलौं, मुदा गखन अहाँक कलम दिस चलि गेल।— हम मिगुकँ कहै छियन्हि।

-सरटा नाश कऽ देलकै वचलु। नागिम गँ नै सूझैत। राग-राग कलम जा कऽ देखै छी। वनगदहा सरटा हसिल खा ललक आव ओ़ी वानर आमक पाछाँ लागल अछि। कनऽ दियौ जखन...।

-वनगदहा सर गँ सारू कऽ उपरि गेल छलौ। नै जानि हुन कन्हऽ सँ आवि गेल छै। गजपटहा गामम जाग रल छलै, ओम्हरसँ नाना-नानी थान टपा देऽ गेल छै।

-स नै छै। ओ़ी वनगदहा सर थानम रसिया कऽ नयाल दिसनसँ गेल छै। आवऽ दियौ जखन...।

-हम वानर सर दिया कहन नहि।

-से हौ।

-हौ बाबूजी, एखन जाइ छी।- हमरा बूझल अछि जे आमक मासमे बानर आ बनगदहा उठाइ बनखे एकटा संग निपत्ता भऽ गेल नहि जाइ बनखे आनन्दा आ मिथुक हँट हल नहि। आ आनन्दाक गेलाक बाद बानर आ बनगदहा ने जानि कतऽ सँ हून आबि गेल छै, आनन्दाक मृत्युक पच्चीस दिन ने बीतल छै...

....

बचलु गेला आ मिथुक कयानयन चिन्ताक मारे कहाइएकटा नख उपर नीचाँ हमय लगलहि, हिलबाक एनंग सन, एक वासनायन आच्छादित हाइत, पूनान एनंग नव बनौट आ बरौत जाइत। अंगनामे सान करै छथि।

-बूढ़ी, बूढ़िया। जयकन आ बिश्वनाथ आइ गाछी गेल नइया। आबि गेल अछि ने दूनू गोटा। सुनलिऐ ने जे बानर सभक उपद्रव भऽ गेल छै। काल्हिसँ ने जाइ जायत गाछी, से कहि दियौ। आइ बानर सभ कलम धेने छल, से कहबा ने कलौं। कहिये कऽ की हएत एखन...।

-कहि तँ रहल छलौं बाबूजी मुदा अहाँ तँ अपन धुनमे नहि छी, बाजैत मुँह दूखा गेल तँ बूझ नहि गेलौं।

हँ, धुनिमे तँ छथिय मिथु। ओही आम सभ आनन्दाक मृत्युक बाद पकनाइ शुरू भऽ गेल अछि। आ ओहि दिनुका बाद हून ओही बानर आ बनगदहा कान गय मान यानबा लल हूनसँ घृणा धेल अछि।

...

जयकान्तक माय वल्लरी आ विश्वनाथक माय मधा। दुनू बहीन काल्हिक दिनपर गेल छथि नैहर। काल्हिक दिनपर घुरि ऐल छन्हि एक सासुरसँ। आनन्दाक दुनू बेटी आ दुनू जमाय गेल छथि। वल्लरीक पति विनो आ मधाक पति कान्ह। मधु अपन पत्नी आ बच्चा सभक संग गेल छथि।

मिनु पत्नीकेँ आनन्दा कहि बजा लेल छथि। सभ मान पाउ छन्हि ज ऊ आब कहऽ लगती। सभ कहऽ छी वल्लरी, कहऽ छी मधा, जयकान्त आ विश्वनाथ कहऽ छथि..गान करय लागे छथि।

वल्लरी आ मधा अबै छथि आ मिनु गीत गाबय लागे छथि। आनन्दाक गीत। आनन्दा ज गबै छली वल्लरी आ मधा लेल-

लाल परी हे गुलाब परी

लाल परी हे गुलाब परी

हे गगनपर नाचए झूमि परी

हे गुलाबपर नाचए झूमि परी

रत्नमाला दुआरपर निर्धन खड़ी

हे रत्नमाला दुआरपर निर्धन खड़ी

माँ हे निर्धनकेँ धन दय दिअ परी

माँ हे निर्धनकेँ धन ज दिअ परी

लाल परी हे गुलाब परी

माँ हे रत्नमाला दुआरपर अन्हरा खड़ी

माँ हे अन्हराकेँ नयन दियौ जलदी

माँ हे अन्हराकेँ नयन दियौ जलदी।

बाप आ दुनू बेटी श्मशान जाऽ लगै छथि।

...

-मिनु। आनन्दाक मृत्यु अहाँ लेल नियति बनि गेल अछि। अहाँ ब्राह्मण जातिक आ आनन्दा चर्मकारिणी। मुदा दुनू गोटेक प्रेम अतुलनीय। हुनकर मृत्यु लेल दुःखी नै होउ। ब्रह्म बिना दुखक छथि। ब्रह्मक स्वरूप आनन्द छियन्हि। से आनन्दा लेल अहाँक दुःखी होएब अनुचित। ब्रह्म द्रष्टा छथि। दृश्य तँ परिवर्तित होइत रहैत, ताइँसँ द्रष्टाकेँ ध्यान सम्हारू। ई जगत-प्रपंच मात्र भ्रम नै अछि, एकर व्यावहारिक सत्ता तँ छै। मुदा ई व्यावहारिक सत्ता सत्य नै अछि। मिनु। ज्ञान आ अज्ञानक बीच अन्तर छै मुदा से सत्य नै छै। जीवक कतेकटा प्रकार छै, आ अविद्याक सेहो कतेकटा प्रकार छै। अविद्या एकटा दोष थिक मुदा एकर आश्रय ब्रह्म नहि होएत, पूर्ण जीव नहि होएत। ओकर आश्रय होएत एकटा अपूर्ण जीव। अविद्या एखन सत्य नै अछि मुदा खूब असत्य सेहो नै अछि। मिनु। ई अविद्याकेँ दूर करू आ एकरा माया कहल जाइत अछि। बएह माया जे आनन्दा प्राप्त कर छथि।
आ मिनुक मुखपर जेना शान्ति पसरि जाइत छन्हि।

....

मिनु जेना ऐँठ करबा लेल जा रहल छथि।
मोन पड़ि जाइत छन्हि आनन्दा संग प्रेमालाप।
-आनन्दा। अहाँसँ गप कतौ-कतौ हमरा कनीटा तन मोनम आबि

गेल अछि। पिताक सभसँ प्रधान कमजोरी छन्हि हुनकर पालयत्र सभक परिरक्षण। से झोली सभ मोन राखू। पिता जे पूछथि जे पालयत्रक परिरक्षण करबा हेतु तँ करबन्हि- पुस्तकक जलसँ, आगिसँ आ स्थूल वस्तुसँ बचा कऽ। छाहरिमे सुखा कऽ। १००-५०० पेजक पोथी सभ। हम कतेक दिन देखा देब। एक पात एक हाथ नाम आ चारि आँगुर चाकर होइ छै। ऊपर आ नीचाँ काठक गत्ता लागल रहै छै। नाम भागम छिद्र कऽ सूतरीसँ बान्हल रहै छै।
-पिता मानत?
-नै मानत किए? ब्राह्मणक बेटीसँ बियाह करबैक औकाति छन्हि? हम एक गोटकेँ दू टाका बन्ना दऽ नहिएँ खरिदल जमीन किनबा लेल। मुदा पिता जा कऽ बन्ना घुरा आनलन्हि। एक-एक दू-दू टाका जमा कऽ रहल छथि। १०० टाका लड़कीबलाकेँ देत तखन बेटाक बियाह हेतन्हि आ पाँजि बनतन्हि। आ से ब्राह्मणी अछैतन्हि तँ पालयत्रक रक्षा करतन्हि?

मिठुक मायक मृत्युक बाद श्रीकर खटबाह भऽ गेल छला। टोलबैया सभ कहै छथि।
आ हुनका बमारी अएलै, प्लेग। गामक दूटा टोल उपटिये गेल, मिसरटोली आ पछिमाटोली। परिवारक बहुत नाश गामम कतेक लोक मुइल से नै जानि।

मिठु पिताकेँ आनन्दसँ भेँट करा देलखिन्ह। श्रीकर पालयत्र परिरक्षणक स्थानसँ परिचय आनन्दमे नै जानि की देखि लेलन्हि।

मितु जीति गेल। नैयायिक मितु मीमांसक श्रीकरसँ जीति गेल आ मीमांसक श्रीकर अपन टालवैया सभकेँ पराजित कऽ देलन्हि।

आ आनन्दा आ मितुक विवाह सम्पन्न भेल।
मान पति जाइत छन्हि आनन्दा संग प्रमालाप। मितु जना भेँट करबा लेल जा रहल छथि। आनन्दाक मृत्यु भऽ गेल अछि। बलानमे पछन पिछाति गेलन्हि आनन्दाक। उहिना पिछउक विद्यासी देखबामे आबि रहल अछि।
मितु उठैत विद्यासीकेँ देखै छथि आ हुनकर मान हुलसि जाइत छन्हि, पिछाति जाइत छथि रानवाक हिलकारमे..
आनन्दा आ मितुक एक दासनासँ भेँट-घाँट बढ़ऽ लागल छल, खेत, कलम-गाछी, चौरी आ धानक कातक ओ स्थलपर। आ हुनु गोट पिछउत छला, खेतमे, कलम-गाछीमे, चौरीमे आ धानक कातमे सेहो। धानमे हाँगोत नै छला मितु। पहुँ ढलुआ पिष्ट स्थल जे आइ-कालिह छौत सर प्रयोग करैत अछि, से मितुक बनाओल अछि। ओपन पान नायत छला आ सुर्नसँ मितु धानमे पानि करैत आगाँ बढ़ि जाइत छला।
-हँ, कर नै पिछाति कऽ तँ देखा।
-स कान बढ़का गप भेलौ।
-देखा तखन न बूझबौ।
आनन्दा अस्थिरसँ आगाँ बढ़बाक प्रयास करथि मुदा..हँ.हँ..हँ..

𑒢𑒻 𑒞𑒰𑒏𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒟𑒱 𑒍 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿, 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒐𑒰𑒞𑒧, 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒏𑒪𑒧-𑒑𑒰𑒕𑒲𑒧,
𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒔𑒾𑒏𑒲𑒧 𑒂 𑒢𑒯𑒱𑒨 𑒍 𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧..
𑒂 𑒏𑒲 𑒏𑒢𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒞𑒲 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒋𑒞𑓄.. 𑒖 𑒣𑒱𑒕𑒞𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒲 𑒂 𑒞𑒳𑒧𑒱
𑒑𑒹𑒪𑒲..
𑒏𑒰𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒰𑒅𑒫𑒰 𑒪𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒞𑒲..

-

𑒯𑒿 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒥𑒔𑒪𑒳। 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾 𑒄 𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒳-

𑒒𑒢 𑒣𑒕𑒳𑒢𑒢𑒫𑒰𑒧 𑒁𑒢𑒯𑒴𑒪 𑒤𑒴𑒪 𑒑𑒕𑒱𑒨𑒰 𑒯𑒹
𑒤𑒪-𑒤𑒴𑒪 𑒪𑒳𑒥𑒳𑒡𑒪 𑒑𑒰𑒕 𑒯𑒹
𑒅𑒛𑓃𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒮𑒋 𑒮𑒳𑒑𑒰 𑒋𑒏 𑒂𑒍𑒪
𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒮𑒳𑒑𑒰 𑒁𑒢𑒯𑒴𑒪 𑒤𑒴𑒪 𑒑𑒰𑒕 𑒯𑒹
𑒤𑒪𑒫𑒰 𑒢 𑒐𑒰𑒃 𑒕𑓄 𑒮𑒳𑒑𑒫𑒰, 𑒤𑒴𑒪𑒯𑒰 𑒢 𑒐𑒰𑒃 𑒕𑓄 𑒯𑒹
𑒞𑒰𑒯𑒱-𑒣𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒪𑒏 𑒏𑒔𑒴𑒢 𑒯𑒹
𑒤𑒴𑒪𑒫𑒰 𑒢 𑒐𑒰𑒃 𑒕𑓄 𑒮𑒳𑒑𑒫𑒰, 𑒤𑒪𑒯𑒴 𑒢 𑒐𑒰𑒃 𑒕𑓄 𑒯𑒹
𑒞𑒰𑒯𑒱-𑒣𑒰𑒞𑒱 𑒏𑒪𑒏 𑒏𑒔𑒴𑒢 𑒯𑒹
𑒒𑒢 𑒣𑒕𑒳𑒢𑒢𑒫𑒰𑒧 𑒥𑒮𑒻 𑒮𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒂 𑒯𑒹
𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒮𑒳𑒑𑒰 𑒠𑒱𑒁 𑒢 𑒥𑒮𑒰𑒃 𑒯𑒹

𑒋𑒏𑒮𑒢 𑒖𑒰𑒅𑒪 𑒮𑒰𑒢𑒱𑒨𑒰
𑒠𑒳𑒃𑒮𑒢 𑒖𑒰𑒅𑒪 𑒯𑒹
𑒞𑒹𑒮𑒢 𑒮𑒢 𑒮𑒳𑒑𑒰 𑒅𑒛𑓃𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒯𑒹
𑒮𑒳𑒑𑒫𑒰 𑒢 𑒕𑒱𑒍 𑒯𑒑𑒱𑒨𑒰

गिगिना न छिऐ
यहा छिऐ गोनैया क वाहान ह

-हाँ अहाँ ओ गीत नै सुनि यावि नहल छी की?
-हाँ सुनि नहल छी। दखिया नहल छी। आनहा सैजी छथि।
जहिया डा मूल्ल छली गहिया सूनन नही- नअह नहथि- गावै नहथि-
लुकसनी अंगना चानन घन गछिया
गो गन काली घऽमचान ह

-शब्द ग्रम नै छल डा।
माँछ-मौस आ सयनानायक्ष यूजाक वाद अगिल दिनक गय अछि।
न चानन गाछ कटन नहथि आ न अंगना वढन नहथि आनहा।
दासन दिन डाओ चानन गाछक नीचाँ चर्मकानटालम गोआँ सए
दूनू गोटक लहाश दखलहि। आ ओीहा शब्द गगनम यसनि गेल,
सौंस गौंआ सूनलक- आनहाक अवाजम-
जाह वान जवऽ काली नूनमून वालम
नहि जाऽ नकगमाला क निशान ह

शब्द ग्रम नै छल डा।

[Translation of the Maithili Short Story, 'Shabdashastram', by the author himself. Gajendra Thakur: published as ×The Science of Words' (https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=the+science

+of +words +gajendra +thakur&btnG=

https://www.jstor.org/stable/44754529 Indian Literature Vol. 58, No. 2 (280) (March/April 2014), pp. 78-93 (16 pages) Published By: Sahitya Akademi]

महिसवान ब्राह्मणक गाम

चारू कात गाछ-वृक्ष, पोखरि। गाममे एक.. दू.. तीन आ एकटा आर, चारि टा पोखरि।

ओना गाँ तीन टा आर पोखरि अछि। एकटा उत्तरबरिया पोखरिक उत्तरमे बड़का ठकही पोखरि। लोक सभ कहैत जे कोना ठकौ एकटा नाविक खुनने रहै ओही पोखरि। मुदा ककर प्रमाण पूछने पहिने पता लागत जे आर गाँ कोना प्रमाण नै मुदा खुनौ-खुनौ रहने रहए गेल रहै आ ककरो कारणसँ ओ ठकौ पोखरिमे जाइ नै गामि सकल नहुए। हटबौमे ओकरा ठकौक, ठकौ की नाउस कहू, एकटा पहिनक आठ हाथक चट्टी कि पहरी सहा नहि गेलै पोखरिक कातमे। बड़ दिन धरि पोखरिक कातमे रहै मुदा हरन बाढ़िमे ओहो बहि गेल। से जे एकटा प्रमाण नहुए सहा नै बचल। गामसँ ओही पोखरि दूर अछि से डाँ० पाचनिसँ एकर कोनो सम्बन्ध आओ धरि

स्थापित नै भऽ सकल। हँ उपनयनक विध-बाधमे धरि एकर उपयोग होइतहि अछि। किसिम-किसिमक माँछ नहि छै ओ पोखरिमे। माँछक कोनो कमी नै। कहियो ककरो पोखरिमे जीरा देबाक खगता नै भेलै। सलोना मछैन होइत आ सभ टोलक लोककेँ- दछिनबाइ टोल मात्र ग८ अनठनबाकेँ छोड़ि कऽ— मछैनक सभ दिन अपन-अपन टोलक माँछक हिस्सा देल जाइ छै।

दछिनबाइ टोलक दक्षिणमे अछि बुचिया पोखरि। गामसँ दूरगर अछि मुदा जाइत छै बीचाबीच। कातक ओ जाइतकेँ गरबा काल पीअर वस्त्रा, आइक जमीन्दारक अग्निवृद्ध प्रपितामह एकटा बड़ पैघ आयोजन केने छला। बस्तीसँ दूरगर आ खेतक बीचमे रहबाक कारणसँ ओतो लोक सभ स्नानक लेल कम्मे-सम अबैत। मछैन सेहो होइत मुदा से मात्र ओ दछिनबनिया टोलक लेल। ओ पोखरिक एकटा आर विशेषता अछि। जखन दुर्गापूजाक समयमे दुर्गाजी हरसँ नैहरसँ सासुर दसम दिन- जकरा जतरा सेहो कहल जाइ छै- विदा होइ छथि तँ हुनकर मूर्तिक भसान अही पोखरिमे होइत। पुरुखपात्र तँ नै, हँ महिला लोकनि दुर्गाजीक भसानयन हवाइकान भऽ करै छथि। दुर्गाजी ओ टोलकेँ क पुछय, ओ गाममे नै बनै छथि। ओ बनै छथि पतासक ग८ टोलमे। ओ गामक लोक तँ अगम्मी सभ। खष्ठी दिन धरि दुर्गाजीकेँ साँपि कऽ राखल जाइत, मात्र मूर्तिकार हुनका उघारि कऽ देखि सकैत, कारण ओ नै देखत तँ हुन दुर्गाजी बनती कोना? आर किया देखत तँ आङ्गन भऽ जायत। हँ, खष्ठी दिन बेलनोतीक बाद मूर्तिक अनावरणक बाद

हुनकर दर्शन लोक कऽ सकैत। आ ओही दिनसँ मेला सेहो लगैत। ई गाममे दुर्गा बनती तँ कतेक लोक षष्ठीक पहिनहिये आह्वान भऽ जायत। आ एतासक गाम की कम अगाधी अछि? मुदा पूजाक नामपर देखू, सभ सङ्ग-सङ्ग भऽ जाइत। नाममे टोल लागल छै- गढ़ टोल, मुदा अछि ई गाम। अही गाम जकाँ महिसवार ब्राह्मणक गाम। अगायनाम हम आगू आबि हम- एकर तँ बूझू प्रतियोगिता होइत रहै छै दुनू गामक मध्य। गढ़ टोलक गाम दऽ कऽ जाउ तँ ओइ गामक बान्हक कातक दलानपर बैसल छौड़ा सभ किछु ने किछु सुनबे टा करत। मुदा ई गामक हुसाही प्रकृतिक छौड़ा सभ अनवधि कऽ ओइ गाम बाट जेबे टा करत। हँ, सभ-बध सभ अही बूचिया पोखरिक बाट गेनाइ श्रेयस्कर बुझैत, भलहि कनी हटि कऽ रस्ता छै, तँ की।

गाममे एकटा आर पोखरि अछि। मुदा गामक दुनू कात कमला-बलान आ कोसी, ई दुनू धारकेँ नियन्त्रित करबा लेल दु-दु टा बान्ह बान्हल जाय, ई चर्चा देर सबेर होइत रहैत। गामसँ सटल पश्चिम दिस उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत एकटा छहर, हुर बहैत कमला महारानीक ठाइ बलान धार आ तखन कमला महरानी आ हुर जा कऽ ओइसँ पश्चिम उत्तर-दक्षिण दिशामे दोसर छहर, ई तरहक चर्चा होइत रहैत। मुदा ओ कमला धार नै छी छाहर छी, हुर आगू जा कऽ कमला-बलान धारमे ओ मिलि जाइत, आ ओ बलान धार नै छी कमला-बलान छी। बड़ पिंगल गौँआ सभ, भूगोलक तँ एतेक ज्ञान बाबू किताबमे नै भेटत। बान्हक बीचमे पड़ि जायत

बल्ली पाखनि। कोना ओ पाखनिकेँ सनकान रहि सकत से नै जानि। ओ पाखनिसँ बलान एकटा नालासँ जुड़ल अछि, जखन धारम पानि अबैए तँ लोक नालाक मुँह खालि दैत छथि आ धारक उपरका पाँकबला पानिसँ पाखनि रहि जाइए, बालु धारम नीचाँम रहि जाइ छै तँ ओ नै आबि पबैए। ओनाहितो बलानम बालु कम आ पाँक बेसी अबै छै। आ ओइ पाखनिसँ पटौनी होइए। बैसाखम सकनाइयोकि लगाति गोँआ सभ हुँज बना सभ पाखनिक सहाइ करै छथि, उनाहै छथि। आ पूसक पूर्णिमाक मेला। माछ मखान खूब होइ छै।

गामक शुरूहम साबिकी दुटा टोल। टोलक पानिसँ किछु गोटेकेँ घर बहुना गेलै तँ लोक गढ़ नानिकलकेँ घरहा गाम, माटका बुइधबला गाम कहि बनाओनी बनाबैए।

धार आ विशाल बल्ली पाखनिक सटल नहुए एकटा फूटबॉल क्रीड़ाक्षेत्र- विशाल नमना। जमीन्दारक कनाबसँ ओ नमना पीअन बन्नाक खाम चलि गेल, मान मिला लल गेल। बड़का जमीन्दार बनबनिया नॉय सहा ओइ बीचम नै जानि कोन कानधसँ एक गृहस्थक एकटाम एकठ जमीन होइ पइयन जान दन नहुया। सूनइ राइक गोवनसँ सीटल खा सहा ओ क्रमम पीअन बन्नाक खाम मिलि गेल छल, मान मिला लल गेल छल।

कमला आ बलानक बीच महिसबान सरक मालक राजन लल

वौआवौठी अछि। मङिसवान सए ७ाऽ अवै छथि, खलाॐ छथि आ कमलाम ह्लै छथि। कखना ऊ सए अपना-अपनीकँ कमलाक धानम विन प्रणिाधक वह्ऽ दै छथि गँ कखना धानक प्रनाह्क ऊनटा ह्लै छथि। वौआ वौनीक ॐी स्राणक सए छथि।

दूनु धानक वीच गुञ्जनटाली।

वाह्मयन वौधा मलिक आ आन ऊमक चानिटा घन सह्रा अछि। ॐीह्रा दूनु टाल अह्री गामक सिमानम अवैञ। ऊम अपनाकँ मलिक ना सायव कहै छथि। वौधा मलिक खिस्सा सूनवै छथि...
चानि टा व्राह्मक्ष स्रान लल याखनि जाॐ छला गँ ७कटा मनल गाय दखलह्रि। मनल गाय क ऊाऊाण? स छाटका राॐकँ ऊा रान दऽ दल गेल आ जखन ऊा घूनल गँ जाणिसँ वहिस्कृण कऽ दल गेलौ।

सए जाणिक काज यावनि-णिह्वान-संस्कानम ह्र्ॐण छै।

वस्का ज दान मांगे अंगना नवौनी/
यमनिया ज दान मांगे चिलका खलौनी/
दगनिन ज दान मांगे नान कऽ छिलौनी/
नौअनि ज दान मांगे आनण लगौनी/
धाविया ज दान मांगे खिनक घूलौनी

सए जाणिक काज यावनि-णिह्वान-संस्कानम ह्र्ॐण छै।

ओकर काज सेहो पाबनि-तिहारमे रहैत छै।
पटार बनबासँ सूप, बीअनि सभ किछु बनाएब ओकर काज। आ पाहुन परख लेल आ बरियाती लेल जे खस्सी काटल जाइत तैक लेल मियाँटोलीक काज।
खस्सीक मूड़ा दुर्गापूजाक बलिमे कमिटी लऽ लैत। मुदा जैनुल मियाँ जे खस्सी काटैत अछि से हलाल कऽ कऽ। एकदिन अदहा लटकल नहि छै, मुदा बना सोना कऽ एकदिन लऽ जाइत आ खेलना सेहो।
एखन महिसवार ब्राह्मणमे सँ जे भजन आ अष्टजाम करै छथि से ओही खेलनासँ बनल ढोलक कीनै छथि।
कुरैशा टोलीमे मोहम्मद शमशुल। बाहयन। खिस्सा सुनबैत नहि छथि... तिलनीनगर। एकटा सैयद छला ओतऽ। एकटा कनियाँ छलखिन्ह आ कैकटा बेटा छलन्हि। लड़का सभ।
नूनजागढ़क युद्ध। मुदा जवान सैयद आ हुनकर सभटा बेटा मारल गेल। मुदा हुनकर विधवा गर्भसँ छली। किछु दिनमे बच्चा भेलन्हि। नाम राखल गेल मीनां।
ओहो लड़का, मुदा मायकेँ ई पसिन्न नै। हुनकर बियाह करबाओल गेल कम वयसमे, ई सोचि जे मोन युद्धसँ हँटतै। मुदा..
माय आ कनियाँ बड़ बुझलखिन्ह मुदा मीनां असगर नूनजागढ़ गेला आ बाप-दादाक बदला लेलन्हि आ घूमि कऽ तिलनीनगर एला।
हुनकर आत्माक प्रतापसँ तिलनीनगरमे हुनकर मृत्युक बाद बहुत दिन धरि शान्ति रहल।

दादा लऽ कऽ जखन ओ सभ गढ़ नानिकल घूमै छथि तकर दृश्य अद्भुत होइत। दादाम ओ सभ मननी खेलाइ जाइ छै, बाँसक मननीसँ।
मर्सिया सुनैत ओहिना पुरुखपात हबोढ़कार भऽ कानऽ लगै जाइत जेना दुर्गाजीक भसान दिन स्त्रीगण हबोढ़कार भऽ कानऽ लगै छथि।

ओ दसो दिन सैयद बँसवा कटौलक न होइ होइ
सभ बँसवा भेलै बिसननमा न होइ होइ

गढ़ नानिकलक सभ लोक गवैया, खिसक्कर सभ। सुनैत रहु...
भाव खेलाइ कालम मीनांसाहेब अबै छथि आ तन दै छथि।
एक्को खिस्सा कताक वन करबह?
सुनर जाइ न.. गढ़ नानिकल छिऐ। जाक वन सुनबह नन लगाह।
तिलनी नगरम हनफुल सैयद रहथि।
दिल्लीकेँ तँ तिलनी नगर न कहै छै हौ?
की जानऽ गेलिऐ?
हनफुलक कनियाँ रहथि आगमा।
नूनजागढ़क युद्धम हनफुल मनि गेला, आगम गढ़आनि रहथि।
जन्म भेल एकटा बच्चाक, जकर नाम राखल गेल मीनां।
आगम मीनांक बच्चाम बियाह करा देलन्हि, मुदा मीनांकेँ नूनजागढ़क युद्ध आ ओहिम ओकर पिता हनफुलक मृत्युक समाचार देर-सबेर लागिये गेलन्हि। आ ओ नूनजागढ़पर आक्रमण कऽ ओकरा हनलन्हि

आ तिलनीनगन घूनि कs आवि (गेला।

गिन-गिन नगेउा दलम (धौंसा वाले, ह नौ रैया (धौंसा
रैया हो, (धौंसा कs वाल कहला नै जा॰॰
मान-कारि कs लकउी दलम वजना वाल वालैउ,
न रैया वजना वाल वालैउ
रैया छिटकल जा॰॰उ सिघिन गलनान
कनिया न कुमैगा दलम घाउा ज 0नकै,
ह नौ रैया घाउा
रैया घाउा यी0 अगिन हा असनान

हन उकरा आन टाल अछि।
चर्मकान, मूखदन नाम आ दयानाम नाम । यहिन गामसँ वाहन नहय ॰॰ी टाल, वसविडीक वाद। मूदा आव गँ सए वाँस कारि कs खगम कs दन अछि, आ लाकक वसावास वढैग-वढैग उे चर्मकान टाल धनि आवि (गेल छै। घनहट आ ॰॰ी यजवा सए अगल-वगलम खसिग नहैउ। ढालहा दवासँ लs कs ढाल-यियही वजवा धनिम हिनकन सएक सहयाग अयजिग। माल मनलाक वाद जाधनि ॰॰ी सए उ0। कs नै लs जा॰॰ छथि लाकक घनम छगका लागल नहैउ। मूखदन अछि जागेश्वन साक संगी।

लाला महनाज, चर्मकानक लाकदनगा। चौनीसँ माँछ मानि कs अनै छलथि। चौनीक माँछयन सएक अधिकान नहै छै। सए उगs माँछ

मानि सकैत। मुदा सानायमनी कहै छलै ज नतह टा चौनीसँ माँछ मानि सकैत। लाला महनाज वलगन नहथि, ओ स नै मानथि। एक दिन ओ माँछ मानि कs आवि नहल छला आकि सानायमनीकँ यना लागि गेलै। यहिन ओ ङ्गलाका सरम वाघ नहै छलै। सानायमनी लग सहा कङ्गएकटा वाघ नहै। ओ एकटा वाघ लाला महनाजकँ मानवा लल यठलक। मुदा लाला महनाज अपन लाठीसँ ओकना मानि दलहि। सानायमनीकँ वउ गामस उठलहि, ओ गहिल दवीक आनाधना कलहि। गहिल दवी लाला महनाजकँ एकटा वाघिन यठा कs मानि दलहि।

खसियाक गीन मैया घूनै छै हो/
हाङ्ग लालाक कनै छै नै खाज
लालाकँ खाजै छै जौँ आव/
कानि कानि कहैत न वूझाय
कगै नै दखियै न दैवा जा आव/
कगै नै लाला वावीकँ न आव
ककनासँ स पूछवै ककना समूझवै/
ककनाकँ कहवै हम्म हा उदश।

लाला महनाजक मित्र नाथ मिश्र लाला महनाजक माए-वावूकँ दुख दनाङ्ग वन्न कs दलहि।

तँरि-तयरि कहै लागलै गे/

नुयामाय मिसनकँ न वूसाय
जकन यनसाद नाथ मिसन छरु हो/
(धाविय याट सनक ज शनीन
कनाक थम सनक छो मिसन न/
गाना ज अवे ने हो जाँघ
कूनल कूनल वाँही नाथ मिसन हा/
ललिय यनसाद छो न आव

लाला मरुनाजक आत्मा गमसा (गल आ नाथ मिग्रकँ डा मानि दलक आ सानायमनी आ डाकन यनिनानकँ सहा मानि दलक। रुन लाला मरुनाजकँ युजा या0सँ मनाडल (गल आ गखन जा कs डा शान्ध रुला।

ग८ नानिकलक सर लाक गवेया, खिस्रा करुक्कान सर। सूनेग नरु... मनसानाम चमान आ छठनमल जाम। दूनु वहादून, मनसानाम मानंगक नाजाक सनायगि आ छठनमल सिनीनाजखण्ड नाजक सनायगि।
मानंगक नाजाकँ यगा नरुह्रि ज सिनीनाजखण्डक सनायगि छठनमलकँ डाना किया ने जीगि सकेव, मनसानाम सहा ने।
छठनमलकँ मानंगनाज अयन दनवानम वजलह्रि आ डाकना लालच दलह्रि। मुदा डा ने मानलह्रि, सिनीजखण्डसँ निश्वासघाग? कखना ने। मानंगनाज हूनका गछानि कs वहुवा दलह्रि। मुदा छठनमल ज्क्का वनम सर वहुन गाउ दलह्रि। मानंगनाज रुन उना (गला, जाुक्का

छछनमल सन सनापति छाऽ सना सहो गाहुन बलगर हुता। आ सिनीनाजखण्डपर आक्रमणक निदान छा पाति दलहि।

कुछ नै बीति जेतै हौ मनसाराम,
बाह सिना किये नै छानि जाइत।
गेया हम्म नै टये लल दबै हौ,
अपन नाजक नै रीतन।
जौँ गामा आवा जी-जानक तन छौ हौ,
तँ घन घुनि जा हौ नै अपन।
हम्म तँ ओका करम नै बाकी नखबऽ हौ,
हम्म करबै सिमानक नछियाल।
जौँ ताँत ओका तग आगू बढबै हौ,
हम्म गाहुन सिन लबै नै कतानि।

१८ नानिकलक खिस्सा सुनैत रहू... ओकर खिस्साक कओकरा नूप।
जाऽ जाऽ सँ कनियाँ-मनियाँ ओली, तामुक्का खिस्सा नन ओली।
लुकसनी ओकरा चर्मकारक पुत्री नहथि। छछनमलकँ पति रूपम प्राप्त करबा लल ओकादशी करथि। मुदा हुनका सपना ओलहि ज छछन साधू बनि गेल अछि। आ जखन छछनक रँट लुकसनीसँ रल तँ छछन हुनका दनी मानि ललहि, हुनकासँ उपदेश ललहि आ लुकसनीकँ दनी बना दलहि। लुकसनी दनी बनि गेली।

हन धनुख टाली। रगनानन्द मंडल आ अधिकलाल मंडल-धानुक।

यहिन यञरु लाकनि रान उघैग नहथि मूदा यछागि दूसधटालीक लाक सहा रान उघञ लागल छथि। खगी कनव धनूकटाली आ दूसधटालीक यूनान यशा अछि। हुँ यहिन ऊ्ी सरु मात्र वानियन काज कनैग नहथि, आव वटाञ्यन कनै छथि। वकनी यासव आ दुर्गायूजाम छागन वलि लल ववव, गकना अहाँ ऊे दूनू टालक यशुयालनम गानि सकै छी। ञक-ञकटा व७द सहा किया किया नाखऽ लागल छथि आ यान लगा कऽ गकन उययाग जा७ा व७दसँ खगी कनवाम कनै छथि।

काना मग७ा-माँटी रलायन महिसवान व्राह्मणक चाञ्न कानी खायतिसँ गाउैग काना टालक महिलाकँ अहाँ सालक काना ञरुन मास नै अछि, जञ्म नै दखि सकै छी। कानध यूछवह्नि गँ उा सरु कानध कहगी ज ऊ्ी सरु निर्लज्ज हाञ्ञ आ स ऊे कानधसँ ज जन्मयन ञकना सरुक याछू गेनम थूक दऽ दल जाञ् छै, जञ्सँ कथूक लाज काना गत्रम नै हगे।

ग८ नानिकलम काना ञरुन व्यक्ति जकनासँ समाजकँ नाकसान हाञ् छै, उाकन मूञ्लायन शाक नै मनाउाल जाञ्ञ, उनट उाकना मूञ्लायन जनानी सरु खायति हाति कऽ वाह्ययन हकि दै छथि।

गीन टा घन नहलायन धावियाटाली ञकटा टाल वनि गल अछि। मंमानयून धनिक माननातीक कयत७ा ञगऽ सारु कञल जाञ्ञ। महिसवान व्राह्मण सरु ज वनियागीम वलवटम माति कऽ सीट-

साटि कऽ निकलै छथि से कोना अपन कपड़ा पहीरि कऽ? नइहर मंगनिया कपड़ा महगौआ, मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा साड़ी भाइ दु दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकँ दै छथिन्ह। कानैल, बृधन आ रामी साही, धोबि। रामी साही आब रामी दास छथि, कारण कबीरपंथी जाइ छथि। गुरु गोसाँइ जखन अबै छथि तखन रामी दासक सनसनी मे पड़ि जाइ छन्हि। मैथिली कबीरबाणीक भण्डार छन्हि हुनका लग।

प्रथमहि छलौं हम आदि पुरुख संग तब हम रहलौं कुमारि हे
भैया मिलल भतारक जनमल ता संग भेल बिआहे हे
का संग रसलौं का संग बसलौं का संग कलौं धनुआन हे
का संग दश दशाउन घुमलौं कोन पुरुख क नारि हे
पाँच संग रसलौं पचीस संग बसलौं तीन संग कलौं धनुआन हे
संगहिम दश दशाउन घुमलौं एक पुरुख एक नारि हे
साँपिन रूप हम शहर बसलौं डँसलौं मय चारु बेद हे
ससुर भैंसुर मिलि एक मत कलौं अचरज कहला न जाइ हे
एक आद्या तीनि रूप धराए छल मति बुद्धि निस्तान हे
कहए कबीर सभकँ मन माहे सन्त काइ उतारए पार हे

रामी दास सालमे एकबेर १८ नानिकलम सन्त समागम करबै छथि। भरि साल घूमित रहै छथि। से कम्पी, मधुबनीमे सहजयोग सत्संग केन्द्र, अनड़ बनही टोल, अनड़हाट, कबीर जागु आश्रम, अष्टनाओढ़ी, कबीर आश्रम, ब्रह्माण्डमा, सद्गुरु कबीर आश्रम,

सूनागंज। समस्तीयूनम कवीनम0, सामलयून, कवीन आश्रम, लदौना। मूजङ्कनयूनम कवीन आश्रम, गुर्की, कवीन म0, कृष्णाटाली, ब्रह्मयूना। (गानु साक गामम कवीन आश्रम, स्नना3। आ कवीन धर्मस्थान, दुरुवी, नयाल धनि। ऽऽी काना स्थान दूनकासँ छूटल नै छवि। काका गुनुगादी ज्ञाना चादनि दऽ म0क महन्ती दवाक कार्यक्रमम दूनकान उपस्थिति अनिवार्य नहैा अछि।

१८ नानिकलक सर लाकक स्मृति वत्त गज, यूछवै एकटा गय्य आ गखन सुनैा नहु...

नौआटाली सहा गीन घनक। जयनाम 0ाकुन, लक्ष्मी 0ाकुन आ माल 0ाकुन, हजाम। व3 वजन्मा सर।

जागिहन 0ाकुन, १८ नानिकल गामक कमनसानिक व3ही कमानम सरसँ समंगन यनिनानक। छ3ीदान छथि जागिहन 0ाकुन। मूदा माऽऽनजन ना दूनकान दनान जखन सजम अवै छथि गखन ल(गेऽ ज छ3ीदान जागिहन वावूक सनस्नी मह यि3 जाऽऽ छवि आ नीक आ अनर्गल दूनु गयन खाली 'हुँ' निकलै छवि। जागिहनकँ गीनटा सन्तान- विहानी, अर्जुन आ शिननसन। सर (गार का0क व्यनसायम लागल छथि मूदा विहानी संग-संग लाहाक काज सहा कनै छथि आ अर्जुन साऽऽकिल मिस्त्री सहा वनि (गल छथि आ निक्का-साऽऽकिलक छार-मार सछ0ीसँ लऽ कऽ यंचन सारव धनि सर काज कनै छथि। वच्चा सरक लल उधिक (गहूसँ लऽ कऽ लाहाक

गानकँ नीचाँम माटि लकठीक यहियाकँ गुठकावय वला खल आ कागक आन खलाक जाद कन छथि शिननमन। स लाक कहिगा अछि- दखियौ, यठला लिखलासँ नाकनीय टा रटे छै, स धानघा वदलु। दखियौ शिननमनकँ। की-की रूनाग नहे छै, कुका0सँ की-की वना लग। मुदा विहानीक हाथक लिम ककनाम नै, आनाकाट, सामकटा, खठाकाट, रूँटकटा सरम शिननमनसँ आगाँ। शिननमन आनिष्कान कनैग आ गकन वाद डाकन दखा-दखी नगहु वौस्फ् विहानी डाकनासँ नीक वना लग। आव गामम काना वौस्फक कॉयीनाट आनिष्कानककँ (थाठव रटगै। यथनौटी लकठीयन शिननमनक आनी, वसूला मूनूछि जा छै मुदा विहानी नै जानि काना सम्हानि लग। टानाहु लकठीसँ सहा किछु न किछु वना कs मला (0लाम वचि अवैग। गकथा विनवाक लल नम्हन आनी सामाँम नै नहुन छाटका आनिसँ चीनि दग। लकठीक कामिल रागकँ असनासँ अलग कनवाम विहानीक जाठ नै।

माट सूगक वनल अँचनी रगनीकँ खाँछ दवा लल यटना जगदीश मालकँ गाकल जा छहि, यटमीनी वठ काइल।

राला यँतिग कुम्हान, माटिक काहा सरसँ लs कs वह्रा सरक लल चिउ चूनमूनी धनि वनवाक न्दजाम छहि। मटिकमम काना जाठ नै।

वासू चौयाल, खाव। रान उघैग नहथि, माँछ सहा उघै छथि, कहान

सहो बनि जाइ छथि। आ माँछ बबेया लागल छथि।

चलित्तर साहु आ लखुलाल साहु हलुआइ, दुर्गापूजाम दोकान लगबै छथि। काज उद्यमम सखी-गनकानी बनवाक ठीका-पट्टा सहो लमs लागल छथि।

शिवनानायक महरा, सुनी। लछमी दास, गामा। लाल कुमार नाय, कुर्मी।

राला यासवान आ मुकेश यासवान- दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाढीक संबंधी। बगल गेना हजारी ज कुशेश्वरस्थानम एकटा कुशयन एकटा गाछ ह्वाना आवि कs दुध देत दखन नहथि गँ उाइ स्थानकँ काउय लगला, महादेव नीचाँ हाइगा गेला, हन गाकि ललहि। सीताक बटा कुश -लवक राय- ह्वाना स्थापित ऽऽी महादेव गेना हजारीक गाकल।

आव सुनु खिस्सा.. गछ नानिकलम सर चीज लल एकटा खिस्सा अछि.. खिस्सा नै इतिहास...

पूहयीनगनम कीनति यासवानकँ जागला खाम एकटा बद्धा रटलै। नाम यउलै जाति।

-जागला खाम रटलै गँ न गँ हो।

उा उाकना यासि-यालि कs येघ कलहि।

जातिक दास नहि हनिया। दुन्नू संग रहथि। एक दिन जखन हनिया सुन्दर बनबै लेल जाति संग गेल तँ जाति नाचऽ लागल। ओहुलोक तालि गेल। कालिदासकेँ जातिसँ रुँट रहलन्हि आ कालिदास हुनका ठन नास शक्ति दलन्हि आ हुनका धर्म आ सत्यक प्रचार लेल कहलन्हि। पुरुषीनगनम जाति धर्मक प्रचार प्रारम्भ कलन्हि। ऊ बच्चा सरक हाथम मारिक ढया दथि आ ऊ ढया शंकरचूड़ लड्डू बनि जाऽऽ छल।

जिअऽ निनवृद्धि बालक जाति हो/
जगम गुँ अमन रऽ जा
नित दिन कनिहँ बलकना नौ/
आह धनमक हो बबहान
जहाँ ठीन ज बीज चाहबै बालकवा नौ/
पुनौ दाता हो धर्मराज

अमनीनाक बटा कालिदास ब्राह्मणक वेश धनि जातिसँ रुँट कनै लेल गेला, मुदा जाति काना कानधसँ हुनकासँ रुँट नै कलन्हि। कालिदास हुनका स्राप दऽ दलन्हि आ जातिकेँ काठ रऽ गेलौ।
कालिदास एकटा जातखीक रूप बना कऽ एला आ जातिकेँ बानम बानर बर्ख दुख पियास नहि लेल कहलन्हि। जाति अन्तम सरल रला।

सत्यनारायण कामत, किडाट, दनरंगाक जमीन्दारक कामायन नहि

छला।

नामदेव रंजनी। किछारक प्रकार रंजनी, जे दनरंग। जमीन्दारक रुनसाधन सम्हारै छला।

सत्यनारायण कामत महतो सेहो नहि, वनवासिया नायक। हाथीक हौदा वनवैम रहनकन जाठ ऽऽलाकाम नै छला। हाथीक शब्दावली अगाड़, पिछाड़, थाऽऽग, माऽऽल बिनि ओ सबहक प्रयोगक रहनका अभ्यास भऽ गेल छन्हि, अपना आना धाम ओ सबहक प्रयोग करैत नहि छथि।

कपिलेश्वर नाउत आ नामानरान नाउत, वनऽऽ। यानक खानदानी पेशा।

मलाह जीवछ मुखिया। तकरो पाखनिम सालमे एक वन महीन, पञ्चम दिनसँ मास दिन धरि मलाह जेम महाजाल खसबै छथि। मलाहक टोल ज्ञामि अबैत।

पाखनिक कागम मास दिन लल बाहनी मलाहक गाम वसि जाऽऽत। पहिने गँ मास रहनिसँ ऊपन ऽऽी सलाना महीन चलैत नहय मुदा आब धीच गीन कऽ वीस दिन। हन मलाहक सनदान घाषणा करै छथि- जे आब माँछ शेष रऽ गेल। आब जे मानव, गँ महाजालमे एका टा वउका माँछ नै आउत। रौनी जालसँ मानव गँ सरटा

छारका माँछ मनि जायत आ अगिला साल तखन जीना समय यतत। उाऽ़ यछ्व्र-वीस दिनम गामम उसनक नागानतम नहेत। अही वहन्न याखनिक सारू-सरूाऽ़ सहा रऽ जाऽ़ छै। रान चानि वजसँ दूयहनिया धनि माँछ मानल जाऽ़त। आ रून वनू यहन धनि सर टालक लाककँ -दछिनवाऽ़ टालकँ छाति कऽ- अयन-अयन टालक हिस्सा दऽ दल जाऽ़ छै। सर अयन-अयन हिस्सा लऽ गामयन अवै छथि। उागऽ टालक सर यनिनान अयन-अयन हिस्सा वाँटि लै छथि। टालक माँछक कगक कुति लागत, ते निषययन कहिया काल निनाद सहा रऽ जाऽ़त। जिवैत रलहि मसामात काकीसँ टाका-वजी नै हाऽ़ह, रलहि मनवा काल वटीकँ हिस्साम सँ किछु दवाक मसामातक ऽ़छाकँ कं0 मवाति दन हाथि; आ ववानी मसामातक मूऽ़ल शनीनक उाँ0। स्राम्य ययनयन लगवा लन हाथि। हुनकन स्मनघ आन काल रल नै अवैत हाऽ़ह मूदा तकही याखनिक हिस्सा लवा काल सरकँ अयन-अयन मसामात काकी मान यतिय जाऽ़ छहि। तेयन निनाध व्यक्त सहा हाऽ़त आ यहलमान, जिनका सर प्रमसँ खलिङ्का सहा कहै छहि, कँ छाति किनका ते प्रकानक हिस्सा नै रटै छहि- रल खलिङ्काक अंगनाक उा मसामात वीस वर्ख यहिनहिय कित न मनि गेल हाथि। तकही याखनिक तकरा आन निशेषता अछि। तेम माँछ, काछु सर स्वयं वढैत। याखनिक कागम मलकाका सर अननूआ, आ मानत नास लीछ कवलीक प्रकान। कागम रंट-कद्द महिसवान वद्दा सरक राजन।

कमलाक नाहक खवाह मलाह, गामक लाकसँ तकन वदलाम अन्न लै छथि। अनगौँआसँ हुँ, धान यान कनवाक वदला याऽ़ लै छथि।

सुनू खिस्सा...

भरौड़ाक दुलरा दयाल मलाह। गोनू झाक गामक।

आब गोनू झाक गप आएल तँ ओइ महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनूक खिस्सा पढ़िन...

मिथिला राज्यम भयंकर सुखाड़ पड़ल। राजा ढोलहा पिटबा देलन्हि, जे जे क्यो एकर तोड़ बताओत ओकरा पुरस्कार भेटत।

एकटा विशालकाय बाबा दस टा आकि बसिय ठोप कर राजाक दरबारम ई कहैत एला जे ओ सौ वर्ष हिमालयम तपस्या कर छथि आ यज्ञसँ वर्षा करा सकै छथि। साँझम हुनका स्थान आ सामिग्री भेटि गेलन्हि। गोनू झा कतौ पहुनाइ करबा लेल गेल रहथि। जखन साँझम घुरला तखन कनियाँक मुँहसँ सभटा गप सुनि आश्चर्यचकित भऽ हुनकर दर्शनार्थ विदा भेला।

इम्हर भोर भेलासँ पहिनहिये सौँस सोर भऽ गेल जे एकटा आन बीस आकि बसिय ठोपवला बाबा सेहो पधारि चुकल छथि।

आब बीस आकि बसिय ठोप वला बाबाक भेँट हुनकासँ भेलन्हि तँ दस टा आकि बसिय ठोप वला बाबा कहलन्हि- अहाँ बीस ठोप बाबा छी तँ हम श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा छी। कहू अहाँ कोन विधिये वर्षा कराएब।

-हम एकटा बाँस रखने छी जकरासँ मेघकेँ खोँचारब आ वर्षा होएत।

-ओक टाक बाँस रखै छी काऽ?

-अहाँ सन ढोंगी साधुक मुँहमे।

आब ओ दस ठोप वला बाबा शौचक बहन्ना कऽ विदा भेला।

-ओ। अपन खराम आ कमण्डल तँ लऽ जाउ।
मुदा ओ तँ भागल आ लोक सभ पछाड़ कऽ ओकर दाढ़ी पकड़ि घीचऽ चाहलक। मुदा ओ दाढ़ी छल नकली आ तइसँ ओ नोचा गेल। आ ओ ढोंगी मौका पाबि भागि गेल। तखन गोनू झा सेहो अपन मोछ-दाढ़ी हटा कऽ अपन रूपमे आबि गेला। राजा हुनकर चतुराइक सम्मान कएलन्हि।
आब ओ खिस्सा... भगैतक दुलरा दयाल मलाहक। ओही गोनू झाक गामक।
आब सुनू असली खिस्सा....
दुखहरन सहनीक बेटा। बच्चेमे ओकर बियाह बखरीक बहुरा गोढ़िनक बेटी धनियाँ मनौतीसँ भेलै। मुदा किछु दिन भेलै जे सभ बरियातीकेँ कन्यागत जहलमे बन्न कऽ देलक आ दुखहरन अपन बेटाकेँ लऽ कऽ पड़ा कऽ गाम आबि गेला। दुलरा दयाल नाच-गानामे पारंगत छल से लोक ओकरा नटुआ दयाल सेहो कहै छलै। पैघ भेलापर ओ बाबूसँ पुछलक जे ओकर गौना अखन धरि किए नै भेल छै। जखन ओकरा सभ किछु पता लगलै तँ ओ बिदा भऽ गेल बखरी। आ बखरीक सिमानपर इनारपर भेँट भऽ जाइ छै ओकरा अपन कनियाँसँ। विघ्न बाधाक बाद ओ आनि लैए अपन कनियाँकेँ।

मूसहर बिचकुन सदाय। तकरे पोखरिक सटल गड़खै सभ, थलथल करैत दलदल भूमि सेहो। ओइमे बिसाँढ़ कानि-कानि कऽ मूसहर सभ खाइ छथि। अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सूखा

जाइत राखना ठकही याखनि मूदा नै सुखाइत।

गुमिहान, नाधामाहुन नाय। काइन, दूखन महण। सानान, अशोक Oकुना। गली नामवड़ सान, वौकू सान आ कानी सान।

गामक आमक गाछी सए, कणक टा। वठका कलम। खड़ानिक ननगछली। रानहा कागक कलम। याखनिक महान सएयन गाछी। रुकल आमक आँठीसँ निकलल यियहीसँ गाछ आ आमक प्रकान वनवेम ओ गौआ वड़ माहिना। वम्वे, ठमा वम्वे, सारजा (सावजा वम्वे), नाजना वम्वे, नढ़ना वम्वे। वम्वे आम ओग गनहुक। वनमसिया (वानहा मास), कलमी रुदैया, वथूआ (रुदैया)। नाइन हाइत खुव मीOI कनिअम्मा दखैया आ खाइयाम दव। धूमनाहा यैघ हाइत मूदा अछि ओ सठही। नाहनियाँ आम सहा अछि सठही, वनसाइगम रानम जाइ छै, मिथिलाम सए आमसँ यहिन याकै छै। वम्वे आँठी रुक दियो टियिया वनि जायना। कलमी रुकलाहा आँठीसँ नै वनैत, डाकना वनाडाल जाइत। कलमीम गुड़ा हाइत, ओ गनिष्ठ हाइत; सनहीम नस हाइत आ ओ सुयाद्य हाइत, कन अम्मा सहा हाइत। गही कानधसँ सनहीक अम्मट वनैत। वनियागीकँ अगना समणम वम्वे आ यछणा समणम सयना दल जाइ छै, ओ दूनू आम सएसँ नीक मानल जाइत। कलकणियाक अचान आ आमिल वनैत डाना आना आमक वनैत। विन कासा वला आमक कूचा अचान—कसौनी- आ कासावला आमक हाना अचान वनैत। कावी आ यनाठसँ अन्हिम कालम लाक अघा जाइत मूदा

आमसँ नै। सए आमक सए गनरुक स्वाद।

खढ़ानिम सहा खग नहि। मूदा एक गोट ज नवगछुली लगेलहुँ, गऽऽसँ छाह एन दासन खाक धानक खी दवि गेल। स उाहा कन चौक-चौनाहायन अनट-वनट वजैग आमक गाछी लगा दलहुँ।

एक टा जमवानी सहा अछि। नमरुन-नमगन गाछ सए, जाम सए आ यगनगन जामनी। आ छाटका-छाटका गुलजामून।

यीयनक गाछ सए तिरुवानक स्थानसँ लऽ कऽ स्कूलक प्रांगण धनि एन्हऽ-उान्हऽ यसनल अछि। यीयन गाछक जति एन्हऽ आ शिना सए दहादिस। नागरुनी, याकतिक गाछ, वलक गाछ, गौनक गाछ सहा ०ाम-०ीम अछि।

वाह्र सएक कागम वानसुयानीक गाछ, साहुन दागमनिक शाँस, वँसविट्टी आ मानिग नास रूल आ काँट सए। लजविज्जी गँ सए कलममा। चाकन आमक गाछयन नखवान सए उाछैन कऽ सुगि नहि छथि। ननक गाछ मूदा एक्काटा, यीवक कागम मीआँटाली लगा। दूब्वि कना दखेम खुब सून्नन हाऽऽन, गोनिया कना खुब मी०, वागनन कना येघ आ माट मूदा उाग स्वादिष्ट नै। मह्रीस जँ समेयन याल नै खाऽऽन गऽऽ सिथगिम गनमाऽऽ लल मनागोरी याग खिउील जाऽऽन। खनही टाट-रुनक आदिम उययाग हाऽऽन, यानक लफी खनहीययन लगेन आ एकन उययाग वनेवम दखल जाऽऽन।

ग८ नानिकलम मनूखक जाइतसँ बसी गाछ-वृक्ष, फल, अन्न आ तरकारीक प्रकार।

खुब तरकारी होइत छै- सींगली, सीम, रुचा, मूनिगा, अनउनवा, उाल, कद्दू, चटैल, कौना, कमलककनी, खजवा कटहन, खम्हारू, वउहन, यनाउ। घना, एकन फूलक तनूआ होइत छै। साग आना प्रकानक- गेन्हारी उज्जन आ लाल, अकटा, मिसिआ, नाजा नानी। मूनिगा(सहजन)क, साग। वनयलाकी।

चौरम नीमक कलसल यदा रुचाक संग प्रयाग होइत।

दालिम कूनथी, मसूरी, खनही, नाहनि, नहनिया, अकटा, मिसिया, रुटयूननि, नामसूमनी, सीम।

नाहनिक दालि धनिक खाइत आ नहनिआ दालि गनीब खाइत।

उवना, दसनिया, मलिदा, वलान, ई सर धानक किसिम याइनम उवला नहलायन खखनी नै होइत छै।

वानी धानक लदी होइत छै, ई लदी यानिक ऊयनम लागै छै आ सर गिनहसँ गाछ वहनाइ छै, एक कट्ठाम दसटा गाछ मूश्किलसँ नहै छै आ उाहीसँ खा रनि जाइ छै।

मानिग प्रकानक धान चौनीम होइत, नाथै कालम गँ यानि नै नहै छै मूदा वादम रनि १०हून, रनि जांघ यानि गँ चौनीम नहिग छै। कनक मारका वाउन होइत छै, सउह ना। दम्मा सूगन्धित होइत, ग८ नानिकलक वायी जमीन मान चौनीम उयजैवला धानम सम्भाखनि, यउवायाँखि, तम्भा, कसहम, उमहा। मध्यम खाम उयजैवला धानम

सानिआ, धनिमाली। उपजाउ खेतक धान अछि जसवा, कमलकाठी, ओना कम्मा पानिमे नीक धानक खेती भऽ जाइत। धान अगहनमे तैयार होइत। धान बिहनिया-बिहनिया कऽ कमाइत सब। बिहनि लेल बीआ जोगा कऽ राखैत। बिना उपराम बीआ छीटि कऽ बिहनि तैयार होइत। अदरा पावनि दिनसँ रोपनी शुरु होइत।

दही, बसिया भात, गुड़-चिन्नी, काजर सहिता सानि कऽ कंचू पातपर तीन वा पाँच कुरी बना खेत सब दैत छथि। जँ ब्राह्मण किसान तीन ब्राह्मण अछि तँ किसान आ बनिहार बजैत, तीन गन, तीन पान; आ तीन टा कुरी बना खेत दैत। आ जँ ब्राह्मण किसान पाँच ब्राह्मण अछि तँ किसान आ बनिहार बजैत पाँच गन पाँच पान; आ पाँच टा कुरी बना खेत दैत। तखनि सब खेत बजैत, बिना उपासँ उपाति आनल बिहनिसँ धानक खेत बनिहार रोपब लगैत।

जेठहि बिअना गिरलौं अषाढ़हि जनमि गेल हे
साओन रोपनी कएलौं भादव बिट भेल हे
आसिन फूल भेल धान कातिक फल भेल हे
अगहन काटल धान दौनिया कराओल हे
दौनि कराए काठी ढानल कुटि-कुटि खाएब हे

अदहा विरुव बाकी नहि गेलायन लोक साँस लैत अछि।
एहेकँ बूनि दै छै; छिट्आ धानक जे खरीम गौँआ सर नियुक्त अछि।

एहि सहा कउक गनहक, लक्खी, जल्ली, मनहा, बच्चिया, नंगवा, गमहनी उजना, गमहनी कनिआ। ई सभ रादनम गेयान हाइछ। मिनचाइक निहनि, बिना७।
कनाक कनजान।
हलम लिच्ची, कना, कटहन, लताम, मडू, जिलबी, बूनियाँ, बेन, आँता, शनिष्का, सपाटू, ब७हन, जाम, शहतूत, अनान, नानियल, टाटनवा, वल, कदम सरक गाछ चानू दिस। कना सहा कउ गनहक मनिचमान, गौतिया मालराग, मूनकूटिया, दूधी, वंशीवट, अनूयान, दूधमूंगन, बगिसा, मालराग, सिंगापूनी, वाघनन, वनहनी, चिनिया, मालराग, कयूनिया।

कास, यटन, मोआक जंगल। खगना घास।

कनाउा दालि, सनिसा, गनी, नेंवी आ अन्धीक गल। गीले गाछ अरुनागम दखव, जे गाछक वनउी दवाम प्रयाग हाइछ आ वजनकनाइक जाननिम प्रयाग हाइछ। आमक बाँसीक घुन हाइछ। जमाइनक गाछ धाइन ढकानम काज अबैछ। मंगनेल गाउक दुध वढवैछ, जनीजाइक सहा। सूआ, जमइन- अजमइन, मंगनेल मसल्लाम प्रयाग हाइछ। माथी, मारलीसौंफ, धनी, पूदीना, लहसुन-

नसून, यियौज आ मथीक गाछ। कागजी आ जमीनी नवा। गौन।

चिड़ै जना कचवचिया, वंचन (ननवाद्न), टिटही (टिटहनी), गछखादही (कठखादही), चमगादन (चमगुदनी), मूँहदूसी (उल्लू), चिल्हनिया, लालसन, दिघौंच, दशी कौआ, कान कौआ (काग, वाम्हिल कौआ), खंजनिचिड़ैआ (शनद ऋतु), चकवा, चाहा—चहा, चिल्हानि, चूहचूहिया, उकहन, गिध्दिन, कंठम लाल-धानीवला सुग्गा, धनस, (धाविनियाँ चिड़ै, यडवा, यनिडुव्वी, वनमूर्गा, यहाडी मैना (मूँहयन लाल), यौडकी, हूड्ढी, वगडा, वदन (लाल नाम यूड्ढी), वाम, मैनी (कानीयन उज्ञान थय्या, लाल लाल), मूँहदूसा, ललमूनियाँ, नीलकंठ, हनियल (मानि कऽ खाइल जाइ छै)। हगिंगा ज आँखिम मानैड (आँखिहाडा), गिगली (दु याँखिवला नंग विनंगक, नांगनि नहिग), टूकिली (चानि याँखिवला, नांगनि यूकू)। हनियन नंगक हनूमान जीक घाडा, डकटा आन हाइड अंग्रेजिया मशीन जकाँ, लगैड डकन दखि कऽ अंग्रेज सर ज.सी.वी. मशीन वनलक।

खढ़िया, हनिन, नीलगाय, हनकाछू, हनाशंख, विज्ञी, खिखीन, शाही सहा खुव।

घांघहाक मांसक गीमन खाइल जाइड, सूनका वना सूनकला जाइड आ काना वर्तनम नाखि याँच-साग घंटा वाद छूटलाहा यानिकँ ममनखाम धिया-यूताकँ यिडौल जाइड आ सूलवाइम सहा हइदा कनैड, यट ठढा कनैड।

माछो किसिम-किसिमक रेखा, टेंगरा, कौआ, गरइ, गरचुन्नी, गैंचा, बंगा, सिंघी, भुन्ना, रोह। सउरा भुन्ना रोहक दुन्ना।

विचार, गढ़ नारिकलम होइवला निरर्थक घासक प्रजाति, नाम-नाम धनगर। याहिनिक कारौन। जटाधारी रूलक गाछ। हरदिक गाछ। अगिया ग्रहक गाछ, नजरि-गुजरि नै लगबा लेल एकरा जाड़िकँ बाँहियर बाह्नि देल जाइ छै।

माटी कएक तरहक- मरुआ, चाउर, खेड़ी, जउ, बदाम, खेसारी, काउन, चीन, मक्की, बाजरा, जनेर, अल्हुआ, अकटा, मिसिया, मसूरी, रुकुआ, खनही, गुना, सिंघाड़, मखान, रेंट।

एकाध कठाम गहुमक खेती सेहो लोक करै छथि आ तकर सोहारी सेहो बनैए।
एक्का बौस्फ कए-कए बन आबि जाइ छै..
टाकियौ नै.. ई गामक लोक सुनम बाजैए.. एक्का चीज कए बन अबै छै मुदा कामक नला चीज आबि जाइ छै डाइ सुनम।

खल सर सेहो कए तरहक- संस्कृतक अटकन-मटकन आ कबड्डी। चंया-चंया करैलक रूनसँ खलाएल जाइए, कनिया-पुमानि खेलै छी। ढील यटायट माने छी, समाचकवा खेलै छी चुगला धापी हाउँ छी, चुगला काठी छाउन ऐया काठी चाउन, चुगला नै गाहन इली कान

वानि .... सँ खसलौ निष्ठीकेँ यानि। चल मननी खलाऽऽल। वंसी खलाऽऽल चलु। अम्मन ठू अम्मन ठू, चौग कवडी आवऽ द। रागनागलीलाक हथियासून आ उङीउङी, लालछटी.. जकर नाम लाल छटी सजह चलि आवय ओकर मानि यतय। सिमिया, जट-जटीन, मननी, हूनियाहा-हूनियाही, हुना-हुनी, छगिया, काऽऽली चोत, चान यूलिस, हुक्का-लाली, कनसूखी, सिंगी-यगाही, सिमिनकाना.. सिझिन काना सिझिन काना.. कान काना, गदहा-गुतकन, चौसा, सागघनिया, तलयधा, हाथी-चूक्का, गुटी कवडी, घात कवडी, झुआ, कौटी-कौटी, किग-किग, तनी कूद, घनवा-दूअनवा, खा-खा (ऽऽी जुक्का खा-खा छी वर्ष्षक नै), चानानूक्की, गुल्ली-डंटा, यिंगला, ल0मान, लुक्का-छिय्यी, साना-तूवी, कूश्नी, यचीसी, घास-घास, यचगोटवा, यिड्डा, घाघानानी, आँखि मिचौनी, कनियाँ-यूगना, मनुआ-मनुउनी, मनुआ हनी, वननहान, मालदनी, हूटवॉल, सगनंज, गास, अन्हाउनी, यि0याओक, गोवनकन्ना, मीलम मात, साहुगोटिया, मिलहनि, छुली-छुली, ढंगायानी, चिक्का कव्वटी, अकना-मकना, गोली-गोली। आ नै छौत नवढकना, नाजा वटीक विया हगै जकटा कटहन मांगे छी, अखन गँ नायव कलिउ हँ... अखन गँ खिङा छै..
वाय न...

१८-नानिकलक चटनी-सन्ना सहा गनह गनहक। काँच लगाम, अनिकाँच, डाल, लहसून, यिऊँज, शगनि, कदम, मथी, धनियाँ, यूदिना, गील, गिसी, अमादी, टमाटन, कूगनूम, धाग्रीम (धाग्री), आमक टूकला, सनसां, याम्पा दाना, चओल, यीनान, रगँटा, घना,

सूमनी, नामसूमनी, कनैला, अल्लू (सन्ना/ चाखा), यना७, कूनली (मधकूनमी), मूउ, सागक यचौना, कना (सन्ना), वनरुन, कचौना, अमनाना, अमना, आदी (आद), गुऽऽग, आमक माजन (वौन), मूनग। रुल, घानजौ७ (घानक छाँछ), सनिरुा, खम्हनुआ, यंची, ऊौनवी, नानियल, नून-मनचाऽऽ-कसौनी मिला कऽ, माछ (सन्ना), काँकान (सन्ना), उाका (सन्ना), माछी (कटरुनक), याना, कटरुनक रुनक मक्का।

गलम सनसा (कनु गल), गानी, सूर्यमूखी, नैंची, गान, अण्डी, कूशुम, मूउ, गील, सूआवीन, नानियल, चिनिया वदाम, मह्, कटैया, गीसी।

खा यथान सद्दा कऽऽजक गनरुका। दूनु धानक वीचक खाकँ सरट उाऽऽ यानवला खा करै जाऽऽ छथि। वलुआही खा आ याँकवला सद्दा। कमला आनै छथि वालु आ वलान आनै छथि याँक। यनान, गानवुज, रूऽऽट आ अल्हूआक खगी, सरटसँ सरू खा ज किनवाक हूअत गँ तगऽ आउ। मूदा वाढिक वाद खाक आनिक मुँरु-कान वदलल रटग। काना साल वाढिक वाद खाक नकवा घरि जाय गँ अनाति नै ०१८ कऽ लव। अगिला वाढिम रऽ सकैत कमला मरुनानी उाकन नकवा वढा दैथि। खगी उाना गँ धानाक रुाऽऽ छै, मूदा स सूगानयन छै। काना वर्ख गीन वन नायलायन वन-वन वाढिम दरुा जायग गँ काना साल कमला मरुनानी खगम गगक याँक रनि दगी ज जँ दु मानक कठा मानम साचव गँ गरुसँ वगी उयजग।

कनक मरुग खा किनवाक दृश्य गँ मा७वला आ गछानिक गाछ लगवला ना तृष्मनिगन वला खा कीनू। ओगऽ लाक खीसँ वंशी वसावास लल जमीन कीनि नहल छथि।

उकरो पाखनिवला खाकँ वढमागन करैल जाइग अछि। यहिन ब्रह्माण्ड नुयम किनका मंगनीम नाजा ब्लाना एटल हाइि। यहिन सूनै छिउ ज नीक खी हाइग नहि मुदा आइ काल्हि यानि एनल नहि छै। इलाकाम ज छिटूआ धानक खी हाइउ स अही वाधमा।

महीसक मनलायन कल्लानाहटक स्नन सहो मास दु मासयन सूनवाम आउग। आ जादुटाना, ककना दनवज्ञायन युजल हूल नागिम हकल, सहो सालम एकाध मासम दखऽम अवैउ। आव लाका मुदा वूझि गेल अछि ज इी काना छौ७ाक किनदानी अछि।

कृषि-मत्स्य-पशुपालन आधानिग महिसवान ब्राह्मण बहुल ई गामक चानुकाग यढल लिखल, गाक नै यढल लिखल आ मुँहदुब्बन गाम सए अछि, मुदा एकटा चानक गाम सहो अछि उगऽ। खाँटी चान, ब्रह्म, बौद्ध-जागक। मुदा गढ नानिकलम चानि कऽ लग स साधांश नै छै। मुदा ई गामम एकटा गाछी अछि, चन्ना गाछी। दिनाम अह्वान नहि छै, हूग, नाकश, लाथ सएटा नागिम कवडी खलाइ छै, स्यष्ट जांघयन टाइल मानैक अवाज नागिम स७क धनि जाइ छै, कागक लाक अकानन छै उाइ अवाजकँ, मुदा एनहान-गेनहानकँ उा सए उकठो नै कनै छै, अयन खलाइम मग्न नहि

छौ। धून लाथकँ कना कवडी खलायल हो यौ, ओ गाँ एट-एट खसौ। वनू दखिग हो, गयम ओगक रीगन कि७ य॰॰सौ छी? वान सए सह्य अही वन्ना गाछीम, जगऽ दिनाम जा॰॰म लाक तना॰॰ग अछि, नागिम वानिक समान वँटनाना कनैत। स कना वूमलिउ? वावू ओ गामक महिसवान व्राह्मण सए अयन अछि नाकश। ओ सए दिनम वन्ना गाछी जा॰॰ओ, किछु वानिक समान अह्वानम वान सए वूग छूटि जा॰॰ छौ, स नाकि कऽ आनैत। ओक वन गाँ काना कूटमक समान वानि एलौ आ ओ॰ऽ एटलौ, ककन कूटम आ कान समान स नै युछू। सूनै छिओ ज ओकटा महिसवान व्राह्मणक वावा जखन वव्वा छला नखन गाँ वानिक समान नाकै लल गेल छला आ ओ॰ऽ छअ टा वानक शन एटलन्हि, वँटनानाम सगडा एल हो आ सए अयना-अयनीम मानि-कारि कऽ खाम एऽ गेल। सएटा वानिक समान वानू दिस छिडिआयल, सएटा समान हुनका य॰॰७ लागि गेलन्हि। गही नाकिम गीन खाढीसँ ॰॰ी सए वन्ना गाछी जा नहल छथि, मूदा ओहन य॰॰७ हुन नै लागल छन्हि।

आन गामम सए गनहक वान- सात्विक, आवानक, निवानक, प्रवानक।

यतासक वान सएक हिस्मा नै छन्हि ज ग८ नानिकलम काना जागिक घनम वानि कऽ लथि। ओ गामम जकन वियाह एऽ जा॰॰ओ ओकन सएटा हसादी जमीनक नियटान एऽ जा॰॰ छौ। ओ गामम कूटमौगी एन लाक समंगन एऽ जा॰॰त। ओगऽ सँ हसनी दुन-दुन धनि

जाइत। कूट्रमक जमीनक मगठाक नियटानासँ लऽ कऽ आन-आन काल हसनी वहनाइत। ई जमीन ओ गामम हजान नूयेय कहा अछि, नओह जमीन यडासक वननाहा गामम एक सए नूयेय कहा। ऊँचगर जमीन गामम सम्फ अछि कानध वर्खाक यानिसँ उछन जमीनक यटौनी नै हऽ सकैत। वननाहा गामम ऊँचगर जमीन, उयनानि खाक धान जसवा, कमलकाठी, दुधनाज, भालसनी, मंसूनी, भाला मंसूनी, कांऊीमंसूनी; आ मर्के, कूनथी, नाहनि, मड़ूआ, कादा, खड़ी आ सनिसा उयजावैत इी वननाहा सभ।

वननाहा.. वूमलहुँ नै, उइ गामक गाछीम वानन सभ भनल छै आ लाका सभ वानन सन यीअन कयीभ!

वाड़ी मुदा गढ़ नानिकलक सभ घनक याछाँ भटव कनग, भडा, नवा, साग, मूनइ, इी सभ वाड़ीम भरि जाइत, आ आन आन गनहक जड़ी वूटी सभ सहा।

धनि दुर्गायुजा ओ गामम नै शुनू भला। मुँहदूवना गामम आ वननाहा गामम सहा शुनू भऽ गेल, मुदा एफऽ! चाहवै गँ किए नै हएग? नामलीला एक मास कलौं हम सभ आकि नै। धू, वाह्न लगहीसँ घिना गेल। भन नै हाइत दुर्गा युजा। एक गँ धी वटीकँ लियाउन कनवाक ममला नहग आ ई मलयँचसँ नहे जाइ छी सहा यार्टी-यालिटिक्स खगम कऽ दग।

खनहीसँ आब माङ्गल एक निर्णासम छौलि काका बाना घास रहि लैए ओ गामक ब्राह्मण। ओ गामक ब्राह्मण महीसक सभटा नीक प्रजाति रखने अछि। ओ गामक याना सभकेँ ऊँ आना गामम छूअल जाय गँ हँसती बहुना जाङ्गए, अनजान-सुनजानम अनगौआ ओ गामक यानायन लाठी उसाहैक हिम्मत करैए।

१८ रातिकलम कलाकार सभक कमी नै। खनदक वादक जंगल राम, कॉरनेट वादक जीवन राम, रंगेन गवैया- रूपलाल यादव, खिसक्कान- छगाहन यादव आ टहल मुखिया। नाच कम्पनी खुशीलाल साहु खालन छथि, मैनेजर छथिन हूसन यादव। सिमनाहा सपनी, सिमनाहा सूर्योल दुनू ठामक नाच कम्पनीसँ नीक। अल्हा रूदल, लठिया नानी- सती लठिया, शीत बसंत, गुगली घटमा, राजा कुँवर वृजराज, धूलक हूल, सुल्ताना डाकू, राजा हरिश्चन्द्र, राजा नल, राजा सलहेस, काँच नाग, आल्हन कानून, लाहा सिंह, माङ्गक कलजा, चूड़ी आ सिनूर, जंगल बादशाह, वंश उजाड़न, पिआ दर्शान (काशिनीश्वर पूर्व विद्यापतिक विदसिया), लानिक मनियार, वायक हत्या, दमाद बध, निशाद बध, गोपीचन, शंकर गोसिला/ उगिमचन/ सुन्दर वनक सुन्दर हूल, विजय सिंह, पिता हत्या, जंगली बादशाह, रास लीला, रूपा-सूपा, कवीर लीला, कलयुग प्रेम आ आन रंग रास गाथा। नागार्ची (नढ़ना/ तिग्री बजबैवला) गुरुदेव नाम, खोजनी वादक सुकदेव साह। घूनामूना (सारंगी) बजबैवला खड्ग मल्लिक, मामागाम कमनैलक डाम-मल्लिक सभसँ काफ गुणा नीक घूनामूना बजबै छथि। मलिवाह (मालि बजौनिहार) अशर्फी

मण्डल। कठमालि/ नममालि/ करताल बजौनिहार छथि मण्डल। चौसठी नायक गुलाब यादव/ भारत मण्डल। घाठा नृत्य, मशान नृत्य करनिहार लाउड़नसँ महादेव बनियाँ, दसाँई ठाकुर, दुर्गीलाल ठाकुर, घूरन यदित। मृनमृना (मजिरा) वादक अर्जुन मण्डल। मालढ वादक रमजानी यादव, जलतरंग वादक मलरागी दास, कठतरंग वादक रुपलाल दास, मृदंग वादक छोटकनि दास, वीन वादक दुखरन यादव, तानपूरा गंगाय साहु, तनसा (तासा) हुनाहुनी आ दाहाम बजाउल जाइछ, कल्लन मल्लिक आ मो. आजम खाना। मालढ- बच्चा मण्डल। विपटा वनै छथि सीतानाम नाम। तिरनी सदैवला प्रायः रतिया सङ्ग होइछ, असला-खसला उघैछ, तिरनी सान मुखिया बजबै छथि आ भारत मण्डल तिरनी सदै छथि आ रतियाक काज सङ्ग करै छथि। तिरनीम छोट यादव स्वर निकलै छै। नढनाम भार अवाज निकलै छै, चार यउ छै गाँ वृस् नाच शुनु रल। गुमगुमियाँ (ग्रुमबाजा), बबाजीक धृथु (तुनही) उमी दास बजबै छथि। सिंगहनिया, धृधृबाजा बठी टा होइछ छै- थूक रुकऽ यउ छै बजलायन, तत दम लगै छै। वंजा। नृतक (रघुनाथ सदाय), नानी यात्र (अशोक सिंह)। पुरुष यात्र, अभिनय, गायक, नायक, ठकौता (ढालकिया)। □र्गन त्रृवी मुखिया, नाल सुनन चौपाल, कॉनसट हुसन नाम, नढना अर्गकी गोसाँई, ढालक हियालाल, मृदंग वादक- मठीलाल सदाय। अल्ला/ महनाई। जागिना, यनारी (प्रहारी) गौनिहार लहू दास। मननी- मो. आकुल। नाल वादक खड्डन मण्डल। त्रमसट, हनमुनिया गाँ वृसु गढ नानिकलक सरु लाक बजबैछ। ढंका/ ढाल/ तबला- चुनाई नाम। वीकु नाम सन उस्ता

हलीम किया नै बजबैत ।

रंगोप गवैया विचक्कन सदाय, नसुआनक रंगोप पार्टी हुनका लग किछु नै, ओ रंगोप गबै छथि आ संगम खञ्जनी सेहो बजबै छथि।

दीप गामक पटियावला, माथाक पटियाक कारीगरी किछु हुनका लोककेँ सिखबैत छथि।

साहबगंजवाली, बलाटवालीक अरिपन आ मिथिला चित्रकला, बलभद्रवाली आ बलाहीवालीक लोकगीत। सिलाइ कढ़ाइमे मछधीवाली। सनाइ-कटाना, माटिक हजार-हजार महादेव हुनका बचिया आ स्त्रीगण लेल एक हाथक खेल। बातीमे हँसाओल हजारक-हजार माटिक महादेव जेना नेना एर जायत। अंगना घर नीपल पोतल, कुरिया-पिसियासँ लऽ कऽ नायनी पटौनी कथुमे गेठ नानिकलक स्त्रीगण पाछाँ नै। सफाईनाक कथा हुअय वा मधुश्रावणीक, हुनका स्त्रीगण हुनका निसाँसमे सएह कथा करैत जाइ छथि आ जखन हुनका बेटी-धी बियाहि कऽ सासुर गाम जाइ छथि तँ ओहुना गाममे गुण पसारै छथि।

सुमिहानकेँ गेठ नानिकलक मरिसवाउ ब्राह्मण सभ पछिमा कहै छै। ओ सभ अपनाकेँ सुमिहान ब्राह्मण कहैत मुदा मरिसवाउ ब्राह्मण सभ ओकरा ब्राह्मण नै मानैत। छलै ओहो सभ ब्राह्मणे मुदा बौद्ध बनि गेल, सुमिक लालचमे। जेना जेना बौद्ध मठ लग सुमि छै गम्ह

भूमिहार भेटत, बिहार, तराइ नेपाल आ पूर्व उत्तर प्रदेशमे। मध्य प्रदेशमे साँची स्तूप छै मुदा ओतऽ बौद्ध मठ लग भूमि नै रहै तँ ओतऽ भूमिहार नै भेटत। बौद्ध सिद्ध महथपा त८ नारिकल कान रहथि। जन्मस्थान आ कर्मस्थान दुनू ईएह रहनि, सिद्ध रहथि, चारू दिस, तिब्बत धरि घुमि कऽ आयल रहथि। आ बौद्ध धर्म जखन खतम भेलै तँ बौद्ध बनल ब्राह्मण फेरसँ सनातन धर्ममे घूरल मुदा महिसवार ब्राह्मण सभ ओकरा ब्राह्मण नै मानै छै। महिसवार ब्राह्मण सभ पढ़ल लिखल भने नै हुअय, इतिहास-संस्कृतिक जानकारी तेना कऽ देत जे अहाँकेँ हिला देत। मुदा भूमिहारकेँ पछिमा किए कहै छै तइ बनमे ओव कहत जे पछिमसँ आयल हो।

मुदा पछिमा सभ अपनाकेँ पछिमा कहलासँ आहत होइत, अपनाकेँ ओ ओ गामक तीही कहैत। मुदा महिसवार ब्राह्मणक एकहर समुदाय अपनाकेँ ओ गामक तीही कहैत, आ ओकरा लग कारण सेहो छै, सभसँ बेसी जनसंख्या तीहीक रहै छै, से ओकर सभक छै। मुदा मिसनटोलीक भगिनमान सूर्यनारायण ठाकुर कहै छथि जे नै, पछिमाक संख्या बेसी कना रहौ, प्लेगमे पूरा टोल ओकर साफ भऽ गेलै, एकाध टा बचलै, मिसनटोलीया अदहा साफ भऽ गेलै आ तखन प्लेग खतम भऽ गेलै, से एकहर सभ बचि गेलै। तीही तँ पछिमा भऽ सकैत वा महिसवार ब्राह्मणक एकहर समुदाय सेहो। मुदा ई गाम कहाइत अछि महिसवार ब्राह्मणक गाम। एकटा टिकुलहाना टोल छै, सेहो महिसवार ब्राह्मणक, साँझमे टिकुलहाना सन ई सभ माँउ-माँउ करै छै तँ।

𑒄 𑒮𑒦 𑒕𑒟𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒏𑒯𑒥𑒻𑒏𑒰 𑒮𑒦।

𑒂 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑓑𑓘 𑒢𑒰𑒢𑒱𑒏𑒪, 𑒧𑒯𑒱𑒮𑒥𑒰𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒑𑒰𑒧।

वीहनि कथा खण्ड

(३९ टा वीहनि कथा)

निञ्जाक सनानी आ लुटिक धन

बस यंत्रवत भऽ गेल नहि स बानर बज नागिम दनु संगी घटनाक हार्तिङ्क यार्क बस हेलुयन उगनलौं।

“यूनाङ्गचक चलब? समाना किछु नै अछि खाली दु गोट छी आ दुटा हेलुवेग अछि।“— हमन संगी निञ्जावलासँ नहाना कलहि।

“स गँ ठीक मुदा उाङ्ग माहल्लाम ज किनाया दब स घूनी कालम उचक्का सभ छीन लग। “— निञ्जावला माटामाटी मना कऽ दलक जवासँ।

“धून, गकन चिन्हा छाउ, हमहीं सभ गँ छीनै छिउ, आ जखन हमहीं सभ जा नहल छी गँ क छीनग?”- संगीक नहाना आत्मनिश्वासम बदलि गेलहि।

आ निञ्जावला जयवाल गैयान भऽ गेल।

नकली नोट

बउ यूनान गेल। जखन एक हजारक रुपया हाथमे छलै मुदा असली कम नकली बेशी।

पटना एयरपोर्टपर उतरिते टैक्सीवला पचास लऽ लेलक समान उठा। गाड़ीमे लऽ देलक आ कहलक जे छअ सय टका किराया भेल मुदा पार्किङ्गक अस्सी रुपया अलगसँ देमऽ पड़त। हमरा लग रहए एक हजारिया नोट रहय, असली आकि नकली से नै जानि। से पुछलिऐ- खुदरा पार्किङ्गवला कऽ देत ने? ओ आत्मविश्वाससँ कहलक जे भऽ जायत।

गाड़ी रूकल, नोट पार्किङ्गवलाकेँ देलिऐ, ओ नोटकेँ उनटि-पुनटि कऽ

देखऽ लागल आ ओम्हन हम सर्द रहल जाऽऽ ज दासन नाट अछिय नै, ऊँ नकली वहान रहल गँ सूनै छिउ ऽऽी क्राऽऽम सहा छिउ। टैक्सीवला कमधग्री शुनू कलक।

"अमदीकँ नै विट्टे छँ, देखै नै छहीं कथीसँ ओलखिनहुँ, गाना नकली नाट दथून। "

आ यार्किङ्गवला आजिज रऽ कऽ खुदना गानऽ लागल आ हमन जानम जान आयल।

यानिवला गात

हमन यटनावला सङ्गीक यास्टिङ्ग मनसाघाट ब्लॉक कुशेश्वनस्थानम रहलै,

बाढ़िक इलाका ओ कहिया देखने नै। ओकरा बुझल छलै जे बर्खा-बुन्नीमे आनाजाहीमे दिक्कत होइ छै, सएह लोक।

हमर एकटा दोसर सङ्गीक मामागाम मरसघाटमे अछि, से एकरा चिट्ठी लिखबा कऽ हम ओकरा दऽ देलिऐ।

हमर सङ्गी काली-हगनी हेकै। ब्लॉकमे लोक सभ मामाजीक येंघ लोक हबाक गप कहि देलकै, जे हुनका दु-दु टा नाह छन्हि, एकटा घर-पनिसारक उपयोग लेल आ एकटा सर-कुटुमक दोस-महीमे लेल। आ उग्रानाक हगनी, जिलाँ दासन सूयोल कि सहनसा छै मुदा लगे छै।

सङ्गी पहुँचल मामाजी लग, आ उग्रानाक जवाक थांग धनबऽ लागल।

“अखन गँ बाढ़िया नै आयल छै, से जँ काना सनानी-घाटक नूट होइ जाइसँ माँ उग्रानाक दर्शन हऽ जाइगय?”

“अहाँ पटना हिसाब सोचि नहल छी, इम्हन उनटा छै, अखन नातपन पानि नै छै, मुदा नात टूटल राङ्गल छै, पाँच-छअ घण्टा बससँ लागि जायत। अखन नाह नै चलि सकैत। बाढ़ि आबऽ दियौ, नाहसँ बीस मिनटक रस्ता छै, बसीसँ बसी तीस मिनटक।”

जी सन

“यौ यादव जी सर गयघन अहाँ जी सन किए कहै छी?”

“जी सन। जीह 'जी सन' 'जी सन' □रिसम वजैत वजैत मावल गेल अछि। आव गँ वदा कहैत ज उठी ठ्ठी समान आनि दिअ गँ मूँहसँ निकलैत, 'जी सन'। “

दु टा कौड़ी

“ई सान जलनवा वउ मानैत, वढ्ला चाढ़ी ओ सानकँ खाली मानवा लल। “

“आव चानि आ छीना मयट्टीक कास लगलायन मानौ नै गँ की आनी उगानौ। दखढ़ीं उम्हन उदनाक शान, जलन साढ्व समाचान युछि नढ्ल छथिह्न, कि काना गनी-घट्टी गँ स्याढ़ सँ नै ढ्याई छौ। वावू, चानि आ छीना मयट्टीक कास नै, मतनक कास लागल छै उदना यन। “

अयन-अयन राग

हमर एकटा संगीक बेटा आ दोसर संगीक कनियाँ गप कऽ रहल छलै आ हम आर.के. लक्ष्मणक "कॉमन मैन" जकाँ बौक भेल सुनि रहल छलौं। अहाँकेँ बुझल हएत जे दुनू संगी बी.जे.पी. छला, पहिल जिनकर बेटा पात्र छथि से उग्र प्रदर्शन पसिन्न करैत रहथि आ दोसर जिनकर कनियाँ पात्र छथि से विद्वान पसिन्न करैत। गप पुरान छै, तखनका गप छिऐ जखन विद्वान सम्मानित छल आ उग्र प्रदर्शन उपेक्षित। उग्र प्रदर्शन □हिंसकेँ पसिन्न पासिंगमे पहाड़पर पठाओल जाइत छलै जे साग आब उपेक्षितमे छै; विद्वान बाढ़ि वा सुखाड़क पासिंग सदिखन ग्रामे पासिंग मानल जाइत रहल छै।

<u>मित्रक पुत्र</u>- ओइ समय जनकल्याण सिंहक सांप्रदायिक सरकार रहै, हमर पिताकेँ पसिन्न पासिंग कऽ देलकन्हि टिहरी पहाड़पर, सुक्खा-सुक्खीमे। मुदा बाबू, रामधुन पाइ लिखल छलै, आबि गेलै रुकल्प, पाइय-पाइ भऽ गेलै।

<u>मित्रक पत्नी</u>- सएह देखू, हिनकर पासिंग कऽ देलकन्हि कुरुक्षेत्र स्थान, सुनै छलिऐ उमल रहै छै। मुदा ओझी जडियासँ गेलखिनहुँ न सुखाड़ भेलै न बाढ़ि। अपन-अपन भाग्य।

प्रवचन

दिल्लीमे एकटा प्रवचनमे गोनन झा प्रसिद्ध स्वामीजी बाजि रहल रहथि-

“हम बहुत दिनक बाद प्रवचन कऽ रहल छी, कारण एम्हर हम पटना गेल नहि। ओतऽ एकटा मोहल्ला छै राजेन्द्र नगर। ओतऽ देशक पहिल राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसादक प्रशंसक लोकनि निवास करै छथि। ओतऽ एकटा प्रवचन मे ई प्रश्न उठल छल जे......।”

गोनन झाकेँ पछाति हम पुछलियन्हि- “गोनन झा, हम पटना नगरमे बीस बर्ख रहलौं मुदा ई तँ हमरा नै बूझल छल जे ओतुक्का राजेन्द्र नगरमे राजेन्द्र प्रसादक प्रशंसक लोकनि निवास करै छथि। आ अहाँ तँ धान कटाबैल गाम गेल नहि तखन ई पटनावला प्रवचन प्रसंग कहिया हलै...?!”

“हौ बूझहक, ई सभ नै कहबै तँ ई सार पंजाबी सभ कि एकोटा पाइ देत।”

गछल गप

“मोहन भाइ, बताउ कहै छला जे अहाँ गछलाहा काज बौस्
नै देलियन्हि, हम घटक नहि आब ओ जखन देखू हमरा हुथैत रहै छथि।” घटक महराज मोहन भाइकेँ उपराग दैत बजला।
“यौ, ओझा धुनमे हम की-की गछलियन्हि आ की-की ने गछलियन्हि से कि हमरा मोन अछि। ओ कहैत गेला आ हम हँ-हँ करैत गेलौं।”

रूना वाल

गूगल सर्च करू आ अगिला जातिक ई शॉर्ट फॉर्मक पूर्ण विवरण भेट जायत। विकछा कऽ बूझबाक इच्छा मेँ "गुना वाल जाति" सर्च करू।

बाकि संगी छला। मुदा उत्तम ओकरा ई गुना वालसँ बाहनक छलथि। ओ बाजि रहल रहथि-

-पहिलमे शरीर, तकरबाद अकलमन्द आ बादिमे ईमानदार मुश्किलसँ भेटै छै।

-एहनक विषयमे नै कहलँ, आ अपन जातिक विषयक रचना सेहो मेँ करा।

-एहनक विषयमे पुराण-महाकाव्य सभ लिखल जा रहल छै। आ हमर जाति पाछू छल मेँ रचना नै बनल छल। आब कनी-मनी आगू बढ़ल अछि, आब बनत। आ जखन बनत पहिल-पहिल गान सुनबै।

आत्म-गौनव

संगी यल्ला लाल्टर क्रॉस कलक आ विब्रम नत लाल्टर आवि गेलै। संगी सार्कना निरागक वउका अधिकानी, मूदा सियाही गाउी आगाँ वगलम ०।८ कनवा ललकै। हलनदान आयल गँ संगी उाकना याँव सयक नाट दखलकै आ छाति दल्ल कहलकै। हलनदान वाजल- "गामक असगन सनकानी कर्मचानी छी हम, वहूा लूजा अछि हमन गामम। ली याल नाखू, छाति नहल छी अहाँकँ। आ जखन अहाँ आगाँ वढलौं गँ "यला लाल्टर" छल गँ छाति नहल छी, नत लाल्टरम आगू वढल नहिौं गँ छाउवा नै कनिौं।"
हलनदानक उाल आत्म-गौनवक खिस्सा हमन संगी सूनवैत नै थाकैत अछि खास कs उागs जागs यैघ यदाधिकानी "प्रसन"म कर्त्व्य-यालन नै कs सकवाक कन्ना-खिज्झी कनैत नहैत छथि।

छाह

-अपन ओगक टाक हाटा किए वनवलौं?
हम संगीक गयक काना उप्पन नै दै छी आ आगाँ हमक दाकानयन वढि जाइ छी।
-अपन हाटाम हम किए लगवा नहल छी?
हम संगीक गयक हन काना उप्पन नै दै छी आ आगाँ दासन दाकानयन वढि जाइ छी।

-ई क्रमक साँझक माला दिअ।

-आ आब बूझलौं, स्वर्गीय पिताक स्मारक छी।

नारन कूलन

𑒮𑒩𑒠𑒰𑒩 𑒑𑒳𑒩𑒧𑒲𑒞 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒂𑒢 𑒥𑒖𑒰𑒩, 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒢𑒫 𑒫𑒰𑒙𑒩 𑒤𑒱𑒪𑓂𑒙𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱, 𑒮𑒰𑒞 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒠𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒍 𑒏𑒯𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒖𑒹 𑒑𑓀𑒑𑒰𑒢𑒑𑒩𑒧 𑒋𑒏𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒬𑒰𑒞𑒣𑒩, 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒋𑒧𑓂𑒯𑒩-𑒍𑒧𑓂𑒯𑒩 𑒖𑒰𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒕𑒻। 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒱𑒌।

𑒔𑒪𑒳 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒮𑒨 𑒏𑒧 𑒠𑓄 𑒠𑒱𑒁। 𑒯𑒰𑒃𑒞-𑒯𑒫𑒰𑒃𑒞 𑒞𑒲𑒢 𑒯𑒖𑒰𑒩 𑒙𑒰𑒏𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒢𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱। 𑒒𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯।

𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒐𑒢 𑒋𑒏 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒒𑒴𑒧𑒱 𑒏𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒨 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢𑓂𑒯 𑒖𑒹 𑒮𑒥 𑒠𑒰𑒩𑒴 𑒣𑒱𑒥𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒮𑒥 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒻𑒋 𑒂 𑒣𑓂𑒪𑒰𑒮𑓂𑒙𑒱𑒏𑒏 𑒑𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒎 𑒩𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒃𑒋। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒒𑒩𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒪𑒑𑒥𑒻 𑒕𑒪𑒾𑓀 𑒂𑒥 𑒑𑒹𑒙𑒏 𑒥𑒰𑒯𑒩𑒼 𑒪𑒑𑒥𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒻𑒋।

गाँ अखन ओाक येघ नै रहल छैँ वाउ

आ˜˜.यी.ओल. क्रिकट लीगक ग्रानस्न रहल नरुय, यरिल मैव दिल्ली उयनउनिल आ वन्नै सुयनकिंश्नक वीचम। दिल्लीम मैव नरै। रुमना दुटा यास रटल नरुय, स ओकाटा □रुिसक सरुकर्मी संगे मैव दखेल (गल नरी। सूनजाक कनगन ˜˜न्दजाम नरै, सियारी-रुनलयान सर सारा ञ्रसम गैनाग।

ओकाटा नाजस्थानक आदिनासी ग्र्य छल, छीटवला नळ-विनळक चूउीदान (धागी कूर्गी, माथयन मूनOा, कानम वाली, नाजशारी अह्याजम।

मैवसँ वश्री वगलम वैसल ओकाटा येघु-शर्ट वला दर्शकक ननिळ-कमध्प्री, ज स्तियमक वारुनम यधुनसँ अयन गाल गिनळासँ नळा कs आयल नरुय, मान लगा नरुल छल। गरुन जाकन वगय-वानी छलै, गरुन शनीनक काटा। मरू-माटा। जाकन गययन सर रुँसैा छल मूदा जाकन मुँरुयन वओरु कमध्प्री-कनिरान सन निनकिक रान।

वन्नै सुयनकिंश्नक सूनश नैना, येघ खिलाउी, वाउध्प्रीयन ऊग्रनऊग्न

लग भेला। ओ 'मैना रानी' 'मैना रानी' कहि कऽ चिकरय लागल, मुदा सुनलक मैना कथीले घूमि कऽ देखबो करितै। सोझा प्रसन्न मैनाक हवलदार ओकरा खिलाफ सङ्कँ छूट नै करबा लेल कहलकै। ओहिना ओ भावनात्मक भऽ गेल।

“हवलदार साहेब, ई हमर बच्चाक संगी अछि, सभ मुजफ्फरपुरसँ बाहर ओकरापर बाहर पीबी, सभ-सभ गुल्ली डण्टा खेलाइ आ आइ ई एहि ठाम पैघ लोक भऽ गेल ते घूमि कऽ देखियो नै रहल अछि।“- हवलदारकेँ हँसी लागि गेलै।

अगिला दिनसँ एकटा नव खिलाड़ी निष्ठुर नामक बाउण्ड्रीपर ठाढ़ भेला। आब ओ दर्शक अपन मुड़ेर हटा आबि गेल आ 'निष्ठुर' 'निष्ठुर' शोर करऽ लागल, मुदा निष्ठुर ओकरा दिस घूमि कऽ नै देखलक।

“हाँ अखन एहि पैघ खिलाड़ी नै रहलहुँ बाउ।“- ओ बाजल आ ओकरा छाती सटा पटा पकड़ि कऽ हँसैत रहल।

एमबियन्स मॉल कॉम्प्लेक्सक मिस्त्रीक खिस्सा

“सर, ई हमर गौआँ अछि, बड्ड नीक बिजली मिस्त्री। आइ.टी.आइ. कयने अछि मुदा कतौ टिकिये नै पबैए। ककरो कहि कऽ एकरा एतै नोकरी लगबा दियौ।“

“पहिने कतऽ नोकरी करै छलौं, किए छुटा देलक?”

“ओहि गुनुग्रामक ओमवियन्स मॉलक मिस्त्री छलौं। लीला हाटल आ आन बहुत नास प्रायटी उगs ओमवियन्सक छै, ओको कॅम्पसमा। वसमन्थम यानि रानि गेल नहि, उहि काना विजली-कनक्शनक मनम्मागिम गानकँ मूँहसँ छीलि-छीलि कs, जाति कs, यानिम ०१८-०१८ ठीक कs दलिओ, मूदा किया मैनजनकँ शिकाहूग कs दलकै ज हूी गँ यानिम ०१८ रs कs गान ठीक कनैओ, कनथु लागि कs मनि जौ गँ गुँ हँसि जमा। स उा निकालि दलक। उाकना हम कहवा कलिओ ज जाव कनथुक यनियथ युना नै हौ कनथु कना लगौ, अर्थिछ वला गय वूसलिओ। मूदा उा कहलक ज वैस्मानिक आधानयन गँ अहाँ ठीक छी मूदा किछु रs जायग गँ हमन गय क सूनग? लाक गँ कहग ज सहटा वूमिगा-गमिगा हम अहाँकँ मनs दलौं। “

“वउ नीक विजली-मिस्त्री अछि हूी सन, मूदा जी.क. कमजान छै। हूथुनयुम ओक ०१म यूछि दलकै ज मन०सँ दिल्ली कहि कालम विजली ओहि। हूी सावम यति गेल, कहलकै ज वसकँ २-३ घण्टा लागे छै गँ विजलीकँ किछु कम नाखि लिअ, मान ओक-उ८ घण्टाम आवि जहि। कहिया काना दुर्घटना नै रल छै ओकनासँ सन मिस्त्रीक काजम, मूदा ओकना ओना वैस्मानिक आधानयन काज कनैग दखि आ जी.क. कमजान नहुलासँ लाक घवउा जाहूओ। “

मिरहन टाँग आख्यान

“सर भऽ सकैत अछि ई चोर हाड़, मिरहन टाँगकेँ बजबै छी।“
हवलदार मिरहन टाँगकेँ लऽ कऽ आयल। ओकरा सुँघि कऽ चोर पकड़बा लेल प्रशिक्षित कएल गेल छै।
अखनि देखी बैगेजकेँ ओ सुँघऽ लागल आ लागल जेना बैगकेँ ओ फाड़ि देत। लागल जेना चोरक खयक गन्धनी पकड़ायल अछि। जाबे कुकुरकेँ रोकी ताबे ओ बैग फाड़ि देलक।
आ देखी की, चोरक बदला ओ बैग फाड़ि कऽ मौस निकालि लेलक आ खाय लागल।
“सर बर्बाद भऽ गेल छै। कुकुर लेल ई मौसक पाछू अबै छै सदा खा जाइ छै, देखियौ बचाना कम सूखल छल।“-हवलदार बजैत अछि।

यातायात नियम

भाग-०

पटनामे रही, पिताक कहि रहल छला जे दिल्लीमे एकटा कनाट प्लेस छै, ओऽ बहुत आउटर सर्किल पर रेडलाइटक सिस्टम छै जे जँ अहाँ चालीस किलोमीटर प्रतिघण्टाक गतिसँ गाड़ी चलाबी तँ कखनो रेडलाइट भेटब नै करत, ग्रीन-ग्रीन भेटत। आ इहो जे लूटयन्स जोनमे बहुत गोलचक्करक सिस्टम छै जे कहियो रेडलाइट लगबाक खगता नै भेलै। दिल्ली ट्रांसफर भेलाक बाद हम प्रसन्न रही जे हम तँ चालीस किलोमीटर प्रति घण्टाक गतिसँ चलबै छी से हमरा लेल तँ दिल्ली स्वर्ग भेल। ओ काल रहै जखन झारखण्ड नै बनल रहै आ जमशेदपुरमे सभ गोलम्बरपर रेडलाइट रहै आ पटनामे रेडलाइट रहै खाली ताकबऽ ला बौनाहायन।
दिल्ली एलौं तँ कनी दिनमे कनाट प्लेसक मिडिल सर्किल आ आस्फ-आस्फ बेरा-बेरी लूटयन्स जोनक सभ गोलम्बरपर रेडलाइट लागि

गेलै, कनाट प्लेसक इनर सर्किल यातायात लेल यातायात पुलिस बन्न कऽ देलकै, आब ओतऽ पार्किङ होइ छै। मुदा आउटर सर्किलमे साइँसक हिसाब पहिने छिऊक, कखनो जतलाइर होइब नै करत, कर स्पीड घटा कऽ तीस, हुन बीस हुन दस किलोमीटर प्रति घण्टा करलन्हि, मुदा आब ई प्रश्न हटा देल गेल छै। हम अखनो चालीस किलोमीटर प्रतिघण्टाक गतिसँ गाड़ी चलबै छी।

भाग-१

२००३ मे दिल्ली आयल रही। पता चलल जे ’लूट’ लागल छै, मात्र कोनो बी.आइ.पी. मूवमेन्ट छै निर्धारित मार्गपर। स नजदीकक मारुतिसाइकिलसँ नाओता जबाक नियान हेलो। ओ ओकरा हेलमेट हमरा देलन्हि।
“इहो पटना नै छिऐ, ओतऽ पाछूमे बैसनिहारकेँ सेहो हेलमेट लगबऽ पड़ै छै। “
आधा घण्टाक बाद ओ मारुतिसाइकिल नाकि देलन्हि। अपन हेलमेट उतारि हैण्डिलपर लटका लेलन्हि, हमरासँ हेलमेट लऽ कऽ ओकरा कौनियरमे लॉक कऽ देलन्हि।
“आब पुलिसक जाँच नै हेतै की?”
“कक्का, आब दिल्ली खतम भऽ गेलै, यू. पी. आबि गेलौं। आब ओकर कनून नै छै। “

भाग-२

२०२२, काली सर्वेम दिल्लीसँ नाओता गेलौं, अपन चनचकियासँ। उगुक्का एकटा लाकल ट्रैफिकनियमनकँ नियमानुसार सर्व लल संग कलौं। चौराहायन मृत्वाक छल, साइत ट्रैफिकटनक लाइट जनलिऐ आ गाडी घूमवऽ लगलौं। एकटा साइकिलवला टकनाइत-टकनाइत चलल आ गुम्हरैत आगाँ बढ़ि गेल।

“हाँ हाँ सर। ई दिल्ली नै छिऐ, एतऽ ट्रैफिकटन जनला सँ किया साइत नै हो। यहिना गाडीक शीसा खालू, हुन हाथ दियौ आ हॉर्न वजवैत गाडी घूमाउ!”

भाग-३

साउथ एक्सम पार्किंग फूल नहि, एक मिनटक काज नहय स हम कान सटकयन लगा कऽ, फूर्तीसँ काज सम्पन्न कऽ घूरलौं ताना गाडी यान।

सामाँम एकटा हलवदानकँ देखलिऐ तँ पूछलिऐ जे हमर गाडी की भेल? उकर उत्तर सुनु-

“ओ चान लऽ गेल हएत तखन तँ अहाँक गाडी कहिऽ गेल तकर तँ पता नै, मुदा ओ यातायात पुलिस लऽ गेल हएत ’टो’ कऽ कय, गलत पार्किंगक दुआरे, तँ तिरुम्स कॉलोनी थाना चलि जाउ। “

निकला पकडि कऽ तिरुम्स कॉलोनी थाना गेलौं, उत्तऽ हमर कार लागल छल, मान चान नै लऽ गेल छल, स जानम जान भेल।

जागिनादी मनाठी

“ऊे ये ऊ्ी की दखेि छी, □रूसम अ्रूसन सल्ल मिथिलाक आ् विल्लानक
आ् निक्लावला, खनाऊ्् वनवेवला सल्ल सर मिथिलाक आ् विल्लानक। स कान गय रला”- यू्छ म सिंरूजी कँ ७क ाोट मनाठी सक्लान यूछलखिह्र।
वाग सल्ल ठीक नरै, मूदा वारूनी लाककँ वूसवाम नै आ्वै।
सिंरू सारूव रानीय यूलिस सना म नल्थि आ् रूनकन सल्लादन रिखना-यल्लाउीम प्रिंटिंग प्रसम ’क’ ’ट’ सर जाउ छलहि, स रूनका कनका अ्नसार्लाँग नै लागलहि।
निक्लावला गँ दनरंगाक रू्अ्य आकि कटिल्लानक, खनाऊ्् वनवेवला मोआ् नरूव टा न कनैग अ्छि।
ऊ्ी मनाठी सरकँ यगा नै किउ अ्नसार्लाँग लागे छै।
वउ जागिनादी सर अ्छि ऊ्ी मनाठी सर।

(थथन मनूक्क

दु दिनसँ य७वा ञ्सगन वैसल नरुय । ञकन कनियाँ उ८नि कऽ कम्पौ ञ्नाऽ चलि (गेलौ। वद्या सरु कगका वन ञकन खायणेम यानि ञा दाना दऽ नेल नहे। मूदा ञाॐ रान ञा खायणे उजानि चलि (गल।

"कि७ ये नानी । ञरु कि७ नै दासन वियारु कऽ ललक। वगौ य्रम कनो नरुय कनियाँसँ? "

"ञ्हाँ नना छी । ॐी काना (थथन मनूक्क (थाउ छी ज कनियाँ मनय, माय-वाय मनय, वटा-यूगाद् मनय, सन-समाज मनय, चानि दिन मूँरु लटकाञग ञा याँचम दिनसँ रुन (थथन रुऽ जायग। "

𑒥𑒯𑒳𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒂 𑒯𑒱𑒖𑒛𑓃𑒰

“𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒱 𑒥𑒔𑒰𑒢𑒲। “𑒑𑒼𑒂𑒿 𑒮𑒦 𑒯𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒢𑒱𑒂𑒿𑒏 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒪𑒰𑒨𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।
“𑒯𑒳𑒪𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒑𑒩𑒠𑒢𑒱 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒪𑒹𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱।”

“स ठीक कहै छी। पहिल कनियाँमे बच्चा नै भेलै तँ दोसर वियाह केलक। मुदा जखन दोसरोमे बच्चा नै भेलै तँ बुझबाक चाही छलै ने। “

“हँ आ उनटा एसन कनियाँकेँ कहैत अछि जे लागिज सरकेँ नै मानै छैत तँ भगवान बच्चा नै देलखिन। बुझु?”

“मुदा चिलना बाबू तँ दोसर वियाह कने छथि। आ फूचुक बाबू सेहो।”

“चिलना बाबूकेँ तँ दोसर वियाहमे बच्चा भेलखिन ने, आ फूचुक बाबूकेँ दोसरोमे बच्चा नै भेलखिन तँ ओ बुझि गेलखिन ने आ एसन वियाह नै ने केलखिन। मुदा ऊ फूलना बाबू, हिनका सान। “

स्त्री-वटी

“वावूक संग खायव।”- वूचिया वाजलि ।
“ह आव गँ छार नै छँ, ओहन वैस।”- माय कहलन्हि ।
हुन राय सर खनाइ खलक आ आव वूचिया आ वूचिया मायक वन ओलै।
गनकानी सO जकाँ गेल नहि, दूध गँ वावू आ रायकँ मात्र रटलै ।
माय वूचियाकँ सOल जकाँ गनकानी लाहियाम सँ छालनीसँ जना-गना निकालि कऽ दलन्हि आ अयन राग आ नून—गल लऽ कऽ वैसली। दूधक वर्तनसँ दाढी खखाउ कऽ वादम वूचिया खलका।
ई खिस्सा सूनवेग मनाहन वजला ज हमना सर आव ई कऽ सकै छी की?
यहिन खनाइ-यिनाइसँ लऽ कऽ यढनाइ-लिखनाइ धनि वटीक संग अन्याय हाइग नहया। अयाला-गार्गी-मैत्रेयीक समय गँ आव जा कऽ हुनसँ आयल अछि ।

बिआह आ गोनलगाई

जमाय पएर छूबि कऽ प्रणाम कलन्हि तँ ससुर सय टाकाक नोट निकालि एक टाकाक सिक्का लल कनियाँकेँ सान कलन्हि।
खूब खर्च-वर्च कयने छला वरीक बियाहमे, याई अलग गनने छला आ नगरक चानि कट्ठा जमीन सेहो वरीक नाम लिखि देने छला।
“नै बाबूजी, ई गोन-लगाईक कोन जरूरी छै?”
तावत कनियाँ आबि गेल रहथिन्ह, एक टकाक सिक्का लऽ कऽ।
एक सय एक टाका जमायक हाथमे रखैत ससुर महराज बजला-

“नाखु-नाखु । ॐ। गँ यदिनदिया न सावितिउ। “

प्रगिरा

मसूनीम आ०ृ.७.७स. आ आ०ृ. यी. ७स. प्रावशनन सरक दानू यार्टी चलि नहल छल ।

"हम सर ७ाक गज छी ७क सय प्रश्नक सट वना कऽ गैयानी कलौं गखन जा कऽ सरहल रलौं । क अछि हमनासँ वशी गज?"

"नौ दिनसवा। सगमाम गुँ यास नै रलँह, अOमाम सहा ७क वन यास नै रलँह । दसमाम द्वितीय श्रेणी रलायन गाना स्कूलसँ निकालि दलकौ। प्रश्नक यैटर्नक हम आ गुँ प्रैक्टिस कलौं आ सरहल रलौं गँ ७म गजी कन कान वाग ७ल । "

जाति-पाति

हैदनावाद पूलिस एकतमीम दानुक पार्टी चलि नरुल छल ।
“क्या किछु नै वाजग, वस रुमही टा वाजव।”
छाती पिटैत- “नाजयूाक छाती छी ॐी, क्या किछु नै वाजा।“
“राॐ यएरु गँ अंगन छै, दूनू (गाट आॐ.पी.एस. छी, दूनू (गाट पीन छी। मूदा की रुम ॐी कहि सकैत छी छाती पीटि कऽ-ज रुम ऊम छी, क्या किछु नै वाजा! ”

अनुकम्पाक नाकनी

“वउ दर्द रऽ नहुल अछि वावू, आव वर्दास्फ नै रऽ नहुल अछि।” यना नै कान घान नहै। यूकान कुहनि नहुल छथि। यिना स्नांग्रा सनानी नहथिह्न, जखन ताक्तन आ कम्पाउन्डन मना कऽ दलक घान छवणसँ गँ अयन हाथे सना कऽ नहुल छथि। उजना याउतनकँ नानिकनक गलम मिला कऽ घानक खयलौ[illegible]या हटा कऽ उा[illegible]म लगावथि। यीजकँ याछथि। वाय आ छाट राय दुनू सनाम लागल नहथि।

यनुकाँ प्रथम श्रेणीम उत्तीर्ण रल छलखिह्न येघ वटा, सचिवालयम रगनानक यूजा रल नहय।

बूढ़ बापक पैघ आस रहथि बड़का बेटा। छोटका बेटा काना ओकरक नै, अपन बापकेँ दुखेत छल जे एकटा चिट्ठी दऽ दितथिन्ह तँ खादी भण्डारमे नोकरी भऽ जइतै। घरमे कलह..
मुदा बड़का बेटाक राग एहन नहि जे एक दिन ओ ओकर प्राण लऽ लेलकै।
अंग्रेजसँ लड़ाइ खूशी-खूशी जेल गेल रहथि मुदा तखन युवा रहथि। बूढ़ारीमे ई शोक हुनका तोड़ि देलकन्हि । गुमसुम आ अपनमे मगन रहय लगला। स्वतंत्रता सेनानी पेंशनसँ कहुना घर चलाबथि। छोटका बेटाक कलह से अलगे।
एक दिन छोटका बेटाकेँ बड़का बेटाक सर्टिफिकेट दऽ देलखिन्ह। छोटका बेटा पैघ बापक सर्टिफिकेट लऽ कलकत्ता चलि गेल आ ओहि सर्टिफिकेटक आधारपर ओकरा एकटा प्राइवेट कम्पनीमे नीक नोकरी भेटि गेलै। बाप मात्र नाम बदलि गेलै।
लोककेँ बाप बदलने नोकरी भेटै छै, ओकरा बाप बदलने भेटलै।

पैनी-पैगाम आ हाकिम

नव-नव ७स.यी. सारुव आयल नरुथि नग्रम, असली ॐमानदान। गरुन नै ज अयन नट वढवैल कनी दिन ॐमानदान नरुे७।

रुनकन कुट्रम रुँट कनैल ाेगलखिह्न। ७स.यी. सारुवक वउ धारी। कुट्रमक दु टा युगारू नरुथिह्न, ॐ ७स.यी. सारुव प्रिन्सियलकँ ७क वन कहि दिगथिह्न गँ वी.७ड. म रुनुक नामांकन काना न काना थ्रोंग रुेय टा जॐगे।

मुदा ७स. यी. सारुवकँ वृसेम ७व नै कलहि ज युलिसक कदुलासँ भिआ निरागवला काज कि७ कऽ दागे, आ ‍उा दासन निरागवलाकँ अनन कि७ रुान लगा दथिह्न। साम लाक, दीन-दुनियाँसँ काना सनाकान नै।

मुदा कुट्रम जिह्न यकाउ ललखिह्न, कुट्रमा लगक, की कनथि। मुदा भिआ निराग वला रुनकन ‍उॐOाम ७गनि कि७, कान काज? आ नै ७गहि गँ ‍उा गँ ‍उकना रुान नै कनथिह्न।

“गखन ॐी कनु ज वी.७ड. ट्रनिंग कॉलजक ाेगटयन दुटा वम रुाउ दियौ, गखन ‍उकन प्रिन्सियल रुमना लग ७व कनग आ रुम ‍उकना दु टा ७उमिशनल कहि दवे। “

कुट्रम रुगासारिग रुऽ विदा रुऽ ाेगला, रुन जिद नै कलहि।

नूतन मीडिआ

नगरमे एकटा घटना भेल ।

नूतन मीडिया अपन-अपन चैनलमे- सर्वप्रथम ओकर चैनलपर एकर सूचना देल जा रहल अछि- श्री थीना द[illegible], दु-दिनमे एकटा गिरफ्तारी नै होवाक आ एहि दुआरे पुलिसक उदासीन होएबाक अकर्मण्यताक चर्चाक संग भेटल।

पुलिस हेडक्वार्टरमे बैसकी भेल। सभ टी.वी. चैनल कहि रहल छल जे चारि गोटे मिलि कऽ एकटा कलक मुदा अखन धरि एको गोटेक गिरफ्तारी नै भेल अछि।

एनकाउन्टर स्पेशलिस्ट बजाओल गेल। जेना सभ बन होइत रहय ओ बन सहा ओ एक गोटेँ पकड़ि कऽ अनलक। एनकाउन्टर स्पेशलिस्टक तीन चारिम ताँ पछलाक बाद ओ अपन एकटा होवाक गप स्वीकार कऽ ललक। भेल एनकाउन्टर स्पेशलिस्टक संग [illegible]रिसन लोकनि कैमराक सामाँ फोटो खिचवलन्हि।

चारि घण्टा आर बीतल। ओहू कथित एकटाकेँ पीटल जा रहल। हम साँझमे पहुँचलौं, पूछलिऐ- “बा अपन तीन संगीक नाम जकरा

संग तकैत कन छलौं। "

"सनकान चानिय तंगम अयन तकैत हवाक गय स्वीकान कऽ ललौं, हम तकैत नहिलौं गँ की छी कनिलौं? मुदा आन गीनटा संगीक नाम कऽ सँ आनू आ ककना हसियाहींकँ हँसावियौ। "

मिथिलाक उद्योग

गामम चौधनीजीक वड नुावा, तन सर सर्द नहैत छल। ककन दीन अछि ज हुनकन गम्हनायल धान कारि लग आकि ... ।

ओ एकटा वस खाललन्हि-

"दनरंगासँ गाम धनि चलग। सकंत हैंतम रटल अछि। यूननका मालिकक लाइसंस काज दग। संगम वसक यूननका मालिक गीन मासक लल अयन ज्ञाइनन आ खलासी सहा दलक अछि, गकन वाद अयन गाकि लव।"

चौधनीजी महिनयन वसक यूजा कनैत काल गोआँ सरसँ वजला।

“सुनैत छिऐ बस-स्टैण्डपर बदमाशी करै जाइ छै”- एकटा गोटेँ बाजल।
“धुर, चौधरीजीक बस आ आदमीकेँ के छुबाक साहस करत?”- दोसर गोटे प्रसाद लोक बाजल।

बसक छूट आकि नक्शा यात्रीगण सभ सुविधापूर्वक नहि स उतरि गाड़ीमे बैसल रहि जाइ छलै। दोसर बसवला सभ दबंग सभ। शाहीजी आ मिश्राजीक स्टाफ सभ पर सङ्ग! से चौधरीजीक स्टाफकेँ गनगोटिया दऽ बस स्टैण्ड सँ बाहर निकालि देलकन्हि।

हठाते जखनिक महानगर सँ चौधरीजीक बस खुजऽ लागल तँ उतरी यात्री पहुँचऽ लगला।

आब तँ बस-स्टैण्डक दादा सभकेँ बड़ गामस उठलै।
दून ड्राइवर आ खलासीकेँ पूछ पीटल गेल आ छीना करल गेल जे फेर जे छूटयत चलत तँ बसक ऑक्शीजन कनवा देल जेतै। शाही आ मिश्रा जीक तँ पचासो टा गाड़ी छन्हि एकटा थानाम ऑक्शीजनक बाद पड़ल नहि तँ की, मुदा चौधरीजी के तँ एक्केटा छन्हि?

गामक नाआव-दाव बला चौधरीजी बस-स्टैण्डक दादा सभक सामँ उना बकड़ी बनि गेला।

गामम महिनयन गाड़ी ०१८ छन्हि, उाइ यन कदीमाक लग्घी चढि

(गेल अछि, येघ-येघ कदीमासँ वस मया (गेल अछि। खुव रू७ल ठै।

ज (गोरट वाजल ठल- "धून, चौधनीजीक वस आ आदमीकँ क ठवाक सादस कना?" नजरू (गोरट आव वाजि नरूल अछि- "चौधनीजीक वसक या%% गँ ओ वन कदीमा वचिय कऽ उयन रऽ जाछि। "

ज (गोरट वाजल ठल- "सूनेग ठिओ वस-स्टेगुम व७ वदमस्पी कने जा%% ठै" उा (गोरट चिन्दिग रऽ वजे ठथि- "दनरंगाक %%नुसद्रीयल स्टम सला स्टैक्री सर अदिना वद्द अछि आ उाकन दवाल सरयन अदिना गन-गीमनक लपी सर रनल ठै। "

बाढ़ि, दुख आ प्रवास

१

दुख (१)

'ई हुनका दियन्हु। ठीक छै, कनी हमरा दऽ दिअ।'- बच्चू दाइ बनियाँनीसँ हमरा संग बैसल छथि। हाथ पसारि कऽ गद्दीन स्वरमे हमरा कहै छथि- 'आइ दिनसँ हम काका बनियाँनी नै जायब।'

'किए बच्चू दाइ?' — हम अचम्भित जे काका मूरति सँ कन्यादानसँ नै हऽ पगलै जे हम नै देखि सकलिऐ।

'की करब जा कऽ, खएल नै होइए ओकरा नही!'- बच्चू दाइक गद्दीनामे काका कहै नै एलन्हि आ हम बच्चू दाइक मोनक खा कऽ ढनिआयल हुकीक सटसँ ऊँच ढनी देखि कऽ अपन हँसी कना नाकलौं स की कहू?

२

दुख (२)

बच्चू दाइक छोटकी बहीनक सासुरमे महीस बिआयल रहै, खूब दूध लागि रहल रहै। बच्चू दाइ, टानल कुसियार आ खाँटल

खसानीक साग सनस लऽ कऽ वहीनक सासुन विदा रला, ज खुव दुखक राग लगायव।
वहीन दूनका दखिय कऽ आह्लादित रऽ गेली। खनाऽऽ वनवेण गय खणम नै रलह्रि। ओँन-यीढी रल, यग्यू राऽऽ खनाऽऽ शुनु कलह्रि। माय कहुन, रौजी कहुन, टालक लाक कहुन, कनिया कूकूतक वह्रा कणक टा रलै, रालसनिक गाछ वाढिम सुखा कना गेलै, कहुन धावनि छलै डाऽऽम।
खनाऽऽ खणम हाऽऽयन नहि, सासाँ चुह्रियन दुव डौंटाऽऽ छलै, वहीन सारुम दुव दनाऽऽ विसनि गेली। यग्यू राऽऽ दुधे यीवेल गँ आयल छला।
“वूमलहीं दाऽऽ, भणऽ ज आवेण नही गँ नम्हाम भकटा वतका साँय रटल, कग्ह येघ स कहियौ? “
“कग्ह येघ रैया?”
“हुऽऽया भग्हऽ सँ लऽ कऽ, हाऽऽया डाऽऽ चुह्रि णक जऽऽयन दुव डौंटा नहुल छौ, णग्हकटा। “
“रैया, सारुम दुव दनाऽऽय विसनिय गेलौं। “
आ वहीन तवूकसँ वाटीम दुव ढानय लगली।

३

वाढि

ओ वनक वाढि यछिला वन सन नै। सरटा सुशाह कऽ दलक आगियासँ जह्री। खण यथानम नण आ वालुम खाली अहूआक खणी। दूनु साँस यग्यू राऽऽ अहूआ खाऽऽण अकह्र रऽ गेल छथि। नैदिक

थिकाह, मुदा ओ कासिकह्लाम ...

मुदा देखू हाथ!
हरिद्वार सँ हाकिमक चिट्ठी अबैत- "आबि जाउ कक्का, अहाँ वैदिक लोकनिक बड पूछि अछि। एहि दिन ह्रस्व-संचालन आ उदात्त-अनुदात्त आ स्वरित स्वरक मतसँ वेदक पाठ करू आ साँझमे नीक-निकुत मिष्टान्न, खीर-पूरी खाउ।"

४

प्रवासम वज्रपात

पत्नी संग वैदिक सेहो चललाह आ पहुँचि गेला हरिद्वार। ओतऽ पहुँचि स्नान-ध्यान कऽ एहि दिन कंठ फाड़ि आ हाथ घुमाय वैदिक मंत्रक पाठ कएलन्हि। साँझमे मनसुआ बान्हि खेनाइयक बैसला जे आब बड दिनुका बाद खीर-पूड़ी खेबाक अवसर भेटतन्हि।

मुदा ओहिना दिनका हरिद्वार पहुँचबासँ पहिनहिये शासन पंडित लोकनिमे विचार-विमर्श भेल। ओ लोकनि खीर-पूड़ी खाइत-खाइत अकच्छ भऽ गेल छला। से सर्वसम्मतिसँ विचार कएल गेल जे आइसँ किछु दिनक लेल खेनाइक मेन्यू बदलल जाय। विचार भेल जे आइसँ वेदपाठक बाद अल्हुआ आ दूध किछु दिन धरि देल जाय।

वैदिक जी खाइ लेल मनसुआ बान्हने बैसल छला जे आइ जे खेनाइ अपनो पँ ओहि खेनाइकेँ ओ देखिक छाती दगा।

मुदा तखन वज्रपात भेल, सामने अल्हुआ महाराज विद्यमान।

वैदिक जी हाथ जोड़ि अल्हुआ महाराजसँ पुछलथिन्ह- "सरकार हम

गँ ग्रनसँ ञेल ठी मृदा ञ्हाँ कान सनानीसँ ञलौं ज हमनासँ यहिनहियसँ निनाजमान ठी?"

नव-सामन्द

संगीक ठाट राय गामम नहथि। गामम मानि-यीट कनै ठला स हूनका दिल्ली वजाउाल गेल। ञ्फी गय-गय यन सटसँ मगाञा कञल कनथि।

हमना सामँम ञक गाटकँ धमकी दऽ नहल ठला- "दस मिनटम यहुँचि जाह नै गँ गाली मानि दवह। वीस किलामीटन दुनम ठह आकि चालीस किलामीटन दुन हमना डाॅ्सँ काना मगलव नै अठि।"

हम हूनका निषयम सुनिग नही मृदा आॅ् दखलौं।

हमन संगी वृमवऽ लगलखिह्- "ठीक ठै, हम नै कहेग ठी ज नै मानियौ। मृदा ञकटा गय कहू ज दिल्लीम वीस किलामीटन दुनसँ आवैम गीन मिनट ग्रगि किलामीटनक हिसावसँ साठि मिनट लगगै स उा दस मिनटम काना आउाग?"

ठाट राय रीगन चलि गेला।

हम संगीकँ यूठलियहि- "निद्यार्थी गँ कगी गुनूग्रामम न नाकनी कनैग नहथि?"

"हँ, ञक ठाम दस हजानक नाकनी धनन नहियहि मृदा ठाञि दलहि। कहलहि ज हमन लवलक ॅ्ी नाकनी नै अठि। आव हिनकन लवल कहै ठी, कगक प्रयास कलौं ज मैट्रिक यास कऽ जाथि मृदा मध्यमासँ यास नै कऽ सकला। "

चारिम स्थान

पहलमान जीक बड़ धाही। किया अहाँक मकान खाली नै कऽ रहल हुअय तँ हुनका कहियन्हु, अपन अखाड़ाक दुटा पहलमानकेँ संग कऽ देता। ओ दुनू अखाड़ाक पहलमान बदमाशी आकि कठोर बचन, ई सब किछु नै करै छला मुदा हुनकर सबक देह देखा। देखि कऽ मकान कब्जा कनिहारक होश उड़ि जाइत छलै आ काज भऽ जाइत छलै।

पहलमान सब मजगूत तँ होइत अछि मुदा दोगे-धुयेम डाहन हुर्शिगन नै होइत अछि। मुदा पहलमानजी स मानेल गेयान नै आ तँ हारु मैनाथनम ओ अपन नाम दऽ देलन्हि, बुझू बीस किलोमीटरक

नस नहि ज नग्रक स्तियमम खाम हाम्ही। खुव गैयानी कलहि आ सैतम हाग ललथि।

यहिल गीन स्थानकँ स्वर्ध, नजा आ कांग्र यदक हटिगै।

छाटका नसम खिलाडीकँ अपन प्रतिद्वन्द्वी दखाम्हग नहि छै मूदा हारु मैनाथनम क कास गेलै यग नै। यहलमान जी घाम यसीन असगन स्तियम दिस सैगल जाम्हग नहथि, न आगुम किया दखाम्हग छलहि न याछुम। गखन मायतयन जाम्हग दु गोटम एक गोट यहलमान जी कँ म्ही कहैग मायत आगाँ वढा ललक-

“यहलमान जी, घीच दियौ जान लगा कs, अहाँ अखन चानिम स्थानयन छी। “

यहलमान जी कँ हs नहल छलहि ज डा वहुग याछाँ छथि, गँ आगु-याछु किया नै दखा यडि नहल छहि, स अनाम-अनामसँ सैगि नहल नहथि। मूदा आव जखन डा चानिम स्थानयन छथि गखन गँ यदक हटि सकै छहि।

यहलमान जी जान लगा दलहि, कनी आगाँ जा कs एक गोट धानककँ दखलखिहि गँ आन जान लगा कs डाकना यान कलहि। चलु कांग्र यदक गँ यक्का हल। कन आन जान लगेलहि गँ स्तियमक गेट लग एकटा आन धानकँ यान कs ललहि। हुन स्तियमम प्रवश कलहि आ फिनिश लाम्हन यान कनिग अनडा कs खसि यडला। चलु नजा यदक गँ हटल।

मूदा म्ही की, स्तियमम निजाक घाषणा हमs लागल, यहिल, दासन, गसन... आदि न वा... यहलमान जी आठम स्थानयन।

दन्त टूटि गेल छलन्हि, बकार सेहो नै निकललन्हि। कहुना दर्शक दीर्घा दिस गेला, आऽऽ दुनू छौड़ाकेँ तकैत, तखन एक गोटाकेँ पुछलन्हि- "आ दुनू मायतबला कतऽ गेल?"

सार

ग८ नानिकल यंचायगम मुखियाक चुनाव छिऊ। ऊ वन मुखियायगि नै ०।८ छै, महिलावला आनऊध यछिला वन नहै। एन नै ०।८ छै, सर गमसायल छलै, हानव कनिगै। मुखिया ग८ नानिकल यंचायगम ग८ अनऽनवा सहा अवेग अछि। दूनू महिसवाऽ व्राह्मणक गाम। ग८ नानिकल निशाल गाम आ ग८ अनऽनवा छाट गाम, वूसू ग८ नानिकलक ७करा टालक वनावन।

ग०० हिसाव मुखिया गँ ग८ नानिकलक हवाक चाहै। दस-दस लाख खर्च कनैऽ लाक मुखिया चुनावम गँ वाहनिया आमदनी गहै हिसाव हगै न यै। कगऽ छौ, दस लाखक जमाना (गलै, यचास-यचास लाख लाक खर्च कनै (गलै हन यछिला वन आ गखना हानि (गलै, कमा०० याँच सालम नै किछु गँ दु कनाऽ।

आ स ग८ नानिकलसँ साग टा उमदवान ०।८ एऽ (गलै। आ ग८ अनऽनवा ७कारा उमदवान ०।८ कलकै। ह ७ना आयसम सगऽा कनै जम गँ उा०० मुँहदुवना गामक मुखिया वनि जगै। वनऽ दहीं, मुहदुवना गामक वनगै स७ह नीक, गया सुनग, अयन गामक

गँ! ह वादम मगउा हसाद नियटावैा नहिंहँ, गामक ॐकागिक सवाल छौ। ह गॐ हिसाव गँ सएसँ वशी जनसंख्या गँ यडीजी घननक छै, आयसम उकना सएम मिलाना छै, गँ की ज यडीजी घनन कहिया वाजे नै छल एकना वनऽ दवै मुखिया? ह गँ की उकहनकँ वनऽ दवै? वावू ककनायन विसवास कऽ लिअ मूदा उकहनयन नै। आ सनिसव खांगुन? आ उा हूल किउ अनन ०।८ हऽ गेल छै हौ, टालवैया हाट नै दगै, आ जखन हानि जगै गँ हुन टालवैयाकँ याँच वर्ख धनि गनियवैा नहगै।

ह स सए नै हउगा। आयसम उकटा हाट ग८ नानिकलक हऽ जाय, उ सागा उमदनानम जकना सएसँ वशी हाट हएगै एकन युना गाम हाट दगै।

वक्ता वैलट सए आवि गेल, सगनानायध मास्टनसाहेव, काना छअ-याँच नै वूसै छथिह्न, नीक लाक, हुनक निर्दशनम ॐी आयसी चुनाव आकि सर्व हउगा। आ उम्हन सनिसव खांगुनक ॐछकान्ध मास्टन साहेव चिन्हिग, उ ग८ नानिकलक आन्धनिक उलक्नम हुनकन हानि निश्चिग छह्नि। स उा यहुँचि गेला सगनानायध मास्टन साहेव लग।

-मास्टन साहेव, अहाँ सनकानी स्कूलसँ निटायन हल छी याॐवटसँ नै। अहाँक यंशना नूकि सकैउ।

-स किउ यौ?

-ॐी ज ग८ नानिकलक आन्धनिक उलक्नान अहाँ कनवा नहल छिउ स अहाकँ वूसल अछि ज ॐी चुनाव आचान संहिगाक उल्लंघन छिउ?

सगनानायध मास्टन साहुव उना गेला, वावू हम उ सएसँ दुन

छै।

ई गाम नानिकलक आधुनिक जलक्कान नै रहल।

काल्हि चुनाव छैक, गाम नानिकल पंचायतक मुखिया जलक्कान। गाम नानिकलसँ साँप टा उमदनाव छथि आ गाम अनठनवासँ जकरा। वृसाँ... उवन गाम अनठनवक मुखिया बनल। देखिऊ की होइ छै।

मसुआऽऽ

तकाक गीमन, कांकीठक सन्ना, यठवाक आ खनहाक माउस खना वउ दिन रऽ गेल। गामसँ दिल्ली ওलाक वाद गँ नहिया। नधजीग कहलन्हि ज दिल्लीक लाक सर वउ नीक हाऽऽ छै, नै यो कक्का, यठवा सरकँ दाना खुआवै छै, अयना सर दिस गँ सरटा कँ मानि कऽ खा जऽऽगे।

हमन संगीक वटा ग्न ऽऽस्कूलम यढै छलै, डागऽ दु टा खनहा छलै। डा मैमकँ कहलकै ज ऽऽी दुनु खनहा हमना दऽ दिअ। मैमकँ खुशी रलै ज वच्चा खनहाकँ यासऽ चाहैठ, गैया यूछलकै- की कनव खनहा लऽ कऽ?
संगीक वटा कहलकै- मसुआऽऽ वना कऽ खायव।

मैम चिन्हित रऽ गेली, समय लऽ कऽ संगीसँ रँट कलन्हि। वच्चाक गलग लालन-यालनक विषयम डा चिन्हित छली, स्कूलक दासन वच्चाक सूनआल चिन्हित सहा छली।
संगी वउ मुश्किलसँ हुनका वूझलखिन्ह ज हमना सरम खनहाक माउस खायल जाऽऽ छै, दासन वच्चाकँ हुनकन वच्चासँ काना खगना नै छै। संस्कृतिक अन्तर वूझलखिन्ह, मुदा मैम आन चिन्हित रऽ गेली।

स्लोवनिया कैम्प

सनदानजी अफगानिस्तानसँ निस्कासित भऽ आब काल्हि जर्मनीक नागरिक छथि, स्लोवनियाक नानसीविर्स्कम दोकान छन्हि आ दिल्ली व्यापारक क्रमम आयल छथि।

“ओतऽ दुन दोकान खोलन छी?”

“हम नै खोलब गँ किया आन खोलि लेत!”

“ऽऽी ऊँ०। कि७ करल अछि, गुनूजीकँ दऽ देलियन्हि की?”

“नैं, नैं। स्लोवनियाम स्थालिनक कैम्प टा नै छै, व्यापारा हाऽऽ छै। ओतऽ दोकानदान सरकँ वशी गंगा नै करै छै, ननन् स्वागत करै छै। आ ओतऽ आंगुन करल वहुत नास लोक रहट जता। माऽऽनस

यछूर-वीस तिग्री गायमान नहि छै। विनु दस्तानाक गँ अहाँ वलिया नै सकै छी। मुदा नागि कऽ वीयन वानम यीलाक वाद शनीनम गर्मी आवि जाइ छै आ वाहन निकललायन मान हाइ छै ज दस्ताना निकालि दी, आ हन अहाँकँ पग नै चलग, हाथ ठनि जायग, हिल-तल वन्द। नशा टूटलाक वाद ताकन लग जाउ, उँ गेंगनीन रऽ गेल गँ एकाधटा आँगुन काटैत पठग।“

मीग राइ शृंखला

१

बम्भन

मीत राजू बम्भन छथि। मीत राजूक बाबू घटककेँ कहि रहल छला। घटक नवाक मांग कलखिन्ह तँ ओ बजला- कागजी नवा तँ घटक सरकेँ शनवा पियावौत-पियावौत खराब रहs गेल देखै छी। गाछम जमीनी नवा सहर बाँचल अछि आकि नै। रून जमीनी नवा देलन्हि, आ कन काल तनूआ तनकानीक बाद मधून उठलन्हि। आ बजला- 'ह एकटा मधून लियौ न'। घटक मधूनक आग्रह नाकि नै सकला आ कहलन्हि- दियौ। यौ लाजून लागि जायत लड़की बलाक। धनहनाउ धनि झनि। जूी नै तँ आन।

कन कालम घटकनाज ह्नाना आनल एकटा घनदखिया एला। बाध दिस लs गेला घटककेँ, घटककेँ कहलखिन्ह- सौंस बाध मीतक हिस्साम छै।

-मुदा बाधम आनि छै ठाम ठाम। तखन मीत राजूक काना।-

घनदखिया जूलाकक लाक।

-स नै बूझलिऐ, बाढ़िक जूलाका छै आ ढालू जमीन छै। यानि आबै छै आ ससनि जाजू छै तँ अपना खराब ऐ गामम लाक आनि दै छै।

२

गढ़नि

मीतक बहुनायन ज यानि छन्हि स लाक नै देखैए। मीत राजू लिकलिक कनैत हूग सन कानी नंग, कतक कानी स उाजू खायतिकँ देखि लिअ ताक। कानी टूहटूह छथि मीत राजू कानी-खटखट

नै। माहुन भाइ सेहो कहै छला- नाम-नाम, कानी लोक खनाय हाइ छै, क कहलक, गोन लाकम ओ गठनि कऽ यावी।
हुनकन वियाह हलह्नि।
-मीत यौ, कनिया कहुन छथि, यसिन्न यउलथि ना।
-वउ सुहुन छथि। हेमामालिनीकँ दखन छियह्नि? जन-मन डाहुना। मुदा नंग कन हुमनासँ तीय छह्नि।

३

चयन

“देखियौ गँ मीत भाइ। जाँक टाक अयन लानग आ छाट सन दश सरसँ हानि जाइत। कखना काल डाना जिगिा अछि। क्रिकट टा नै यौ। डाहा। आना खल सरम दखु ना।”
“ओ वावू। क्रिकट, फूटवॉलम दश येघ नहुन थोउव हाइ छै। युना दश मिलि कऽ थोउव खलाइ छै। यौ, जगानह टा न खलाउ खलग यौ। आ स येघ दश नहा आकि छाट दश।”

४

मीत भाइ आ चान वजान

मीत भाइकँ हुनकन चमचम कनैग ज्ञपाकँ देखि डाकन निर्माण कंयनी, ब्राण्ड आ मूल्यक संवंधम जिज्ञासा कलौं। मुदा हुमन जिज्ञासा शांग कनवाक वदला ओ लाल-निह्नल हऽ गेला आ जकन ब्रायक निस्पृग विवनण कहि सुनलह्नि।
हल छी ज दिल्लीक लाल किलाक याछूम नवि दिन लानम ज चान

वजान लगैत अछि, गऽऽम मीत राऽऽ अपन राथक यनीऊध हनु यहुँचला। सरक मुँहसँ ओ वजानक ऽऽम्यारते नम्ह् सरक काम दामयन रटवाक गय्य सुनैत नहि छला आ हीन रानमासँ ग्रम्ह हाऽऽ छला, ज हुनका ओ वजानसँ सम्ह आ नीक चीज किनवाक लुनि नै छथि। हुनकन उगS यहुँचवाक दनी छलथि आकि एक गोट हुनकन आँखिसँ नुका कS किछु नम्ह् नुका कS नाखय लागल आ दखिग-दखिग नियम्हा रS गेल। मीत राऽऽक मान उम्हन गेलथि आ उा उाकन यछान धS ललथि आ वउ मुश्किलसँ उाकना गाकि ललथि। जिज्ञासा कलथि ज उा की नुका नहल अछि।

“ऽऽी अहाँक वृम्हाक वाहन अछि ।”- चान वजानक चान महानाज वजला। “अहाँ कहु गँ ठीक ज की एहन अलय अहाँक कानम अछि?”

माठि-याछि कS निक्राग महानाज एक जाउ ज्ञम्हा निकाललथि, मुदा ऽऽीहा संगे कहि गेला, ज उा काना येघ गाठी वलाक वाटम अछि, ज गाठीसँ उानि ओ ज्ञम्हाक सही यनीऊध कनवाम समर्थ हएग आ सही दाम दग।

मीत राऽऽ वउ घिंघियलथि गँ उा चानि सय टाका दाम कहलकथि, सहा ओ दुआन ज मीत राऽऽ वाली-नाधीसँ युनौंचल ऽऽलाकाक लाक लागे छथि, मुदा सठम ऽऽीहा वाजल ज दिल्लीम सर अपन लाक अछि, एम्हS गँ थुका हकै छी गँ अपन लाकयन यउैए।

हमन मित्रक लगम मात्र गीन सय साठि टाका छलथि, आ दाकानदानक वन-वन वृम्हाक वाहन हवाक वाग सम्ह रS नहल

छल। विक्रेता महाराज इ ध्वनि पता लगा लेलन्हि, ई क्रेता महाराजक लगभग मात्र तीन सय साठि टाका छन्हि आ दस टाका तँ इ सरकारी डी.टी.सी. बसक किरायाक हेतु रखब टा करता। ओ मूँह लटकल ग्रामीण लोकक मजबूरीकेँ ध्यानमे रखैत ओ तीन सय पचास टाकामे, ई हुनकर मुताबिक सून-सून छल, अपन कलेजासँ हटा कऽ ओ झण्डा मीत भाइक करेज ध्वनि पहुँचा देलन्हि।

आब आगाँ मीत भाइक बखान सुनू।

“ई जइ दिनसँ इ झण्डा भेल, एकरा पानि नै लागय देलिऐ। कन्हो पानि देखीतँ एकराकेँ सटा देल, ई चमरी उघरल तँ हम आबि जायत, मुदा झण्डा...। आ ई झण्डाकेँ हाथमे उठा लइ छलौं। चारिम दिनसँ हल नहय, एक दिन सीढ़ीसँ उतरैत रही, पूरा साल करेज जकाँ आँखिक सामाँ, बाहर आबि गेल। की करू? क्षा ई ई झण्डाक बढ़ाइ करैत, तँ कोठ हाटऽ लगैत। कोनहुना सिया-हटा कऽ पाइ उपार्जन कऽ रहल छी। बड़ दावी छल, ई मैथिल छी आ वृधियानीमे काना सानी नै अछि। मुदा इ ठेकान ई दिल्लीमे ठेकलौं, तँ आब तँ एकरा लोककेँ देखनाइ करैत रहबाक मान करैत अछि। ई लालकिलाक चान-बजानक लोक सभ तँ कतेक महामहोपाध्यायक वृद्धिकेँ गनदाम मिला देलन्हि। अउ जी हानि-लाभ बँटै छी, आ तखन ई पन कंट्रानर्सी करै छी। असल हानि-लाभ सभ तँ लालकिलाक पाँछाँमे अछि, से एक दु टा नै ननन् मात्र मे।

आब हमरा तँ हुअय ई हँसी आकि नै हँसी। हुन दिन बीतल आ ग्राग्राम बनबैत नहि गेलौं ई अगिला ननिकँ चान बजान आकि

मीना बजारक दर्शन करब। मुदा एना लागल जे दिल्ली पुलिस ते बजारकेँ बन्द करबा देलक।

७

मास्टरनी

“हँ, हमरा कोन बौस्तुक कमी अछि। मास्टरनी करै छी। छह हजार नौ सय निनानब टका दरमाहा अछि। उइम एक टका जोड़ि कऽ सात हजार टका सभ मास बैंकमे जमा कऽ दै छिऐ। आ से बीस बर्खसँ कऽ रहल छी, खेती-बाड़ीसँ गुजर करै छी। अपन बापक बेटा ने हाइ जे उइ जमा पाइसँ एकटा नवका पाइ निकालत हाइ। लड़कावला लग जाइ छी, कन्यादान जे कयानयन अछि, तँ बेसोय ने देत। की, तँ मास्टर छिऐ, कोऽसँ पाइ एतौ। नो, बाऊजी जा न कन्ह पाइ चाही।” मीत भाइ ठेला पठन मटकानो आंगन दिस आ हम गुम्म भेल ०१८ नहि जाइ छी।

८

पसीमक काँट

मीत भाइ गाममे रहथि तँ पसीमक काँटक नस पोखड़िमे दऽ कऽ पोखरिक सहटा माँछ मारि दैथि।

एक बेर युवति टालक कोना बब्बाक मान खनाय भेलै तँ हिनका सँ पूछऽ एलाह जे कोन दवाइ दिऐ। मीत भाइ पसीमक काँटक नस

यिआवय कहलखिह्न। रहन मँहीस चनवाक रुगु ठीर दिस चलि गेला। एक गोट दासन मँहिसवान गामयनसँ अवो दखा यतलहि गँ यूछलखिह्न ज रहो वाउ, यूवाति टाल दिससँ काना कन्नानाहटा सुनि यतल छल अवो काल? वूसु।

उा गँ धन नहल ज मनीजक वायकँ नम्हाम श्चा रटि गेलै आ यूछि दलकै, नै गँ अयन वच्चासँ हाथ धावय जा नहल छल। ओ्ही मीग राओ्ो व७ वूनि अछि। यन्नकाँ यसीम्क काँटक नस याखनिम दऽ कऽ सरटा माँछ मानि दन नहय ओ्ी। ओ्ी जहन वच्चाकँ यिअविगिउ गँ मान ठीक नै हाओ्ोगे, साम याब निकलि जओ्ोगे। वूमानो रल आ मीग राओ्ोकँ कंठी लमऽ यतलहि।

मूदा घनम सर श्चा माँछ खुव खाओ्ो छलहि। एक वन रान- रान खग दिस कादानि आ छिडा लऽ विदा रला मीग राओ्ो। वून्ना-वान्नी हाओ्ो छल, मूदा आतिकँ गतयो एकटा येघ नाहूकँ दखि कऽ कादानि चला दलहि आ नाहू दु कूडी रऽ गेला। दूनू टूकठीकँ माथ यन उठा कऽ निदा रला मीग राओ्ो गाम दिस। गकना दखि गोनन राय गाम यन जाओ्ोग काल वावा दागही लग ठमकि कऽ ठाढ रऽ गेला, मानम ओ्ी सावो ज नैषून जीसँ नाहू काना कऽ लऽ ली। आ ×वावा दागही' मीग राओ्ोक टालकँ गौंआ सर गओ्ो रुगु कहै छल, ज श्चा वच्चा ज उाओ्ो टालम जनमेए स संवंधम गौंआ सवहक वावा हाओ्ोए।

"यौ मीग राओ्ो। ओ्ी की कलौं। नैषून रऽ कऽ माछ उधै छी। "
" यौ माछ खायव न छाउन छिउ, माननाओ्ो गँ नै न। "

ञयन सन मूँरु लऽ (गानन राव्रू निद्रा रऽ (गला।

७

टलीरुान तायनी

ञक दिन (गानन मा टलीरुान तायनी दखि नरुल ठला, गँ रुनका दखि मीग राव्रू यूछलखिह्न, "की दखि नरुल ठी?"

(गानन राव्रू करुलखिह्न ज "टलीरुान नंवन सरु लिखि कऽ नखन ठी, गव्रूम सँ ञकटा नंवन गाकि नरुल ठी। "

"ञा जौँ वारुनम नरुाम कगै यूलिस यूठि दग ज व्रूी की नखन ठी गखन?"

"ञै यौ स की करुै ठी। टलीरुान नंवन सरु लाक नै नाखय?"

" स गँ ठीक मूदा ञाक नंवन किञ नखन ठी यूछला यन जौँ जवाव नै दव गँ ञागंकी वूमि जलम नै धऽ दग?"

" स काना धऽ दग। ञखन रुम ञै तायनीकँ टूकठी-टूकठी कऽ कऽ रुकि दव्रू ठिञै। "

ञा स करिह (गानन राव्रू ञाव्रू तायनीकँ रुाठि-रुूठि कऽ रुकि दलखिह्न।

८

(गावन काढव

ञक दिन मीग राव्रू रान-रान याखनि दिस जाव्रूग नरुथि गँ जगन्नाथ रुटलखिह्न, (गावन काढि नरुल ठला। यूछलखिह्न-" यौ मीग राव्रू, ञहूँ सरुकँ रान-रान (गावन काढऽ यटञ?"

मीग राव्रू दखलहि ज रुनकन कनिया ठाढ ठलखिह्न स ञखन

किछु करबन्हि तँ लाज होइन्हि, से बिनु किछु करने आगू बढ़ि गेला। तखन घूमला तँ एकान्त पाबि जगन्नाथकेँ पुछलखिन्ह- “हौ, पहिने बियाहमे पाइ देमऽ पड़ै छलै, से अहाँकेँ सेहो लागल हएत। बाबू द्वार न ठमनगनम बियाह भेल। “

” हँ से तँ पाइ लागल छल। “

” मुदा हमरा सभकेँ पाइ नै देमऽ पड़ल छल आ बाबू द्वार गोबरा नै काढ़ऽ पड़ैए, कारण कनियाँ ठामक दूल्हा नै अछि। “

६

अधिक भेलम् तुबातुबी

एक बन बद्धा बाबूक ठाम गेला मीत हाइ। ओ पैघ लोक आ तँ बड़ कंजूस। पहिने तँ सभमे गुड़सँ हुअयबला लाभक चर्च कलन्हि, जे ओही खेती हुँटवैत अछि आ हुन गुड़क चाह पीबाक आग्रह। मुदा मीत हाइ कहि देलखिन्ह जे गुड़क चाह तँ हुनका बड़ नीक लगै छन्हि, मुदा पहुँका जे पुनी जगन्नाथजी गेल छला से कानी एकटा हुल छोड़बाक छलन्हि से कुसियार छोड़ि देलन्हि, आ तहीसँ तँ गुड़ बन्नै छै। मुदा हुन बद्धा बाबू पुछलखिन्ह जे नबाबला चाह पीब वा दूधबला। मीत हाइ पुछलखिन्ह जे किए दूध नै अछि की? बद्धा बाबू कहलखिन्ह जे अछि मुदा गनमी मासमे नबाक चाह गुणकारी होइ छै। मुदा मीत हाइ कहलखिन्ह जे जँ दूध अछि तँ तकन चाह हुअय दियौ, नै हुअय तँ बननी...

ठाइ समयमे चुकन्दनक पातन नसियन चीनी अबै छलै, से बद्धा बाबूकेँ मन मसोसि कऽ तकन चाह, सेहो दूधबला पिआबय पड़लन्हि। किछु दिन पहिने बद्धा बाबू ओ गयक चर्च कने छला जे ओ जामनी

छात्न छला तीर्थस्थानम आ तँ जाम खाऽ्ह छला। दनज की उमा। मीत राऽ्ह खुव जवाव दलह्नि ओ वन ओ वातक। अधिक रूलम् तुवातुवी।

१०

मीत राऽ्हक वटा

मीत राऽ्हक वटा रागि गेलह्नि। यूछला यन का८ रूारि जाऽ्ह छलह्नि।

“लाल काका वियारू तँ कना दलह्नि, मूदा तखन ऽ्ही कराँ कारूलह्नि ज वियारूक वाद वटा रूाऽ्ह छौ। “

आव मीत राऽ्ह वटाकँ ताकऽ लल आ अयना लल नाकनी सरूा ताकऽ लल दिल्लीक नक्षा खेलह्नि।

मूदा ओ वन तँ मीत राऽ्ह रूनम यति गेला। जखन दनरंगासँ ट्रेन आगू वढल तँ सनस्नी मंद यतऽ लगलह्नि। कनक ट्रेन आगू वढल तँ एकटा वूढी आवि गेली, मीत राऽ्हकँ ववरूाह सन दखलह्नि तँ करूऽ लगली-

“वौआ कनक सीट नै छाति दव?”

तँ मीत राऽ्ह जवाव दलखिह्न- “माँ। ऽ्ही वौआ नै। वौआक तीन टा वौआ। “

आ वूढी रून सीट छातवा लल नै करूलखिह्न।

मीत राऽ्ह मूगलसनाय यहुँचैत यहुँचैत शिथिल रऽ गेला। तखन यूलिस आयल वातीम आ मीत राऽ्हक माता-मयटा सरु दखऽ

लगलन्हि। गाममे किछु ने रहलै ठकना सरकेँ। हुँ खसानी सागक बिटिया वना कऽ कनियाँ सनसक हाथ दऽ नहथिन्ह लाल काकी हाथ। मूदा यूलिसवा सर लाकि ललकाह्नि।

" ई की छी?"

" ई गँ सनकान, छी खसानीक बिटिया। "

" अच्छा, बकुरु वूमे छी हमना। मारुन सिंह बगाउ गँ ई की छी?"

" गाजा छिओ सनकान। गजनी वूसाइल ई।"

" आब कदु यौ सनानी? हम गँ मारुन सिंहकँ नै कहलिओ, ज ई गाजा छी। मूदा जँ ई छी गाजा, गँ मारुन सिंह स कहलक। "

" सनकान छिओ गँ ई बिटिया, हमन कनियाँ सनस वहलक अछि लाल काकील..."

" लऽ चलू ओकना जलम सरहटा कदि दग। "- मारुन सिंह कठकल। मीग राइक आँखिसँ दहा-वहा नान वहय लगलन्हि। मूदा सियाही छल वूसनुक। यूछलक- "कगक याइ अछि संगम?"

दिल्लीम सुगनसँ लालकाकाक घन धनि दु वस वदलि कऽ जाय यउ छी। स सर हिसाव लग। कऽ वीस टाका छाठ कऽ यूलिसवा सरहटा लऽ ललकाह्नि। हुँ खसानीक बिटिया धनि छाठ दलकाह्नि। गखन काहुनाकँ लाल काकाक घन यहुँचला मीग राइ।

मूदा नहा नहथि, नहा नहथि की सरहटा गय सावा जाइग छलन्हि आ काठ हारि जाइ छलन्हि। गानग गामसँ खवनि ओलन्हि ज वटा गाम यन यहुँचि गेलन्हि। लाल काकी लग सयगग खलन्हि मीग राइ ज आव यसीमक काँट वला हँसी नै कनगा।

“नाकनी-गाकनी नै हउगा काकी हमनासँ”- ॐ्ी कहि मीग राॐ गाम घूनि कs जाय लल गैयान रs गेला।

११

रा. प्र.स.

“काना काज रलायन हमनासँ करुव। कलकान उाॐाम रान-साँम वैसानी हाॐ्ज हमन। घंटाक-घंटा वैसल नहैग छी, आवs लगे छी गँ नाकि कs रुन वैसा लैग अछि, दासन-दासन गय शुनु कs दैग अछि। “

“ठीक छै राॐ जी। काना जनुनी यउग गँ करुव। नाम की छहि हूनकन?”

“वउ नमगन नाम छहि, रा. प्र.स. प्रशांग। आव रा. प्र.स. कन युर्ग नुय हूनकासँ क युछगहि स प्रशांग कहै छहि।”

“रानगीय प्रशासनिक सनाक संजिप्त नुय छैक रा. प्र.स., ॐ्ी हूनकन नामक अंग नै छहि। “

“अछा गँ रुन सउह रगै। गॐ ब्रान नम-प्लट यन नामक नीचाँ लिखल नहै छै। “

“ठीक छै राॐ जी। काना जनुनी यउग गँ अहाँकँ करुव। “

१२

महादनक दुख यीवाक सान

यहिन मीग राॐ हनियाधा दिल्लीक उकटा खिसा सुनलहि। गीन टा कानी कुकुन छल। उक नढ-नुयक। उाकना सरकँ मान रलै ज

गरमा-गरम जिलेबी मधुरक दोकान जा कऽ खाइ। ओ बना-बनी उताऽ जेबाक प्रक्रम शुरू भऽ गेल। एहिन एकटा कुकुड़ पहुँचल ओतइ दोकान पर। मालिक देखलकै जे कुकुड़ दोकानमे पैसि रहल अछि, ओ बटखरा फेकि कऽ ओकरा मारलक। बेचाराकेँ बड़ चोट लगलै। मुदा जखन गाम पर पहुँचल तँ पुछला पर कहलक जे बड़ सम्मान भेल। आँखि कऽ जिलेबी खाइ लऽ भेटल। दोसर कुकुड़ अपनाकेँ रोकि नै सकल आ अपन सम्मान करबै लऽ पहुँचि गेल मधुरक दोकान पर। रुप-रढ़ तँ एक रढ़ नहि ओकरा सभक, ओ मधुरक दोकानक मालिककेँ भेलै जे रएह कुकुड़ फेरसँ आबि गेल अछि। ओ पानि गरम कऽ रहल छला। तहि टकना खौलल पानि ओहि कुकुड़क देह पर फेकलक। बेचारा कुकुड़ जान बचा कऽ भागल। आब गाम पर पहुँचलाक बाद फेरसँ ओकरा पुछल गेलै, जे कहन सम्मान भेल। "की कहू। गरमा-गरम जिलेबी छानि कऽ खुएलक। बड़ नीक लोक अछि मधुरक दोकानक मालिक।"- बेचारा अपन लाज बचबैत बाजल। दुनू कुकुड़ जिलेबी खा कऽ आबि गेल। एक गोटेकेँ आँखि कऽ देलकै आ दोसरकेँ तँ छानैत गेलै आ देत गेलै, आखबा नै कलकै। तसर कुकुड़ ओहो साबेत दोकान दिस विदा भेल। साँझ भऽ रहल छला। मधुर दोकानक मालिक दोकान बन्न करबाक सुरसार कऽ रहल छला। आब जे ओ कानी कुकुड़केँ देखलन्हि तँ पित्त लहरि गेलन्हि। बुझला भेलन्हि जे एक्के कुकुड़ बन-बन आबि नीक सम्मान भेटला पर घुरि-फिरि कऽ आबि रहल अछि। ओ ओ ओ बन ओकरा लऽ विशेष सम्मान करबाक प्रबन्ध कलन्हि। जखन ओ कुकुड़ दोकानमे पैसल आकि दोकानक मालिक

दनवञा रीगनसँ वन्न कs उंटासँ कुकुरकेँ पृष्ठ गानलक। रुन नस्राम वाड्टि दाकानक रीगनम छाति दाकान वारुनसँ वन्न कs गाम यन चलि (गल। वचाना कुकुर वस्तु मरुनगिसँ वनरुन गाति वारुन रुल आ नढनाञ्ञ गाम यन यहुँचल। जखन सढी-साथी सरु सक्कानक मादी यूछलकै गखन उा कहलक ज की कहु, खाआवेी-खाआवेी जान लs ललक। जखन कहिउ ज गाम यन जाय दिअ गँ कहय ज आन खाउ, आन खाउ। आवञ्ञय नै दैग छल। गाक खुगलक ज चल नै रुs नहल अछि।

रुन आगाँ मीग राञ्ञ वजला- ञ्ञी गँ उारुन सन छल ज गक वन महादनक दुध यीवाक सान रुल छल। ज श्वा निकलैग छल शिवलिगकँ दुध यिअउालाक वाद, यूछलायन कहै छल ज महादन हुनका हाथसँ दुध यीलड्टि। हुमहुँ (गल नही। मड्टिनक वारुनक गलीम दुधक टघान दखन नही। जौँ रुगवान दुध यीवि नहल छथि गँ ञ्ञी टघान कगs सँ आयल? मुदा जखन शिवलिंगयन दुध चढा कs वारुन निकललौं गँ लाक सरु यूछs लगला ज रुगवान दुध यीवि नहल छथि? आव कहिौं ज नै यीवि नहल छथि गँ सरु कहिगय ज ञ्ञी यायी अछि, स सरुक हाथसँ रुगवान दुध यीवि नहल छथिड्ट आ गकना हाथसँ यीवा लल मना कs दलखिड्ट। सगरु यञ्ञु उाञ्ञ कुकुर सरुक रुल छल।

विदानी

□रिसक कॅम्पस लागे ज कवाठीक दाकान दूज्या। जकटा चनरु७ स्थारुकँ कहलिउ ज शनि-ननिकँ कॅम्पसकँ सारु कनवा दिज्या।

“जी सन, शीसा सन चमकि जायत। चानिटा विदानीकँ वजवा कऽ कनवे छी। “

“गीन टाकँ वजायव, जक गँ हम छीह। “

“सन, हमन कहेक मान छल ज...। “

फिल्डिंग

“क्रिकेट खेलनाइ किए छोड़ि देलिऐ?”

“सदिखन फिल्डिंग करैत रहु, बैटिंग आयल तँ अगिला गेन्दपर आउट। “

“फिल्डिंग करनाइ खेलनाइ नै भेलै?”

“बाउलिंग करनाइ तँ सेहो नै केलौं, फिल्डिंग करनाइ करना हौ?”

तँ ई लोकनिक फिल्डिंग आ बॉलिंग कमजोर छै, आ बैटिंग मजगूत।

स्किल

“एकटा हाऽ छै स्मार्ट काज आ दासन गदहा सन लागल नहु।
“

सरटा सनसन काठि यसानि शॉर्ट कऽ डिजिटल साइन कनवा कऽ स्पारु लऽ गेल, पाँचा मिनट नै लगलै, पहिने दासन स्पारु अणवीम वीस मिनट लगवै छल। स हम डाकन वठाऽ कऽ दलिउ।

“तखन सभ ठीक छै सन, सभ आकना सभ दिया कहै छै देखू काजमे लागल नहैत आ हमना सभकेँ कहैत जे सदिखन ध्यानमे लागल नहै छी। “

तिसीय्नीन

“वॉस ७म्फक ापमसाॢॢ७, गानिया दऽ दॢॢ७, ापमस नै उ(Ö७ अ्हाँकँ?”

“हमहुँ ाँ गनियावे छिउ। “

“हम ाँ कहिया नै सुनलौं। “

“खुव गनियावे छिउ, ज सान रानम कनियाँसँ वाा सुनि कऽ आयल हउा, ाँ उना कऽ नहल अछि, आन की-की। खुव गनियावे छिउ मान मान! “

साइंस

(१)

साइंस शिक्षा

बारहम कक्षा अन्तिम दिन। आब बच्चा सभकेँ स्कूल ड्रेस मे पहिरऽ पड़ैत, से सभ एक दोसराक शर्टक पाछाँ स्केचसँ की कहाँ लिखि रहल छल, गदहा आ की, की?

मुदा बच्चाक शर्ट साफ रहै, पुछलियै तँ कहलक जे ह्युमनिटीज बला सभ एना करैए, साइंसक क्लासमे काफी बदमाशी मे रहैत छै, एहि साल जे सभ लिलसाकेँ मारि व्यवसाय बैसल रहैए, बिनु उमंगक। सद्रस...

(२)

रसायनशास्त्र

चान महराज गेला महिसवाक ब्राह्मणक गाम चानि करय, पकड़ा गेला। सुनल छलहि जे एक बेर कासी चान हिम्मति कर रहय से गामम चानि करवाक, देहम गल लगा कऽ गेल जे छठिला जगे, पता जायत, मुदा पकड़ा गेल आ ओही गोंआ सर जानसँ मानि देर नहि ठाकना। स ठा निश्चिन्द रहय जे अपटी खाम मानल गेलौं। मुदा गोंआ सरक निवान हलै जे ओतन एकना छाति दल जाय, मात्र आकक दुख दूनू आँखिम दऽ दल जाय जओंसँ ओही आह्वन हऽ जाय आ हुन चानिक याश्र नै रहय। महिसवाक ब्राह्मणक गामम पढ़ाओ लिखाओ नहिया रहन शिक्षावान आयल अछि, सहा दखौंसम। एक गोटक कुटुम वगलक गामम छहि, हुनका ओठाम जिगेसा कर्नेल गेल रहथि, कारण सिवललवा आ वौका दुसाध गेंगक चान गोट-गोट समान लऽ गेल छलहि, पुष्ट यिटान देर रहहि स अलग, कुर्सीम गरानि कऽ बाहि देर रहहि जे हिलताल सहा नै कएल हाओह। गओया चानक प्रति कामा अनाव कथा नै कहन रहथिह-'चान महराज आयल रहथि, कहलियहि जे, जे लऽ जयवाक हुअय लऽ जाउ, खाली देहटाम नै हिनु, मुदा सहा नै मानलथि।'

महिसवाक ब्राह्मण सर चानक दूनू आँखिम आकक दुख धऽ देलक। चान साओंसक निद्यार्थी, रसायनशास्त्रसँ स्नातक। रामन कंक्रीट दु हजार सालक वाद ब्लैक हला पछाति ब्रिकलाओंमक उपस्थितिक कारण पानि पतलायन अपनाकँ देढ कऽ लओत, मुदा आओ कालिक कंक्रीट वीस-पचीस सालम ब्लैक हऽ जाओत आ ब्लैक हलायन स्थायी नूपसँ खराय हऽ जाओत, स सहटा ठाकन वूसल-गमल छलै।

अस्थिरसँ बड़बड़ाइत बाजल- 'आकक दूध दऽय देलकहुँ, ऊँ कनु गेल सेहो भऽ देत गँ जेहो कनी मनी आँखि बचबाक आश अछि सेहो आश नै रहल।'

महिसबाड़ ब्राह्मण सभ सोचलक जे कनुटा गेल धैय द, खेल खतम। से ता सभ कनु गेल सेहो बालक दुनू आँखिमे भऽ दऽ जाऽ गेल, आ बालकँ छोड़ि देलक।

बालक एकटा आँखि गँ गेया नै बचलै मुदा कनु गेल आ आकक दूधक रसायनशास्त्र डाकर दोसर आँखि बचा लेलकै।

(३)

सौनिकी

शुरूमे मजिस्ट्रेट बनिकऽ एल, महिसबाड़ ब्राह्मण गामक एकमात्र सौनिकी स्नातक महराज टिकट नै कटने रहथि, तन खीचि खत-खत पठला, पुलिस पाछाँ सँ मठहा हकलक। खसला, हुन उठला आ हुन दौगला, मुदा एक पएरक बच्ची जागला खतम छुटि गेलन्हि। दोसर बच्ची पएरसँ हाथमे लेलन्हि आ निपत्ता भऽ गेला। गाम महिसबाड़ ब्राह्मण गाम, पढ़ल-लिखल लोकक डाऽ कोना भाजन नै। सभ हँसी उड़ौलकन्हि जे एकटा बच्ची लऽ कऽ की करब, ता कहलन्हि जे दोसर बच्ची जागला खतसँ कालि लऽ आनब। सभ हँसी उड़ौलकन्हि जे दोसर बच्ची डाऽ धएल हएत?!

दोसर दिन सौनिकी स्नातक महराज जागला खतम गेला आ दोसर बच्ची लऽ अनलन्हि।

महिसबाड़ ब्राह्मण सभ मीटिंग कलक- जना हम सभ एकर हँसी उड़ौलिऐ जे एकटा बच्चीक की करब, तहिना जागला खतम एकटा

चट्ठी दखिया कs किया नै उ(0न ह्गै, ज ७कटा चट्ठीक की कानव? उँ ॐ्ौ दासना य७नक चय्यल जानला खाम छाि दन नहिनाय गँ दूनु यान रुs (गल नहिनाय।

ञा ञाव महिसवा७ व्राह्मणक गामम साँ्ूसक शिजाक य्रति ञरुणयूर्न उत्साह जागल ञछि।

Annexure

(Maithili Short-Stories by Gajendra Thakur translated into English by the author himself)

Annexure One: The Proven Mahavir (Siddha Mahavir)

Annexure Two: The Robber (Tashkar)

Annexure Three: The Science of Words (ShabdaShastram)

Annexure Four: The Cattle Grazer Brahmin Village (Mahisbar Brahmanak Gaam)

Annexure One

The Proven Mahavir (Siddha Mahavir)

1

Beside the road was Anmana Didi's house.

It was a hut, not a house. In every courtyard of the village, there happens to be a house of a widow. But when the family expands, some members increase the front of their house while others encircle their homes with new constructions. And thus, the latitude and longitude of that widow's home get changed, and that was what happened to Anmana Didi's house.

Anmana Didi's house is now beside the road. She is

originally from the other side's majkothia (middle) quarter of the village, but her house has now shifted to near my house. There are always a lot of people to be found in her house. The girls who stay nearby visit Anmana Didi's house during the day, especially at midday, to check her head for lice.

Nobody knows who her closest relation is; that will become clear only after she dies. During the funeral rites, whoever is her nearest as per her clan, would perform the last rites and he would also get Anmana Didi's house and land.

But that is no longer possible. When Anmana Didi had gone to her in-laws' village, where she was married i.e., in Jhanjharpur, she had adopted her sister's son. But the love for her father's village remains in her heart.

She comes to her hut nowadays once a month at least. She cooks for herself. But at Jhanjharpur, she has a big house and a huge courtyard. But she has not invited her son and daughter-in-law even once to her father's village.

The entire village calls her 'didi' when she

resides in her father's village and 'aunty' when she stays in her husband's village i.e., Jhanjharpur.

So, she is now known as Anmana Didi by the whole village.

Beside the hut, she constructed a temple of Mahavir Bajrangwali. Though initially, it was just a mud building, she has gradually made it a pucca by selling grains. Earlier it was a 'hut-temple'. Whenever Anmana Didi went to Jhanjharpur, she just closed the gate of her hut. Later, she started locking it with a chain and lock. But the temple of Bajrangwali remained open for people, all the time. The girls of the village did all the cleaning work.

It was converted into a pucca one in stages. The ceiling of the temple was fixed just recently but still, it was a kutcha one. She wanted the floor to be plastered but the estimate was awfully expensive. Anmana Didi kept on thinking that the home of the Lord would become wet in the rainy season. But she also wondered where the money for the plastering would come from. Unlike most people

who keep on saying "Oh, I do not have time", Anmana Didi was faithful to her work. She was devoted to her daily work and God's work. But for her adopted son too, she often finds time.

In between, she goes to her village situated near Jhanjharpur bazaar. She maintains her house at Jhanjharpur responsibly. Then again, she comes to the village ... her father's village. People attempt to become *Sthitaprajna* by reading Gita. Look at Anmana Didi. She answers salutations by saying 'be happy.' No happiness or sorrow can be heard in her voice! No desire for any respect or help either.

She goes to the Dhanuktola and Dusadhtola quarters of the village. The people of these tolas respect her a lot. They do not have any desire to grab her house. Anmana Didi looks happy when she visits these *tolas*. She never asks for any help from the people of her tola. The people of her tola would help once and then tell their wives, who for years after that would remind Anmana Didi of the favour they had done.

The village people say, "Didi, it is a work meant for Lord Hanumanji, his temple is beside the road. We all go by the road and worship him by bowing our heads. We would work without accepting any wages."

"No dear, the pilgrimage and God's work should not be undertaken in this manner. I am not a queen and would never construct a temple or would never dig a pond without paying wages to the labourers."

"But the casting and plaster work?"

2

Adjacent to this roadside temple, there is one acre of land in the name of Anmana Didi. After the cement plastering work is over, she will register this land in the name of God. Whatever harvest would be cropped, would be used for the maintenance of the temple.

However, a nephew from the neighbourhood has been after Anmana Didi for some time now.

"Didi, I am your nearest nephew. This land is adjacent to my house. Earlier the people gave land adjacent to the road to people of lower caste and widows. But now times have changed. Now the value

of the house and the land beside the road has increased. You will die someday. Then this land would be the bone of contention amongst all the people in our quarter of the village."

People thought nothing of telling her to her face 'You will die someday!" But dare tell this to a woman whose husband is alive! But you can tell it to a widow; although she had adopted a boy and has a full-fledged family with a daughter-in-law and grandchildren! Anmana Didi replied, "This land has been earmarked for God. This is the only source of my livelihood. Whatever I save after my expenses is preserved for the casting and plastering of God's house. The land and earnings of Jhanjharpur property are for my son and daughter-in-law. So how can I ..."

"Again, Didi! You did not understand! Till your death, keep all these properties; earn your livelihood. But after your death the people of our quarter of the village will quarrel, would you like it? And I am your closest nephew ..."

Anmana Didi's nephew works in some distant town. The people of the village normally desist from

talking with her, afraid she might ask them for some help. But whenever this nephew comes to the village, he comes to meet her.

The ceiling of the temple leaks so much, and this year it leaked even more. The raw ceiling did not work even for two years. That would be replaced by casting, which is what Karim Miyan and Lakshmi Mistri have said; then only it will work. Let us see what happens...

The nephew comes to Anmana Didi's house even more often.

"All right Didi, give me half the land. Half an acre is enough for your nephew's dwelling, and the land for God would also be saved."

"But there will not be any entrance to the road from your house, then what would be the benefit?

"Leave it, Didi. Even now I have come through our quarter of the village. Nowadays it has become a fashion to construct houses near crossings and beside the road. But on crossings or beside the road, only the house of God would be appropriate. Ten thousand rupees for half an acre, whenever you ask, I would pay; the cost of registry of land

would be in addition to that."

"All right. Then I will think about it and then I will inform you. I would have to ask my son and daughter-in-law."

Anmana did begin to think in earnest. What was the way out? The walls of God's house have become black with the soot from the lamps. Even the statue of Lord Bajrangwali is Black with soot. She thought and thought till the morning birds began to sing.

"I will sell the land, what other option, no?"

The son and daughter-in-law said: “Dear Mother. That land is for God and that we know since the beginning. But look, he should not be doing any mischief."

"What mischief? He is paying price on the higher side. For God's temple, ten thousand rupees is not a small amount. I had only this much after a lifetime of saving. Will this half-constructed temple remain ever in this condition? I will talk to Lakshmi Mistri and Karim Miyan. Ten thousand rupees is sufficient not only for casting and plastering but also for constructing a boundary

wall!"

An estimate was made. The work would start the following day after registering the property; and it would be completed before *Bhadra*, the rainy season.

3

"This is the first time that I have got the opportunity of preparing papers for God!" Dasji's comment made Anamana Didi ecstatic.

"Look, the process of registering the property has been completed. Dasji is an expert in paperwork; it is a proven fact now, my God, it must have been perfect paperwork."

"People tell such lies like people's faith in God has diminished. Look at this Dasji. I had never met him before and do not have even a distant introduction. He has done two registrations, the first for the half-acre land in the name of my nephew and the second for the half-acre in the name of God! But he has prepared the papers by charging only one fee. He told me in clear terms 'Didi, I would not accept the fee for registering the papers in the name of God.'"

Anmana Didi is in a state of excitement. She removes everything from the temple building; the work will begin the next day. Laxmi Mistri has already brought all his tools for the work. Anmana Didi has already readied empty vessels too, which may be required. The pond is nearby, although full of lichen and moss; the village people have cleared some space at various places in the pond so that their buffaloes could drink the water.

But there is chaos in the morning. Karim Mian has been stopped from doing the work. "Who has stopped him? Inform my nephew.", Anmana Didi said. But after registering the property, the nephew proceeded directly from Jhanjharpur to his place of work. The documents are also with Anmana Didi. The nephew's brother-in-law has objected to the work. He will not allow the boundary wall to be constructed. He is saying that the land beside the road is his brother-in-law's.

"But yesterday at the time of registration he was also present, then? Look, then this temple would also be in his name. He must be in some confusion."

The nephew would return only at the beginning of

the next month after he withdraws his salary. For a month, Anmana Didi travelled back and forth from her village to Jhanjharpur. Her son and daughter-in-law told her that it might have been a ploy by the nephew. "No, do not tell that. Dasji seemed so good-natured. Let us see what happens.", she replied.

4

"Didi, you are under some confusion, I think.", the nephew said.

"Then this temple is also yours, no?"

"No, Didi. This temple is for God and would remain his. And the land on the other side is also for Him"...

"Then this hut is also yours, no?"

"No, Didi. Till you live, please stay there. Who will stop you?"

"Boy, I am obliged. And the outlet for the land is neither from our quarter of the village nor from the roadside."

"Didi, go through my land, who will stop you? And in the cultivated areas, everybody passes through the raised dividing line. Those farmers who do

not have land beside the road go to their land or not? You are talking in a divisive tone of the new generation of people."

"But all these you did not tell me earlier!"

"Didi, I told you all this. But you are confused. If you do not remember, let me call Dasji he is a neutral person, an outsider." "

"All right. He is also part of the plot."

"He charged a fee for only one registration, and you are saying that he is part of the plot?"

The nephew's voice became harsher, he became restless and uttered loud words, and he departed quickly.

5

Today's morning at her father's village began the same way as the morning when her husband had died. Today the girls of the village did not come to her hut to pick lice from her head.

The night-long discussion of Anmana Didi with Lord Bajrangwali just concluded in the morning. The people were disturbed hearing this at night and tried to lull their children by patting them to sleep. Somebody came in the morning and

suggested arbitration with the help of the village panchayat. But Anmana Didi was angry with Lord Bajrangwali.

"I was planning to sell only the other half of the land, but he registered the land beside the temple. The land that is in the name of God now has no approach road from the temple. There is no path to go to that land from the temple. Look at this Bajrangwali. Mahavir! What power is inside him? After half-starving for forty years, I brought him from a hut to a pucca building. I just wanted the casting to be done, the boundary wall to be constructed, only that was my desire and that too for him. Ha!

6

The next morning people saw Anmana Didi standing at her nephew's door. The people thought that now more strife would ensue. But look, what is happening? Lakshmi's brother has brought a rickshaw. Anmana Didi is going to Jhanjharpur accompanied by her nephew! Who said this? She does not speak a word with anybody. All right, Lakshmi's brother has said all this. Yes, the one who had

been sent to call the rickshaw must have passed on the information that the rickshaw is to go to Jhanjharpur.

Dasji had to prepare one more registration document. But looking at Annmana Didi, he started to tremble. However, Annmana Didi's anger was so much, that she did not utter one word. She swallowed her anger. She registered the piece of land on the rear side also, in her nephew's name. After the registration, she returned from Jhanjharpur station to Jhanjharpur bazaar to her son and daughter-in-law.

Lakshmi's brother returned to the village. He took two passengers to Jhanjharpur station but came back with only one passenger. He brought a message also, a message from Lakshmi Mistri and Karim Miyan. Tomorrow morning, work would be started, again.

7

The boundary wall was constructed barring the temple of God and Annmana Didi's hut. Annmana Didi's nephew had said that nobody would touch her house till she was alive.

House or hut, the first year it got partly damaged. In the second rainy season, the bamboo support collapsed. But Anmana Didi did not come. The message was given to her by a person from the village. The casting work of the temple could not be completed. Anmana Didi went to Haridwar and returned after some days to Jhanjharpur.

People asked her: "What did you ask from the Ganges?"

"This blind faith should go out of my mind.", she said.

"And what did you sacrifice to the Ganges?"

"My anger, I gave it to the Ganges."

To all questions, Anmana Didi said only this: "What would you do? There is no power in Lord Bajrangwali. Let the hut fall. The hut with bamboo support, how long would it last anyway?"

8

Five years went by. The nephew had returned to the village. In the morning after he had relieved himself near the pond, he came near the handpump to clean his hand. He sat there with his water pot. Then suddenly he felt a massive pain in his

chest, and nobody could save him. People began to talk, 'look at the curse of Anmana Didi; Didi had wept and wept that day. Before that day there was no power inside the statue of Bajrangwali. But a curse from a person who has been deeply hurt does work. That day the Bajrangwali awoke. Today he has shown his power.'

But Anmana Didi, when she heard the news, merely told the messenger that there was no life inside the stone statue of the Lord. Her nephew must have had a heart attack! Near her house too, a few days ago, a Marwari had a heart attack. But there were doctors there and this Marwari fellow's life was saved. In the village, people lose their lives since there is no treatment. That is why, in her old age, she decided to live with her son and daughter-in-law in Jhanjharpur.

9

Cattle-grazer Brahmins mostly inhabit the village. The onslaught by the bhang-intoxicated buffaloes over the purchased pig from the Dom caste (considered untouchables in olden times) of village Samiya is worth watching.

The buffalo grazers sat over the buffalo in such control that was almost unimaginable. The participation of the Dom caste in festivals is apparent. From making big baskets to fans for the summer season; there is the participation of the Dom caste in all aspects of public life.

The Durga Pooja committee retains the head of the sacrificial animal.

The meat for all marriage feasts is obtained through the slaughterhouse of the Muslim tola. The Muslims retain the head and skin of the slaughtered he-goat. The buffalo-grazer Brahmins perform devotional songs on weekdays or on more auspicious occasions playing the drum that is made by using those skins. And a devotional song is going to be performed today before Lord Bajrangwali.

The big flag is flying, it has been there since the Ramnavmi festival. The bell along with some other gadgets is ringing. It is evening, and the buffalo grazers have arrived. For all festivals, be it the Sukharati festival or Ramnavmi, devotional songs are sung before Lord Hanuman.

This is a matter of faith for the people of the village and that is being performed today.

The villagers have plastered the Hanumanji temple. The casting of the ceiling has also been completed.

People have started talking of Anmana Didi as an Anmana mystic (Baba). She died some years back. She did not return to the village. To reduce the effects of an evil eye over the dwelling land of her nephew, an astrologer suggested that a cow should always be there at the door. The passerby sees the cow grazing on the green grass and that takes out the effect of the evil eye.

Hanumanji's flag is flying high. It is evening. Brother Gonar is playing the drums ceaselessly.

Now Anmana mystic's words have spread near and far. True, before the statue of Hanumanji, there are two sets of devotees. One set of people believe in rationality: Anmana registered the remaining half an acre of the land to her nephew to instil fear and anxiety in his heart. He could not resist this attack from Anmana Didi. True, there cannot be any power in a stone statue.

But the second group has faith in Hanumanji. This Hanumanji has proved himself, he is great. Look, challenge an ant and she will bite you even though it may mean death for her. Anmana Didi challenged Lord Mahavir and how could he leave this challenge?

Brother Gonar is playing ceaselessly on the drum. He would please Hanumanji, no doubt about that. The bhang is working, his eyes are intoxicated, and his hands are flying over the drum. Seen from his eyes, the stone statue of Mahavir would look alive, as though a soul had indeed entered it.

Annexure Two

The Robber (Tashkar)

1

Inside the *Shaligram*-stone a hole exists, the black *shaligram* stone is found near the river Narmada. In Jamsam village much has changed, right from the *Dihbar*-worship place of the village deity to other things, but some of the other symbolic things are present. But any symbolic existence of my love story is not present anymore. The plantation and the jungle have become sparse

now. When I was a child, the mango orchard was full of underground passages and holes made by animals. It was full of distinct kinds of birds and big and small animals. From the month of *Jyestha* to *Agahan*, Malati and I used to gossip around the *khurchania*-creeper. During the *Phalgun-Chaitra* month, we used to have endless conversations near the *lavanglata* bush. *Malkoka, Kumud, Bhent, Kamalgatta*-root, the reddish-*Bisadh*: we were in search of these, wandering through the mud and muddy water. Barefooted, we hopped around thorny bushes and played a game of 'seven houses' in the mango orchard. We used to make our imaginary home with the *karbir*-bush. Malati is used to preserve the seeds of flowers.

Malati was the same age as me. My mother used to say that Malati was six months older than me, but my father used to tell me that she was six months younger than me. Why he used to tell this, I came to understand much later.

During the entire mango season, Malati and I guarded the mango orchard. But at dusk, before night fell, my maternal uncle Bachhru and Malati's

father Khagnathji would come to the orchard to guard it during the night. But here also there is no symbolic presence of our love tales. I mean, the love story of Keshav and Malati.

But there at the Pucca village deity spot, I try to look for the black *Shaligram*-stone, which has a hole inside. I had stealthily placed the stone here somewhere.

The villagers had spent a lot to make the dome for the village-deity place. Earlier there was nothing here. The stairways for the pond had been constructed by the King and this pucca temple; only these two things still existed. But the poor King could not worship here; out of dishonour, he did not come to this village.

2

I am Keshav, from village Mangarauni, of *Naraune Sulhane* root, gotra *Parashar*, son of Poet Madhurapati.

Malati was the daughter of Khagnath Jha of *Mandar Sihaul* root, and Kashyap gotra of village Jamsam. Khagnathji and my maternal uncle Bachhru were close friends. My Bachhru mama hailed from Jamsam

village. He was well-to-do and we were poor. So, for the one-month summer vacation and the fifteen-day Durga pooja holidays till Chhath pooja, I used to stay in my maternal uncle's village. During the summer vacations, I would guard the mango orchard, watching the ripening of the early ×White’ mango variety to late the 'Kalkatia' mango variety. During Durga pooja, we enjoyed the celebrations right from the first day till the immersion ceremony. Again, during the Deepawali festival, I lit the bamboo leaves and returned to my village at the time of the Chhath festival. In between throughout the year, I occasionally visited Jamsam village.

With Malati, I often quarrelled. Once, when I was in the fourth class, during the summer, I was visiting Uncle Bhachhru's mango orchard. I quarrelled and stopped talking to Malati since I was angry. However, I forgave her soon and resumed chatting with her; Malati always unusually softened me. She never remembered the topic of our quarrels; once I went up to her and said, "I am sorry for that ..."

"For what?" she said.

"For that over which we quarrelled."

I realised neither she nor I remembered what we quarrelled about, so after that, I never fought with her. She, however, often used to get angry with me, and then I would ask her why she was not talking to me. And since she never remembered the matter for which she was angry and neither did I, then what is this quarrel all about?

Life went on in this way. After the summer vacation, I waited for the Durga pooja, and after the Durga pooja vacation, I looked forward to the summer vacation. From when this wait began, I do not remember.

3

Father lived by sharecropping in the village; that is, he worked in the fields of others for a share. After middle school, there was no school for higher education in the vicinity. All the Sanskrit schools had closed.

So, there was no school for me. Year-long, either it was work or vacation. My mother's parents were alive. My mother visited her father's place now

and then. I also used to visit my maternal uncle's village often.

There were many problems in that village. I often heard the talk about the 'preservation of *Panji*' from my father. He also said that this was only possible if I could be married to Malati.

Malati was my friend. But we became distant after the 'preservation of *Panji*' topic began. The ease with which we met suddenly started to vanish. While seeing her I started imagining her as my wife, and I am sure she must have felt it too.

4

Soon after that, Bachhru's mama came to my village: Madhurapati: "Bachhru, in your hands now lies all my respect. Khagnath's daughter is simply appropriate for Keshav. She is beautiful and good-natured, but our Keshav is also magnificent. Both are of the same age, but Malati is younger by some days. Oh! You do know that my father gave seven hundred rupees to the bride's father and then my marriage was solemnised, and my father had *Panji*. But we do not have land now. Yesterday the

genealogist came on a mare; the mare was intoxicated after drinking bubble-bubble. He told me at once that only Khagnath's daughter is available, while he prepared the list of the probable. And if that does not happen, I would be debarred from the east-coast Shrotriya's group."

Bachhru: "I am going to ask Khagnath. He is my friend, but what is inside his mind, that only he can tell."

I did not know why my heart was filled with love. I had accompanied Bachhru's mama to his village.

5

Malati: "Keshav, if you are married to somebody else then how can we meet?"

Keshav: "If you were married to somebody else, then how you would ask these meaningless questions?"

Malati: "But you understand one thing? Yesterday your maternal uncle was talking to my father regarding our marriage!"

Keshav: "Then?"

Malati: "No, all was well but then a messenger from the King of Darbhanga came to say that he

had a message to convey from the King".

Keshav: "What was the message from the King?"

Malati: "I do not know. But the messenger told my father not to finalise my marriage for some time."

Keshav: "You are so beautiful. The King must have seen some boy for you."

Malati: "I do not know..."

6

The caravan of the king's minister stood in front of Khagnathji's house! What changes happened in these two days? The messenger had passed on some messages. So Khagnathji is in such a hurry now, for the marriage of his daughter! See the swiftness. People reached there in large numbers, and all were busy with the welcome ceremony. I too was observing everything. By evening my father had also come. There went the minister's caravan and my father's hand touched his forehead. And he then relapsed into silence. Khagnathji was also silent.

The King had sent a proposal for his marriage to Malati! King Bireshwar Singh. What a shame! He must have been over forty years of age and this

proposal of marriage with a thirteen or fourteen-year-old girl? What was the status of Khagnathji, how could he oppose the proposal?

My father was anxious; the *Panji* would not be preserved.

On that day, in the evening, I met Malati near the corner of her house. Her big eyes, like the *Karjani*, were swollen; it looked like she had wept without consolation, for hours. What I said to her, I do not remember. Yes, but in the end, I told her that everything would be all right.

7

In Jamsam village, the marriage proposal was solemnised between King Bireshwar Singh and Malati.

Also, in Jamsam village, a pond was dug. Beside the pond, a new temple was constructed; how could the King worship in a temple constructed by others?

But I, Keshav, was the son of Poet Madhurapati!

The marriage date came closer. There were no other auspicious dates during that season. That evening I told my plans to Malati.

In a wooden cart, the front part as well as the back remains unstable. The pressure on the front must be more because otherwise, the back would be unstable, and the cart would tumble. But I balanced the back of the cart, and I waited for Malati near the bamboo trees.

She came and sat on the cart. Whoever saw me on the road did not talk to me for fear that the cart would tumble. She saw a colourful *Patrangi* bird and nearly exclaimed aloud; I put my fingers on her lips.

I brought Malati to my village. The wedding preparations had started; my *dhoti* was being coloured for the occasion. Somebody came from Malati's village to enquire about her; I captured that person and hold him back. When the question arose in my village, "Who would perform the ceremony of kanyadaan from the bride's side", I brought out that person. I said, "He is from the bride's village, so he will perform kanyadaan."

I put down the leather *Salamshahi* shoe, wore a *dhoti* and performed the marriage rites. The vermillion ceremony, where the sacred vermillion

is placed on Malati's head was fated to be performed only by my hand.

8

Now, what would King Bireshwar Singh do?

He called the genealogist and ordered him to place the derogatory title of "Tashkar" - robber - before my name in the *Panji*. But Madhurapati was full of pride for his son. A tiger's son is again a tiger! *Panji* and water both go downwards, as courage flows down from father to son. But after *Tashkar* Keshav marries Khagnath Jha of Srikant Jha *Panji*'s daughter, Madhurapati's shrotriya category would remain in existence.

And after one hundred years, a play is going to be performed in this village: "Sultana- the Robber!”

And I, Tashkar Keshav, from root *Mangrauni Naraune Sulhani* of *Parashar* gotra, son of Poet Madhurapati, am looking for symbols of my love story in this village Jamsam. But only that pond built by King Bireshwar Singh and the dilapidated temple could be seen. Poor King, he did not come again to this village out of shame.

This pond and the dilapidated temple are the remains of our love.

Annexure Three

The Science of Words (ShabdaShastram)

The Sun happens to be in the fifth sign of the

zodiac, normally between *the sixteenth of August* to *the sixteenth of September*. If you want to dry something then it is the best time to do so, since during this period the most intense light and heat of the Sun falls on earth.

During this fifth sign of the zodiac, the palm leaves remain under the Sun, a part of Mlu's father's annual preservation plan, to instil life in these palm leaves. Ananda used to help in preserving these palm leaves. She would carefully place the palm leaves where they would get the maximum heat, Mlu remembered vividly. Ananda's life was mostly spent with Mlu. But before the onset of this year's fifth sign of Leo of the sun-zodiac, Ananda had departed ... and now when she is not present, how will the preservation of life be possible, the life of Mlu's and these palm-leaf inscriptions...

Fallacy, the fallacy of words, we ascribe our emotions to words, and after that confusion begins.

In the courtyard of Lukesari, there is a tree of

sandalwood.

Beneath that the cuckoos clamour

I will cut the sandalwood tree and encircle the courtyard.

Cuckoo, your clamouring will end.

The cuckoo of the jungle began crying.

The cuckoo's clamour stopped.

Oh! cuckoos, cuckoos of youthfulness, do not cry.

Clamour cuckoo, clamour

Whichever jungle you would go to.

Your marks would remain there.

Tears do not come out of the eyes.

I will wrap both your wings with gold, o cuckoo.

I will wrap both of your lips with silver.

O my cuckoo dear, whichever jungle you would go

The maks of 'garland of blood' would remain.

Some voice was coming from the village quarters where the tanners lived ... it was Ananda's voice. But Ananda was dead, only a few hours earlier! Bachlu had seen her dead body. After informing Milu, he returned to the village quarters. Ananda had died when she was quite old. But the voice

that was heard was of a young Ananda...

It may be a fallacy, a fallacy of words. Srikar Mimamsak, Milu's father, often said many things about the 'science of words.' We ascribe meaning to the words and then the confusion begins...

I

The Science of Words

There was a tumult.

The turmoil began. In the river Balaan, a corpse was found floating. Besides the washerman's quay, the corpse had got stuck on the edge.

From where it had come nobody knew. It was a dead body of an old woman. But the washerwoman recognised it. She informed Bachlu, who in turn gave the news to the dead woman's family. Only an old man lived in that house ... the house of Milu. Milu's village people brought the dead body to the village. Milu performed the last rites.

In the village, this incident became a hot topic of discussion. The old Bachlu knew something more. He knew who the dead woman was. The new generation

did not know all these things...

The dead body of Ananda was consigned to the flames...

Ananda was kind, she understood things quickly. Her daughters were married into well-to-do families. Her son was educated. Milu, Ananda's husband, and son of Srikar Mimamsak were also highly educated. Never had they asked anything from anybody, even in times of need.

Bachlu was also old... In this village, only Milu was older than him. The people regarded these two as "old men".

Old man Bachlu knew many things...

....

Discussions between Milu and Srikar were common. Sometimes I understood and sometimes I did not...

"Milu, in the book Bhamati, Vachaspati says that the basis of ignorance of living becomes the subject. You will accept which method for self-introspection? How can the untruth be the cause of something? How can the fact of the existence of something prove something as true; and how it can prove its existence in three ages? That which

is neither true nor false; and which is also not both, only that is unspeakable. Without any subject and the knower of that subject, how the concept of zero can be explained? Milu, Kumaril says that the Atman (soul) is living inertia. During the awakened stage, it is knowledgeable and during sleep, it is without knowledge. Milu, Vachaspati says in Bhamati that a person expert in a science that is without self-introspection behaves with society in the same way as an animal behaves with it. He flees on seeing a person coming holding a stick; and if he sees someone coming with a basket of food, then he goes near to him. It means that he fears fear."

***

It was the season of mango fruits.

Monkeys and *Nilgais* leapt from tree to tree, and the Bison trampled vegetables growing in the fields behind the houses in the village.

"Everything has been destroyed, Bachlu. I will go to the orchard in the morning. The *Nilgai* has already bitten a lot of fruits and crops, now these monkeys are after the mango fruits."

I did remember that during the mango season Monkeys and Nilagais had a great feast every year. It was the mango season. So, Milu would have to begin guarding the mango orchard. The flowers had just begun turning into fruits. Milu had to construct a loft; I also helped him. We were just returning after cutting the bamboo. It was early in the morning, and the red in the sky had a yellowish hue. Near the small pond, I saw Bachlu...
-
I began to come forward through the pathway in the field. Then I saw some blood... I became nervous after seeing the blood.
But I relaxed soon. I then saw the sharp leaves of bamboo had bruised the girl's hand.
The girl had tears in her eyes. Milu cleaned the blood and put some damp soil on her bruises.

"What are you doing?"
"The flow of blood will stop. It will stop bleeding now."
The girl had run through the field. -"What is your name?"

"Ananda".

"From which village have you come?"

"From this village."

"From this village?", both of us exclaimed together.

Yes, Ananda was her name. And it was their first meeting, Milu, and Ananda.

....

The loft in the mango orchard was constructed. But Ananda was not seen after that.

Milu often asked about her.

-To which quarter of the village does she belong? She is neither from the quarter of the Mishras nor from the quarters of the Westerners or the Thakurs, he kept thinking.

-If she had been from the quarter of scavengers, then I would have known her.

-Then how she is from our village, and if she is from our village then why have we not met her till now?

But in between these events, a coincidence

occurred. In Milu's quarter, an investiture ceremony of Phude's son was held. On that auspicious day, I had gone outside the village to the tanner's quarters to cut bamboo. I also had to call the men who would play the pipes.

"Hirua brother, O Hirua brother".

"He is coming".

A woman's voice was heard. The voice seemed familiar to me.

"Who are you?"

"I am Hirua's daughter. What do you want?"

"Your father did not come for the bamboo cutting ceremony; the voice of his pipe is missing there. I have come here to call him."

"He is preparing for that occasion".

"What is your name?"

At that very moment, a girl came outside, pushing aside the creepers which were hanging from their house enclosure made of bamboo.

"I am Ananda. I recognised you. What is your name?"

I was feeling cold. But I had to answer.

"Bachlu."

"And your friends' name?"

"Milu, son of Pandit Srikara."

I told Milu's father's name to Ananda, although she did not ask for it. Not knowing why...I told her.

At that moment Hirua came out with his pipe. I accompanied him to Milu's quarter of the village. On the way, I asked Hirua- "Ananda is your daughter but I have never seen her."

"She has lived, most of the time, at her maternal uncle's place. But now she has come of age. So, I brought her to the village."

"When will she go to her maternal uncle's place?"

"No! Now she is of marriageable age. She will remain with us."

Milu, my friend, had been asking a lot about her. I kept thinking about how he would react after hearing about the news of marriage. I wished that Ananda would go back to her maternal uncle's village and then I would be free from Milu's repeated questioning.

But now since Ananda would remain in the same village as Pandit Srikar's son Milu, what would he do?

Oh ... I, myself, am thinking out of context. Milu had naturally asked about Ananda. That does not mean that ...but does it mean..., then?

The son of a Brahmin and the daughter of a Tanner...

Will Pandit Srikar approve of this relationship? Will the village people approve of this relationship?

Oh...I am again thinking out of context. I could hear the pipe blowing. People moved forward towards the bamboo plantation, and through the field, Milu and I accompanied them. On the way, I tried to locate that place. The place where Milu and Ananda first met ...we could hear a faint voice ...a beautiful musical sound... The boy, whose investiture ceremony was going on, had marked the bamboo. The bamboo now had to be cut. Construction of the sacred loft in the courtyard had to be completed today as it was an auspicious day. After much labour and sweat, we finally completed the work and only then my mind was at peace. After that Milu and I started walking through the field. But Milu started asking me questions about Ananda

again. He was my Lord Rama, and I was his follower, Hanuman.

Sitting on the loft in the orchard one day, I said to Milu:

"Milu. Please forget her. Why are you bent upon giving her a bad name? Ananda is Hirua's daughter. Although she asked only your name, I told her both your and your father's name".

"She asked for my father's name?"

"No, but..."

"Then why did you tell her my father's name?"

"One day she would come to know..."

"That day I would have faced ... now she will ignore me ... now I have to put in some extra effort."

"What effort? You are Brahmin Srikar's son, and she is the daughter of Hirua, the tanner. Why are you bent upon giving her a bad name?"

"I will marry her, why I would give her a bad name?"

"Who are you deceiving?"

"I am deceiving nobody, dear friend."

Milu took decisions impulsively. He was Pandit

Srikar's son. Srikar was an exponent of the Mimamsa school of Indian Philosophy. I had seen the palm-leaf inscriptions lying everywhere in his house; so, I did not believe my friend.

"I have never seen her in the village."

"You never stay in the village for long. You returned only last year from the school of your teacher."

"But you had also not seen her."

"She has been living in her maternal uncle's village."

"Will she go to her maternal uncle's village again?"

"No, I had enquired again about that. She will now remain in the village."

***

Last year, Milu's mother died.

Srikar Mimamsak became almost crazy. The village people were worried: How would there be the preservation of palm leaves in this year's Leo zodiac of the sun? Srikar had been grappling with this anxiety and so he became almost crazy...it was being discussed by the people of his quarter

of the village.

....

Hirr...hirr...hirr...

From my quarter of the village, Domasi, Milu and I were shouting hirr...hirr and following the pigs. We reached the tanner's quarters in the village. Ananda, however, met us midway. Along with the pigs, I moved forward. After a while, I turned my head around to overhear the talk between Ananda and Milu.

Hirr...hirr...

This time Ananda shouted "hirr" and I smiled and moved further along with the pigs.

This went on for quite some time. Hirua was agitated and came to me several times. Hiru's wife began praying for her daughter.

How distant is the temple of the Goddess?
How distant is the temple of Lukesari?
Many miles I went for an appeal.
Goddess, look unto me.
Many miles I went for an appeal.
Goddess, look unto me.
Four miles away from the temple of the Goddess.

Eight miles is the temple of Lukesari.

Ten miles I went for an appeal.

Goddess, look unto me.

Ten miles I went for an appeal.

Goddess, look unto me.

Which flower is for the temple of the Goddess?

Which flower is for the temple of Goddess Bandi?

Which flower for my chosen appeal?

Goddess, look unto me.

Which flower for my chosen appeal?

Goddess, look unto me.

This flower is for the temple of the Goddess.

That jasmine flower for the temple of Lukesari

The Marigold flower I chose for appeal.

Goddess, look unto me.

The Marigold flower I chose for appeal.

Goddess, look unto me.

....

Hirua came to Domasi, the village quarter of the scavengers.

"What will happen? How will it happen?"

"All false..."

"I promised him that I would accompany him to

Srikar Pandit."

And I accompanied him one day to Srikar Mimamsak.

"Srikar's wife died soon after the Leo zodiac of the Sun. After that Mimamsak became crazy ... people say, people who were from his quarter of the village. The people of the village and the learned people of the area respected him. I am telling you what I have seen with my eyes.", I said to him on the way.

Talking thus, we reached pander Srikar's house.

"Come Bachlu. Hirua, come and sit down.", saying that Srikar relapsed into silence. After the death of his wife, he had become like this. He seemed normal but suddenly would become lost in silence.

"Uncle, the courtyard of your house is empty. How long will you let it remain so? Why don't you get your son Milu married?"

“Milu has already made his decision about his marriage."

"When and where?", I became agitated and asked. Hirua seemed to look towards me with relieved eyes.

"He has decided to marry Ananda. Her father has

come with you."

Oh... and Srikar Pandit was that type!

And Milu was of that type too! He has already hypnotised his father. But a person from Srikar's quarter of the village overheard this talk.

We all were seated when that person came to Srikar's house, accompanied by some other people. An argument ensued between Srikar Pandit and these people. The opposite argument, word for word, ensued.

"Srikar, what type of demeanour is this?"

"Which type of demeanour?"

"You do not have any sense in distinguishing high and low Mimamsak?"

"Dear learned folks! What is this high and low differentiation?"

"That means that high and low are only meanings of words. And the analysis that we have done after making it a sentence is selfish?"

"If you do not believe then surrender the selfish content from the sentence. All fallacy would be falsified."

"Does this mean you are hell-bent on carrying out

the marriage between Milu and Ananda?"

"Dear Learned Folks! You confuse snake for rope because both have a separate existence. If you squeeze your eyes shut, then you would see two moons; then you place moons in two real places in the sky. The reason for fallacy is not the subject but the attachment, although both purpose and result are true. And here also the knowledge of all subjects cannot give knowledge of the self. One's nature is described by knowledge of self through the concept of self. Self is the subject and the object both, of knowledge. The knowledge of self is both subject and object. The meaning of substance is obtained through attachment. The meaning of a word is near its inference after we hear the word."

"You are creating a fallacy of words. We all see that you are determined to get them married."

"When desire does not get fulfilled then it is envy.", Pandit Srikar commented.

"Do you think that all this that we are saying is out of envy? Don't you give any value to caste?"

"See, Ananda is full of good qualities. My caste

and hers are the same, and that is the truth and known to all. She will be able to preserve the legacy that I believe. And that is my decision."

"And that is my decision," these words did not enter my and Hirua's ears simultaneously. I had known Srikar and Milu for a long time. But this type of unexpected decision to which I was accustomed Hirua was not. Hirua realised what these words meant after some time. He was amazed when he turned and looked towards me.

Then Srikar Mimamsak pointed a finger towards one person, an astrologer.

"Jyotishiji, you select one auspicious day. In this season this holy marriage should be held. The Leo zodiac of the sun is arriving. Before that. Does anyone of you have any objection?"

All stood on their feet with bowed heads. Who would dare to oppose Srikar Mimamsak?

"All of us came here to discuss. But if you have already taken a decision then there remains nothing to oppose."

Mimamsak raised his hand, and all became silent.

I and Hirua moved slowly away from there.

Hirua took such a deep breath that I could feel it.

....

It was not that any other obstruction did not come.

But that crazy Srikar Mimamsak was a scholar of repute. Ananda became his daughter-in-law. She was accepted not only in Milu's quarter of the village but also among all the scholars in the vicinity.

....

In Ananda's father's house, the marriage ceremony was organised. I had heard the song, full of life, I still remember:

The black bee that slept over the hill
Gardener-daughter sleeping in the garden.
Get up gardener-daughter, keep the garland.
The black bee that slept over the hill
Gardener-daughter slept in the garden.
Get up gardener-daughter, keep the garland.
With what flower I would cover Goddess Lukesari
With what I would make her clothes
With what flower I will knot to make it an ornament

Get up the gardener-daughter and place the garland.
With Arabian jasmine flowers, I will cover Bandi.
With Spanish jasmine, I will clothe her.
China rose would be the ornament of Lukesari.
Get up gardener-daughter, thread the garland.
Get up gardener-daughter, thread the garland.
....

Srikar Mimansak became more composed after assigning the task of preserving the palm leaf inscriptions to Ananda. After his wife's death, the poor man was apprehensive regarding that important work of his.
Ananda's role in preserving these palm leaves seemed like a divine interference. In a sudden turn of events, Milu told me how he had convinced Srikar Pandit about this marriage. The daughter of a Brahmin would be busy cleaning utensils and Pooja materials; she would be busy making an earthen image of Lord Shiva, and by then the palm leaves would get damaged.
He could not allow these palm leaves to be

destroyed; Ananda had to get married to his son and come to his home, Srikar M mamsak had decided. M lu was grateful for his decision.

Srikar had aged. Srikar and Ananda were still very much active in holding their philosophical discussions.

Ananda sang:

When twelve years passed, and the thirteenth arrived.

When twelve years passed the thirteenth arrived

Folks my mother-in-law calls me tigress.

She would banish the tigress from her house.

Folks my mother-in-law calls me tigress.

She would banish the tigress from her house.

Outside your courtyard of yours is standing the moneylender

Folks, give me Madar and Thornapple, I will grind and will drink it.

Folks, give me Madar and Thornapple, I will grind and will drink it.

The beloved came from outside and sat on the bedstead.

The beloved came from outside and sat on the

bedstead.

Folks, tell the thoughts of your heart; after that, I will drink poison.

Folks, tell the thoughts of your heart; after that, I will drink poison.

When twelve years passed, and the thirteenth arrived.

Folks, my mother-in-law calls me tigress.

I will banish the tigress from home.

My mother-in-law beats me, my sister-in-law beats me.

My mother-in-law beats me, my sister-in-law beats me.

Folks, these will go, and all the wealth would be mine

Folks, these will go, and all the wealth would be mine

Keep silence; keep silence proud women you are great, proud women.

Keep silence; keep silence proud women you are great, proud women.

Proud women, I will perform holy-basil-plant oblation and will squander all my wealth.

Folks: I will perform pond oblation and will squander all my wealth.

Srikar Mimamsak would jokingly ask- "Ananda, you do not have a mother-in-law, then can you say that she is calling you a tigress?

"Therefore, I am singing, everything I have, but ..."

While speaking Ananda's eyes were full of tears. I still remember this.

"I caused you pain by telling this."

"What pain; I do not have a mother-in-law, but I do have a father-in-law."

Seeing Srikar happy, Milu always felt satisfaction.

....

Even after Srikar Mimamsak's death, Ananda continued to instil life in these palm leaves.

At the proper time, Milu had two daughters, Vallabha, and Medha.

I had seen the joy on Ananda's face. She had gone to her mother's place, where she gave birth to the twins.

You Red Fairy. O Pink fairy

You Red Fairy. O Pink fairy

O Over the sky would dance the Indra Fairy

O. On the rose would dance the Indra Fairy

At the proper time, he had a son. When his son Megha grew up, Mlu sent him to Benaras to study. The days passed, his daughters grew up, and both Medha and Vallabha were married. Mlu knew inner satisfaction and peace.

His son's marriage was also performed in the meantime. Megha began teaching in Benaras. Megha, Medha and Vallabha all three came to the village at least once a year.

People forgot many things about them

2

The Stage of Bhamati

Ananda was busy preserving the palm leaves of Mlu's father; even in the intense heat, Mlu still remembers.

Ananda's whole life was spent with Mlu and when she was not present then how could Mlu survive?... Mlu did not listen to the holy Garur

Purana. Milu liked to hear Mandan's Brahmsidhi and Vachaspati's Bhamati when he felt in the mood to listen to something. If his daughters insisted, then he would hear Kumaril's philosophy about self.

Srikar often spoke many things about the science of words and the philosophical writing of Bhamati. We ascribe too much meaning to words and then begin the confusion.

"Teacher; after my wife's death, I am in distress. What is this life? Where will Ananda be?"

"Milu; be composed. This lesson of Brahmasidhi will remove all your illusion. In Brahmsidhi there are four divisions - Brahma, Logic, Command and Accomplishment. In the Brahma division, the discussion is on forms of Brahma, in the Logic division it is on proof, in the Command division it is on the liberation of living beings and in the Accomplishment part, there is a discussion on the proof of Upanishadic thoughts. Milu, there is no subject apart from liberating knowledge. Liberation is knowledge itself. Mandan gives value to the mean knowledge of Man's intellect. He

values work. But these alone are not enough for liberation. The sound word was given meaning through the explosion that Mandan saw. So, he is different from Shankar in a way that he identifies this explosion and gives identity to it, but Shankar does not believe in any identity less than that of Brahma. So, Mandan is a purer non-dualist as compared to Shankar. Milu, Mandan does not believe in abled and not-abled as mutually opposed. This sometimes means action-based difference, but that difference will not become an original element. So that Brahma would remain in all differences and still would do every work. Look, the thought at the Bhamati stage of Vachaspati and the philosophy of Mandan, are in coherence. On Brahmsidhi of Mandan, Mishra Vachaspati wrote an elucidation called Epistemology Critique. Although that work is now not available".

"Then how did epistemology critique come forward?"

"In Bhamati of Vachaspati, there is a discussion about it."

"But before knowing the thoughts of Mandan I feel that when he lost a discussion with Shankaracharya then how one would benefit from his defeated theories and how one would get peace?"

"See, Mandan was defeated; the evidence of this is not available in the writings of Mandan. Mandan was a supporter of the theory of explosion, but Shankaracharya denied it. Mandan was a supporter of the opposite fame of Kumaril Bhatt; but Shankaracharya's pupil Sureshvaracharya, whom people often identify with Mandan Mishra, opposes the opposite fame theory."

"That is right. If Mandan had lost, he would have followed Shankaracharya."

"Now tell me, the Sureshvaracharya, who was appointed as head of Sringeri Math by Shankaracharya, says that ignorance is not of two types, but Mandan mentions two types of ignorance in Brahmsidhi as non-acceptance and wrong acceptance. Mandan tells living one is an abode of ignorance, but Sureshvaracharya disagrees with it. Mandan opposes Shankaracharya but

Sureshvaracharya follows him."

....

Monkeys and Nilgais are tearing down the fruit trees and the male buffaloes are trampling the cultivated land behind the dwelling houses. Now for my sake, the village people would not stop rearing buffaloes.

"Four monkeys are in the orchard, and they are damaging the mangoes. I had gone there. In the evening, all the monkeys were perched on top of the trees. Till evening we, father and son duo, took care of the orchard. Now the monkeys have fled when we threw wooden missiles, but then they went towards your orchard."

"All has been damaged. At night I am not able to see. In the morning I will go to the orchard. The Nilgais have also been damaged a lot. And now these monkeys are after mangoes. Let them damage when..."

"The Nilgais were completely gone from our area for some time. How have they resurfaced again? They must have crossed the river from the next village during the night..."

"I don't think that is true. These Nilgais have come from the Nepal side during the floods. Let them come when..."

"I told you about the monkeys."

"That would be done."

"All right, brother: then I am going," I remember the year when Ananda and Milu had met for the first time when during the month of mangoes, the Monkeys and Nilgais had suddenly disappeared. Now when Ananda has departed, these Monkeys and Nilgais have resurfaced again from nowhere. Not even fifteen days have passed since Ananda's death...

....

Bachlu left the place and on Milu's forehead thick lines of anxiety began moving, one towards the other like waves do, interfering mutually, the old waves turning into new waves and moving forward. He calls his daughters, his voice reaching across the courtyard.

"Daughters! Jayakar and Vishwanath had gone to the orchard today; have both returned or not? I heard that the monkeys are up to mischief there.

From tomorrow Jayakar and Vishwanath will not go to the orchard, tell them. Today monkeys came to the orchard; you did not tell me this. What should I do after hearing this when ..."

"I did tell you, father, but these days you remain in your thoughts. Then I got tired after repeating it, so I stopped."

Yes, Milu nowadays is lost in his world. The mangoes had begun ripening soon after Ananda's death... After so many years these Monkeys and Nilgais have again resurfaced to remind us of something!

....

Vallabha, the mother of Jayakar, and Medha, the mother of Vishwanath, both sisters have come to their mother's house after a long time. They met each other after so many days. The sons-in-law of Ananda have also come: Visho, the husband of Vallabha; and Kanh, the husband of Medha. Megha has also come with his wife and children.

Milu is calling for his wife ... Ananda ... Ananda. Then he remembers that she is gone now. Then he begins to call ... where is Vallabha ... where are

you, Medha? Where are you, Jayakar, and Vishwanath?

Vallabha and Medha both come, and Milu begins singing. Ananda often sings the song: the songs that Ananda sang for Vallabha and Medha.

Red fairy. O. The Pink fairy

Red fairy. O. The Pink fairy

O. Over the sky would dance the Indra fairy.

The Goddess of the garland of red blood is standing at the door, the devotee has become poor.

O after she became poor, she is standing near the door of the blood-garland goddess

Mother, we would have to give money to the poor.

Mother, we would have given money to the poor.

Mother, we had given money to the poor.

Red fairy O pink fairy

Mother, O after she became blind, she is standing near the door of the blood-garland goddess.

Mother O, give an eye to the blind immediately.

Mother O, give an eye to the blind immediately.

The father and both daughters began crying.

....

“Ananda's death has been a disaster for you. Even though you are from the Brahmin caste and Ananda is from the tanner caste, the love between you two is incomparable. Do not be unhappy over her death. Brahma is without sorrow. The fanciful face of Brahma is pure joy. Thereafter your unhappiness over Ananda is inappropriate. Brahma is the one who oversees. The visible ones are changeable and do not have any relation with the overseer. This world is not simply a fallacy, but it does have an existence. But this practical existence is not true. Milu, there is a difference between consciousness and unconsciousness; but that is not true. Living beings are of many types and ignorance is also of many kinds. Ignorance is one vice but the reference to it cannot be Brahma, it cannot be a complete soul. Its reference can only be an incomplete soul. Ignorance then is not true, but it is not a major untruth either. Milu; please remove this ignorance; that is called liberation, that liberation which Ananda has achieved.”

And on Milu's face, complete peace could be seen.

....

Milu remembers the discussion he had once with Ananda, a long, long time ago...

"Ananda, when I am talking to you, again and again, I am gripped with fear. My father's weakness is his possessiveness for palm leaf inscriptions. So please remember all this: when my father asks you how these palm leaves should be preserved, then your reply should be: by protecting the books from water, oil, and loose binding, by drying these under the shadow. These books contain five hundred to six hundred leaves. I will bring some of those books for you to see. One leaf is a hand long and around four fingers broad. These are covered with wooden frames on top and bottom. On the left side, there remains a hole through which a rope passes thereby binding the leaves together."

"Your father would agree?"

“He will have to agree. He does not have the means to bring a Brahmin bride. I once gave a farmer two rupees in advance for buying some land. But my father brought the advance back. He is saving money. He will have to spend seven hundred rupees

to have his son married to a good Brahmin family so that his superior genealogy is preserved. And that Brahmin bride would come and preserve his palm leaf inscriptions?”

After the death of Milu's mother, Srikar became almost crazy; the people of his quarter of the village often said.

The village plague destroyed two-quarters of the village; those of the Mishras and the Westerners almost got annihilated. How many people in the surrounding areas died, nobody could count.

Milu got an opportunity so that his father could meet Ananda. Srikar saw in Ananda much more besides the quality of palm leaf preservation techniques.

Milu was victorious. Milu, of the Nyaya School of Philosophy, had won over Srikar of the Mimansa School of Philosophy!

And the marriage of Ananda and Milu was thus solemnised.

***

He remembers his love talks with Ananda. Milu, it seems, is going to meet her. Ananda has died. She

slipped into the Balaan River. The marks of her feet slipping into the river are quite visible.

Milu sees that mark and his heart fills with joy, he slips into the wave of emotion...

Ananda and Milu would meet very often, and take walks in the fields, the orchards, and the grazing grounds, beside the river. Milu did not jump into the river. This slope had become slippery, thanks to the young boys. Milu has a lot of memories of this place, he had often sat over here and then rushed forward at great speed into the river, cutting the waves in the forward direction.

"Hey, come and do this.", he said.

"That is not a big deal."

"Perform first, then only I would believe."

Ananda tried carefully but...

He could not stop her, especially beside the river.

***

She must have come here ...and then she slipped ... and drowned.

She might have come to remember something.

Yes. Ananda has arrived. Bachlu, listen, listen to

this song.

Behind the house is the tree of china-rose flower
It is laden with fruits and flowers.
A parrot came from the northern state.
The parrot sat on the china-rose tree.
The parrot eats neither fruit nor flower.
It is destroying branches and leaves.
The parrot eats neither flowers nor seeds.
It has destroyed branches and leaves.
Beside the house, there lives a jackal.
O Jackal, please capture this parrot sitting over the tree
Once tried.
Twice tried.
A third time the parrot flies
Neither this parrot is a mystic
Nor is the partridge.
It is like a conveyance for hen-sparrow.

"Brother; are you not able to hear this song?"

"Brother, I am hearing and seeing. Ananda, my sister-in-law, is singing. I also heard this song the day she died; it was she, singing-

In the courtyard of Goddess Lukesari, there is a

tree of sandalwood.
Beneath that the cuckoos clamour."

It was not the fallacy of words.

The next day after the ritual of fish and meat and after the Pooja of Lord Satyanarayan, Ananda neither cut the sandalwood tree nor encircled her courtyard.
The next day beneath that sandalwood tree the villagers saw two dead bodies in the tanner quarter of the village. The voice of Ananda echoed in the sky; all the village folks heard this:
Whichever jungle you would go to dear lovable cuckoo.
A mark of the garland of blood would be left.

It was not the fallacy of words.

Annexure Four

The Cattle Grazer Brahmin Village (Mahisbar Brahmanak Gaam)

One thousand heads, thousand mouths, thousand types of gossip, all true and un…

The Shudras have come out of the feet and so has the earth.

Garh Narikel, a village. Cattle-grazer Brahmins predominantly inhabit it.

Ponds and trees are all around this village. In this village one…two…three and one more, four ponds exist.
Exactly it is not so. There are three more ponds in this village. One is in the northern direction of the north pond, popularly known as the gigantic pond. People say that some monster dug this pond in just one night. But even after digging it for the whole night, the monster could not install the central sacred wooden pole in the middle of

the pond. As the monster was in a hurry so he left the shoe of his one leg there beside the mound and left the place. For many years that huge shoe remained there but again after many years, during the flood, that too got lost. So, the only evidence that was there vanished. This pond is far away from the village, so no relation between this village could be established with the Chhatha festival. Yes, but this pond is mentioned during the ceremony of the sacred thread. Distinct types of fish reside in this pond. There is never a dearth of fish here. No need has ever been felt for putting seeds of fish (small fishes) into this pond. There is an annual fish-catching festival and barring the southern quarter of the village, the whole village gets its daily share of fish for at least one month.

In the southern direction of the south pond, there is a pond called the Buchiya (in the name of a person) pond. It is also far from the village, but there is a sacred wooden pole installed in the centre of this pond. When this central sacred wooden pole was being installed a big ceremony

was thrown by the great-great-grandfather of Zamindar, Piyar Bachcha (yellow boy). He had organized a grand great feast. This pond is far far away from the village and in all directions of this pond, there are fields only. People rarely come here to take a bath. Here too there is an annual fish-catching ceremony, but that is only for this southern quarter of the village. There are many things attached to this pond. During Durga Pooja goddess Durga proceeds to her husband's place, on the last day of the festivities. On that day, the idol of the goddess Durga is immersed in this pond. Not the men, but yes, the women weep bitterly at the time of immersion of Durga. The idol of Durgaji is not made in this village, no question of it being constructed in the southern quarter of the village. But it is immersed in this pond. This idol of Durga is made and worshipped in the neighbouring Garh Tola (small village). The Garh Narikel people are mischievous ones. Till the sixth day of the Durga festival, the idol of Durgaji remains covered. Only the artist can see

her because if he does not then how the idol is constructed? Any other people, however, would become blind if they see the Durga before being unveiled. Yes, but after the ceremony of Belnoti- when the eye of Durga is placed out of an invited wood-apple fruit, the idol of Durga is unveiled and then only the people can see it. And from that day the actual festival begins. If the idol of Durga is made in this village many people would become blind before the sixth day of the festival. The neighbouring village is not a less mischievous one, it is only the degree. In the name of the festival, all of them become disciplined. In the name of their village, the suffix is added, tola (quarter of a village) suffix. But that does not make it a quarter of a village; it is a full-fledged village. Garh Tola village is also inhabited by the cattle grazing Brahmins. In mischievousness, there is always competition between these two villages. If you pass through the Garh Tola village, the lads sitting in front of the verandas of their houses beside the road would often pass comments on you.

But the naughty boys of Garh Narikel will consciously go through that village. But the disciplined ones pass through the road beside this Buchiya pond. Although the route is circuitous; it is safe, do not mind.

There is one more pond in this village.

Towards the eastern side of the village, to control these two rivers Kamla and Balan, two dams were built. One is in the north-south direction, adjacent to the village and towards the eastern direction. If you move forward towards that dam, you will find the Kamla River, and then her brother the Balan River. And further towards the eastern direction, you will find another dam in the north-south direction. And between these two enclosures lies the Balli pond- in the name of a zamindar. Near this pond was a large football field. Due to siltation and due to some wrongdoing by the zamindar, this pond and that field got merged in the name of chakbandi (bringing together lands of one person at one place through mutual- often forced- exchange). The government had emphasized the chakbandi for some unknown

reason, perhaps because it increases food production. The land owned by the Surju Bhai, filled with cattle dung and therefore very fertile, merged with Yellow Boy (Piyar Bachcha)'s land due to this chakbandi. In between the dams, there is a grazing field called Bauwa Chauri, used by the herder to graze their cattle. The cattle grazers come here, play here, and swim in the Kamla River. Sometimes they let their body flow in the Kamla River and sometimes they swim against the stream of the river. Between the dams, there is one-quarter of the village, the quarters of milkmen. Earlier it was part of the village but now their voter list has been shifted to Jhanjharpur Bazaar. Long long ago, at the village school, there was a voting booth. These people were not allowed to vote at that booth, now it is the other way around.

Some of the graduates of Bauwa Chauri- as they are called jocularly- work in Delhi and Mumbai and some of them work in Saudia (Saudi Arab and Middle East). Some of them are security guards and some of them have started a firm that deals

in security guard services.

In the village there are many mango orchards; the big orchard, the Kharhori (near to the habitations) where new trees had been planted, the Bhorha (near the abandoned course of a river) orchard; and the orchards over the mounds of the ponds. Earlier in Kharhori, there was agricultural land only. But once a person planted trees on his land it brought a shadow to other people's land. So, the other people's production of paddy diminished. For some time, he talked about the mischievousness of his neighbour, but he had to plant mango trees too in his land later.

There is also an orchard of rose apples, all the sky-high trees there. The Pepper trees are all around, at the village deity's place and the school compound; you will find the root of the pepper tree here and the branches of the roots all around the place.

Beside the village, roads are trees of wild betel nuts, many types of shrubs used to clean teeth,

the bamboo plantation, several types of flowers and thorns, and the sensitive plant, everywhere in all the orchards. Over the broad mango branches, the guards put their beds and slept. But there is only one banyan tree, beside the black metal road near the quarters of Muslims.

The lands are of diverse types. The land between the river dams and the sandy land is now being called the other-side land by the people. A creeper *tricosanthes dioica*, the watermelon, musk melon, sweet root; the cultivation of all these is done here. If you want to buy the cheapest land, then come here. But after the flood recedes, you will find the shape and size of the boundaries of your land changed. If in one year, after the flood, the shape and size of the boundary diminish, there is no need of inciting any quarrel, as the goddess Kamla River might increase the area the very next year. The cultivation of paddy is also in existence. But that is often by chance, in some year even after sowing thrice it would be swiped away by the flood every time, but in some years the goddess Kamla River would fill

so much fertile mud that whatever per Katha production you are expecting, it would produce even more than that.

If you have a good budget, then buy the land near the habitations or the white teak trees. Here people are buying land more for residence than for cultivation.

The land near the Dakahi pond is called Barhamottar. In the old days, some might have received this free land from the King. In the old days, it is heard, these lands had good production, but now a day these remain always filled with water. The paddy seeds are thrown (different from the usual method of sowing the saplings, it, however, results in less production) and paddy is cultivated in this manner in these lands.

The big plots, near the roads, near the Bhorha (besides the abandoned river course) and near the Purnaha (in the midfield) are used for cultivation. Besides some people have started cultivation on the curved land of the village enclosure near the dams. In geography books terrace cultivation is said to be practised only

on hills, here you will find terrace cultivation in plains on fabricated hills.

The weeping sound of people, whose milk-giving buffalo just died, can be heard often. The magical obsession can also be seen. Often some mischievous lads throw flowers and unbroken rice, worshipped by a magic man or woman, during the night at somebody's gate. It often leads to a string of abuses by the offended household, who thinks that some bad omen is going to grip their family. But the people have come to understand now that it remains the work of some naughty boys.

Agriculture-fishing-animal husbandry-based cattle grazer Brahmin dominated village is surrounded by literate (although a thief quarter also exists in this literate village), not that much literate; and a subdued and calm village (subdued and calm village=where people acquiesce to pressure). However, neighbourhood thieves do not dare to do theft in this village. If you have a social relationship in this village then all the old disputes in respect of land would stand settled. Ordinary people get transformed into strong ones,

with a social relationship established through a marriage relationship. After the relationship, the weak ones turn into ones who have a say in society. From this village, the arms-wielding trouble shooters visit far-off places for settling disputes. These troubleshooters settle the disputes of relatives and forcibly capture election booths. The rate of land in this village is Rupees twenty-five thousand per Katha (1/20th of a bigha) but the same type of land in a neighbouring village is available at a cheaper rate, say at Rupees ten thousand per Katha. The highlands in this village are cheaper because one cannot irrigate them with rainwater. But after these dams were built, the cost of land for those monkey-shaped people also increased. Earlier the mediators of marriage, even after seeing that a boy is getting his share of only ten Katha in comparison to monkey-shaped people's village boy getting one bigha, preferred boy of this village for marriage. Because in the village of those monkeys shaped people, subsistence is not possible even if the boy has ten bighas of land

as his share. But the key to luck has now been unfolded to them, when the flood comes their highlands get irrigated. Monkey shaped...you did not understand? The orchards of that village are inhabited by monkeys, and the people of that village also look yellowish, the same as the monkeys! Monkeyish (yellow-like monkeys)! And nobody liked the job of a teacher, so all these monkey-shaped village people became teachers. And now look at the salary of the teachers. All monkey-shaped people, when they come out, wearing Dhoti (loincloth) then people of this village get crazy out of envy.

However, the Durga worship did not begin in this village. The submissive-village people also started it. If we try, how it is not possible? We did organise Ramlila (acts of Lord Ram performed by a theatre troupe), is it a fact or not? But look, the roads started smelling of people's urine. We are lucky that Durga Pooja is not celebrated in this village. One will have to bring one's daughters during the celebration time, and the

cohesion that these villagers have among themselves would break the party politics related to the Pooja brings.

The village is, however, of cattle-grazing Brahmins.

Among the Brahmins of the village are Indrakant Mishra, Raman Kishor Jha and Arun Jha. On the day of the Sukhrati festival (on the next day of the Deepawali festival, the festival of Hindus of Mithila) if you ever see the sport played by the buffalos of these cattle grazer Brahmins, you will lose interest in the game of polo. The pig purchased from the Dom caste of Samiya village is placed before the buffalos, drunk with cannabis drink. The cattle grazers who are sitting over the buffalo in the Central portion of the animal is an amazing scene to watch. In this village, there are other castes too.

Between the dams, on the high mound is the quarter of milkmen. Even during the flood this quarter of the village is never touched by flood water. Transportation during those days is by boat. The rowers of the boat inside Kamla are not the people

from the fishing community but those from the milkman caste. They receive grain from the villagers for their services. Yes, but people of other villages are charged in cash for the services.

There is one Muslim quarter in the village, they are in the vegetable business, but they do not grow vegetables but only sell them. In that quarter lives Mohammad Shamsul. His son lives in Saudia. This quarter is near the black metal road on the outskirts of the village. The people of this quarter of the village have registered their names in the voter list of the adjacent village. Near that quarters are four families of the Dom caste. The reason for enrolling themselves in the voter list of an adjacent village by these people is the same as it was for the people of milkman's quarter. But the villages are not made up of the voter list. So, these two quarters are still a part of this village. The necessity of Dom caste in festivals is well known. The Dom Caste makes all types of articles from bamboo, like the one for storage of grains and articles, and the bamboo

fans. A Muslim quarter is also in the village. They are required, particularly for meat for the marriage party or the guests. The head of the poor animal is taken by the Durga Pooja Committee after the holy sacrifice ceremony for goddess Durga is over. In the off-season, the Muslims cut half the throat of the castrated he-goat. But after cutting the meat, they take the head and the skins in place of their wages. When these cattle grazer Brahmins sing the devotional songs in front of the Hanumanji temple and perform twenty-four-hour non-stop worship at the temple, those drums which are used during the ceremony are made of those skins.

And again, there is Dhanukh-Toli. Bhagwandutt Mandal and Adhiklal Mandal are from the quarters of the Dhanukh caste. Earlier those people carried the gifts to other villages carrying a special bamboo stick on their shoulders, having two strings on the two sides. But now this work is undertaken by the people from the Dusadh caste also. Agriculture is the avocation of people from the Dhanukh quarters and Dusadh quarters. Yes,

earlier these people worked as workers, but now they work on a co-sharing basis. In times of strife, there is not a single month when you will not find ladies from these quarters of the village wielding blackened earthen utensils and displaying these to the cattle grazer Brahmins. These people may be said to practice animal husbandry, as far as the rearing of a she-goat and an uncastrated he-goat is concerned, the latter is used for sacrifice to the goddess Durga. Some of them have begun keeping one ox and turn by turn these people do plough and other agriculture work by coupling their oxen together.

Even though it consists of only three houses, the small quarters of washermen have become a separate quarter of the village. The clothes of even Marwaris (businesspeople originally from Rajasthan settled here) of Jhanjharpur town are cleaned here. The cattle grazer Brahmins go to marriage parties wearing these flashy full pants, these are not their own, these are costly clothes of those Marwaris and lent by the washermen. The washermen give these clothes on rent for two days,

the clothes of the Marwaris.

Korail, Budhan and Domi Safi are washermen. Domi Safi is now Domi Das, he practices the sect of Saint Kabir now.

A quarter of barbers also consist of just three families. Jayaram Thakur, Lakshmi Thakur and Maley Thakur, all barbers are talkative. With them always remains the list of annual donations that each family must give to these families of barbers in place of the services that these barbers provide throughout the year. They are always on the run, to claim their labour, whenever a person comes to the village from town. Whoever comes during Durga Pooja from their far-off working place, must pay their due before their return to their workplace. Earlier, these barbers went from one corridor of the village to another for haircutting. But now whoever wants a shave of his head or face will have to go to the barber's house. Yes, but if it is the marriage of a son then they go to the corridor of the bridegroom to shave the people who are going to attend the marriage party, but he sits in one place only. Whoever is there

should remain in line. It should not be like that one is coming now, and another is coming after a while. Now one from each of the family of barbers has started a saloon at Jhanjharpur. A saloon is a plastic cover placed over the bamboo pillars beside the railway track. The use of nail-pairer is almost extinct. The individuals should cut the nail themselves. During the period of condolence, after the death of a person belonging to the same clan, the wife of the barber would cut the nail of the lady, only that. And while shaving a beard with a sharpened razor, if blood comes out, it would be not due to the wrong movement of the razor but as it would be because there was some blister there on the face. No dear, this razor using the topaz safety blade is for my Jhanjharpur saloon.

There are other quarters of the village, of leather tanners. Mukhdev Ram and Kapildev Ram are prominent among them. Earlier they were residing outside the boundary of the village, beyond the bamboo plantations. But now the bamboo had been cut extensively, so it has thinned. The habitation

of people has extended up to these quarters of the leather tanners. The construction of new buildings and the placement of bricks here and there is a normal scene. Announcing with the drum to ward off evil spirits or to announce something, and to play drum and pipes are the works undertaken by them. If cattle die, till it is lifted by them, people are in the grip of condolence of death; people can neither eat nor bath.

Among the carpenters, the most respected in the village Garh Narikel is the family of Joginder Thakur. But when the titular head of the carpenters comes from the far-off village, then the intelligence of Joginder Thakur goes dim, and he utters only yes on both righteous and unrighteous utterances. Joginder has three sons, Bihari, Arjun and Shivanarayan. All are engaged in woodwork, but Bihari does ironwork too; and Arjun has become cycle-mechanic, side by side. He does all the work from minor repairs of rickshaws as well as bicycles and repairs punctured tubes. He has discovered the making of a cricket ball

made of the root of bamboo; he has discovered a wooden circular plate to run through a crooked spike of iron wire; and many more games. So, when people say, look, if you read and write you would get a job; this exception should change their views. Look at Shivnarayan, how innovative he is, he makes many things even out of useless inappropriate wood. But the hand skill of Bihari is nowhere to be found, distinct types of cuts, vertical, horizontal, crooked, and oblique cuts, he is an expert in all.

Shivnarayan discovers, but Bihari replicates those discoveries in a better way. In villages, there is no copyright available to a discoverer. On hardwood the saw and other implements of Shivnarayan get blunt, but Bihari gets out of it, not knowing how! He makes something out of weak wood and sells those in the market. For sawing a plank if a big saw is not available, he even saws the plank using the smallest available saw. He delineates the sturdy wood from the weak wood meticulously and dexterously.

Jagdish Mile is known for the holy cloth

manufacturing, which is offered to the goddess. His wife is very skilled.

Bhola Pandit is a potter, he moulds and makes earthen vessels, and he makes earthen birds and earthen animals for the children too. In the making of earthen utensils, he is unparalleled.

Satyanarayan Yadav is the Raut Sir. Now the nomenclature has changed from milkman to Yadav Sir. From the trade of milk to agriculture and to filling the village road with earthwork, all these are in his hands.

Basu Chaupal is from Khatbe Caste, he carries gifts to other villages, and gifts include fish. He sells fish in the fish market.

Chalittar Sahu and Laddulal Sahu, both are sweet manufacturers, they arranged for a temporary shop during the Durga Pooja festival. During jovial festivities or the feast related to death or death anniversaries, he gets a contract for the preparation of vegetable dishes.

Shiv Narayan Mahto is from the Suri caste, a business class.

Laxmi Das is from the Tatma community, a thread-

weaving caste.

Lal Kumar Roy is from Kurmi Caste.

Bhola Paswan and Mukesh Paswan are from Dusadh Caste, earlier the milk business was held by them, but not now.

Satyanarayan Kamti is from the Keot caste, they were stationed at the farmhouses of the Darbhanga Raj. Ramdeo Bhandari is from the Bhandari caste, this caste is a type of Keot caste, and they managed the Kitchen of Darbhanga Raj.

Kapileshwar Raut and Ramavtar Raut are from the Barai caste, they do ancestral betel-leaf business.

From the Dom caste is Bodha Malik, from the Koir caste is Dukhan Mahto, from the Bhumihar caste is Radhamohan Roy; and from the goldsmith caste, is Ashok Thakur.

Among the oil business community are Ramchandra Sao, Bauku Sao and Kari Sao.

From the fisher caste, is Jibachh Mukhiya. In Dakahi pond, once a year is held the fish catching fair. The fisher put the big net into the pond; a whole quarter of the fishers come to the pond for

one whole month. Earlier the fair was extended for more than one month but now due to the scarcity of fish, it goes hardly over twenty days. Then the head of the fisher announces- Now the big fishes are no more in this pond. If we fish through the big net, none could be entrapped. But if we fish through the delicate small nets, all the small fish would get caught. And then you will have to sow fish seeds into this pond.

During those fifteen to twenty days, there remains a festival-like atmosphere in the village. This becomes an excuse for the cleanliness of the pond. From early morning from four AM till noon, fish are caught. And till the afternoon all the villagers- except the southern quarters of the village- are given their share. All the people, the representatives from different quarters, take their share and return to their respective quarters. All the families obtain their shares out of the share of their quarters. How many shares are there out of the quarter's share, sometimes it gives cause for strife. Till she was alive, one did not talk to one's widow aunt, but

after her death people remember their aunt. Maybe while she was alive, her desire to offer some share to her daughter might have been stalled by the nephew and he might have obtained a thumb impression of her dead aunt that becomes immaterial now. On this count, strife ensues, and only the wrestler whom people out of love call wrestler uncle, receives that kind of share, nobody else. It does not matter whether this widow, of wrestler uncle's courtyard, died a long twenty years ago.

There is one more speciality of Dakahi pond. Inside this pond tortoises and fishes grow in number, on their own. Beside the pond, many types of roots and lichens are found. The cattle grazer boys eat the sweet roots.

Buchkan Saday is from Mushhar caste. Near the Dakahi pond, there are many small water bodies, and the swampy ground may be seen around it. From there the Mushhar caste people dig the roots and eat them. In the year 1967 when most of the ponds dried, even then this big Dakahi pond did not completely dry up, although the area of the pond

diminished dramatically. The Prime Minister had come here during those days, and she was shown how the Mushahar caste was surviving during those days, eating these roots.

These are the people who are having a say in the village of Garh Narikel.

But the village is known as Cattle Grazer Brahmin's village.

পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতলপৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ



গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ

पर्वत ऊपर भमरा जे सूतल

র্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতলপৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ



गजेन्द्र ठाकुर

র্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল পৰ্বত ঊপৰ ভমৰা জে সূতল

গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ গজেন্দ্ৰ ঠাকুৰ